उत्थान-पतन

उत्थान-पतन

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

UTHAN-PATAN (उत्थान-पतन)
A Maithili Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-24-7
दाम: 350/- (भा.रु.)

छठम संस्करण: 2022 (पहिल संस्करण: 2009, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक

ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार

संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम:

आमुख/07

एक : 'क'/11

'ख'/15

'ग'/16

दू/19

तीन/33

चारि/52

पाँच/65

छह/76

सात/83

आठ/92

नअ/103

दस/118

एगारह/125

बारह/136

तेरह/150

चौदह/165

पनरह/179

आमुख

नाटककार, कथाकार आ उपन्यासकारक रूपमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी मैथिली साहित्यमे नूतन उर्जाक संग उपस्थित भेल छैथ। हिनक जन्म 1947 ई.मे भेल। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक कथा, प्रेरक कथा उपन्यास सेहो प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

ऐ 'उत्थान-पतन' उपन्यासमे लेखक गामक जिनगीक यथार्थक नव-नव रूप उपस्थित केने छैथ। गामक जड़ता, रीति-रिवाज, पाबैन-तिहार, मूर्खता, विद्वता, अड़ि जाएबला भाव आ सहज सोभाव आदि सहज रूपमे आबि गेल अछि।

तत्वक दृष्टिसँ देखल जाए तँ सर्वप्रथम कथावस्तु धियानकेँ आकृष्ट करैत अछि। कथावस्तु तँ सशक्त आधार अछि जैपर उपन्यासक केतेको रंगक प्रसाद ठाढ़ होइत अछि, जइमे जिनगीक श्वास रहब आवश्यक।

उत्थान-पतनमे गंगानन्द, यमुनानन्द, पण्डित शंकर, सुधिया, ज्ञानचन्द, भोलिया, बिशेसर, भोलानाथ, सुकल, नीलमणि, मोहिनी, रीता, महंथ रघुनाथ दास, लीला, दीनानाथ, गुलाब आदि अनेक पात्रसँ सज्जित भऽ अंचलक मार्मिक चित्र उपस्थित भेल अछि।

कथावस्तुमे विच्छिन्न होइत गाम-घर आ टुटैत बेकती सबहक समस्याकेँ मार्मिक ढंगसँ अभिव्यक्ति कएल गेल अछि। उपन्यासक प्रारम्भ होइत अछि- “गामे-गाम केतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ केतौ नवाह, केतौ चण्डी यज्ञ तँ केतौ सहस्र-चण्डी यज्ञ होइत। किएक तँ एगारहटा ग्रह एकत्रित भऽ गेल अछि। की हएत की नै हएत कहब कठिन। एकटा बालग्रह भेने तँ सुखौनी लगि जाइत अछि आ जैठाम एगारहटा ग्रह एकत्रित अछि तैठाम तँ अनुमानो कम्मे हएत। परोपट्टा भगवानक नाओंसँ गदमिसान होइत। जअ-तील आ घीक गन्धसँ हवा सुगन्धित। सबहक हृदयमे भगवानक स्वरूप बिराजैत। सभ व्यस्त। सभ हलचल। खर्चक कोनो इत्ता नहि। जेना

निशाँ लगलापर बेहोशी होइत तहिना। जाधैर लोक कीर्तन मण्डलीक संग, मण्डपमे कीर्तन करैत ताधैर घरक सभ सुधि-बुधि बिसैर मस्त भऽ रहैत। मुदा घरपर अबिते कियो भूखल गाए-महींसक डिरियाएब सुनि चिन्तित होइत तँ कियो बच्चाकेँ बाइस-बेरहट-ले ठुनुकब सुनि बेथाकेँ दबैत तँ कियो आँखिक नोर होइत बहबैत।"

सामाजिक उत्थान करैबला बेकतीकेँ गामक ऐ परम्परा आ धार्मिक आडम्बरसँ संघर्ष करए पड़ैत अछि। लेखक अपना पात्रक द्वारा अन्धविश्वासकेँ तोड़ि जनकल्याणकारी परिवर्तन अनबाक प्रयास केने छैथ।

साहित्यक भाषा हेबाक चाही जन-भाषा। जेकरा साधारण जन सहज-रूपसँ पचा सकए। ऐ उपन्यासक भाषा गाम-घरक बोलचालक भाषा अछि। जेकरा प्रयोग करैत काल सहजे नव-नव शब्दक निर्माण भऽ गेल अछि। साधारण जनक बोली आ नूतन शब्दक प्रयोग ऐ उपन्यासमे प्रचुरताक संग देखल जा सकैत अछि। कथोप-कथनमे सहजता संक्षिप्तता और स्वभाविकता अछि। जेना ऐ कथोप-कथनपर दृष्टिपात कएल जा सकैत अछि- "अगर दसखत कएल नै होइत हुअ तब?"

"तब की? औंठा निशान दऽ देतइ"

"भाय, दूटा समाँग आएल अछि। दुनूकेँ काज कऽ दहक।"

"अच्छा थमहह, किरानी बाबूसँ गप्प केने अबै छी।"

कथोपकथन उपन्यासमे वर्णित जिनगीक अनुकूल अछि। दौड़ैत-पड़ाइत संसारमे बृहताकार उपन्यास पढ़ैले समैयक अभाव रहैत अछि। किन्तु भाषा आ शैलीमे जँ आकर्षणक गुण रहैत अछि तँ ओ जनमानसकेँ पढ़बाक लेल अपना दिस घींच लैत अछि। जइ गुणसँ भरल-पूरल ऐ उपन्यासक चित्रात्मक शैलीक एकटा उदाहरण देखल जा सकैत अछि- "गोर वर्ण, रिष्ट-पुष्ट शरीर, घनगर मोँछ, बरदक आँखि सन नमहर-नमहर आँखि। कोठीक गेँटपर कान्हमे बन्दूक लटका ठाढ़ ड्यूटी सेठक करैत।"

एक्के वाक्यमे बहुत बात कहि देब लेखकक विशेषता अछि। जेना-

"माथपर छिट्टा नेने आँगन विदा भेली। माथपर छिट्टा लऽ दुनू

हाथसँ दुनू भाग छिट्टाकेँ पकैड़ दुलकी डेग बढ़बैत गुलाब ‘सैंया भेल किसनमा’ घुनघुनाइत आँगन दिस लफरल चलली।”

केहनो अकर्मण्य बेकती जँ पूर्ण मनोयोगक संग आर्थिक उन्नतिमे दत्तचित भऽ जाए तँ हुनक प्रगति होएब निश्चित भऽ जाइत अछि। ऐ दर्शनकेँ देखेबाक प्रयत्न लेखक पात्र श्यामानन्द द्वारा केलैन अछि। परिवर्तनशीलता संसारक निअम छी। सामन्तवादसँ पूँजीवाद आ पूँजीवादक गर्भेसँ समाजवादक जन्म सेहो होइत अछि। ई अलग बात जे पूँजीवादसँ साम्राज्यवाद सेहो पनपैत अछि।

सामाजिक उत्थान समितिक निर्माण कऽ लेखक ई देखबए चाहै छैथ जे टुटैत गामक लेल एकता आवश्यक भऽ गेल अछि। जइसँ एक-दोसराक सहयोग भेटतै आ गामक सम्पूर्ण विकास हेतइ। सबहक संगे सामाजिक न्याय हेतइ। श्यामानन्द द्वारा आधुनिक यंत्रसँ कृषि कार्य होइत अछि। जइसँ ओ सम्पन्न किसान बनि जाइत अछि। ऐ माध्यमसँ लेखक देखबए चाहै छैथ जे अपनो गाम-घरमे जँ बेकती विवेक आ कर्म निष्ठासँ काज करए तँ ओकरा अर्जन करबाक लेल दोसर प्रदेश नै जाए पड़तै आ पड़ाइन रुकि जेतइ।

अखनो गाम-घरमे पूर्ण ज्ञानक किरिण नै पहुँच सकल अछि। तइ कारणेँ एक गाम दोसर गामसँ लड़ैत-झगड़ैत अपना विकासकेँ अवरुद्ध केने रहैत अछि। बेमारीकेँ डाइन-जोगिन आ भूत-प्रेतक प्रकोप मानैत अछि। ई समस्या सभ सहजे ऐ उपन्यासमे उपस्थित भऽ गेल अछि। ऐ तरहेँ देखै छी जे लेखक गामक यथार्थ जिनगीक चित्र उपस्थित केने छैथ, संगे आदर्श रूप सेहो दृष्टिगत भऽ रहल अछि।

-राजदेव मण्डल

मुसहरनियाँ
(मधुबनी)

एक : 'क'

गामे-गाम केतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ केतौ नवाह, केतौ चण्डी यज्ञ तँ केतौ सहस्र-चण्डी यज्ञ होइत। किएक तँ एगारहटा ग्रह एकत्रित भऽ गेल अछि। की हएत की नै हएत कहब कठिन। एकटा बालग्रह भेने तँ सुखौनी लगि जाइत अछि आ जैठाम एगारहटा ग्रह एकत्रित अछि तैठाम तँ अनुमानो कम्मे हएत। परोपट्टा भगवानक नाओंसँ गदमिसान होइत। जअ-तील आ घीक गन्धसँ हवा सुगन्धित। सबहक हृदयमे भगवानक स्वरूप बिराजैत।

सभ व्यस्त। सभ हलचल। खर्चक कोनो इत्ता नहि। जेना निशाँ लगलापर बेहोशी होइत तहिना। जाधैर लोक कीर्तन मण्डलीक संग, मण्डपमे कीर्तन करैत ताधैर घरक सभ सुधि-बुधि बिसैर मस्त भऽ रहैत। मुदा घरपर अबिते कियो भूखल गाए-महींसक डिरियाएब सुनि चिन्तित होइत तँ कियो बच्चाकेँ बाइस-बेरहट-ले ठुनुकब सुनि बेथाकेँ दबैत तँ कियो आँखिक नोर होइत बहबैत।

चारि सालक रौदीक चलैत पोखरिक पानि सुखि गेल। नमहर-नमहर दराइर खेतसँ लऽ कऽ पोखैर धरिमे फाटि गेल। इनारक मटियाएल पानि भरि-भरि सभ घैलमे रखि फरिछा-फरिछा लोटा-गिलासमे लऽ लऽ पीबैत। लोक की करत। केतए जाएत। मृत्युक मुँह छोड़ि दोसर रस्ते की? औझुका कोलकाता ओ कलकत्ता नहि जैठाम अकाल आ समुद्री तूफानसँ ढेरो लोक मरै छल। जेकरा आइ अपन दोसर घर बुझि लोक जीवन-यापन करए जाइए। औझुका पंजाब ओ पंजाब नहि जैठाम आन-आन राज्यक लोक जा खेत-खरिहाँनसँ कारखाना धरि खटि कऽ परिवारक भरण-पोषण करैए। पंजाबक ओ दशा छल, जैठाम कल-कारखानाक कोन गप जे खेतक माटि गेउर रंगक कंकर मिलल, बर्खासँ भेँटो ने होइ छलइ। साइते-संयोग सालमे कहियो बरखा भऽ जाइत रहइ। ओतुक्का लोक पड़ा-पड़ा आन-आन राज्य जा हड़तोड़ मेहनत कऽ जीविका चलबै छल। बम्बई, औझुका मुम्बई नहि। ने सिनेमा उद्योग छल आ ने कल-कारखाना आ नहियेँ अखुनका जकाँ कारोबार...।

गंगानन्दकेँ तीस बीघा जमीन। तीन भाँइक भैयारी आ सतरह गोरेक आश्रम। जइ साल सवारी समय होइत ओइ साल आश्रम चला आ मालगुजारी दैयो कऽ अन्न उगैड़ जाइ छेलैन, जेकरा दु-सलिया-तीन-सलिया पुरान बना खाइत। सबाइयो लगबैत।

पहिल सालक रौदी गंगानन्दकेँ बुझिए ने पड़लैन। घरमे धान-चाउर परियाप्त रहैन संगे गाइयो-महींस-ले बड़का-बड़का दूटा नारक टाल रहबे करैन। पहिलुके जकाँ गंगानन्दक मन हरिअर।

दोसर साल घरक धान-चाउर लगिचा गेलैन। रौदमे, जहिना गाछक तोड़ल फूल मौलाए लगैत तहिना गंगानन्द मौलाए लगला। कुटुमो-सम्बन्धीक आबा-जाही बढ़ि गेलैन।

गंगानन्दक जेठकी बेटी रीता सासुर बसैत। चारि बेटी आ एक बेटाक संग रीता सेहो आबि गेलैन। रीताक जेठकी आ मैझली बेटी बिआह करै-जोकर भऽ गेल। जँ कहियो रीता कोनो काजमे नैहर अबैत तँ काजक पराते सासुर जाइले धूम मचा दइत। किएक तँ सासुरक सभ भार रीते दुनू परानीपर। भैयारीमे जेठ रहने घरसँ बाहर धरिक सभ तरद्दुत करए पड़ैत।

रौदीक चलैत रीता धिया-पुताक संग छबो गोरे नैहर एली। मासोसँ ऊपरे भऽ गेल मुदा सासुर जाइक नाओंए ने रीता लइत। बाप-माए केना मुँह फोड़ि बेटीकेँ सासुर जाइले कहत। भरियाएल खर्चसँ गंगानन्द तेरे-तर कुहरैथ। मने-मन सोचैथ, एक तँ साल खेपब कठीन अछि, तैपरसँ कुटुम-परिवारक धुमसाही..! मुदा कहथिन केकरा। बरखाक केतौ पता नहि। उपजावारीक कोनो आशा नहि...।

मने-मन रीता सोचैत जे जँ सुमनक बिआहक चर्च माए करत तँ ओकरे माथपर पटैक देबइ। अपना बुते पार लगाएब कठिन अछि।

सभ दिन गंगानन्द साँझू पहरमे भूजल चूरा फँकै छला। बीस मनिया कोठीटा मे चाउर बँचल। धान पहिने सठि गेल। धानक दुआरे चूरा कथीक कुटौल जाएत। पार्वती पतिक आदत बुझि चाउरे भूजि छिपलीमे लऽ दरबज्जापर नेने एलखिन। भूजल चाउर देखि गंगानन्द मने-मन बुझि गेला जे धान सठि गेल। पुरान चाउर रहने भूजा पथरा गेल तँए सक्कत।

पहिलुके फक्का मुँहमे लैत गंगानन्दक दाँत सिहैर उठलैन। दाँत सिहैरते गंगानन्द लोटाक पानि मुँहमे लऽ गुल-गुला कऽ घोंटलैन। मुँहक चाउर घोंटि छिपली आगूसँ घुसका देलखिन। मने-मन पार्वती अन्दाजलैन जे सक्कत दुआरे भूजा नै खेलैन। मुदा उपाय की..?

गंगानन्दकेँ तामस नै उठल। जँ घरमे धान रहैत तँ चूरा कुटौल जाइत मुदा नै रहने कएल की जाएत। जहिना लकड़ी जड़ि कऽ राख बनि शक्तिहीन भऽ जाइए तहिना गंगानन्दक दशा भऽ गेलैन।

गिलासमे चाह नेने गंगानन्दक नातिन आएल। दुनू परानीक नजैर सुमनपर पड़ल। चाह रखि सुमन आँगन चलि गेल।

लग्गी भरि हटल पार्वतीकेँ हाथक इशारासँ गंगानन्द लग अबैले कहलखिन। पार्वती बैसले-बैसल घुसैक कऽ लग एली। फुस-फुसा कऽ गंगानन्द कहलखिन-

“रीताक दुनू बेटी बिआहै-जोकर भऽ गेल। जँ कहीं ऐ साल एकोटा बिआह ठानत तँ इज्जत बाँचब मुसकिल भऽ जाएत। हमहूँ तँ नने छिऐ।”

अखन धरि पार्वती अँगनासँ दलान धरि अबै-जाइ छेली। ऐसँ अधिक ने देखैक समय भेटलैन आ ने घरक नीक अधला बुझैक। नातिनक बिआह बुझि अह्लादसँ पार्वती बजली-

“यज्ञो केकरो बाँकी रहै छइ। यएह तँ भगवानक लीला छैन जे गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरिक काज कहुना-ने-कहुना भइये जाइ छइ।”

केचुआएल साँप जकाँ गंगानन्दक दशा। दिन ससरब कठिन। तैपरसँ पत्नीक चढ़ल बात आरो केचुआ चढ़ा देलकैन। मुदा जहिना केचुआ छोड़ैत साँपक साँस तेज भऽ जाइत तहिना नमहर साँस छोड़ैत गंगानन्द बजला-

“एहेन दुरकालमे जीनाइ कठिन अछि, तैपर बिआह सनक यज्ञ...। तहन तँ जेकरा सिरपर काज अबै छै, कोनो-ने-कोनो धरानी पार लगैबते अछि। दू सालक रौदीक झमारसँ घर फोंक भऽ गेल अछि। अखनो धरि पानिक कोनो आश नहि अछि। तँए, पहिने जीअब पार लगत तखन ने किछु। बिआह तँ एक-दू साल आगूओ बढ़ौल जा सकैए।”

ओलती लग ठाढ़ भऽ रीता माए-बापक फुसराहैट सुनैत। गप मोड़पर अबिते रीता आगू बढ़ि माए लग आबि ठाढ़ भऽ गेल। अपन बातकेँ छिपबैत गंगानन्द कठ हँसी हँसि पत्नीकेँ कहए लगलखिन-

"रीतोक बेटी बिआह करै-जोकर भेल जाइ छइ?"

मुँह निच्चाँ केने रीता बजली- "बाबू, दुनू बहिन तरे-ऊपरे भऽ गेल अछि। मुदा घरक जे दशा भऽ गेल अछि तइसँ अखन बिआह पार लगब कठिन अछि। जखन समय-साल सुधरत तखन बुझल जेतइ।"

मने-मन गंगानन्द सोचैथ जे घरक भार पड़लासँ सभ आगू-पाछू देखि किछु करैए। मुड़ी डोलबैत गंगानन्द कहलखिन- "हँ, से तँ ठीके। अखन बिआह करैक अनुकूल समैयो ने अछि। सिरिफ हमरेटा घरमे नै समाजमे बहुतोकेँ घरमे बिआहै-जोकर बेटी अछि। सबहक पार तँ भगवान लगेबे करथिन।"

पिताक बात सुनि रीताक मनमे शान्ति एलइ। अपन परिवारक चर्च करैत रीता बाजए लगली- "बाबू घरक हालत बड़ खराप भऽ गेल अछि। एक तँ दू-अढ़ाइ बर्खक रौदी, दोसर एक्कोटा समाँग उहिगर नहि! कियो कमाए-खटाए नइ चाहैए। भरि दिन, गप-सप्प लड़बैत समय बितबैए। घरक कोनो धैन-फिकिर नहि। भैयारीमे जेठ रहने दुनू परानी काजक पाछू भरि दिन अपसियाँत रहै छी।"

मास पुरैमे दू दिन बँचल। मालगुजारीक अन्तिम सूचना दिअ राजक सिपाहीकेँ पटवारी पठौलक। सिपाही आबि गंगानन्दकेँ कहलकैन- "परसू तक जँ मलगुजारी नै देबै तँ जमीन निलाम भऽ जाएत। पटवारी अपन जाति-बेरादर बुझि चुपचाप पठौलैन। नइ तँ कानून-कैदासँ काज हएत।"

जहिना कोनो राजाकेँ राज छीनि कऽ भगा देलापर मनमे धक्का लगैत तहिना सिपाहीक समाचार सुनि गंगानन्दक मनमे एहेन धक्का लगलैन। छाती धकधकाइत, कण्ठ सुखैत गंगानन्द सिपाहीकेँ कहलखिन- "अखन जे दशा अछि तइमे मलगुजारी देब असम्भव अछि। दोसर कोनो रास्ते ने देखै छी।"

गंगानन्दक मजबुरी बुझैत सिपाही कहलकैन- "एकटा उपाय

अछि।"

गंगानन्द कऽ सुखाइत कण्ठसँ बहरेलैन- "की?"

कने घुसैक कऽ लग आबि सिपाही कहलकैन- "पटवारीकेँ बिआहै-जोकर बच्चिया छैन। अहाँ अपन बेटाक बिआह कऽ लिअ। देबो-लेब नीक भेटत। हुनके हाथक काज छैन, जमीनक रसीद सेहो दऽ देता। कियो बुझबो ने करत आ काजो भऽ जाएत।" ❑

'ख'

बचनाक आवाज सुनि फुलिया जत्ता चलाएब छोड़ि एक हाथसँ हथरा पकड़ने आगू तकलक। बचनाक मन जेना धिया-पुताक हाथसँ कौआ रोटी लपैक उड़ि जाइत तहिना सोगाएल। पत्नीसँ नजैर मिलते बचना बाजल-"लछमीपुर जाइ छी जँ कोनो गर रुपैआक लगि जाएत तँ लगौने आएब।"

नैहरक नाओं सुनि फुलियाक मनमे गुदगुदी लगल। मुदा विपैतक चद्दैर ऊपरेसँ झाँपि देलकै। सोगाएल मने फुलिया बाजल-"जाउ, कपार तँ फुटले अछि मुदा तैयो अपना भरि परियास करू। कपार तँ उनटबो-पुनटबो करै छइ। जँ कहीं नीके गरे उनैट जाए। कनीए थमि जाउ। रोटी पका दइ छी। खा कऽ जाएब।"

मन्हुआएल बचना ठोर पटपटबैत बाजल-

"बड़ बढ़ियाँ। तुरन्ते हमहूँ दूटा दारही खोखरौने अबै छी। नहाइयो लेब।"

बचना दाढ़ी कटबए विदा भेल। फुलिया जत्ता लगक चिक्कस समेट मुजेलामे उठौलक। मुजेला लऽ जा कऽ चुल्हि लग रखलक। चिक्कस रखि कोठीपर सँ चिक्साही सूप आनि गठूलासँ जारैन आनए गेल। हाँइ-हाँइ चुल्हि पजाइर रोटिपक्का घीपैले चुल्हिपर चढ़ौलक। मुजेलासँ लप लऽ लऽ चिक्कस निकालि सूपमे रखलक। पानि दऽ हाँइ-हाँइ सानए लगल। जाबे

रोटिपक्का धिपलै ताबे रोटियो ठोकि लेलक। हाथपर ठोकल रोटी रोटिपक्कामे दऽ पकेलक।

नौआ गाममे नहि। मूड़नक पता लऽ कऽ सुखेत गेल छल। बिनु दाढ़ी कटौनहि बचना घुमि कऽ आबि गेल। अलगनीपर सँ धोती लऽ नहाइले विदा भेल। जाबे बचना नहा कऽ आएल ताबे फुलिया थारीमे भाँटाक सन्ना आ रोटी परोसि कऽ रखने। हाँइ-हाँइ बचना खा कऽ अँगा पहिर, हाथमे छाता लऽ सासुर विदा भेल। बचना रस्तो चलए आ मने-मन 'जय महावीरजी, जय महावीरजी' घुनघुनेबो करए। लछमीपुर लग पहुँचते मने-मन महावीरजीकेँ गोड़ लगि, सबा रुपैआक चीनी कौबला केलक। कौबला करिते जेना बचनाक मनमे संतोख भेल जे काज हेबे करत।

लछमीपुर पहुँचते बचना सबहक मन खसल देखलक, जेना केते भारी विपैतमे सभ पड़ल हुअए। करेजपर पाथर रखि बचना सरहोजिकेँ पुछलक- "किए सभ अनून-बिसनून जकाँ छैथ?"

नोराएल आँखिए सरहोजि कहलकैन-"पाहुन, की कहबैन खेतक मलगुजारी दू साल पछुआ गेलै तँए परसू सभटा खेत लिलाम भऽ जाएत।"

सरहोजिक बात सुनि बचना आवाक् भऽ गेल। मनमे उठलै- के केकर दुख हरत! सबहक गति तँ एक्के रंग अछि! बचना पएरो ने धुअ लगल, चोट्टे गाम घुमि आएल। ❑

'ग'

बिशेसर घरक आगूमे रस्तापर लोक सभ ठाढ़। रौदाएल बिशेसर हर जोति कऽ अबिते छल। हाथमे हरबाही पेना आ माथमे गमछाक मुरेठा बन्हने। फरिक्केसँ बिशेसर सुनलक जे कचहरीक सिपाही बलजोरी बाड़ीमे कदीमा तोड़ि लेलक। बिशेसरक पत्नी केतबो मनाही केलकै मुदा सिपाही नै मानलक। मोहिनी आ सिपाहीक बीच रक्का-टोकी होइते छल, कदीमा सिपाहीक हाथेमे। लग अबिते बिशेसर सिपाहीकेँ चारि-पाँच पेना लगा कदिमा छीनि लेलक। आ अनधुन गरियबैत सिपाहीकेँ कहलक- "बापक

बाड़ी बुझि कदीमा तोड़लेँ। तूँ सिपाही कचहरीक छीही की हमर?”

चारि-पाँच गोरे बिशेसरकेँ पकड़ने मुदा तैयो जोशमे हुरैक-हुरैक मारैक कोशिश करैत। लोकक कहलासँ शान्त भेल। मुदा तामसे ठोर पटपटाइते रहलै। शान्त भऽ बाजल- “अहाँ समाज मिलि पकड़लौं तँए चुप भऽ गेलौं मुदा पच्चीस बेर सिपाहीकेँ कान पकैड़ उठाउ-बैसाउ, चाहे थूक फेक कऽ चटाउ। जे फेर एहेन गलती नइ करए। ई चोर छी! लालिश कऽ देबइ। जहलसँ कहियो निकलए नइ देबइ। ई राँड़-मसोमात हमरा बुझलक!”

बिशेसरकेँ मात्र दू कट्ठा घराड़ीए-टा। सेहो बेलगान। दुइए गोराक आश्रमो। बेटा-पुतोहु भीन। एकटा तेरह हाथक घर जइमे दूटा हन्ना बनौने। एकटा मे अपने दुनू परानी रहैत आ दोसरमे बेटा-पुतोहु। कनीए-टा अँगना जइमे तीनू भागसँ टाट लगौने। बाँकी डेढ़ कट्ठा बाड़ी बनौने। मोहिनी अपन बाड़ीमे सभ दिन राशि-राशि कऽ तरकारी उपजबैत आ बिशेसर दुनू उखराहा बोइन करैत।

दुनू परानीक मिलानक चर्च सौंसे गाममे होइत। अपन-अपन काज बँटने। कोनो हरहर खटखट नहि। दू-सेर-चारि-सेर अन्न घरोमे रहैत। साठि बर्खक बिशेसरक जुआन जकाँ तन दुरूस। ने एकोगो दाँत टुटल आ ने केश पाकल। जेना दोसर-तेसर बोनिहार पचास बरख पुरैत-पुरैत झुनकुट बुढ़ जकाँ भऽ जाइत, तेना नहि। नियमित जिनगी बना दुनू परानी बिशेसर जीबैत। डेढ़ो कट्ठा बाड़ीमे मोहनी कोदारिक काजसँ लऽ कऽ खुरपी हसुआँ धरिक काज अपना हाथसँ करैत। लत्ती-फत्ती-ले छोट-छोट मचानो अपने बना लइत। तरकारीक गाछ रोपैसँ लऽ कऽ ताक-हेर-पटौनी-कमौनी सभ मोहिनीए करैत। अँगने जकाँ चिक्कन बाड़ियो बनौने। दस हाथक एकटा लग्गी बनौने जइसँ गाछक सुखल ठौहरी सभ तोड़ैत।

बिशेसर तमाकुल खाइत आ मोहिनी हुक्का पीबैत। अमलो असान। एक्को पाइ खरच नहि। कातिकमे मोहिनी साए गाछ तमाकुलक रोपि लइत। जेकरा सभ तरद्दूत कऽ दइत। माघ अबैत-अबैत गाछ जुआ जाइत। गाछक रंगो बदलए लगैत। गाछकेँ जुआइते काटि लइत। ओइमे बीचला पात बाँछि खाइले रखैत आ निचला पातकेँ, कनोजरिकेँ पीनी कुटैले रखि

लइत। जे सालो भरि दुनू बेकतीकेँ चलैत। बिशेसरक बेटा भोलिया जाबे छोट छल ताबे माइक संग घर-आँगनक काजसँ लऽ कऽ जारैन धरि तोड़ि अनै छल। जखन नमहर भेल तँ पिताक संग बोइन करए लगल। बिआहो भेलइ। मुदा छौड़ा-मारड़िक संगतमे पड़ि भाँग पीबए लगल। बाड़िए-झाड़ीमे भाँगक गाछ। ओकर फूलो झाड़ि-झाड़ि आ जट्टाबला डारियो काटि-काटि सूखा-सूखा रखैत...।

बिशेसरकेँ कोनो जनतब नहि। मुदा माए देखै। भिनसरू पहरकेँ जखन बिशेसर काज करए विदा हुअए तँ भोलिया सुतले। दू-चारि दिन बिशेसर खिसिया कऽ 'छौड़ा अवारा भऽ गेल', 'मौगियाह भऽ गेल' कहि अपने काज करए चलि जाइत। भोलिया घुमिते-घामिते रहि जाए। एक दिन खिसिया कऽ बिशेसर कहलकै- "तूँ बेटा छँह एकर माने ई नइ जे तूँ मालिक भऽ गेलँह! दू परानी तोहूँ छँह। बिनु कमेने खेमे की? भीन रह आकि साझी मुदा कमाइए पड़तौ। जो आइसँ फुटे भानस कर।"

कहि बिशेसर भोलियाकेँ भीन कऽ देलक। साँझू पहरकेँ बिशेसर सभ दिन डेढ़ियापर बिछान बिछा, जाबे भानस होइ, भजन-कीर्तन करैत। असगरे बिशेसर खौजरियो बजबैत आ भजनो गबैत। ने दोसर कोनो साज आ ने कियो संगी। अपने गबैया अपने बजनियाँ आ अपने सुननिहार। पाँचेटा भजन बिशेसरकेँ अबैत। जएह सभ दिन गबैत। जखन भजन करए बैसए, तखन एक झोंक खूब झमाझम कऽ 'जय सतनाम जय सतनाम जय सतनाम जय-जय सतनाम गबैत...।'

चुल्हि लग मोहिनी भानसो करैत आ घुनघुना-घुनघुना सतनामो-सतनाम करैत। 'सतनाम'क पछाइत 'साँझ भयो नै आयो मुरारी' बड़ी अह्लादसँ बिशेसर गबैत। अड़ोस-पड़ोसक सभ पाँचो भजन सीख नेने। जहाँ बिशेसर भजन शुरू करै आकि सभ अपना-अपना अँगनामे घुनघुना-घुनघुना गबैत। 'साँझ' गौला पछाइत बिशेसर विनती गबैत। विनती गबै काल तेते तन्मय भऽ जाइत जे बुझि पड़ैत जेना भगवान हृदयमे बैस गेलखिन। विनती समाप्त होइते खौजरी रखि तमाकुल चुना कऽ बिशेसर खाइत। मोहिनियोँ चुल्हिए लग हुक्का भरि पीबैत। तमाकुल फेक कुरुर कऽ कृष्णक रूपक वर्णन शुरू करैत। रूप वर्णनक समय बिशेसरकेँ बुझि

पड़ै जे अन्तर्ज्ञानसँ ब्रह्माण्ड देखि-देखि गबै छी। गबैत-गबैत बिशेसर उठि कऽ ठाढ़ भऽ खौजरियो बजबैत आ ठुमकी चालिमे झुमि-झुमि नचबो करैत...।

असगर रहितो बिशेसरकेँ बुझि पड़ैत जे हजारो-लाखो लोकक बीच नाचि-गाबि रहल छी। कखनो हँसबो करैत तँ कखनो मुस्कियेबो करैत, तँ कखनो आँखिसँ नोरो झहरए लगैत। पछाइत तौनीसँ मुँह-हाथ पोछि बिशेसर सोहर शुरू करैत। सोहर गबैत-गबैत, भरि दिनक ठेही उतरल बुझि पड़ैत। अन्तमे समदाउन गाबि भजन समाप्त कऽ लइत। ❑

दू

रोहितपुरक दानोक चर्च बुड़हो-बुढ़ानुस आश्चर्जसँ करैथ जे एहेन अन्हड़ जिनगीमे नै देखने छेलौं। खेतमे हवा उठल। खढ़-पात उड़ए लगल। गोलियाइत हवा पहिने सुरुंगा ऊपर-मुहेँ–अकास दिस बढ़ल। बढ़ैत-बढ़ैत पसरए लगल। जे हवा खेतमे उठल ओ दौगैत टोलमे प्रवेश केलक। टोलमे प्रवेश करिते अन्हड़ घर-दुआरक छप्परकेँ उड़बैत, क्षणेमे हजारो घरकेँ खसा-पड़ा देलक। सभ चकित! जे नर्तकी जकाँ नचैत हवा कनीए कालक पछाइत एहेन भयंकर रूपमे बदैल गेल जे गामकेँ उजाड़ि-पुजाड़ि कऽ एकबट्ट केलक।

दुपहरक समय तँए गामक लोको छिड़ियाएल आ मालो-जाल बाधमे। अन्हड़ समाप्त होइते जे जेतए छल, दौगल गामपर आएल। कियो बच्चा सभकेँ ताकए लगल, तँ कियो माल-जालकेँ। गाममे एकोटा एहेन घर नहि बँचल जेकरा कोनो नोकसान नइ भेल होइ। समुच्चा गामक लोक विपैतमे डुमि गेल। के केकर नोर पोछत! सभकेँ अपने खसैत! जहिना सुरूज डुमला पछाइत अन्हारमे सभ किछु कारीए बुझि पड़ैत तहिना गामक माल-जालसँ लऽ कऽ मनुक्ख धरिक दशा भऽ गेल।

रतनाक स्त्री नैहरमे रहैन। बेर झुकि गेल रहए। गाएकेँ पानि पीआ खाइले आगू ओगाड़ि, अन्हार होइ दुआरे चोरबतीकेँ गमछामे लपेट, काँख

तर लऽ बच्चो आ स्त्रियोकेँ आनए सासुर विदा भेल। मुँह सुखल, छाती धकधक करैत मुदा तैयो रतना आगूओ बढ़ैत आ पाछुओ घुमि-घुमि तकैत। मनमे होइ जे फेर ने कहीं अन्हड़ दोहरा कऽ चलि आबए। मनमे ईहो होइ जे ओमहर सासुर जाइ छी आ एमहर गाममे जँ अन्हड़ चलि औत तब तँ आरो पहपैटमे पड़ि जाएब...।

गामक सीमा टपिते रतना खूब झोंकसँ कखनो दौगबो करैत आ कखनो असथिरोसँ चलैत। रस्तामे बिशेसर भेँट भेलइ। भेँट होइते बिशेसर कुशल पुछलकै। कुशलक उत्तर दैत रतना बाजल- “पाहुन, की कहब नाश भऽ गेल! सबहक घर अन्हड़मे गिर पड़लै। धड़फड़ाएल छी अखन नै रूकब। राता-राती बच्चा सभकेँ लऽ कऽ गाम घूमब।”

‘अन्हड़’ सुनि बिशेसर बाजल- “जाउ-जाउ। एहेन विपैतमे रोकबो उचित नहि।”

रतना आगू बढ़ल। बिशेसर आँगन आएल। मोहिनी आँगनमे नै छेली मुदा नैहरक समाद जरूरी बुझि बिशेसर जोरसँ पत्नीकेँ शोर पाड़लक। पतिक आवाज सुनि मोहिनी धड़फड़ाएले एली। मोहिनीकेँ देखि बिशेसर बाजल- “नैहर उजैड़ गेल। रतना कहलक।”

चौल बुझि मोहिनी हँसैत बजली- “नैहर उजड़तै हमरा दुश्मनकेँ, हमर किए उजड़त। अहूँक मुहसँ दुरभक्खे निकलैए आकि सासुर अकछ लगैए?”

समाचारकेँ सत बनबैत बिशेसर बाजल- “एहनो चौल होइ छइ। हँसी-चौल हमरा अहाँक बीच हएत कि गामक अधला बजने हएत।”

बिशेसरक बातसँ मोहिनीक मुँह मलिन हुअ लगल। आँखिमे नोर अबए लगलै। आरो अधिक समाचार बुझैक जिज्ञासा सेहो बढ़लै। मुदा बिशेसरकेँ जेतबे गप भेल ओतबे बुझल, तँए ओइसँ आगू किछु कहबे ने करैत। दुनू चुप। कनी कालक पछाइत मोहिनी बजली-

“कनी रोहितपुर जा कऽ देखि अबियौ। नइ तँ हमहीं जाइ छी।”

बुझबैत बिशेसर कहलक- “ओहिना जा कऽ देखलासँ की हएत। जखन जाएब तँ किछु मदैत करबै। देखै छिऐ ने जेकर घर जरै छै ओकर

सभ किछु जरि जाइ छइ। मुदा कुटुम-परिवार छुच्छे हाथे आबि-आबि खाली जिज्ञासा करै छइ। की हमहूँ-अहाँ ओहिना करबै। काल्हि भोरे दुनू परानी चलब। घरमे जे अन-पानि अछि सेहो लऽ लेब। अपनो लत्ता-कपड़ा लऽ लेब। जेते दिन रहलासँ हेतै ओते दिन रहि घर बान्हि देबइ।”

पतिक विचार सुनि मोहिनीक मन बदलल। पतिक कर्मठता देखि मोहिनीक हृदयमे नव सिनेह सेहो जगल। मधुर स्वरमे पतिकेँ कहलखिन-

“हम तँ रोहितपुरक बेटी छी सभ काज कऽ देबै मुदा अहाँ तँ गामक जमाए छिऐ अहाँ केना..?”

बिशेसरक मन मदैतक अछि जखन कि मोहिनीक बेवहार आ प्रतिष्ठाक...। हँसैत उत्तर देलक-“जखन नीक समय रहै छै तखन ने सासुर आ जमाए। अखन तँ सभ विपैतमे पड़ल अछि। दोस-महीम-कुटुम-परिवारक परीक्षा तँ एहने-एहने समयमे होइ छइ। जे कुटुम-परिवार वा दोस-महीम बेरपर ठाढ़ नै हएत, ओहन लऽ कऽ की लोक नाचत।”

सालक आखिरी मास। राजक सभ ऐमला-फैमला आमद-खर्चक हिसाब करैमे लागल। तीन रुपैआ महिनाक नोकरी बराहिल करैत। जे सालक अन्तमे एक्के बेर दरमाहा उठबैत। दरमाहा की उठबैत बखसीश उठबैत। दरमाहा तँ मासे-मास भेटै छै जइसँ लोक गुजर करैए मुदा राजक बराहिल तँ सैयो बीघा जमीनपर हुकुम चलबैत। खेती तँ अपने नहियेँ करैत मुदा एक बटेदारसँ दोसर बटेदारक बीच जमीन दइ-लइक अधिकार बराहिलेक छल। तैसंग धान-मरूआक सबाइ लगौनाइ, असुलनाइ सेहो ओकरे हाथक काज छल। केकरो बेइमान वा इमानदार बनाएब बराहिलक बामा हाथक खेल छल।

राजक कचहरीमे गामेक बराहिल मुदा गुमश्ता अन्तुका छल। आमदनीक खल दुनूकेँ फुट-फुट। धन कटनी, मरूआ कटनी वा रब्बी-राइक आमदनी बराहिलक। तैसंग खरिहाँनक खरिहाँनी सेहो बराहिलेक खल छल।

गामक बराहिल रहने मालिक आ गौंआँक बीचक कड़ी सेहो। जखन बराहिल कलम-गाछी वा बाध घुमए जाइत आ एक बेर जोरसँ

बजैत तँ सौंसे बाधक लोक बुझि कऽ सतर्क भऽ जाइत। जे सतर्क नै होइत ओकरा अनेरे दू-चारिटा गारि सुनए पड़ैत। गाममे ताड़ी पीआकक मेड़िया बराहिल बनौने। ताड़ीक खरच बराहिलक होइ। कमियोँ नहियेँ। मलिकाना पोखरिक माछ, बँसबिट्टीक बाँस इत्यादि बेच लइत।

गुमश्ता गाममे कम बुलैत। कचहरीएमे बैसले-बैसल सभ किछु करैत। सभ दिन बराहिल एक डाबा ताड़ी गुमश्ताकेँ पहुँचा दइत। असगरे गुमश्ता भिनसरसँ साँझ धरिमे जखन मन होइ चारि गिलास पीब लिअए। गुमश्ता सेहो गामक दू गोरेकेँ मिला कऽ रखने। दुनू गोरेक खाइ-पीबैक जोगार गुमस्ते करैत। एक गोरे गामक जुआन लड़की सभकेँ फुसला-फुसला अनैत। आ दोसर आम-कटहरसँ लऽ कऽ आनो-आनो चीज गाड़ीपर लादि गुमश्ता ऐठाम पहुँचबैत।

बराहिल ताड़ी खूब पीबैत मुदा समाजक बेटीकेँ अपन बेटी बुझि केकरो दिस आखि नै उठबैत। गुमश्ताक किरदानी बराहिल बुझैत तँए जखन मन होइ तखने दसटा गारि बराहिल दऽ दइत। जइसँ बराहिलक धाक गुमश्ताकेँ होइ। धान-मरूआ सबाइ लगबै काल गुमश्ता बोहीए-मे जोड़-घटाउ कऽ हाथ मारि लइत। जइसँ बढ़ियाँ आमदनी भऽ जाइत।

सालमे पनरह दिन पटवारी आबि कचहरीक सभ हिसाब-किताब करैत। पटवारीकेँ अबिते बराहिल गाममे सबहक ओइठाम जा-जा मालगुजारी दैक सूचना दइत। कचहरी आबि-आबि किसान रसीद कटबैत। निलामी जमीनक बन्दोबस्त करब पटवारीक काज। गुमश्ता अपन आमदनीक चौथाइ भाग पटवारीकेँ दऽ सालो भरिक हिसाबक मुँह-मिलानी कऽ लइत।

पटवारी तीनटा बिआह केने। तीनू स्त्रीकेँ साए-साए बीघा जमीन दऽ तीन गाममे घर बनौने। पोखैर-इनार, कलम-गाछी तीनूकेँ देने। जाबे पटवारी कचहरीमे रहैत ताबे गुमश्ता खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ऐश-मौजक वस्तु जुटेबैमे परेशान रहैत।

बिशेसर बोनिहार रहितो केकरो बान्हल नहि। सभ काज करैक लूरि बिशेसरकेँ। जे गिरहस्त पहिने आबि बिशेसरकेँ कहैत, ओकरेमे बिशेसर

काज करए जाइत।

भोर होइते बिशेसर मोहिनीकेँ चरिआ भानस करैले कहि अपने घरक अन्न निकालि मोटरी बान्हए लगल। अनक मोटरी बान्हि अपन दुनू बेकतीक नुआ-बिस्तर चौपेत-चौपेत रखलक। भानस होइते दुनू परानी खा रोहितपुर विदा भेल। आगू-आगू बिशेसर माथपर मोटरी नेने आ पाछू-पाछू मोहिनी विदा भेल। रोहितपुरक दच्छिनबरिया बाधमे पहुँचते दुनू परानी रोहितपुरक दुर्दशा देखए लगल। दुर्दशा देखि दुनू परानीकेँ जेना पएरमे जत्ता बन्हा गेलै तहिना डेग उठबे ने करइ। ठकुआ कऽ दुनू गोरे आमक गाछ तर बैस रहल। घरपर जाइक साहसे ने होइ।

मोहिनी मने-मन सोचए लगली जे एहेन अन्याय कहियो ने देखलिऐ। जखन कि बिशेसरक मनमे उठलै- दुओ मासमे सबहक घर बनत की नहि! जेकरा सभ समचा छै ओ तँ लगले घर बना लेत मुदा जेकरा किछु ने छै ओ तँ पछुआ जाएत! बिनु घरे रहत केतए..?

दुनू परानीकेँ रंग-बिरंगक बात मनमे उठए लगलै। तमाकुल चुना कऽ बिशेसर खेलक। तमाकुल खाइते मनमे एलै जे तत्खनात जे उजड़ल-पुजड़ल घरक समान हएत ओकरे काटि-छाँटि कऽ खोपड़ी जकाँ बना लेत। दू मास जे बोइन-बुता करत ओइसँ बाँसो आ खढ़ो कीनि पछाइत घर बान्हि लेत। ततमत करैत दुनू परानी उठि कऽ विदा भेल।

नैहर बुझि मोहिनी मोटरी माथपर लेलक। आगू-आगू मोहिनी आ पाछू-पाछू बिशेसर चलल। मोहिनीक भाइयो बोनिहार। एक्केटा घर मोहनाकेँ। मोहनाक घरक चार अन्हड़मे उड़ि कऽ एकटा केरा गाछपर लटकल, एकटा चार गाछपर अँटकल आ दोसर बाड़ीमे खसल। केरो गाछक मुड़ी सभ टुटि-टुटि निच्चाँ-मुहेँ लटकल।

आँगन पहुँचते मोहिनीक माथपरसँ भौजाइ मोटरी उताइर ओसारपर रखलक।

मोहना ठाठक बन्हन काटि-काटि एक दिस कोरो रखैत आ दोसर दिस बत्ती। झोलाएल घर रहने दुनू परानी मोहना झोलसँ कारी खटखट भेल। बचनी मोटरी रखि अँगनेमे बिछान बिछा, बिशेसरकेँ बैसैले कहि

लोटा लऽ कलपर सँ पानि आनए गेल। बिशेसर धोती-अँगा बदैल पानि पीब हाँसू लऽ ठाठक कोरो बत्तीक बन्हन काटि-काटि छँटियाबए लगल।

मोटरी खोलि बचनी चाउर निकालि भानसक सुर-सार करए लगली। छोट खुट्टीक बचनी, मेघदूती रंग, दोहरा देह, नमहर केश, करजनी सन गोल-गोल दुनू आँखि। जेहने बजैमे चरफर तेहने काजोमे पिच्छर। मुस्कियाइत बचनी मोहिनीकेँ कहलक- "भगवानो खूब होरी खेलेलैथ! एक्के क्षणमे सौंसे गामक घर उजाड़ि कऽ फेक देलखिन।"

जहिना दुनू सारे-बहनोइ– बिशेसर आ मोहना, घरक ठाठ तैयार करैमे भीड़ल तहिना बचनी आ मोहिनी भानसमे। हाँसूसँ बन्हन कटैत बिशेसरक नजैर कोरोक दोगमे बगराक खोंतापर पड़लै। दुनू बगरा मुइल आ थौआ-थाकर अण्डा। बगराकेँ खाइले जे साँखर साँप अबै छल, ओहो खोंताक बगलेमे मुइल पड़ल। बन्हन काटब छोड़ि बिशेसर हँसुआक नोकसँ बगड़ो आ साँपोकेँ उनटा-पुनटा देखए लगल। कनी काल देखि दुनूकेँ हँसुआसँ हटा काज करए लगल।

एगारहक अमल भऽ गेल। रौदो खड़ा गेल। दुनू ठाठक कोरो-बत्ती सेहो तैयार भऽ गेल। सड़ल कोरो आ सड़ल बत्तीकेँ छाँटि जारैन-ले रखि लेलक। रौदमे काज करब कठिन बुझि बिशेसर लतामक गाछक छाहैरमे ठाठ बैसबए लगल। मने-मन हिसाब जोड़ि बिशेसर दू हाथ छोट ठाठ बैसौलक। मोहनाकेँ अपना बाँस नहि, तँए पुरने कोरो-बत्तीसँ काज चलबए चाहलक। ठाठ बैसा दुनू गोरे हाथ-पएर धोइ खाइले गेल। खा कऽ कनी काल लोट-पोट केलक। पछाइत दुनू गोरे ठाठ बान्हए लगल। सोझका ठाठ तँए चारि बजैत-बजैत दुनू तैयार भऽ गेल। ठाठ बन्हिते दुनू गोरे नओटा खुट्टा गाड़ए लगल। नओ खुट्टा गाड़ि ठाठ चढ़ेलक।

मोहनी आ बचनी कुड़कुट, बत्तीक टुकड़ी आ सड़लाहा कोरो सभ समेट कऽ जारैन-ले रखि लेलक आ नीकहा खढ़ सभकेँ समेट अँटियबैले बेरा कऽ रखलक। दुनू गोरे खर्ड़ासँ सौंसे खररलक।

काज लगिचाएल देखि मोहना बिशेसरकेँ कहलक- "पाहुन आब छोड़ि दियौ। काल्हि कऽ लेब। कोनो की भादो मास छी। काज चलै-जोकर

तँ भइये गेल।”

हँसैत बिशेसर बाजल- “जेहने कोंढ़ि अहाँ छी, तेहने भुटिया घरवाली छैथ। टहटहौआ इजोरिया अछि। दुनू ननैद-भौजाइ नमहर-नमहर आँटी बान्हत। अहाँ चारपर फेकब हम ऊपरेमे सेरिया-सेरिया छाड़ैत जाएब। खाइ-पीबै राति धरि मठौतो मरा जाएत।”

मोहना तरे-तर खुशी होइत जे काल्हि घर गिरल आइ बनि गेल! मुदा रौतुका जगरनासँ मोहनाक देह भँसियाइत। भरि राति दुनू परानी मोहना आ बचनी जगले रहि गेल छल। एकटा ठाठ जखन छड़ा गेलै तखन बिशेसर मोहिनीकेँ कहलक- “आब अहाँ दुनू गोरे नहाउ-सोनाउ गे। भानसो करए पड़त। ताबे हम दुनू गोरे काज करै छी।”

मोहिनी आ बचनी नहाइले चलि गेल। नहा कऽ आबि भानस करए लगल। घरो छड़ा गेल। चारपर सँ उतैर बिशेसर मोहनाकेँ कहलक-

“आइसँ सीख लीअ जे जेते नमहर विपैत आबए तइसँ बेसी अपन हिम्मत करी। जेते हिम्मत करब तेते असानीसँ काज हएत। अपन काज तँ लगिचाइए गेल, खाली टाट छुटल अछि। चारि बजे भोरे जाबे कौआ-डकतै-डकतै टाटो बैसा लेब। किरिण फुटैत-फुटैत ओहो बान्हि लेब। तइले भरि दिन किए बरदाएब।”

कहि दुनू गोरे नहाइले गेल। दुनू गोरे नहा कऽ आबि अँगनेमे बिछानपर बैसल। राति बेसी भेनौं बिशेसर थोड़े काल भजन केलक। पछाइत मोहनाकेँ कहलक- “कनी रवियाकेँ शोर पाड़ियौ?”

रविया मोहनाक पितियौत भाए। भरि दिन रविया दुनू परानी ठाठक बन्हन कटलक मुदा तैयो रहिये गेलइ। अबिते रविया पहिने बिशेसरकेँ आ पछाइत मोहिनीकेँ गोड़ लागि बाजल- “पाहुन, किए शोर पाड़लौं?”

मुस्की दैत बिशेसर कहलक- “रवि, हम सिरिफ मोहनेक बहनोइ नइ, अहूँक छी आ समाजोक छिऐ। तँए जाबे गामक सबहक घर नै बनि जाएत ताबे रहि सभकेँ मदैत करबै। भरि दिन काज करबै दुनू साँझ खेबइ। एक्को पाइ केकरोसँ बोइन नइ लेबइ।”

बिशेसरक बात सुनि रवियाक मन खुशीसँ गदगद भऽ गेलइ।

बाजल-

"मोहना-भैयाक घर भऽ जेतै तखन ने हमर घर बान्हब?"

बिशेसर कहलक-

"मोहनक घर बनि गेल। सिरिफ टाटेटा लगबैले अछि जे घड़ी-पहर बान्हि लेब। काल्हि दुनू गोरे अहींक घर बान्हब।"

नमहर साँस छोड़ैत रविया बाजल-

"पाहुन, ठीके कहबी छै- 'एक गरूकैँ बहत्तैर आशा।' हमरा होइ छेलए जे घरमे बोइन नै अछि। अपनो बोइन नै करब तँ खाएब की?"

आशा दैत बिशेसर बाजल-

"रवि, हम बोइन करए नै एलौं। जँ बोइन करैक रहैत तँ बड़ीटा दुनियाँ छइ। केतौ करितौं, तइले सासुरे किए अबितौं। दस सेर दस टाका तँ अछि नहि जे तइसँ केकरो मदैत करबै मुदा देह तँ अछि। ऐ देहसँ जेते जेकर मदैत हेतै, करबै।"

रविया-

"पाहुन घरक सभ चीज बाहरेमे छिड़ियाएल अछि। रौतुका समय छिऐ। अखन जाइ छी।"

रविया चलि गेल।

भुरूकबा उगल। मुर्गी वाँग दिअ लगल। फरीच जकाँ होइते छल कि बिशेसर मोहनाकैँ उठौलक। दुनू गोरे बत्ती-कड़ची जोड़िया पछबरिया टाट बैसौलक। जाबे सुरूज उगल ताबे टाट बान्हि पच्छिमसँ घरमे सटा देलक। टाटकैँ सोझ-साझ कऽ तीनू खुट्टामे चारि-चारिटा बन्हन दऽ देलक।

रविया ऐठाम बिशेसर विदा भेल। मोहना बीड़ी पीबै दुआरे पछुआ गेल। बिशेसरकैँ पहुँचते, रवियाक स्त्री सौंसे मुँह झोल लगा देलकै। बिशेसरकैँ कोनो गम नहि। धैनसन। मुनेसरी, जेहने बजैमे हलबलिया तेहने मुहोँ चमकबैमे। कनडेरिए आँखिए मुस्की दैत मुनेसरी बिशेसरकैँ कहलक-

"पाहुन, अहाँसँ हम बाजी लगाएब। जँ अहाँ हमरा काजमे हरा देब तँ हम अहीं सेने चलि जाएब, नइ तँ अहाँ..?"

मुँहक कारीख तौनीसँ पोछि बिशेसर जवाब देलक-

“अहाँमे हम केना सकब। अहाँ दू दाँतक बछौर छी, हम बुढ़ भेलौं। बाजी लगा हम जान गमाएब।”

चारू गोरे मिलि भरिए दिनमे घर ठाढ़ कऽ केलक। टाटो लगा लेलक। बिशेसर नहाइले गेल आ रविया दुनू परानी सौंसे खरड़लक। पहिने खर्ड़ासँ खड़ैर, पाछू बाढ़ैनसँ बहारलक। आँगन-घर तँ कारीए रहलै मुदा खढ़-पात साफ भऽ गेलइ। नहा कऽ आबि बिशेसर खौजरी निकालि भजन करए लगल।

परसू घरि रोहितपुर भकोभन लगै छल मुदा गोटि-पँगरा घर ठाढ़ भेने किछु-किछु चुहचुही आबि गेल।

कचहरीक गुमश्ता आ बराहिल रोहितपुर आबि सगरे गाम घुमि-फिर कऽ देखलक। सौंसे गामक गिरल घर लिखि गुमश्ता राजक मदैत-ले पटवारी ऐठाम जा मुहोसँ कहलक आ गिरल घरक सूचियो देलक। आफद-असमानीमे राज मदैत करैत। पटवारी गुमश्ताक सभ बात सुनि कागत तैयार कऽ मनेजर लग जा सभ बात कहलक। मनेजर, हजारटा बाँस, हजार बोझ खढ़, हजार बोझ खरही आ हजार मुट्ठी साबे बँटैक आदेश दऽ देलक। आदेशक चिट्ठी पटवारीकेँ दैत फुसफुसा कऽ कानमे कहलक- “अदहा बेच हमरा दऽ देब आ अदहा गाममे बाँटि देबइ।”

मनेजरक हिसाब सुनि पटवारी अपन हिसाब मने-मन जोड़ि पनरह दिनक समय लऽ लेलक। दोसर दिन कचहरी आबि गुमश्ताकेँ आदेशक चिट्ठी दैत कहलक-

“अढ़ाइ-अढ़ाइ साए सभ चीज बाँटि देबै, बाँकी साढ़े सत-सत-साएकेँ बेच कऽ दस दिनक भीतर पठा देब।”

जाबे पटवारी गुमश्तासँ गप-सप्प केलक ताबे बराहिल गंज बाजारसँ ताड़ियो मंगौलक आ पोखैरसँ माछो ऊपर करबौलक। अण्डाएल अनेरूआ रौह माछ, खूब नमहर-नमहर कुटिया बना तड़बौलक। तीनू गोरे माछक चखना आ ताड़ी भरि-भरि मन खेलक-पीलक। खा-पी कऽ पटवारी चलि गेल।

गुमश्ता बराहिलकेँ पटवारीक हुकुम सुनौलक। चिट्ठियो देखए देलकै। बराहिलकेँ ताड़ीक निशाँ चढ़ि गेल रहइ। ललैक कऽ बाजल-

“एक-एक हजार समानमे साढ़े सत-सत साए बेचिए कऽ जँ आपसे कऽ देबै तँ गामक लोककेँ की देबै आ अपना दुनू गोरेक हिस्सा की हएत? जेकर घर उजड़लै दुख ओकरा होइ छइ। हम गौंआँ छी। गामक मरद-मौगी तँ हमरे मुँह नोंचत। एहेन काज हम किनौं नै करब। जाइ छी।”

गुमश्ता बराहिलसँ डरितो। बराहिलक विचारो ओजनदार। गम्भीर होइत गुमश्ता बराहिलकेँ कहलक- “अखन हमरो निशाँ लगि गेल अछि, अखन जाउ। निचेनमे काल्हि भिनसर गप करब।”

बराहिल कचहरीसँ विदा भऽ गेल। कचहरीसँ निकैलते, गुमश्ता-पटवारीक सातो पुरुखाकेँ गरियबैत घरपर आएल। घरपर आबि चौकीपर बैस आरो जोर-जोरसँ दुनू गोरेकेँ गरियाबए लगल- “सभटा चोर अछि! जेकर घर खसलै ओ वेचारा त्राहि-कृष्ण कऽ रहल अछि आ हिनका सभकेँ मोजेक-मोजे जमीन! तीन-तीनटा बौह। दहाइक-दहाइ बेटा-बेटी, तैयो सवुर नहि! हम समाजमे रहै छी। समाजक सुख-दुखकेँ अपन सुख-दुख बुझै छी। कोठरीक पंखा तरमे बैसनिहार गरीबक दुख की बुझत?”

बराहिलक गरियबैत देखि-सुनि गौंआँ-घरूआ जमा भऽ गेल। जेते लोककेँ बराहिल देखैत ओते तामस चढ़ल जाइत। भरि मन खूब गरियौलक। निशोँ रसे-रसे उतरए लगलै।

सबेरे आठ बजे बराहिल कचहरी पहुँचल। गुमश्ता, भिनसुरका खोराक ताड़ी पीब नेने छल। बराहिलकेँ देखिते गुमश्ता आग्रह करैत कहए लगल -

“आबह-आबह बराहिल! साँझखन जहिना तोहर मन खराब भऽ गेल रहह तहिना पटवारीक हुकुम सुनि हमरो भऽ गेल रहए। ऐठाम तँ हमहीं-तोहीं रहै छी। ऐठामक नीक-अधला तँ हमरे-तोरे सोचए पड़तह। मुदा एक दिस समाजक बीच रहै छी दोसर दिस राजक नोकरी सेहो करै छी। तँए दुनूकेँ मिला चलए पड़तह। जइसँ साँपो मरै आ लाठियो ने टुटइ।”

कहि गुमश्ता घरसँ ताड़ीक डाबा निकाललक। चारि गिलास अपनो

आ चारि गिलास बराहिलोकेँ पिऔलक। ताड़ी पीबते बराहिलक मन शान्त भेल। बराहिलक सभ तामस ताड़ी तरमे दबा गेल। मुस्कियाइत गुमश्ता बराहिलकेँ कहलक-

“हजार बाँस, हजार बोझ खढ़, हजार बोझ खरही आ हजार मुट्ठी साबे बँटैक जे आदेश भेल अछि, ओ तँ हमहीं तोहीं बँटबै। कियो तँ देखैले नै औत। जे मन फूरत से करब। तोहर की विचार?”

गुमश्ताक विचार बराहिलकेँ जँचल। मुड़ी डोलबैत बराहिल बाजल-

“हौउ, गुमश्ता साहैब अहाँ अनतए रहै छी। हम तँ गामक छी। हमरा तँ दुनू देखए पड़त।”

“हँ, बिल्कुल ठीक कहलह।”

“केना मिला कऽ चलब?”

गुमश्ता-

“सभ वस्तुकेँ डेढ़िया कऽ दहक। साढ़े सात-सात साइक हिस्सा आगू पठा देबइ। अदहामे दू-दू साए सभ वस्तु बाँटि देबइ। बाँकी बेच कऽ दुनू गोरे अदहा-अदहा बाँटि लेब।”

बराहिल-

“हँ, ई एकतरहक विचार अछि। ई करब कन्ना?”

गुमश्ता-

“पाँचो जातिक मैनजनकेँ बजा लाबह। एक-एक साए सभ चीज पाँचू मैनजनकेँ दऽ देब। एक-एक साए तूँ अपन मेलुआकेँ दऽ दिहक। मैनजनेकेँ भार दऽ देबै जे कचहरीक हुकुम अछि आदहा-अदहा दाम सभ वस्तुक लगत।”

बराहिल मानि गेल। समान लेबालक कमी नहि। खाँहिस सभकेँ। केकरो बाँसक जरूरी तँ केकरो खढ़क। बाँसक बीट-लग जा बराहिल बाँस कटबए लगल। अदहा दाम लैत जाए आ बाँस कटबैत जाए। किछु गोरे उधारियो लैलक। खढ़, खरही, साबे सेहो अनधुन बराहिल बेचए लगल। जखन सभकेँ मंगनी, मोल, उधारी बाँस, खढ़, खरही आ साबे भेटलै

तखन रोहितपुरबलाकेँ राजक एहसास भेलइ। आफत-असमानीमे राज मदैतो करैए!

रोहितपुरक सभ बोनिहार घरहटिया नहि। तँए काज रहनौं बोनिहार बेकार बैसल। बोनिहारकेँ बैसारी देखि बिशेसर सभकेँ बजौलक। एका-एकी बिशेसर सभकेँ पुछए लगल-

“अहाँकेँ बाँस काटल हएत?”

‘हँ’

‘बत्ती चीरल हएत?”

‘हँ’

‘बत्ती छिलल हएत?”

‘हँ’

‘बन्हन देल हएत?”

‘हँ’

‘खढ़ अँटियौल हएत?”

‘हँ’

‘खरौआ जौर बाँटल हएत?”

‘हँ’

‘टाट बान्हल हएत?”

‘हँ’

“जखन सभ काज करैक लूरि ऐछे तखन बैसल किए छी?”

जेकर-जेकर घरहट बाँकी छल, सबहक ओइठाम बिशेसर जा-जा कहलक-

“अनेरे अहाँ सभ घरहट पछूएने छी। जहिना बड़का भुमकम भेने छोट-छोट झटका अबैत रहैए तहिना जँ अन्हड़ोक होइ तखन तँ पहपैटमे पड़ि जाएब। तँए जेते जल्दी भऽ सकए ओते जल्दी घरहट कऽ लिअ। समानो अछिए। बनौनिहारो अछिए। तखन अनेरे पछुएलासँ की लाभ।”

मुदा गामक लोक तँ अखन धरि यएह बुझैत जे पाँचे-छअ गोरे घरहटिया अछि जे काज करिते अछि। बेरे-बेरी ने हएत।

बिशेसर सभ बोनिहारकेँ बजा कहलक- “अपन-अपन सभ मेड़िया बना-बना सभसँ काज कराउ। काजो अधिक हएत आ बोनिहार सभकेँ बैसारियो नइ हएत?” लाटमे काज केलासँ सभ सीखबो करत आ रोजियो चलतै।”

बिशेसर बढ़ियाँ घरहटिया जे सभ बुझैत। अखन धरि गाममे बिनु कोनो कारणेँ, एक-दोसरक बीच कटुता, दुश्मनी जे छल ओ बिहाड़िक विपैतमे उड़ए लगल। भाए-भैयारी जकाँ सम्बन्ध बढ़ए लगल। नव विचारक जन्म समाजमे भेल। हँसी-मजाक, खिस्सा-पिहानिक बीच सभ काज करए लगल। साँझ पड़िते सभ काज छोड़ि, अपनामे सभ विचार करैत जे केकर-केकर घरहट आइ भेल आ केकर-केकर बाँकी रहल।

अखन धरि जे जातीय कटुता, धरमक उन्माद सबहक मनमे छेलै ओ धीरे-धीरे कमए लगल। छुआ-छूत, ऐगली-पैछलीक विचार ढील हुअ लगल। सभ मनुक्ख छी, सबहक देहमे एक्के रंग खून अछि तँए सभ एकरंग छी।

बिशेसरक चर्च सौंसे गाममे चलए लगल। जैठाम बिशेसर काज करै छल तहीठाम रहि खेबो करए आ साँझू पहर खौजरी बजा भजनो करए।

अमृतलाल बड़ धनीक तँ नइ मुदा मध्यम रहलासँ समाजमे प्रतिष्ठित बुझल जाइत। हुनको दूटा घर गिरल आ दूटाक कोनचर उजड़ल रहैन। अमृतलाल बिशेसरकेँ कहलखिन-

“पाहुन, बजैत तँ लाज होइए मुदा विपैतमे पड़ल छी। काल्हिसँ हमरो घरहट कऽ दिअ?

हँसैत बिशेसर उत्तर देलकैन-

“जिनगीमे अहिना आपैत-विपैत अबैत-जाइत रहै छै आ अबैत-जाइत रहत। जहियासँ मनुक्ख अछि तहियेसँ हजारो-लाखो बेर अन्हड़-तूफान, पानि-पाथर आ भुमकम होइत आएल तँए कि मनुक्ख मेटा गेल? जहिना हमर-अहाँक पुरखा सभ विपैतकेँ झेललैन तहिना हमहूँ सभ

झेलब। तइले निराश किए हएब। अखन हमहीं-अहाँ छी तँए अखन हमरे-अहाँकेँ सामना करए पड़त। आगू-ले ऐगला पीढ़ी करत।”

बिशेसरक विचार अमृतलालक हृदयमे चुभि गेलैन। कनी काल गुम्म रहि बजला- “पाहुन, अहाँ गरीब रहितो देहसँ मदैत करए एलौं। ऐसँ पैघ की भऽ सकैए। अखन अहूँ भजन करैले सुढ़ियाएल छी आ हमरो बहुत काज सभ अछि। जाइ छी।”

अमृतलाल चलि गेला। बिशेसर भजन करए लगल। आँगन पहुँच अमृतलाल पत्नीकेँ बिशेसरक सम्बन्धमे कहलखिन। नैहरमे सावित्रीक घर एकटा पण्डितक घर लग छैन। बच्चेसँ सावित्री पण्डितजीक अचार-विचारसँ प्रभावित। सावित्री बजली- “यएह छी मनुक्खक महानता। जे विपैतमे समाँग जकाँ मदैत करए। खेनाइ तँ घरोक लोक खाइए। मुदा अपनो खनदान दिस तँ तकबै, जँ मंगनी कोनो समान भेटत तँ ढेरिया लेब। गामोक बोनिहार तँ बोइन-जलखै लैते अछि मुदा बिशेसर-पाहुन तँ खेबेटा करता। गामक जमाए छैथ, ईहो तँ बुझए पड़त। जहिना ओ हमर घर बनौता तहिना तँ हमरो सोचए पड़त।”

अमृतलाल-

“हँ, ई तँ ठीके कहलौं। अहाँक की विचार?”

सावित्री-

“जखन घरहट भऽ जाएत, तखन हुनका धोती पहिरा विदा करबैन। खेनाइ तँ अनको-आन दइए।”

भोरे बिशेसर मेड़ियाक संग अमृतलाल ऐठाम आएल। अमृतलाल घरक समचा जोड़ियबैत रहैथ। अबिते बिशेसर धोती-अँगा बदैल पुरना धोतीक टुकड़ा पहिर अमृतलालकेँ कहलखिन- “पहिलुके जकाँ घर बनाएब आकि ओइसँ छोट-पैघ?”

अमृतलाल- “घर तँ ओतबेटा बनाएब। मुदा कोरो-बत्ती नव-पुरान मिला कऽ देबइ।”

बिशेसरकेँ देखि सावित्री मने-मन सोचए लगली- बिशेसर गरीबक सकलमे साक्षात् महादेव छैथ। तँए अनका ऐठाम जेहेन खेनाइ-पिनाइ भेल

होइन मुदा हमरो तँ प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि। जहिना अपन जमाए तहिना तँ समाजोक।

मासे दिनमे, उजड़ल गाम पुनः नव बनि गेल। दुनू परानी बिशेसर अपना गाम विदा भेल। रोहितपुर सिरिफ घरेटा सँ नै विचारोसँ नव बनि गेल। ❑

तीन

रोहितपुरसँ सटले लालपुर। घनगर बस्ती, सभ जातिक लोक बसल। परोपट्टामे सभसँ पुरान गाम। घनगर तेहेन जे बहुतो गोरे बेटा-बेटीक बिआह गामेमे केने। बस्तियो तेहेन गदाल जे आइ तक कियो नै सौंसे गामकेँ भोज खुआ सकल। ओना, सभ जातिक बीच जबार, सौजनी आ सभैती भोज आइ धरि अपन-अपन आन-आन गामसँ चलैत। शुरूमे गाम उत्तरे दछिने बसल। मुदा परिवारो बढ़लासँ आ आनो-आनो गामक लोककेँ आबि बसलासँ गामक नक्शे बदैल गेल। जहिना उत्तरे-दछिने पहिने छल गाम तहिना आब पुबे-पच्छिमे भऽ गेल। जे कियो आन-आन गाम जा कऽ पढ़लक मात्र ओतबे पढ़ल-लिखल लोक गाममे। ने रोहितपुरमे स्कूल आ ने लगे-पासक कोनो गाममे। गाममे एकटा हकीम जे मात्रिक-अलीनगरमे जा पढ़ने। ओइ हकीमक माम बढ़ियाँ हकीम जे अपने लग रखि भागिनकेँ पढ़ौने। पढ़ल-लिखलमे एकटा दीनानाथ जे वैदागिरी करैत। परोपट्टामे एकेटा वैद दीनानाथक जोड़ा नहि।

बच्चेमे दीनानाथ घरसँ पड़ा गेल रहए। पड़ाइक कारण भेलै जे जखन आठे-नअ बर्खक रहए तहिये माए मरि गेलइ। पिता दोसर बिआह कऽ लेलखिन। पिता तँ दीनानाथकेँ बेटे जकाँ मानथिन मुदा सतमाए फुटलो आँखिए नै देखए चाहथिन। हदिघड़ी दीनानाथकेँ दू-चारिटा बात-कथा कहिते रहथिन। माइक बातसँ तंग आबि दीनानाथ घरसँ पड़ा गेल। लालपुरोक आ लगो-पासक गामक पच्चीस-तीस गोरे पटुआ काटए मोरंग-दिनाजपुर जाइत रहए। ओही मेड़ियाक संग दीनानाथ धऽ लेलक। भोरुके

गाड़ी पकड़ैक विचार सबहक भेलै, किएक तँ तमुरियासँ निर्मली जाइक गाड़ी तीन बजे भोरमे रहइ। जँ ऐ गाड़ीसँ नै जाएब तँ पछाइत दस बजे दिनमे गाड़ी तमुरियासँ निर्मलीक अछि। जेकरा पकड़ने बारह-एक बजे निर्मलीए पहुँचब। जइसँ गेलापर कोसियो धार पार भेल हएत की नहि? ई शंका सबहक मनमे रहइ। मुदा तीन बजे भोरुका गाड़ी पकड़ने साढ़े पाँच-छअ बजे निर्मली पहुँच जाएत। जइसँ गेलापर लोक असानीसँ सबेर-सकाल कोसीपार भऽ आठ नअ बजे राति होइत-होइत बथनाहा पहुँच जाइए।

बथनाहासँ जोगबनी जाइक अन्तिम बस साढ़े-दस बजे रातिमे तँए ओकरा ठेकानि कऽ सबहक संग दिनानाथो विचारि लेलक जे भोरुका गाड़ी पकैड़ विदा हएब। ने माएकेँ किछु कहबैन आ ने पिताकेँ। चुप-चाप विदा भऽ जाएब। जँ माए-बाबूकेँ कहबैन तँ जाइए-कालमे अट्ठाबज्जर खसत। तँए ने दीनानाथ कपड़ा-लत्ता साफ केलक आ ने बटखरचा-ले केकरो कहलक। मने-मन दीनानाथ विचारि नेने जे माएबला चानीक पाइत आ सोनाक छक जे चोरा कऽ रखने छी, ओ लऽ लेब आ निर्मलीमे बेच बटखरचोक ओरियान कऽ लेब आ पेंटो-गंजी कीनि लेब। नाहक खेबाइ आ बसक भाड़ा सेहो भइये जाएत।

रातिए-मे पटुआ कटनिहार सभ खा-पी कऽ गाड़ी पकड़ैले तमुरिया विदा भेल। किएक तँ एक-दू गोरे तँ छी नहि। पच्चीस-तीस गोरेक संगोर करैमे गाड़ीए छुटि सकैए। सबेर-सकाल टीशन पहुँचने ओतै मुसाफिर खानामे कनी काल सुतियो रहब आ भोरमे गाड़ियो असानीसँ पकड़ा जाएत। दीनानाथो पाइत आ छक लऽ संग लगि गेल। तमुरिया स्टेशन पहुँच सभ अपनामे विचार केलक जे भाड़ा-भुड़ीक पाइ एकठाम जमा कऽ लिअ। किएक तँ सभ जँ अपन-अपन दिअ लगबै तँ हूलि-मालि हुअ लगत। ई सोचि तीन-तीन रुपैआ सभ कियो बौआजी लग जमा केलक। बौआजी सबहक मेट। साले-साल पटुआ काटैले, धान रौपैले आ धान काटैले मोरंग जाइत-अबैत।

दीनानाथ तमुरियामे टिकट नइ कटौलक किएक तँ पाइए ने रहइ। भोरमे गाड़ी अबिते सभ चढ़ि गेल। निर्मली पहुँचैत-पहुँचैत भिनसर भऽ

गेलइ। गाड़ीसँ उतैर दीनानाथ बौआजीकेँ कहलक- “कक्का, हमरा एकजोड़ चानीक ‘पाइत’ आ एकटा सोनाक ‘छक’ अछि। ओकरा बेच दिअ। जइसँ बटखरचो भऽ जाएत आ कपड़ो नइ अछि सेहो कीनि लेब।”

दीनानाथक बात सुनि बौआजी पुछलक- “बौआ, तूँ जे हमरा सबहक संग जाइ छह से तोरा बुते पटुआ काटल हेतह। पटुआ काटैमे बड़ भीड़ होइ छइ। तहूमे मोटका-मोटका जोंक सेहो पकड़ै छइ।”

दीनानाथ तँ घरसँ तंग आबि भागल, तँए जीबठ बान्हि बाजल-

“हम केतौ नोकरीए धऽ लेब। नै बहुत दरमाहा देत तँ नै देत। कम-सँ-कम खाइयोले तँ देत।”

दीनानाथक बात सुनि बौआजी गुम्म भऽ गेल। सभकेँ मुसाफिर खानामे बैसाए दीनानाथकेँ संग केने बाजार विदा भेल। दोकानो सभ बन्ने। सोना-चानीक दोकानदार नहा कऽ पूजा करैत। बौआजीकेँ देखि रूपचन पुछलक- “हमरा दोकानक काज अछि?”

“हँ, एक जोड़ पाइत आ एकटा छक बेचैक अछि।”

आमदनी देखि रूपचन हाँइ-हाँइ पूजा कऽ दोकान लगौलक। भिनसुरका समय। तँए रूपचन सोचलक जे कम्मो नफ्फापर समान कीनि लेब। जँ गहिंकी घुमि कऽ चलि जाएत तँ भरि दिन खटपट होइते रहत।

दुनू वस्तुकेँ जोखि सेठजी आठ रुपैआ दाम सुनेलकै। आठ रुपैआ सुनि दीनानाथ मने-मन खुशी होइत जे बहुत भेल। आठो रुपैआ लऽ दीनानाथ एक रुपैआकेँ चूरा-मुरही, दू आनाक गुड़, एक रुपैआमे एकटा तौनी, एक रुपैआमे एकटा गंजी आ आठ आनामे एकटा झोरा कीनलक। झोरामे सभ समान रखि गंजी पहिर लेलक। टीशनपर आबि सबहक संग दीनानाथो विदा भेल।

निर्मलीसँ सोझे पूब-मुहेँ सभ विदा भेल। पाँच कोस पूब कोसी धार। तीनटा नमहर-नमहर धार सटले-सटल। जइ तीनूमे नाहसँ पार हुअ पड़ैत। पहिल धारक कात पहुँचैत-पहुँचैत दस बजि गेलइ। धारक कातमे ठीकेदार खोपड़ी बनौने। जैठाम तीनू धारक खेबा लइत।

सभ कियो ओइ खोपड़ीमे बैस जलखै करए लगल। जलखै खा सभ

कोसीए-क पानि पीलक। धारक पानियोँ हरिअर कचोर। पानि देखि सभकेँ नहाइक मन होइ मुदा रस्ता काटै दुआरे कियो ने नहाएल।

घाटक ठीकेदार छपरिया। जे खूब मनमानी घाटपर करैत। सुखलो धारक खेबा खिहारि-खिहारि ओसलैत। जँ कियो खेबा नै दिअ चाहै तँ ओकरा गरिएबो करैत आ मारबो करैत। मुदा बिनु खेबा नेने किनौं नइ छोड़ैत।

घुमती नाह अबिते सभ चढ़ल। नाह खुगलै। पानिक वेग देखि दीनानाथकेँ डर हुअ लगलै। बाँकी गोरे साले-साल पार होइत तँए सभकेँ बुझल। दीनानाथक मनमे होइ जे जँ कहीं बीच धारमे नाह डुमत तँ एक्को गोरे ने बँचब। तँए दीनानाथ मने-मन 'कोसी महरानी की जाय' जपए लगल..। तीनू धार पार होइत-होइत बेर झुकि गेल। नाहसँ उतैरते दीनानाथ कोसी धारकेँ गोड़ लगि सबहक संग विदा भेल।

बथनाहा पहुँचैत-पहुँचैत गोसाँइ डुमि गेलइ। भूखो सभकेँ लगि गेलइ। बस अबैमे देरी बुझि सभ अपन-अपन मोटरी खोलि चूरा निकालि खाए लगल। जाबे बस एलै ताबे सभ चूरा फाँकि-फाँकि पानि पीलक। बस अबिते बौआजी कन्टेक्टरकेँ सभ आदमीक गिनती करा चढ़ौलक। दीनानाथक अदहा मासुल आ सबहक पूरा मासुल जोड़ि बौआजी कन्टेक्टरकेँ दऽ देलक। बस चलल। जोगबनी जाइत-जाइत रातिक आठ बजि गेल।

जोगबनी आ बिराटनगरक बीच नेपाल भारतक सीमा। सीमापर एकटा पाथरक पीलर गाड़ल। रतिगर बुझि सभ सोचलक जे एतै राति बिताएब नीक हएत। बिजलीक इजोतो रहइ। बस स्टेण्डमे सभकेँ बैसा बौआजी रहैक जगह टेबए लगल। बिजलीक इजोतसँ दिने जकाँ बुझि पड़ैत।

बस स्टेण्डसँ बीघा भरि दच्छिन एकटा वैदक घर। घरक बगलेमे एकटा अशोकक गाछ। अशोकक गाछक निच्चाँमे ईटा-सिमटीक चबुतरा बनल। चबुतरा देखि बौआजीक मनमे एलै जे बड़ सुन्दर जगह अछि, एतै राति बिता लेब। चबुतराक बगलेमे एकटा चापा-कलो। बौआजी चबुतरा

देखि घुमि कऽ आबि सभकेँ कहलक। सभ अपन-अपन मोटरी लऽ विदा भेल। चबुतरापर सभ अपन-अपन मोटरी रखि कलपर हाथ-पएर धुअ लगल। हाथ-पएर धोइ सभ अपन-अपन मोटरी खोलि रोटी आ अल्लुक भुजिया निकालि-निकालि खाइक सुर-सार करए लगल। भरि दिन सभ फँके-फुँकी खा रस्ता काटने तँए सभकेँ जोरगर भूख लगल। दीनानाथकेँ रोटी नहि, तँए चूरा-गुड़ निकालि खाइक विचार केलक। चूरा-गुड़ देखि बौआजी दीनानाथकेँ कहलक- “बौआ, फाँक्का-फुँक्कीसँ पेट थोड़े भरै छइ। चूरा रखि लएह। हमरा तीन दिन खाइ-जोकर रोटी अछि। तोहूँ रोटीए खा।”

दीनानाथ चूरा रखि लेलक। बौआजी तीनटा रोटी आ भुजिया देलकै दीनानाथ खाए लगल। सभ कियो रोटी आ भुजिया खा भरि पेट पानि पीलक। पानि पीबते सभकेँ ओंघी लगलै। पतियानी लगा सभ सुति रहल। भरि दिनक सभ थाकल। एक्के निने राति बीत गेलइ। भोरे वैद टहलैले निकलला तँ दीनानाथकेँ कलपर मुँह-हाथ धोइत देखलैन। एकटकसँ वैद दीनानाथकेँ देखि लगमे जा पुछलखिन-

“बौआ, केतए रहै छह?”

दीनानाथ बाजल-

“मधमन्नी जिला रहै छी।”

“केतए जाइ छह?”

“नोकरी करए जाइ छी।”

नोकरीक नाओं सुनि, कनी काल गुम्म भऽ वैद पुछलखिन- “एतै रहबह?”

दीनानाथ-

“हँ, रहब।”

वैद-

“मेड़ियाक मेट के छिअ?”

दीनानाथ बौआजीकेँ ओंगरीसँ देखा देलक। बौआजी लग जा वैद

कहलखिन-

“ऐ बच्चाकेँ ऐठाम रहए दियौ। कोनो दिक्कत नइ हेतइ।”

बौआजी दीनानाथकेँ पुछलक- “बौआ, एतै रहबह?”

दीनानाकेँ मनमे रहै जे केतौ ठर लगत तँ रहि जाएब। बाजल- “हँ।”

दीनानाथ रहि गेल आ मेड़ियाक संग बौआजी पटुआ काटए विदा भेल।

सुशील अयुर्वेदिक वैद। दुइए परानी। दुनू परानी वैदागिरी करैथ। दीनानाथकेँ पाबि दुनू परानी सुशील हृदयसँ खुशी भेला। बेटा जकाँ दीनानाथकेँ मानए लगलखिन। दीनानाथो अपने माए-बाप जकाँ सेवा करए लगल। हदिघड़ी सुशील अपने संग दीनानाथकेँ राखए लगलखिन। सुशील जड़ी-बुटीक दवाइयो बनबैत रहैथ आ इलाजो करैथ। अपने बाड़ीमे सैयो किस्मक लत्तीसँ लऽ कऽ गाछ धरि लगौने। मासमे एक दिन उत्तरबरिया पहाड़पर सँ पहाड़ी जड़ी-बुटी आनए जाथि। दीनानाथोकेँ संग नेने जाथिन। पहाड़ो बेसी दूर नहि। छबे सात कोसपर। भिनसरे दुनू गोरे जलखै खा बस पकैड़ लैथ आ बेर धरि घुमि कऽ चलि अबैथ। शुरूमे तँ दीनानाथकेँ जड़ी चिन्हबए पड़लैन मुदा किछुए दिनक पछाइत दीनानाथो जड़ी चिन्हए लगल। साँझू पहरकेँ जखन रोगी एनाइ पतरा जाइत तखन सुशील दीनानाथकेँ पढ़ेबो-लिखेबो करै छेलखिन। दीनानाथ एते तल्लीन भऽ रहए लगल जे घरक सुधि-बुधि सभ बिसैर गेल।

दस बरख दीनानाथ सुशील वैद लग रहल। दसे बर्खमे दीनानाथ वैद बनि गेल। रोग चिन्हैसँ लऽ कऽ दवाइ देनाइ, दवाइ बनौनाइ सभ सीख लेलक। बच्चा दीनानाथ जुआन भऽ गेल। बिआह करै-जोकर भऽ गेल। सुशीलक विचार रहैन जे दीनानाथकेँ अहीठाम बिआह करा दिऐ, मुदा दीनानाथकेँ घरक सोह घींचए लगलै। बिसरल माए-बाप, सर-समाज मोन पड़ए लगलै। एक दिन दीनानाथ सुशीलकेँ कहलकैन-

“बाबूजी, हम गाम जाएब। बहुत दिन माता-पिता आ समाजक लोककेँ देखना भऽ गेल।”

दीनानाथक विचार सुनि सुशील बजला- “बौआ, दुनियाँ बड़ीटा

छइ। सभ मनुक्खकेँ चाही जे केतौ रहि मनुक्खक सेवा करी। यएह सभसँ पैघ धरम छी।"

दीनानाथ सिरिफ दवाइए-दारू नै सीखलक बल्कि जिनगीक नीक-अधला सेहो सीखलक। बाजल- "बाबूजी, मनुक्खक सेवा जरूर धरम होइत मुदा जैठामक लोक अधिक पछुआएल अछि ओकर सेवा तँ अगुआएल मनुक्खक सेवासँ पैघ होइत। ऐठाम देखै छी जे लोक बहुत अगुआएल अछि मुदा जैठाम हमर घर अछि, ओइठामक लोक बहुत पछुआएल अछि तँए ओकर सेवा करब हम पैघ बुझै छी।"

दीनानाथक विचार सुशीलक हृदयमे चुभि गेलैन। अपन सहमत दैत कहि देलखिन। दीनानाथ गाम चलि आएल।

गाम अबिते दीनानाकेँ देखैले गामक लोक उनैट गेल। अखन धरि सबहक मनमे यएह रहै जे दीनानाथ बौड़ गेल। मुदा बदलल दीनानाथ, गामक एक इंसान बनि, पारिवारिक नहि सामाजिक लोक बनि गाम आएल।

एक सुयोग्य वैद बुझि गौंआँ-सभ अपन-अपन समाँग बुझए लगल। सभ मने-मन सोचए लगल जे जइ दुखक चलैत परेशान रहै छेलौं ओइ परेशानीकेँ मेटबैबला आब गामेमे दीनानाथ भऽ गेल।

लालपुरमे सात पुश्तसँ लेलहाक घर। शुरूएमे लेलहाक पूर्वज जेतए घर बनौने छल ओतए बारह कट्ठा जमीन बनौलक। बीचमे घर आ चारूकात किछु बाड़ियो आ किछु धनखेतियो। लेलहाक परिवार एक-पुरखिया। खनदानमे बेटी तँ बेसियो होइत मुदा बेटा एक्केटा। लेलहोकेँ एक्केटा बेटा गुलबा। गुलबा लताम तोड़ए गाछपर चढ़ल। गाछेपर देह झुनझुनाए लगलै। पहिने तँ गुलबा बुझलक जे ऊँच-नीचमे पएर पड़ल तँए देह झुनझुनाएल मुदा झुनझुनी बढ़िते गेलइ। झुनझुनी बढ़ैत देखि गुलबा धड़फड़ा कऽ गाछपर सँ उतैर अँगना आबि माएकेँ कहलक-

"माए, सौंसे पीट्ठी झुनझुनाइए।"

झुनझुनी सुनि माए आँगनमे बिछान बिछा गुलबाकेँ सुतैले कहलक-आ घरसँ करूतेलक शीशी आनि मालिश करए लगल। मुदा तइसँ एक्को

मिसिया झुनझुनी कमल नहि। झुनझुनी बढ़ैत देखि गुलबा कानए लगल। कानब देखि गुलबाक माए-तेतरी पतिकेँ बजबए विदा भेल।

दछिनबरिया बाधमे लेलहा गाए चरबैत। फरिक्केसँ तेतरी, लेलहाकेँ गाए चरबैत देख, जोरसँ शोर पाड़ए लगल। मुदा पछबा हवा दुआरे लेलहा सुनबे ने करैत। तेतरी सोरो पाड़ैत आ आगू-मुहेँ बढ़लो जाइत। जखन तेतरी कनी और लग पहुँचल तखन लेलहा सुनि पुछलक- “किए एते हल्ला करै छी। कनी फरिछा कऽ कहूँ।”

“गुलबाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेलइ! चलू गामपर!”

भूतक नाओं सुनिते लेलहाक देह थरथराए लगलै। गाए हँकने घर दिस विदा भेल। तेतरी चोट्टे घुमि आएल। तीनू माल– गाए, गौड़ आ एकटा बच्छाकेँ हँकने लेलहा घरो दिस अबैत आ मने-मन विचारबो करैत जे अही बेर दशमीमे दूटा नवकी कनियाँ डाइन सीखलक। ओही दुनू मौगियामे केकरो किरदानी छी। भरिसक मन्तर पक्का बनबै दुआरे गुलबाक जान लेत।

घरपर आबि लेलहा तीनू मालकेँ बान्हि एक आहूल घास आगूमे दऽ गुलबाकेँ देखए अँगना आएल। टोलक लोकसँ अँगना भरल। लेलहाकेँ देखि एकटा बुड़ही, जिनका सभ दादी कहैत, बजली- “गुलबाकेँ भूत लगल छौ। झब-दे ढोरबाकेँ बजौने आ। माथाहाथ देतै, लगले छुटि जेतइ।”

दादीक बात सुनि तेतरी डपटैत घरबला-केँ कहलक- “बकर-बकर मुँह तकने हएत। जल्दी ढोरबा भैयाकेँ बजौने आउ?”

डरे लेलहाक देह थर-थर कँपैत। भूतक ओते डर लेलहाक मनमे नै होइत जेते गुलबा मरने वंशक अन्त होइक। दौगल लेलहा ढोरबा ऐठाम विदा भेल। ढोरबा घरपर नहि। बाँस काटैले बँसबारि गेल छल।

ढोरबाक घरपर लेलहा पहुँच भाँज लगबए लगल। मुदा घरपर कोनो भाँजे ने लगलै। बड़ी काल एमहर-ओमहर ताकि ढोरबाक भनसियाकेँ पुछलक। ढोरबाक भनसिया बाँस काटैक नाओं कहलकै। चोट्टे लेलहा ढोरबाक बँसबारि दिस विदा भेल।

तीन सलिया पाकल बाँस ढोरबा कटने, जे घींचले ने होइ। असगरे

ढोरबा अपसियाँत-अपसियाँत भेल। सगरे देह पसेनासँ भीजल। चारूकात आँखि उठा ढोरबा तकैत जे केकरो देखबै तँ शोर पाड़ि बाँस घींच लेब। लेलहाकेँ अबैत देखि ढोरबा बैस कऽ तमाकुल चुनबए लगल। जाबे लेलहा लग आएल, ताबे ढोरबो तमाकुल चुना अपनो मुँहमे लेलक आ लेलहो हाथमे देलक। लेलहाक कँपैत देह देखि ढोरबा पुछलक- "एना कँपै किए छह?"

मिरमिरा कऽ लेलहा बाजल- "भैया, की कहबह। छौड़ाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेलै तँए तोरा बजबैले दौगल एलौं। जल्दी चलह।"

लेलहाक बात सुनि ढोरबा बाजल-

"अहीले एते अपसियाँत छह! जखन आबि गेलह तँ भूत कि भूतक बापो रहत तँ छोड़ि कऽ भागए पड़तै। बाँस झोंझमे ओझरा गेल अछि, पहिने ओकरा उताइर दैह तखन चलब।"

लेलहा- "ताबे बाँस छोड़ि दहक। पहिने चलह। पछाइत बाँस उताइर कऽ लऽ जैहह।"

"झार-फूकक बात तूँ नै ने बुझबहक। गामपर जा कऽ पहिने हाथ-पएर धोअब, देहपर गंगाजल छीटब, तखन ने घरक गोसाइकेँ गोड़ लागि, देह बान्हि विदा हएब। एक-पर-एक दाय-माय आ एक-पर-एक करामाती डाइन-जोगिन छैथ। जँ कहीं उनटे चोट कऽ दैथ! तखन?"

दुनू गोरे बाँस घींचए लगल। केतबो जोर दुनू गोरे दइ मुदा बाँस निकलबे ने करैत। पात तोड़निहार बाँसक छिपकेँ कड़चीसँ गछाड़ि देने रहइ। ढोरबा हियासि कऽ बाँस देखए लगल तँ मुड़ी गछारल नजैर पड़लै। तखन ढोरबा बाँसपर चढ़ि गछरलाहा कड़चीकेँ काटलक। कड़ची काटि कऽ उतैर जहाँ दुनू गोरे एक्के जोर देलक कि बाँस हरहरा कऽ निकैल गेल। बाँस उतारिते ढोरबा हाँइ-हाँइ पाँगए लगल। लेलहा कड़ची बीछए लगल। कड़चीक बोझ बान्हि लेलहा लेलक आ ढोरबा बाँस कान्हपर लऽ विदा भेल।

घरपर अबिते ढोरबा इनारपर जा हाथ-पएर धोइ, आँगन जा गंगाजल छीटि, गोसाइकेँ गोड़ लगि, देह बान्हि निकलल। दुनू गोरे विदा

भेल।

लेलहाक आँगनमे लोकक करमान लगल। लेलहा ऐठाम पहुँचते ढोरबाकेँ तेतरी कहलक- “भैया, झब-दे देखथुन। गुलबाकेँ जी घींचने जाइ छइ।”

ढोरबा टीक खोलि लेलहाकेँ कहलक- “दूटा कुश लाबह।”

लेलहा बाजल- “भाय की कहबह, ऐ बेर तेहेन बाढ़ि आएल जे कुशो दहा गेल। गाममे कियो ने कुश उखाड़लक। एक्को दिन बाप-दादाकेँ जलो ने देलिऐ। केतएसँ कुश आनब।”

लेलहाक बात सुनि ढोरबा कहलक-

“नै कुश भेटतह तँ चौड़काँटू बाढ़ैनमे सँ दूटा नेने आबह।”

तेतरी बाढ़ैनमे सँ दूटा चौड़काँटू निकालि ढोरबाक हाथमे देलक। ढोरबा झार-फूक करए लगल। झाड़ैत-फुकैत जेते मन्तर ढोरबाकेँ अबैत रहै ओ सभटा ठोर पटपटबैत पढ़ि गेल। मंत्र पढ़ि मुहसँ फूकि गुलबाकेँ पुछलक- “बौआ, मन केहेन लगै छौ?”

कुहरैत गुलबा बाजल- “ओहिना लगैए।”

ढोरबा तेतरीकेँ कहलक- “सभकेँ अँगनासँ हटा दियौ। मनतर काजे ने करैए।”

सभकेँ अँगनासँ हटौला पछाइत ढोरबा जोर-जोरसँ मनतर पढ़ए लगल। मुदा तैयो गुलबाक कनकनी असान नइ भेल।

कनी काल गुम्म भऽ ढोरबा बाजल- “कनी पंचमीक माटि लाउ।”

पंचमीक माटि लेलहाकेँ अपना नहि, दशमीएमे चिक्कैन माटि नै रहने ओहीसँ घर नीपि लेलक। पड़ोसिया-आँगनसँ तेतरी पंचमीक माटि आनि, सिलौटपर लोढ़हीसँ फोड़ि चँगेरीमे देलक।

बाढ़ैनक खढ़ रखि ढोरबा पंचमी माटिसँ झारए लगल। बीच-बीचमे गुलबाकेँ पुछबो करइ-

“मन केहेन लगै छौ, हल्लुक लगै छौ किने?”

जखन ढोरबा झारि कऽ निचेन भेल तखन फेर गुलबाकेँ पुछलक-

“आब बाज केहेन लगै छौ?”

गुलबा बाजल- “ओहिना लगैए। एक्को मिसिया दुखेनाइ नै कमल।”

खिसिया कऽ ढोरबा विदा होइत लेलहार्कें कहलक-

“नवटोल गहवरसँ भगता बजा लाबह। हमरा बुते नै छुटतै।”

ढोरबार्कें विदा होइत देखि तेतरी घौना पसारि कनबो करए आ बजबो करए-

“हे बरहम बाबा हम कोन अपराध केलियह जे एते सतबै छह।”

लेलहोक आँखिमे नोर ढबढ़बा गेल। दुनू हाथ माथपर लऽ मने-मन सोचए लगल- आब गुलबा नै बँचत..! कनी काल गुन-धुन कऽ लेलहा नवटोल जाइले तैयार भेल।

कोसे भरिपर नवटोल। भगतजीकें बजबए लेलहा नवटोल विदा भेल। रस्तामे लेलहा मने-मन कौबला केलक जे ‘अगर गुलबार्कें दुख छुटि जाएत तँ जोड़ भरि छागर बरहम बाबार्कें चढ़ाएब।’ चलबो करए आ मने-मन लेलहा ‘जय बरहम बाबा, जय बरहम बाबा’ जपबो करए। नवटोल पहुँच लेलहा गहवरक भगतार्कें भँजियाबए लगल।

भगता गाममे नहि। उजानमे हैजा भेल ओतै गेल। सोगाएल मन लेलहा रहबे करइ। असोथकित भऽ गहवरक आगूक अशोकक गाछक निच्चाँमे बैस भगताक रस्ता देखए लगल।

उजानक चारू सीमा बान्हि भगता नवटोल विदा भेल। थोड़बे कालक पछाइत पहुँचल तँ एकरा बैसल देखलक। चिन्हैत नहि। भगते लेलहार्कें पुछलक-

“किए बैसल छी?”

सिमसल आँखि लेलहाक, पोछैत बाजल-

“भगतजीसँ काज अछि।”

“केहेन काज अछि, हमहीं छी।”

भगताक बात सुनि जेना वादलसँ झँपाएल सुरूज हवाक सिहकीसँ

वादलकेँ छँटिते भुक-दे उगैत तहिना लेलहाकेँ भेल। मुस्कियाइत लेलहा भगतजीकेँ कहलक-

“भगतजी, हमरा बेटाकेँ लतामक गाछपर भूत लगि गेल तँए बजबए एलौं।”

“हम तँ बेरागन दिनकेँ भाउ करै छी। आइ तँ बेरागन नै छी। डाली लगा दियौ शुक्र दिन आएब।”

बेवसीक आवाजमे लेलहा बाजल-

“भगतजी, कोनो उपाय करियौ। अहीं केने सभ हेतइ। बड़ आशासँ आएल छी। ओहिना केना घुमि जाएब?”

देरी होइत देखि तेतरी एक गोरेकेँ नवटोल पठौलक। धड़फड़ाएल आबि ओ लेलहाकेँ पुछलक- “तोरे आशा-वाटी सभ तकै छह तूँ आबि कऽ ऐठाम बैस रहलक?”

मन्हुआएल लेलहा, बाजल- “भगतजी नै छेलखिन तँए देरी भऽ गेल। अखने एलखिन तँ कहलयैन।”

ताबेमे भगतजी एकटा फूल नेने आबि दैत कहलखिन-

“गमछाक खूटमे बान्हि लिअ। घरपर पहुँचते कहालीकेँ खुआ देबइ। लगले छुटि जेतइ।”

फूल लऽ दुनू गोरे विदा भेल। रस्तामे होइ जे गुलबाकेँ की भेल हएत की नहि! मुदा करैत की। घरपर अबिते लेलहा गुलबाकेँ फूल खुऔलक। फूल खुएलाक कनीए कालक पछाइत लेलहा गुलबाकेँ पुछलक- “मन केहेन लगै छौ?”

गुलबा कुहरैत बाजल- “ओहिना लगैए”

गाममे अनेको रंगक बात चलैत। कियो बजैत-

“गुलबाकेँ डाइन केने छइ।”

तँ कियो कहैत-

“गुलबाकेँ देवी लगल छइ।”

कियो बजैत- “मोतिया बेटी- जे मरि गेल, तेकरे संग ने हदिघड़ी

खेलाइत रहै छल। वएह लगि गेल छइ। बिनु लऽ गेने थोड़े छोड़तै।"

बिच्चेमे गुलटेनमा आबि लेलहाकेँ कहलकै-

"एकटा गुनी कटहरबामे अछि, नेपालक सीख छी, ओकरा बजा आनह। जरूर छोड़ा देतइ"

कटहरबा लालपुरसँ सटले पच्छिममे कनीए-टा टोल अछि। कटहरक गाछ अधिक रहने 'कटहरबा' नाओं पड़लै। दौग-बड़हा करैत-करैत लेलहा असोथकित भऽ गेल। मुदा की करत। केतौ जाइक साहसे ने होइ मुदा विपैते तेहेन पड़ल छै मरितो दम तक छोड़त केना? लेलहा कटहरबा विदा भेल। कटहरबा जा गुनीकेँ भँजियौलक। गुनीसँ भेँट होइते लेलहा सभ बात कहलक। लेलहाक बात सुनि गुनी कहलकै- "हम तँ खाली जनिजातिये-टाकेँ झार-फूक करै छी। पुरुखक मनतर नै अबैए। हम जा कऽ की करब। जँ जनिजाति रहैत तँ गारंटी दऽ छोड़ा दैतौं। केतेकोकेँ छोड़ेलौं। केहेन-केहेन भुतलग्गूकेँ जे बताह जकाँ करै छल, छोड़ेलौं।"

गुनीक नाओं भालेसर। कमाइले भालेसर नेपाल गेल। बिराटनगर पहुँच भालेसर उत्तर-मुहेँ विदा भेल। जाइत-जाइत धरानसँ तीन किलोमीटर पाछुऐ रहै कि गोसाँइ डुमि गेल। जंगली-पहाड़ी रस्ता। आगू बढ़ैक हिम्मते ने भेलइ। रस्ताक पच्छिम एकटा दू महला काठक घर देखलक। ओइठाम जा भालेसर घरवारीकेँ कहलक जे राति-बीच रहब। खाइक समान हमरा अपने अछि। सिरिफ रहैले दिअ। घरवारी एकटा मौगी। ओइ मौगीक पति काठमाँडूमे नोकरी करैत। तीस-चालीस बीघा जमीन जे ओ मौगीए सम्हारैत। ओ मौगी गुनी सेहो। दूटा छोट-छोट बेटा-बेटी। दू घर एतए दू घर ओतए, अहिना गाम। सभकेँ दू महला-तीन महला काठक घर। घरक नीचला हन्नामे मोटका-मोटका सखुआक लकड़ीसँ घेर माल-जाल बान्हैत आ ऊपरमे अपने रहैत। ऊपर-निच्चाँ भालेसरकेँ देखि ओ गुनी बजली-

"एतए नोकरी करब?"

नोकरीक नाओं सुनि भालेसर 'हँ' कहलक। एक मास पहिनहि पहिलुका नोकर गाम गेलै से अखन धरि घुमि कऽ नै आएल। औत आकि

नै औत सेहो ठीक नहि। यएह बात सोचि गुनी भालेसरकेँ दू महलापर लऽ गेल। एकटा चौकीपर समानो रखैले आ बैसैयो-ले गुनी भालेसरकेँ कहलक। अखन धरि भालेसरकेँ कोनो चिन्ता मनमे नहि। मुदा जखन बुझलक जे मरद घरमे नइ छै, तखनसँ भालेसरक मनमे डर पैसए लगलै। गामक बात मोन पड़लै जे लोक सभ बजैए जे पूभर मौगी सभ पुरुखकेँ भेड़ा बना खेतमे चरैले ठोकि दइ छइ। जँ कहीं हमरो तहिना करए, तखन तँ गामक बाल-बच्चा सभ बिलैट जाएत! एलौं कमाइले आ भऽ जाएत किछु-सँ-किछु! मुदा आब अन्हारो भऽ गेल जँ जेबो करब आ रस्तामे बाघ सिंह खा गेल तखन तँ आरो चौपट भऽ जाएत! एते बात मनमे अबिते भालेसरक मन उड़ि गेल। किछु बजबे ने करए। चौकीएपर पड़ि रहल।

अभ्यागत बुझि गुनी भालेसरकेँ आगत-भागत करए लगली। पहिने चाह बना पिऔलक। चाह पीला पछाइत मुरही आ चारिटा अण्डा तड़ि कऽ जलखै करैले देलक। जेते गुनी सुआगत करैत तेते भालेसरक मन उड़ल जाइत। रातिमे हाँसक तीमक आ बासमती चाउरक भात खाइले देलकै। भालेसर रहि गेल हर जोतैसँ लऽ कऽ गाए-बरदकेँ खुआएब-पीआएब धरि काज। दू-तीन दिन धरि दुनूक बीच नोकर-मालिकक सम्बन्ध रहल, तेकर बाद दुनूक बीच सम्बन्ध बदलए लगल। हाट-बाजार सेहो दुनू संगे जाए-अबए लगल। ओही गुनीसँ भालेसर गुण सीखने।

भालेसर ऐठामसँ लेलहा अबिते छल तखने टोलेक एक आदमी दौगल लेलहा ऐठाम आएल। ताबे लेलहो पहुँचल। लेलहाकेँ तेतरी पुछलक- “की भेल?”

टुटैत आशाक स्वरमे लेलहा बाजल- “गुनी कहलक जे हम मरदनमा मनतर नै जनै छी, हम जा कऽ की करब।”

जे आदमी दौगल आएल छल ओ तेतरीकेँ कहलक- “भौजी, एकटा मालि झाँप बेचए आएल अछि, ओ कहलक जे हम छोड़ा देबइ। ओकरा हम अपना ऐठाम बैसौने छी। मुदा ओ कहलक जे बिनु घरवारी कहने नै जाएब।”

ओइ आदमीक संग लेलहा विदा भेल। मालिकेँ देख, दुनू हाथ जोड़ि

लेलहा बाजल- “एक्केटा बेटा अछि, जँ मरि जाएत तँ निपुत्र भऽ जाएब। सिरिफ निपुत्रेटा नै हएब खानदाने खतम भऽ जाएत। कहुना गुलबाकेँ भूत छोड़ा दियौ। बड़ गुन मानब।”

लेलहाक बात सुनि मालि कहलकै- “एक्कैसटा रुपैआ लगत। जे कोनो अपना खाइले नै लेब। तेते देवी-देवताक पूजा-पाठ करए पड़ैए, ओहीमे खर्च हएत।”

छगाएल मन लेलहाक, गछि लेलक। मालिकेँ संग केने घरपर आएल। आँगन आबि लेलहा तेतरीकेँ कहलक-

“एक्कैसटा रुपैआ मालि लेत तखन किछु करत।”

एक्कैस रुपैआ सुनि तेतरीक मन उड़ि गेल। हाथमे एक्को पाइ नहि। जखन कि बिनु पाइ नेने मालि किछु करबे ने करत। मुदा छोड़बो केना करत।

दरबज्जापर मालिकेँ बैसा दुनू परानी लेलहा रुपैआक भाँज लगबए लगल। मुदा केतौ रुपैआक भाँज नइ लगलै। अन्तमे निराश भऽ लेलहा खुट्टा परहक बियाएल गाए, गामेक पैकारक हाथे बेच लेलक। एक्कैस रुपैआ माइलिक हाथमे जाइते, मालि बाजल- “डालीमे मूसक माटि आ पंचमीक माटि नेने आउ।”

चँगेरीमे माटि नेने आबि तेतरी माइलिक आगूमे रखि देलक। दहिना हाथ चँगेरीक माटिमे गोरियबैत मालि ठोर पटपटबैत मंत्र पढ़ए लगल। मंत्र पढ़ि मालि लेलहाकेँ कहलक-

“कनी काल और नै अबितौं तँ बच्चा मरि जाइत!”

माइलिक बात सुनि दुनू परानी लेलहा आशा-निराशाक बीच उगए-डुमए लगल। मालि कहलकै- “बच्चाकेँ पूब-मुहेँ चद्देर ओढ़ा कऽ सुता दियौ आ ऐ माटिकेँ घर-आँगन सहित अगुआर-पछुआर छीटि दियौ। अँगनासँ सभ देखनिहारकेँ हटा दियौ। हम जाइ छी। जखन सीमा पार भऽ जाएब तखन बच्चाकेँ उधारि देबइ। ओ बच्चा अपने टहलए-बुलए लगत आ कहत जे छुटि गेल।”

लाठीमे टँगल झाँप लऽ मालि विदा भेल। अँगनासँ लेलहा सभकेँ

हटा चँगेरी माटि छीटए लगल। रस्तामे मालि घुमि-घुमि पाछुओ-मुहेँ देखैत आ नमहर-नमहर डेग दैत आगूओ बढ़ैत।

कनी कालक पछाइत जखन तेतरी गुलबाक देह परहक चद्दैर हटौलक तँ देखलक ओहिना कुहरैत। गुलबाकेँ कुहरैत देखि तेतरी पतिकेँ कहलक- "कहाँ छुटलै?"

हृदयमे आशा रखैत-लेलहा उत्तर देलक- "कम होइत-होइत ने छुटतै आकि एक्के बेर हरहरा कऽ छुटि जेतइ।"

दुनू परानी लेलहा ओसारपर बैस गप-सप्प करए लगल। कनी कालक पछाइत पुनः गुलबाकेँ तेतरी देखलक। कनियोँ उन्नैस नै होइत देखि हलचलाइत तेतरी बाजल-

"मालिबा ठकि लेलक। गाइयो चलि गेल आ गुलबा ठीको नै भेल!"

लेलहाक मुँह दिस तेतरी तकैत आ तेतरीक मुँह दिस लेलहा। आशा-निराशा, जीवन-मरण आ सुख-दुखक बीच दुनू परानी उगए-डुमए लगल।

दोसैर साँझ भऽ गेल। भानसक बेर भऽ गेल। सोगसँ दुनू बेकती मन्हुआएल। जेकरा-ले भानस हएत ओ खेबे ने करत आ जे खाइबला अछि ओकरा अन्न धँसबे ने करतै। तेतरी भानस छोड़ि देलक। गुलबाकेँ उठा ओसारपर देलक। दुनू परानी गुलबे लग बैस गप-सप्प करए लगल। एते काल सिरिफ बेटाक सोग रहै आब बियाएल गाइक सोग सेहो हुअ लगलै। भोर भेल।

गामोमे एकटा भगत। केते गोरेक-मुहेँ लेलहा सुनने जे गामक जे भगत अछि ओ केतेको भूतकेँ लोहाक मोटका काँटीसँ पीपरक गाछमे ठोकने अछि।

अचताइत-पचताइत लेलहा गामक भगत ऐठाम पहुँच, सभ बात कहलक। लेलहाक बात सुनि भगत अपन मेड़िया– डलबाह, मिरदंगिया, भगैत गौनिहार सभकेँ बजौलक। सभ मिलि पूजा ढारैक सामग्रीक लिस्ट बनौलक। आठ गोरेक खेनाइ लगा दू साए रुपैआक खर्च भगत लेलहाकेँ सुनौलक। दुपहर तक रुपैआ बन्दोबस करैक समय भगत लेलहाकेँ देलक।

आँगन आबि लेलहा तेतरीकैं कहलक। तेतरी लेलहाकैं कहलकै-

“एक साए रुपैआ गाएबला अछि, बाँकी साए रुपैआ केतएसँ औत?”

दुनू परानी चिन्ताक समुद्रमे डुमि गेल। दुनूमे सँ केकरो ने अक चलै आ ने बक। देहक शक्ति कमए लगलै। निराशाक अन्तिम सीमापर पहुँच लेलहा पत्नीकैं कहलक-

“अगर खेतो बेच कऽ दऽ देबै आ जँ नै छुटै तखन जीब केना?”

बेटाक ममता तेतरीक हृदयकैं झकझोड़ैत रहइ। एक मन तेतरीक कहै जे खेत रखि बेटाकैं मरए दिऐ ओहो उचित नहि। दोसर मन कहै जे बेटो चलि जाएत आ खेतो, तखन अपन बुढ़ाड़ी केना चलत? फेर मनमे एलै जे बेटाक सोग बरदास हएत आ खेतक सोग नहि! देखल जेतै बुढ़ाड़ीमे। जँ कमाइक शक्ति नै रहत तँ भीखे माँगब। मुदा अछैते चीजे बेटाकैं छोड़ि केना देब। साहस करैत तेतरी लेलहाकैं कहलक- “की करबै, खेत भरना लगा कऽ दऽ दियौ। कियो ई नै ने कहत जे खेतक लोभे बेटाकैं मारि देलक।”

जहिना केकरो चारूकातसँ दुश्मन हथियार लऽ घेर लइत। तहिना दुनू परानी लेलहाक मनमे हुअ लगल। खुट्टापर बान्हल गौड़ भूखे-पियासे जोर-जोरसँ डिरियाइत।

मिरदंगक बद्धी मूस काटि देने। मिरदंगियाँ-बद्धी कीनए कमलपुर गेल। बिशेसरसँ मिरदंगियाकैं चिन्हारे तँए बद्धी कीनि भेँट करए गेल।

बिशेसर हरबाहि कऽ आबि खाइत रहए आकि डेढ़ियापर सँ मिरदंगियाँ शोर पाड़लकै। खाएकेपर सँ बिशेसर अँगने अबैले कहलकै। आँगन आबि मिरदंगियाँ बिशेसर लग बैसल। दुनूक बीच कुशल-झेम भेलइ। बिशेसर मोहिनीकैं कहलक-

“खाइ बेर छइ। थारीमे नेने आउ।”

जाबे मोहिनी थारी सँठलक ताबे मिरदंगिया हाथ-पएर धोलक। हाथ-पएर धोइ बिशेसरे लग बैसल। दुनू गोरे खेबो करए आ गप्पो करए। लेलहाक सभ बात मिरदंगिया बिशेसरकैं कहलक। मने-मन बिशेसर

सोचलक जे जँ एहेन बात छै तँ लगमे जा कऽ हमहूँ देखब। मिरदंगियाकेँ बिशेसर कहलकै- "हमहूँ अहींक संग चलि कऽ गुलबाकेँ देखबै।"

खा कऽ दुनू गोरे विदा भेल।

लेलहा ऐठाम आबि बिशेसर देखलक जे दुनू परानी पेटकान लधने अछि। बेटाक सोग, धनक सोग आ खनदानक सोगसँ दुनू परानी लेलहा मरनासन्न अछि। गुलबाकेँ देखि मने-मन सोचए लगल जे जाधैर मनुक्खकेँ जीबै-जोकर बुधि नै भऽ जाएत ताधैर अहिना दुखक पहाड़ तर दबि-दबि कुहरैत रहत। भगवानोक लीला अजीव छैन। बुधिक बखारी मनुक्खकेँ दऽ एहेन बड़का ताला लगा देने छथिन जे सभ-बुते खुगबो ने करैए। जेकरा बुते खुगबो करैत ओ अपने बखारी भरै पाछू जिनगी भरि अपसियाँत रहैए। केकरा के देखत। सभ अपने ताले बेताल अछि। समाज रूपी जंगलमे मनुक्ख रूपी गाछ एहेन अछि जइमे मीठ फल फड़ैबला गाछ झँपा गेल अछि आ कँटहा गाछ एहेन भोंगर बनि गेल अछि जे अनाड़ी-धुनाड़ी वौआ जाइए। जइसँ छल-प्रपंची समाजपर हाबी भऽ गेल अछि। एते बात बिशेसरकेँ मनमे अबिते मनमे उठलै- दुखक अन्तिम अवस्थाक उपरान्ते नव जिनगी शुरू होइत...।

बिशेसर लेलहाकेँ पुछलक-

"एते सोगाएल किए छी?"

बिशेसरक बात सुनि लेलहाक मनमे आशाक मेही ज्योति अबए लगल। नोरसँ भीजल आँखि.., बेथित हृदय...।

बाजल- "भाइ साहैब, बड़ आशा छल जे एहेन सुन्दर दुनियाँमे बाबा-दादीक कोरासँ माए-बापक कोरा होइत जिनगी शुरू भेल। आशाक गाछ नमहर होइत गेल। अदहा रस्तामे आबि बेटाकेँ कोरामे लेलौं मुदा आब पोताकेँ कोरामे नै लऽ सकब दुख एकरे अछि। 'हम केहेन अधरमी खनदानमे भेलौं जे अन्त भऽ रहल अछि।"

मुस्कियाइत बिशेसर बाजल- "अधरमीसँ धरमात्मा बनब बड़ कठिन नहि अछि सिरिफ रस्ता बदलैक अछि। अखनेसँ धरमक रस्ता धरू, सभ आशा पूर भऽ जाएत।"

बिशेसरक बात सुनि लेलहाक हृदयमे जेना अमृतक बून पड़ि गेल। उत्साहित भऽ तेतरीकेँ हाथक इशारासँ शोर पाड़ैत बाजल-

“बिशेसर भाय जे कहै छथिन से सुनू। सभ दुख मेटा जाएत।”

दुनू बेकती बिशेसरक मुँह दिस तकैत ऐगला गप सुनैले कान पाथि देलक। बिशेसर बाजल- “अहाँ बेटाकेँ भूत नै लगल अछि। हवा रोग लगल अछि। अखन धरि अहाँ सभ भूत छौड़ौनिहारकेँ बजा-बजा अनलौं। रोग छोड़ौनिहारकेँ नै बजेलौं। चलू हमरा संगे।”

दुनू हाथ जोड़ि तेतरी बिशेसर दिस देखैत पतिकेँ कहलक- “जाउ, जेतए भैया जाइ छैथ। जिनगीमे कहियो केकरो अधला नै केलिऐ, तखन भगवान एहेन विपैतमे केना दऽ देलैन।”

बिशेसर तेतरीकेँ कहलक- “जाऊ, अहाँ भानस करू-गे। पहिने बाछीकेँ खाइ-पीऐले दियौ। भूखे परान गमौने की हएत। अँगनाक काज सम्हारू। हम दुनू गोरे जाइ छी।”

करिछौन भेल तेतरीक ठोर अनासुरती बदैल कऽ लाल हुअ लगल। देहक सूतल शक्ति पुनः जागए लगल। अँगना-घर बहारि तेतरी बाछीकेँ पानि पीआ खाइले देलक। लेलहाकेँ संग केने बिशेसर दीनानाथ वैद ऐठाम पहुँचल। दुनू गोरेकेँ देखि दीनानाथ पुछलखिन- “केमहर एलौं?”

लेलहाकेँ देखबैत बिशेसर कहलकैन-

“हिनकर बेटा लताम तोड़ैले गाछपर चढ़ल। गाछेपर देह झुनझुनाए लगलै। जनिजाति सभ भूत कहि ओझा-गुनी बजबए कहलकैन। दुनू परानी वेचारे ओही पाछू पड़ि गेला। अपने चलि कऽ देखियौ।”

दीनानाथ रोग बुझि गेलखिन। दवाइक बैग लऽ गप-सप्प करैत लेलहा ऐठाम चलला। रस्तामे बिशेसर दीनानाथकेँ पुछलखिन-

“अपने वैदागिरी केना सिखलौं?”

हँसैत दीनानाथ अपन सभ खिस्सा भरि रस्तामे बिशेसरकेँ सुना देलखिन। लेलहा ऐठाम आबि गुलबाकेँ वैदजी देखि कहलखिन-

“रोग कोनो असाध नइ छइ। दुइए दिनमे छुटि जेतइ।”

कहि दू दिन-ले चारि खोराक दवाइ दऽ देलखिन। एक खोराक अपना सोझहेमे खुआ दीनानाथ लेलहाकेँ कहलखिन-

“दस मिनटक उपरान्ते रोग कमए लगत आ सौझुका खोराक खुऔला पछाइत बुझि पड़त जे अदहा रोग छुटि गेलइ। चिन्ताक कोनो बात नहि।” ❑

चारि

मिडिल पास केलाक पछाइत ज्ञानचन गामेमे रहैक विचार केलक। गामसँ दस-बारह कोस हटि ज्ञानचनक पिता नोकरी करैत। दुरस्तक दुआरे प्रकाशचन्द बालो-बच्चाकेँ संगे रखैत। माए-बाप मरि गेने आश्रमो छोट। बहिन सासुर बसैत। गाममे कियो नहि जइसँ घरो गिर पड़ल। गौंआँ-घरूआ सभ घरक ठाठ उजाड़ि जरा लेलक। घराड़ी छोड़ि एक्को बीत जमीन फाजिल नहि। घर गिरने घराड़ियो ढिमका जकाँ बनि गेल, जैपर अनेरूआ गाछ सभ जनैम गेल। घराड़ी बेलगान तँए बँचलो।

पिताक मेहनतसँ प्रेरित भऽ ज्ञानचन गामेमे रहि मेहनतक बले जीबैक संकल्प मनमे रोपलक। गाम आबि ज्ञानचन एकटा घर बना गामेमे रहि बच्चा सभकेँ पढ़बैक जोगारमे जुटि गेल।

गरीब आ मझोलका किसानक गाम। गामक मुख-मुख आदमीकेँ बैसा अपन विचार रखलक। बच्चाकेँ पढ़बैक इच्छा सभकेँ मुदा पढ़ौनिहारोकेँ तँ परिवार छइ। तर्क-वितर्क करैत सभ ऐ निर्णएपर पहुँचला जे, जे किसान परिवार अछि ओ एक विद्यार्थीपर एक सेर चाउर, मासमे देत आ गरीब परिवार शैने-शनि शनिचरा देत…।

ऐ विचारपर गौंआँ आ ज्ञानचनो सहमत भऽ गेल। बच्चा सभकेँ ज्ञानचन पढ़बए लगल।

सुभ्यस्त समय रहने दू साल तक तँ बेवस्थित ढंगसँ पढ़ौनी चलल मुदा तेसर साल तेहेन बाढ़ि एलै जे अदहासँ अधिक लोकक घर गिर

पड़ल। खेतक फसिल दहा गेल। तीन मास धरि घर-घराड़ी छोड़ि सौंसे गाम पानिमे डुमले रहल! काजक अभाव भेने गरीब लोक, जन-बोनिहार पड़ा-पड़ा परदेश जाए लगल। अनक अभाव आ घास-भूस्साक अभावमे धियो-पुता, बुड़हो-बुढ़ानुस आ मालो-जाल अदहासँ बेसी मरि गेल। घरक दुआरे बहुतो लोक गाम छोड़ि आन-आन गाम जा कर-कुटुमक ऐठाम रहए लगल।

ज्ञानचनक दशा एहेन भऽ गेल जे मृत्युक रस्ता छोड़ि जिनगीक दोसर कोनो बाँकी नै रहल। करेजपर पाथर रखि गाम छोड़ैले तैयार नहि। अन्न बिनु दुनू परानीकेँ सात साँझ भऽ गेल। भूखे अँतरी ऐंठैत, पेटमे बगहा लगैत। सुधियाक सुखल मुँह ज्ञानचन देखैत आ ज्ञानचनक मुँह सुधिया देखि आँखि निच्चाँ कऽ लइत। थरथराइत मने सुधिया पतिकेँ कहलक- “गामक दशा बड़ रद्दी भऽ गेल आब जीनाइ कठिन अछि। चुपचाप हाथपर हाथ धऽ बैसलासँ नै हएत।”

कनी काल बिलैम ज्ञानचन बाजल-

“कहलौं तँ ठीके मुदा करब की। देखिते छी जे साँझक-साँझ लोक भूखल रहैए। जैठाम पेट पहाड़ बनि रहत तैठाम बच्चाक पढ़ाएब मात्र कल्पना हएत। पेटक आगि सभकेँ जरा दइ छइ। बुधि-विवेककेँ नष्ट कऽ दइ छइ। हमरा बुझने एक्केटा उपाय अछि जे दुनू बेकती बाबू लग चलू। ओहीठाम किछु दिन रहब, जखन समय बदलत तखन बुझल जेतइ।”

सुधिया-

“अखन पितोजी लग जाएब कठिन अछि। भूखल पेट एते दूर केना जाएब? घरमे थारी लोटा छोड़ि तँ किछु ऐछो नै जेकरा बेच कऽ वा बन्हकी लगा कऽ पेटक ओरियान कऽ जाएब।”

ज्ञानचन-

“लोटाक काज तँ रस्तो-पेरा हएत तँए ऐ बिनु नै बनत। मुदा थारीक तँ तत्काल ओते जरूरी नै अछि, पातोसँ काज चला लेब। थारी लाउ ताबे बन्हकी लगा बटखरचाक ओरियान कऽ लइ छी आ ओमहरसँ घुमि कऽ एलापर बन्हकी छोड़ा लेब।”

सुधिया घरसँ थारी निकालि ज्ञानचनकेँ दऽ देलक। थारी नेने ज्ञानचन दोकान जा बन्हकी लगा बेसाहने आएल। सुधिया भानस केलक। दुनू परानी खा घर बन्न कऽ पिता लग विदा भेल।

मिडिल पास केलाक तीन सालक पछाइत ज्ञानचनक बिआह सुधियाक संग भेल छल। बिआहक समय सुधियाकेँ मनमे बेहद खुशी छेलै जे पढ़ल-लिखलसँ बिआह भऽ रहल अछि। बिआहो आकर्षित वातावरणमे भेल छेलइ। बिआहक समय गीत गौनिहारि एहेन आकर्षित वातावरण अपन गीतक माध्यमसँ बनौने रहैथ जेना वसन्तक आगमनक समय प्रकृति बनबैत। ऐ मोहक वातावरणमे ज्ञानचनक मन आ सुधियाक मन जेना शरीरसँ हटि एकठाम बैस भावी जिनगीक लीला रचए लगल। अलग-अलग योजना रहितो एकठाम जा मिलि जाइत। जिनगीक अन्तिम छोड़ धरिक संगी नचैत-गबैत सुख-दुखक रस्तासँ चलैक समझौता केलक। मुदा आइ ओ वसन्ती जिनगी ग्रीष्मक प्रखर रौदसँ झड़कए लगल। जहिना नदी-सरोवरक शीतल जल रौदमे अपन जिनगीक आहूत दैत तहिना ज्ञानचन आ सुधिया दिअ लगल। जिनगीक रस बेरस हुअ लगलै। मुदा आगिमे तपैत जिनगीमे सोनाक ओ रूप आबि जाइत जे आगिमे जरि शेष रहैत। यएह छी जिनगीक लीला। अहीक बीच जिनगी हँसैत-कनैत चलैए।

पिता लग जाइक रस्तामे ज्ञानचनक मन विषादसँ भरैत गेल। मनमे ढेरो प्रश्न उठलै। की हम जिनगीसँ हारि मानि ली? की हम अपन संकल्प बदैल ली? की हम अपन उगैत ज्ञानकेँ नष्ट कए ली? की हमर ज्ञान एते दुर्बल अछि जे जिनगीक छोट-छीन झोंककेँ नै सहि सकैत..?

ऐ सभ प्रश्नक बीच ज्ञानचनक मन भारसँ ऐ रूपेँ दबाएल जाइत जेना पहाड़क तरमे पड़ि गेल हुअए। मुदा ज्ञानचनक छटपटाइत मन हारि मानैले तैयार नहि! जेना दू सेनाक बीच लड़ाइ होइत तहिना ज्ञानचनक मनमे हुअ लगल। देहसँ पसेना निकलए लगल। संकल्प सक्कत रूपमे बदलए लगलै। हर्ष-विषादक बीच ज्ञानचन आगू बढ़ैत गेल...।

सुधियाक मन अपनो आ भगवानोकेँ कोसैत। की हम नारी बनि ऐ धरतीपर जन्म लऽ मातृत्व प्राप्त नै कऽ सकै छी? की भगवान हमरा ओइले जन्म देलैन जे फुलाइसँ पहिने नष्ट भऽ जाइ?

ज्ञानचन आ सुधियाकेँ पहुँचते प्रकाशचन्द बुझि गेलखिन। मुदा बिनु किछु कहनहि पत्नीकेँ इशारा केलखिन- "पहिने दुनू गोरेकेँ खाइले दियौ।"

जाबे ज्ञानचन हाथ-पएर धोलक ताबे ज्योति दूटा थारीमे चूरा भीजैले दऽ देलखिन। घरमे दही नहि तँए चूरा आ चीनी दुनू गोरेकेँ खाइले देलखिन।

ज्योति हाँइ-हाँइ चुल्हि पजाइर बरतनमे पानि गरम करए लगली। जाबे दुनू परानी ज्ञानचन खेलक ताबे इनहोरो भऽ गेल। हाथ-मुँह धोइते दुनू परानीकेँ कहलखिन- "बौआ, दूरसँ एलौं हेन तँए इनहोरसँ पएर ससारि लिअ। थाकैन दूर भऽ जाएत। बाटीमे इनहोर निकालि पहिने ज्योति ज्ञानचनकेँ ठेहुनसँ निच्चाँ ससारि देलखिन। पएर ससारिते ज्ञानचनक थाकैन कमि गेल। बाटीमे इनहोर लऽ सुधियाकेँ अढ़मे लऽ जा ज्योति पएर ससारैक ओरियान करए लगली।"

मुदा सासुक हाथ पकैड़ सुधिया कहलकैन-

"माए, हम अपने पएर ससारि लइ छी। ई केना हमर पएर छूती?"

सुधियाक बात सुनि ज्योति बजली-

"एना किए कहलौं कनियाँ! जखन नीक रहब तखन हम सासु आ अहाँ पुतोहु। मुदा दुखमे अहाँक सेवा हम नै करी, हमर सेवा अहाँ नै करी तखन हम अहाँक केना भेलौं। आ अहाँ हमर केना भेलौं? रस्ताक थाकल छी, देह-हाथ दुखाइत हएत तँए हमर सेवा करब उचित हएत किने?"

ज्योति सुधियाक दुनू पएर इनहोरसँ ससारि देलखिन। ज्योतिक सेवा देखि ज्ञानचन मने-मन सोचए लगल जे यएह छी माए-बाप आ बेटा-पुतोहुक सम्बन्ध। जँ एहेन विचार परिवारमे बनल रहत तँ किए परिवारमे बिखण्डन हएत। परिवार कम लोकक हुअए आकि बेसी लोकक, अगर सभ अपन-अपन सीमा बुझि जीबैक कोशिश करत तँ परिवार टुटतै किए...। रस्ताक झमारसँ दुनू बेकती ज्ञानचन आ सुधियाकेँ ओंघी लगैत आ देहे भँसियाइत। देह भँसियाइत देखि ज्योति दुनू गोरेकेँ सुति रहैले कहलखिन। दुनू बेकती ज्ञानचन सुति रहल।

किरिण डुमि गेल। प्रकाश सेहो काजपर सँ एला। लालटेन नेस

ज्योति ओसारपर दऽ ओछाइन ओछा चाह बनबए लगली। कपड़ा बदैल प्रकाश हाथ-पएर धोइ कऽ ओछाइनपर बैसला। ज्योति चारि गिलास चाह बना एक गिलास प्रकाशकेँ दऽ अपनो आ बेटो-पुतोहुकेँ देलखिन। चारू गोरे चाह पीब एक्केठाम बैसला। ज्ञानचनक चेहरा देखि प्रकाश आँकि नेने रहैथ। मुदा कोनो गम्भीर बात पुछैसँ परहेज करैत बजला-

"बौआ, सालभरि हमरो नोकरी रहल तेकर बाद तँ गामेमे रहब। तँए आब घर बनाएब जरूरी भऽ गेल अछि। जाबे घर बना रहए नै लगब ताबे जीबैले कोनो काजक सृजन सेहो नै कऽ सकै छी।"

अपन समस्या ज्ञानचन रखैत बाजल- "बाबूजी, गामक एहेन दशा भऽ गेल अछि जे रहनाइ कठिन अछि।"

बेटाक बात सुनि प्रकाशचन्द अनुभवक बात बुझबैत बजला-

"बौआ, जहिना ऐ शरीरक विचित्र स्थिति अछि तहिना ऐ संसारोक छइ। देखबहक जे, जे आदमी अधिक शारीरिक श्रम करैबला अछि ओ जइ दिन नै खटत तइ दिन ओकरा देह-हाथ दुखेतै। ठीक एकर विपरीत, जे आदमी देहसँ श्रम नै करैए ओ जइ दिन भारी काज करत तइ दिन ओकरा खूब देह-हाथ दुखेतै। तहिना ऐ संसारोकेँ छइ। विचित्र शक्ति ऐ संसारमे छइ। जहिना नाश करैक अद्भूत शक्ति देखै छहक तहिना सृजनो करैक छइ। तँए जे मनुक्ख सृजनशील अछि वएह ऐ दुनियाँक आनन्द उठा सकैए।"

प्रकाशचन्दक बात सुनि ज्ञानचनकेँ नवज्योति भेटलै। अखन धरि जे ज्ञानचन सोचने छल जे दस दिन पिता ऐठाम रहब, मुदा पिताक विचार सुनिते सौंसे देह सुनगुनी पैस गेलै जे अखने गाम घुमि कऽ चलि जाए। एक दिस ज्ञानचनक मनमे बाढ़िक विकराल रूप नचैत तँ दोसर दिस बाढ़िक रूपसँ मुकाबला करैक उत्साह मनमे जागए लगलै...। तखने सासु पुतोहुकेँ कहलखिन- "कनियाँ, अपन घर नै रहने ऐठाम बहुत रास वस्तु छिड़ियाएल अछि जेकरा अपना ऐठाम लऽ जेनाइ अछि। एक्के बेर तँ सभ वस्तु लऽ गेल नै हएत तँए थोड़े-थोड़े-के लऽ जाएब नीक हएत। घरमे माइर पुरान थारी, लोटा, बरतन-बासन आ कपड़ा-लत्ता अछि। ओइमे सँ जेते

लऽ गेल हएत ओते नेने जाएब।"

ज्योतिक बात सुनि सुधियाक मनमे एलै जे एकटा थारी छल ओहो बन्हकीए लगा देलौं मुदा ऐठाम तँ तेते अछि जे एक बेरमे लैओ ने गेल हएत। कपड़ो-लत्ताक सएह हाल अछि। बरतन आ कपड़ा-ले मन कलहन्त रहै छल, आ से एतए तेते अछि जे जिनगी भरिमे सठबो ने करत। तँए मने-मन सुधिया खूब खुशी होइत।

तेसर दिन ज्ञानचन पिताकेँ कहलखिन-

"बाबू, हम चलि जाएब। गाममे की भेल हएत की नहि, चिन्ता भऽ रहल अछि।"

ज्ञानचनक बात सुनि प्रकाशचन्द बजला- "बौआ, ईहो तँ अपने घर छिअ तखन जाइले एते किए धड़फड़ाइ छह?"

ज्ञानचन- "भरि दिन एतए बैसले रहै छी, गाम गेलापर किछु करबो करब।"

प्रकाशचन्द- "बड़बढ़ियाँ। काल्हि चलि जैहह।"

दोसर दिन भोरे ज्ञानचन आ सुधिया गाम जाइक तैयारी करए लगल। बरतन आ कपड़ाक मोटरी देखि सुधिया मने-मन सोचए लगली जे एते दूर एते लऽ कऽ केना जाएब। मुदा अभावक जिनगीसँ गुजरल सुधिया, साहस बटोरि कऽ मोटरी लऽ जाइले तैयार भेली। ज्ञानचनकेँ प्रकाश साए रुपैआ देलखिन। दुनू परानी गाम विदा भेल।

गाम आबि ज्ञानचन थारियो बन्हकी छोड़ौलक आ पाँच दिनक बुतात सेहो कीनलक। दू दिन धरि ज्ञानचन गामेमे रहि आराम केलक। तेसर दिन भोरे जलखै खा ओसारपर बैस मने-मन हियाबए लगल जे कोन-कोन गाममे स्कूल नै अछि। मुदा अकसरहाँ गाम तेहने। कोनो-कोनो गाममे खानगी शिक्षक परिवारमे पढ़बैत। मुदा आम लोक-ले स्कूल नहि।

जेते हियासि-हियासि ज्ञानचन गाम सभकेँ देखैत तेते विचित्र स्थितिमे पड़ल जाइत। मनमे रहै जे गरीब-गुरबा बच्चा सभकेँ पढ़ाबी। सुभ्यस्त परिवारक बच्चा सभ तँ कोनो-ने-कोनो रूपेँ पढ़िए लैत मुदा खगल परिवारक बच्चा सभ छुटि जाइत। जखन कि पढ़ब सभले जरूरी

छइ। अही गुन-धुनमे ज्ञानचनक दू दिन बीत गेल। तेसर दिन सुधिया बजली-

“जाबे घरमे बुतात अछि ताबे जँ कोनो जोगार नै कऽ लेब तखन तँ फेर दिक्कत हएत।”

पत्नीक बात सुनि ज्ञानचन बाजल-

“कहलौं तँ ठीके मुदा विचित्र उलझनमे पड़ल छी। एक दिस संकल्प अछि दोसर दिस पेट।”

झगड़ौआ सुभ्यस्त गाम। नमहरो। सभ तरहक परिवार गाममे। मुदा पचभैंया परिवार सभसँ सम्पन्न। पाँचू भाँइ मिलि शिक्षक रखने। पाँचू भाँइक बच्चा सभ तँ पढ़ैत मुदा गामक आन परिवारक बच्चा छूटल। पाँचू भाँइ सागीरदे। एकटा नमहर दरबज्जा, जैपर शिक्षक पढ़ेबो करैत आ रहबो करैत। नमहर परिवार रहने नमहर दरबज्जा बनौने, किएक तँ जखन बिआह, मूड़न, श्राद्ध वा कोनो नमहर काज परिवारमे होइत तखन तेते अधिक सर-कुटुमसँ लऽ कऽ दोस-महीम सभ अबैत जे छोट-छीन दरबज्जामे अँटावेशे ने होइत। ओइ पचभैंया परिवार छोड़ि गामक सभ परिवार शिक्षासँ अलग। ने गाममे स्कूल आ ने दोसर परिवारक बच्चाकेँ पचभैंया अपना ऐठाम पढ़ए दइत। गुरुजीकेँ खेनाइक संग दू मन धानो मासमे दइत। शिक्षको समाँगे जकाँ बच्चा सभकेँ पढ़बैत।

गरीब लोक बच्चाकेँ पढ़ाएबकेँ जरूरीए ने बुझैत। सभकेँ बुझले जे जखन बच्चा ढेरबा हएत तखन गाए-महींस चरौत नइ तँ केकरो ऐठाम नोकरी करत। जखन जुआन हएत, बिआह-दुरागमन हेतै तखन बोइन करत। ने शिक्षाक महत बुझैत आ ने नोकरी मनमे।

बच्चो सभकेँ जीबैक लूरि बापक संग काज करैत-करैत तँ भइये जाइत। झाँपल ज्ञान झाँपल विचार। ओना, मध्यम किसान परिवारक लोक बच्चाकेँ पढ़बए चाहैत मुदा भीतरिया मन-मोटाउ सबहक बीच। अनेरे एक-दोसरसँ मुँह-फुलौने। एक जातिक लोककेँ दोसर जातिक लोकसँ भैंसा-भैंसीक खानदानी कनाइर। जातियोक बीच कुल-गोत्र टौहकी लगौने, जइमे माछे जकाँ सभ फँसि छटपटाइत। ने कियो केकरो नीक करैत आ ने

नीक देखए चाहैत। अनेरे एक दोसरक भरि दिन निन्दा करैत।

झगड़ौआक पहिलुका नाओं सुन्दरपुर छल। मुदा गौंआँक बीच हदिघड़ी मारि-झगड़ा भेने आन-आन गामबला 'झगड़ौआ गाम' कहए लगल। जइसँ गामक नाओं 'झगड़ौआ' पड़ि गेल।

झगड़ौआमे सभसँ रूआबी चुनचुन। मध्यम किसान, दस बीघा खेत। अकसरहाँ चुनचुनकेँ दोसरसँ गारि-गरौवैल आ मारि-पीटि होइते रहैत। जइसँ दस-बीस मोकदमा सभ दिन लधले रहैत। एक दिन केसक तारीख करए मधुबनी गेल। घुमती काल टीशनपर गाड़ीक प्रतीक्षामे बैसल छल तखने एक आदमी लगमे आबि बेंचपर बैसल। कनी काल दुनू गोरे चुप्पे रहल मुदा पाछू गप-सप्प हुअ लगलै। गप-सप्पक क्रममे ओ आदमी चुनचुनकेँ कहलक-

"हम हाइ स्कूल तक पढ़ल छी। नोकरी करए जाइ छी।"

पढ़ल-लिखल सुनि चुनचुन बाजल- "हमरा ऐठाम चलू। तीनटा बच्चा अछि ओकरा पढ़ा देबै आ अहाँकेँ दू मन धान महिना देब।"

चुनचुनक संग ओ आदमी झगड़ौआ आएल। दोसरे दिन सगरे गाम हल्ला भेल जे चुनचुन मास्टर अनलक। पचभैंया परिवारमे सेहो समाचार पहुँचल। साँझू पहर सभ समाँग बैस विचार केलक जे चुनचुनमो आ मासटरोकेँ तेहेन विदाइ देब जे फेर एहेन काज नै करत। सएह भेल।

दोसर दिन सभ समाँग पचभैंया आ चारिटा लठैतो आबि चुनचुनमो आ मास्टरोकेँ तेहेन मारि मारलक जे मास्टर तखने पड़ा गेल आ चुनचुनमा थाना जा केस केलक।

पचभैंयाक एक समाँग हाकिम, जे सभकेँ बुझल तँए थनोक कियो नै आएल आ केसे ने बढ़ेलक।

ओइ दिनसँ चुनचुनमाक मन टुटलै। तखन गामक लोकसँ मेल करए चाहलक। मुदा सभ छनगल। किएक तँ चुनचुनमाक खचरपन्नी सभकेँ बुझल। तँए कियो चुनचुनमासँ सटए नइ चाहैत। चुनचुनमाक दशा गाममे ओहन भऽ गेल जेना कोनो बड़का डकैत जहलमे जा दाढ़ी बढ़ा बबाजी बनि जाइत।

चुनचुनमाक मारि चुनचुनमा सन लोकक हृदयकेँ झकझोड़ि देलक। अखन धरि जइ विषयक चर्चा लोक करितो नै छल ओ चरचाक प्रमुख विषय बनि गेल। अज्ञानक चद्दरसँ झाँपल बुधि बहराइले पाँखि फड़फड़बए लगल। जहिना माटिक तरमे कोनो बीआ चुपचाप पड़ल रहैत मुदा समय पबिते अंकुरित भऽ ऊपर चलि अबैत तहिना। जे विद्या दान-ले अमूल्य बुझल जाइत ओइले समाजमे विस्फोट भऽ सकैए। चुनचुनमाक दियाद-वाद, दोस- महीम, कुटुम-परिवार अपनामे विचारि पुनः मास्टर रखि बच्चाकेँ पढ़बैक निर्णए केलक। मुदा एहेन विचार किछु गनल परिवार धरि रहल। आम आदमी, जे समाजमे बहुसंख्यक अछि, काते रहल। ने ओकरासँ पूछल गेल आ ने ओ उत्साहित भेल।

चुनचुनमाक घटना ज्ञानचनकेँ बुझल। ओना, ज्ञानचनक विचार चुनचुनमाक काजक अनुकूल, किएक तँ शिक्षा एकसँ पाँचो दिस तँ बढ़ल। मुदा समाजक बीच तँ खाढ़ी बनले रहैत। एकाएक ज्ञानचनक मनमे आएल जे झगड़ौआ नै जा कमलपुर जाएब।

कमलपुर जाइक विचार ज्ञानचन मनमे ठानि पत्नीकेँ कहलक-

“काल्हि भोरे कमलपुर जाएब। जँ ओइठाम रहैक जोगार भऽ गेल तँ ओतै रहब नइ तँ परसू तक घुमि जाएब। ओना, मन कहैए जे कमलपुरमे जरूर जोगार भइये जाएत।”

पतिक बात सुनि सुधिया बाजल-

“जिनगीमे अहिना चढ़ा-उतरी होइ छइ। मुदा ऐसँ धड़फड़ेबाक नइ चाही। एकटा कमलपुरे नै ढेरो गाम अछि जैठाम पढ़ै-लिखैक कोनो बेवस्था नइ छइ। करेज मजगूत कए कऽ जाउ भगवान केतौ-ने-केतौ गर लगाइए देता।”

पत्नीक विचार सुनि ज्ञानचन कनी गुम्म भऽ बाजल-

“समाजक विचित्र लीला अछि। पढ़लासँ ज्ञान होइ छइ। ज्ञान मनुक्खकेँ नीक रस्ता चलैले प्रेरित करै छइ। मुदा समाजमे एहेन मुँहगर-कनगर लोकक कमी नै जे बीचमे बाधक बनि ठाढ़ रहैए। आ वएह सभ अपनाकेँ समाजक हितैषी कहि ढोल पीटैए। हमरा-ले धन पैघ नहि विचार

पैघ अछि।”

सुधिया- “जइ रूपक समाजक बात अहाँ कहलौं, ओइसँ अलग भऽ सोचए पड़त। जँ से नै सोचब तँ जीब केना। आ जँ जीबे ने करब तँ सिरिफ सोचलेसँ की हएत?”

ज्ञानचन- “अहाँक बात मानलासँ समाजमे कटुताक जन्म हएत। मनुक्ख-मनुक्ख छी। कियो केकरोसँ ने पैघ अछि आ ने छोट। हँ ज्ञानक स्तर आगू-पाछू भऽ सकै छइ। मुदा जे अगुआएल छैथ हुनका तँ पछुऐलहाक बाँहि पकैड़ आगू-मुहेँ बढ़ेबाक चाहिऐन। जँ से नै करै छैथ तँ ओकरा बेइमानी छोड़ि की कहबै? बेइमाने मनुक्ख ने नीच मनुक्खक श्रेणीमे अबैए। जे ज्ञानक संग छेड़-छाड़ करब भेल। धनसँ मनुक्खकेँ नापब, सोना तौलैबला निकटीपर माछ तौलब हएत। जे बेवसाय हम करै छी ओइले एहेन तराजू चाही जैपर एक्के बैटखारासँ सभ तौलल जाए। जे अध्ययन करत ओ चाहे गरीबक बेटा हुअए आकि अमीरक, जरूर विद्वान बनत।”

दोसर दिन भोरे ज्ञानचन जलखै कऽ कमलपुर विदा भेल। जहिना समुद्रमे पहुँचैले नदीक पानि अनवरत गतिसँ चलैत तहिना ज्ञानचन्दो कमलपुर जाइक रस्ता कटैत रहल। कमलपुर पहुँचते ज्ञानचनकेँ बुझि पड़लै जे आन-गामसँ भिन्न ऐ गामक लोकक चालि-ढालि अछि। पहिले-पहिल ज्ञानचन देखलक जे जेते मेहनत ऐ गामक लोक करैए ओते मेहनत आन गामक नै करैए। मान-सम्मानक मर्यादा सेहो ऐ गामक लोक आन गामक अपेक्षा अधिक बुझैए। रस्ते-पेरे ज्ञानचन ऐ बातकेँ आँकि विहारी ऐठाम पहुँचल।

तीस पैंतीस परिवारक टोलमे विहारीक घर। विहारीक दरबज्जापर सिलेब बरदक जोड़ा आ एकटा महींस बान्हल। कँचके ईंटासँ बनल आ खढ़सँ छारल दरबज्जा। नीक कारीगरक जोड़ल देबाल आ नीक छारनिहार छारने तँए दरबज्जा सुन्दर। दरबज्जाक ओसारमे एक भाग एकटा कोठली बनल। टोलमे जे बरियाती अबैत ओही दरबज्जामे रहैत। टोल तँ गरीबे लोकक मुदा अपनामे खूब मिलान सभकेँ।

दरबज्जाक ओसारपर राखल चौकीपर अपन झोरा रखि ज्ञानचन घरबैयाकेँ शोर पाड़लखिन।

.पछबरिया घरक केबाड़क उखड़ल बिलैयाकेँ विहारी ठीक करै छल। अनठियाक आवाज सुनि रूखान-बैसला अँगनामे रखि दरबज्जापर आएल। नव चेहरा देख, विहारी डेढ़ियापर सँ चोट्टे घुमि आँगनसँ एक लोटा पानि नेने दरबज्जापर आएल। ज्ञानचनकेँ हाथमे लोटा पकड़बैत विहारी कहलकैन- "पहिने पएर धोउ, तखन गप-सप्प हेतइ।"

ज्ञानचन पएर धुअ लगल आ विहारी आँगन जा पत्नीकेँ कहलक- "एकटा अभ्यागत एला हुनको भानस करब।"

कहि दलानपर आबि विहारी ज्ञानचनसँ परिचए-पात करए लगल। पढ़ौनीक चर्चा सुनि विहारीक हृदयमे उत्साहक बिर्ड़ो उठि गेल। ऐगला गपकेँ तोपैत ज्ञानचनकेँ कहलक-

"गुरुजी, थाकल हएब अखन आराम करू। ताबे हमहूँ अपन काज सम्हारि लइ छी। गप-सप्प निचेनसँ करब।"

आँगन आबि विहारी बिलैया ठोकए लगल। बिलैयो ठोकैत आ मने-मन विचारबो करैत जे तीनटा बेटा-बेटी अछि ओकरा पढ़बैमे एक गोरेक खेनाइ की छी। टोलक लोक गरीब अछि मुदा हमरा तँ दू सेर दू टाका अछि। जेकरा रहै छै ओ स्कूल केना बना दइ छइ। विहारीक मनमे एते उत्साह जगि गेल जे असगरो खरच करैले तैयार।

साँझू पहर विहारी ज्ञानचनकेँ संग केने बिशेसर ऐठाम पहुँचल। बिशेसर भजन करै छल। भजन अदहापर आबि गेल रहइ। मगन भऽ बिशेसर आँखि बन्न केने गबै छल। बिशेसरकेँ मगन देखि दुनू गोरे–विहारी आ ज्ञानचन–बिछानपर बैस गेल। भजन समाप्त होइते, आँखि खोलि बिशेसर विहारीकेँ पुछलक-

"पाहुन कहाँ रहै छैथ?"

विहारी उत्तर देलक-

"भैया, हिनकर नाओं ज्ञानचन छिऐन। पढ़ल-लिखल छैथ। गामक बच्चा सभकेँ पढ़बए चाहै छैथ।"

जहिना माटिक तरमे गाड़ल रुपैआक तमघैल भेटलापर खुशी होइत तहिना ज्ञानचनक चर्चा सुनि बिशेसरकेँ भेल। हँसैत बिशेसर बाजल-

"बहुत दिनसँ मनमे छेलए जे बच्चा सभकेँ पढ़ैक जोगार करी मुदा गरीबीक चलैत नै भऽ पबै छल। ई तँ सौभाग्यक बात छी। जहिना घर आएल लक्ष्मीकेँ लोक जाए नै दिअ चाहैत तहिना तँ आएल सरस्वतीकेँ सेहो पकड़ैक अछि।"

बिशेसरक बात सुनि कँपैत विहारी पुछलक-

"भैया, जेना झगड़ौआमे चुनचुनकेँ भेल तेना तँ ने हएत?"

कनी काल गुम्म रहि बिशेसर चुनचुनक घटनापर नजैर दौगबैत बाजल-

"चुनचुन अधला रस्ता धऽ नीक काज करए चाहलक तँए फल अधला भेलइ। हम सभ नीक काज करैले नीक रस्तो पकड़ब।"

अखन धरि ज्ञानचन चुपचाप सुनैत। बिशेसरक बात सुनि ज्ञानचन बाजल-

"बिल्कुल ठीक। जाधैर मनुक्ख मनुक्खक संग नै चलत ताधैर एहेन-एहेन दुखद घटना होइते रहत।"

विहारी मुँह बाबि ज्ञानचन आ बिशेसरक बात सुनैत। ज्ञानचनक बात सुनि विहारी बाजल- "गुरुजी, हम मुरुख छी। खेती छोड़ि दुनियाँ-दारीक किछु ने बुझै छी। जहिया कहियो कोनो तेहेन काज भेल तँ बिशेसरे भैयासँ पुछि करै छी।"

विहारीक बात सुनि ज्ञानचन बाजल-

"शुरूमे कोनो गाम जे बनल ओ ऐ रूपेँ बनल– हमर-अहाँक पुर्वज परती जंगल तोड़ि खेत बनौलैन। गामोमे सभ तरहक लोकक जरूरत होइ छइ। जेना बढ़ही, कुम्हार, नौआ, धोबि, चमार इत्यादि। जिनका पसारी बुझल जाइए। ओ सभ खेती नै कऽ कियो खेतीक सामान हर, कोदारि बनौलक तँ कियो माटिक बरतन। मुदा जखन छल-प्रपंचक कारोबार शुरू भेल तखन खेतक छीना-झपटी हुअ लगल। अधिक लोक गरीब बनैत गेल

आ कम लोक अमीर। समाजक कल्याण बास्ते धरमक आश्रय लेल गेल। मनुक्खो आ मालो-जाल-ले इनार-पोखैर खुनौल जाए लगल। चलैले रस्ता बनल। मुदा बादमे दसनमो चीज खानगी बनए लगल। ‘ई हमर छी’ एहेन विचार लोकमे आबि गेल। जइसँ द्वेष पनपल। हमर पुर्वज ऋृषि-मुनि ज्ञान आ कर्मक माध्यमसँ समाजक कल्याण-ले निअम बनौलैन। मुदा सभ छल-प्रपंचक अखाड़ा बनि गेल।”

ज्ञानचनक विचार सुनि बिशेसरक उत्साह बढ़ल। उत्साहित भऽ विहारीकेँ कहलक-

“अखन तँ तीनिए गोरे छी। काल्हि बेरूपहर टोलक सभकेँ बैसार करह। ओइ बैसारमे बच्चाकेँ पढ़बैक विचार सभकेँ पूछब। कियो तँ नै नहियेँ कहत मुदा सबहक विचार लऽ लेब जरूरी अछि। गुरुओजी तैयारे छैथ।”

विहारी-

“भैया, तूँ जे कहबहक तइसँ हम थोड़बे पाछू हएब। गुरुजीकेँ खेनाइ आ एक धारा चाउर घरो-परिवार-ले देबैन। मुदा कोनो तरहक भीड़ जँ पड़त तइले तूँ आगू रहिहह।”

बिशेसर- “विहारी, तूँ हमरा छनकट आदमी बुझै छह जे बाजब किछु आ करब किछु। जहिना मरद जकाँ कहै छिअ तहिना निमाहब। हम अपन मालिक अपने छी। कियो एक साँझक बुतात जोड़ैए जे तेकर हुकुम मानबै। जे आँखि देखौत ओकर आँखि निकालि लेबइ।”

मुस्कियाइत विहारी आ ज्ञानचन विदा भेल। रस्तामे विहारी झगड़ौआक चुनचुनक खिस्सा ज्ञानचनकेँ कहैत घरपर तक आएल।

दोसर दिन टोलक लोकक बैसार विहारी केलक। गुरुजीक नाओं सुनि टोलक चेतन लोकसँ बेसी धिए-पुते बैसारमे आएल। बच्चा सभकेँ पढ़बैक नाओंपर सभ सहमत होइत दुनू हाथ उठा समर्थन केलक। सबहक समर्थन देखि बिशेसर बाजल-

“अगर कोनो आपैत-विपैत औत तँ सभ मिलि ओकर सामना करब।”

बिशेसरक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन दैत बाजल- "जखन गाममे सरस्वतीक आवाहन भऽ गेल तखन फेर जाए नै देब। सभ शनिकेँ एक पौआ चाउर शनिचरा कहि गुरुजीकेँ देबैन।"

ज्ञानचन-

"काल्हि हम गाम जा परिवारमे जनतब देब। परसूसँ बच्चा सबहक पढ़ौनी शुरू कऽ देब।"

ज्ञानचन गाम जा पत्नीकेँ सभ बात कहलक। अखन धरि जे सुधिया ग्रीष्मक गरमीसँ जरै छेली ओ बरखाक बून पड़िते जेना कलशए लगली।❑

पाँच

चैत-बैशाखक आड़िपर जुड़शीतल पाबैन। ओना, अपना ऐठाम अनेको तारीख आ साल चलैए। जेना साल भेल- विक्रम संवत, हिजरी, लक्ष्मण संवतक संग अंग्रेजियोक। चैतक रान्हल बैसाखमे खाएब तँए आध पहर रातिए-सँ भनसिया सभ भानसमे जुटि गेल। संक्रान्तिक हिसाबसँ जुड़शीतल पाबैन होइत तँए पूर्णिमाक महत क्षीण भऽ जाइत।

भोर होइते स्त्रीगण सभ घर-आँगनसँ लऽ कऽ रस्ता-पेरा धरिमे पानि छीटैत। बुढ़-बुढ़ानुस लोटामे पानि लऽ धिया-पुतासँ जुआन धरिक माथपर एक चुरूक दऽ असिरवाद दइत। छौड़ा-मारड़िसँ जुआन धरि भाँगक ओरियानमे जुटि गेल। कियो भाँग पीसैमे मस्त तँ कियो दोकानसँ चीनी-गुड़ आनि बाल्टीनमे घोड़ैमे मस्त। किसानो सभ अपना-अपना काजमे व्यस्त। कियो घरक केबाड़ खोलि धोइमे तँ कियो गाछ सभ पटबैमे, तहिना कियो गाए-बरदकेँ नहबैमे, तँ कियो इनार उराहैमे।

पाबैनक उत्साह सिरिफ लोकेटा मे नै बल्कि गाछो-बिरीछमे देखि पड़ैत जे अपन पुरना वस्त्र तियागि नवका वस्त्र पहिर-पहिर उमंगमे झुमैत।

दस बजैत-बजैत सभ अपन-अपन घरक काज सम्हारि एकत्रित

भऽ भाँग पीब महादेव-पार्वती बना ‘जय शिव जय शिव’ गबैत गाममे घुमए लगल। महादेवोक रूप अजीब। भाँग-धुथुरक गाछसँ सजल महादेवक रूपसँ पार्वतियो बेहद खुशी। कखनो संग छोड़ैले तैयार नहि। थाल-कादो गोबरसँ कियो डराइत नै बल्कि महादेवक रंग बुझि अपनो आ दोसरोसँ देह ढोरेने। जेहने महादेव तेहने हुनकर संगी। सभ मस्त। यएह छी जुड़शीतल पाबैनक भिनसुरका उखड़ाहा।

दुपहर होइते धिया-पुता सभ अपन-अपन पिचकारी रखैत तँ कीर्तनियाँ ढोलक-हरमुनियाँ। पोखैरमे सभ नहा-नहा घरपर आबि खाइ-पीबैमे लगि गेल।

बेर टगिते शिकार खेलैक तैयारीमे जुटि गेल। कियो भाँग हाँइ-हाँइ पीसैत तँ कियो नवका लाठी बनबैत। कियो पुरने लाठीक झोल झाड़ैत तँ कियो लाठीमे करुतेल लगबैमे व्यस्त। कियो सिलौटपर भाला पिजबैमे व्यस्त तँ कियो तीर पिजबैमे।

भाँग पीब लाठी, भाला, तीर लऽ लोक शिकार खेलए विदा भेल। घरसँ निकैलते ललकारा दैत सभ बाध दिस चलल। गाममे जेतेक खरहीक खेत, खरहोरि, बोन-झाड़ सभ अछि तेकर तलाशी आइ हएत।

गामक ढेरबा बच्चासँ लऽ कऽ बुढ़-बुढ़ानुस धरि लाठी लऽ शिकार खेलए विदा भेल। चारि कट्ठाक एकटा खरही-खेतकेँ चारू-भरसँ घेरलक। पाँच-सात गोरे लाठी नेने खरहीमे पैसल। घेरनिहारो हल्ला करैत आ झोरनिहारो। एकटा नढ़िया खरहीसँ निकैल दोसर खरहीमे नुका रहल। नढ़िया देखि सभकेँ जोश बढ़लै। हल्ला करैत सभ ओइ खरहीक खेतकेँ घेरलक जइमे नढ़िया पड़ा कऽ आबि नुकाएल। किछु गोरे खरहीमे ढूकि नढ़ियाकेँ ताकए लगल। खरहीक एकटा बीटमे बैस नढ़िया आँखि गुरैड़ कऽ तकैत रहए। एकटा झोरनिहारकेँ देखि नढ़िया जान बँचबैले पड़ाएल। खरहीसँ निकैलते हल्ला करैत सभ खिहारलक।

नढ़िया भगैत एकटा झाड़ीमे तेना नुका रहल जे कियो देखबे ने करैत। तिलकोरक लत्ती तेना ओइ झाड़ीपर चतरल जे तरमे अन्हार बुझि पड़ैत। हारि कऽ शिकारी सभ आगू बढ़ि गेल। नढ़िया बँचि गेल। शिकरी

सभ आगू बढ़ि झाड़ीक बोन घेरलक। बोन घेर ललकारा दिअ लगल। ललकरेपर ओइ बोनसँ एकटा हरिण आ एकटा नील गाए निकैल तेते जोरसँ पड़ाएल जे केकरो पबैए ने देलक। सभ ठाढ़ भऽ मुँह तकैत रहि गेल। शिकारी सभ अपनामे गप-सप्प करए लगल जे आब एक्केटा खरहोरि बँचल अछि जँ अहिना भेल तँ पाबैनक महौते की?

नव उत्साहसँ शिकारी सभ खरहोरि लग पहुँचल। खरहोरिकेँ चारू-भरसँ घेर तीरबला सभ पैसल। जोड़ा खढ़िया खरहोरिसँ निकैल पच्छिम-मुहेँ पड़ाएल। खढ़ियाक ऐगला दुनू पएर छोट आ पैछला दुनू नमहर। अठ-अठ हाथ छरपैत।

शिकारी सभ खिहारलक। खढ़िया भगबो करैत आ पाछू घुमि-घुमि तकबो करैत। किछु दूर भगलापर दुनू खढ़िया दू दिस भऽ गेल। खिहारनिहारो सभ राइ-छित्ती भऽ गेल। खिहारैत-खिहारैत शिकारी सभ अपसियाँत-अपसियाँत भऽ गेल मुदा खढ़िया पकड़ए नै देलक। दोसर गामक शिकारी सेहो खढ़ियाकेँ अबैत देखलक। सीमा टपि खढ़िया दोसर गामक सीमामे चलि गेल। शिकारी सभकेँ दूर देखि खढ़िया बड़का आड़िक बिलमे ढूकि गेल।

एक दिस प्रेमनगरक शिकारी दोसर दिस रूपनगरक शिकारी। प्रेमनगरक शिकारीकेँ बुझि पड़लै जे रूपनगरबला खढ़िया मारि लेलक आ रूपनगरबला शिकारीकेँ बुझि पड़लै जे प्रेमनगरबला मारि लेलक। खढ़िया चौंकले छेलए आँखि उठा-उठा देखबो करए।

दुनू गामबला-केँ एक-दोसरपर शंका हुअ लगलै जइसँ कहा-कही शुरू भेल। एक तँ शिकारक निशाँ दोसर ताड़ी-दारू-भाँगक सेहो रहबे करइ। जमातो रहबे करै आ हाथमे लाठियो रहबे करइ।

जहिना चैत मासमे खरिहाँने-खरिहाँन खुगल गहुमक बोझ रहैत, पच्छिया हवा बहैत रहैत आ तखने कियो बदामक ओरहा बान्हपर करए लगए तँ आगि किए ने लगतै, तहिना लड़ाइक सभ साम्रगी अनुकूल तँए जेते काल मारि नै फँसल ओते देरीए होइत। कहा-कही गारि-गरौवैलमे विकसित भेल। बुढ़बा सबहक गारि तँ मारिक जोश नै चढ़बैत मुदा छौड़ा-

मारड़ि जे बुढ़बाकेँ गरियबैत ओ मारिक अनुकूल समय बनबए लगल। ताबे पाछूसँ एकटा छौड़ा ईंटाक रोड़ी लऽ दोसर दिस फेक देलकै। ओ रोड़ी एक गोरेक कपारपर गिरल। कपारमे रोड़ीक कोण गड़ि गेलइ। जइसँ छर-छर खून बहए लगलै। पैछला लोक हल्ला करए लगल जे कपार फोड़ि देलकै! एक दिस हल्ला होइत दोसर दिस लाठी चलए लगल। धमगिजर मारि भेल। दुनू दिससँ करीब साएक लगभग घाइलो भेल। केकरो डेन टुटलै तँ केकरो घुट्ठी। केकरो कपार फुटल तँ केकरो कन्हा टुटलै।

दुपहरसँ अखन धरिक गरमी ठंढा गेल। कन्हेठ-कन्हेठ लोक घाइलकेँ उठा-उठा लऽ जाए लगल। दुनू गामबला अपन-अपन आदमीकेँ उठा-उठा अपना-अपना गाम लऽ गेल। दुनू दिस इलाज चलए लगल। बिनु पार्टीकेँ कहनौं थानासँ दरोगा दू दर्जन फोर्स लऽ कऽ पहुँच गेल। पहिने एकटा गामक घाइलकेँ देखि नाओं लिखलक पछाइत दोसर गाम जा सबहक नाओं लिखि केस आगू बढ़ौलक। सभपर केस भऽ गेल। मुदा दरोगा एते जरूर केलक जे जेतबे घाइल भेल रहै ओतबे आदमीपर केसो लिखलक। इलाजसँ लऽ कऽ जमानत करबै धरि तीन मास दुनू गामबला-केँ लगलै। मुदा भुमहुरक आगि जकाँ विवाद मिझाएल नहि।

इलाकामे वीरपुरकेँ लोक बदमाश गाम बुझैए। जइसँ ने लग-पासक गामबला कियो ओइ गाममे कुटुमैती करैए आ ने खेनाइ-पिनाइ। परोपट्टामे वीरपुरबला-केँ कुटुमैती नै भेने इलाकासँ बाहर जा-जा कुटुमैती करए पड़ैत।

वीरपुरमे बाहरसँ सुआसिन ऐने परिवारमे विचित्र घाल-मेल भऽ गेल। किछु सुआसिन भोजपुरी इलाकाक तँ किछु मगही इलाकाक तँ किछु अन्तिका इलाकाक तँ किछु अवन्तिका इलाकाक। तँए, ने बोलीमे एकरूपता आ ने सामाजिक रीति-रिवाजमे। जहिना बोली तहिना भोजन बनबैमे आ तहिना ओढ़ब-पहिरबमे। गाम रहितो वीरपुरमे शहरे जकाँ अनेको बोली गाममे चलैत! जखन कोनो परिवारमे बिआह-मूड़न आकि पूजा-पाठक अवसरपर जे गीत-गौनिहारि एकत्रित भऽ गोसाउनिक गीत शुरू करैत तँ सुननिहार सभ हँसबो करैत आ व्यंगो करैत। जँ कहियो कोनो काजमे लाउडस्पीकर लगा गीत गबैत तँ चारूकातक जनिजाति सभ

एकत्रित भऽ-भऽ सुनबो करैत आ हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ ताना सेहो मारैत।

ओना, वीरपुरबला अपनार्कें लड़ाकू बुझैत। साले-साल जुड़शीतल दिन अपन शक्तिक प्रदर्शन सेहो करैत। गामसँ पूब एकटा परती अछि, जेकरा सभ कुरुक्षेत्रक मैदान कहैत। वीरपुर गाममे पुबे-पच्छिमे, बीचो-बीच ऊँचगर बान्ह अछि। बान्हक दुनू भाग गाम बसल अछि।

गाममे दूटा दियादी पट्टी एहेन जे अदहा गाम पसरल। दुनू पट्टी बान्हक दुनू भाग बसल। जुड़शीतल दिन-ले सौंसे गौंआँ बेहरी कऽ एकटा नमहर खस्सी कीनैत। जुड़शीतल पाबैन दिन ओइ खस्सीकें बीच परतीपर खुट्टा गाड़ि बान्हि दइत आ बेर टगिते सौंसे गामक लोक गाँजा, भाँग, ताड़ी, दारू पीब मस्त भऽ जाइत। चारि बजेसँ अदहा गामक लोक एक भाग आ अदहा गाम दोसर भाग भाला, फरसा लऽ जमा हुअ लगैत।

जखन सौंसे गामक लोक जमा भऽ जाइत तखन ढोलिया कसि कऽ एक झोंक ढोल बजबैत। ढोल बन्न होइते सभ तैयार भऽ जाइत। जखन दुनू दिसक लोक तैयार भऽ जाइत तखन ढोलिया तीन बेर ढोल बजबैत। ढोल बजिते नवजुबक सभ सन-सन करए लगैत।

एकटा नवजुबक जे गोर वर्ण रिष्ट-पुष्ट शरीर बी.ए. पास छल। अही बेर फागुनमे बिआहो भेल छेलै, ओ खस्सी खोलए आगू बढ़ल। खस्सी लग जा डोरी खोलए लगल। डोरीए खोलै काल दोसर पाटीक एक गोरे कपारपर सोझे फरसा मारलक। दुनू एक्के हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास केने। दियाद सेहो। ओइ जुबकक कपार दू फाँक भऽ गेल। फरसा मारिते दुनू दिस हल्ला हुअ लगल। जाबे हल्ला शान्त होइ-होइ ताबे ओ जुबक मरि गेल। मनोरंजनक विकृत रूप मैदानमे उपस्थिति भऽ गेल।

रूपनगर आ प्रेमनगर एकबधू। ओना, आनो-आनो बाधमे दुनूक खेत मुदा एकटा बाधमे दुनू गौंआँक खेत। जखन रूपनगरबला खेत जोतए अबैत तँ धपा कऽ प्रेमनगरबला पकैड़ मारबो करैत आ हरो-बरद छीनि लइत। तहिना रूपोनगरबला करए लगल। ढेरो मोकदमा दुनू गौंआँक बीच फँसि गेल। पनरहे दिनमे रविया, भोलबा, अनुपा, गोसैमा, रूपना आ

मेथराक हर-बरद छीनि लेलक। तहिना प्रेमनगरक चंचलबा, फकीर, सिंहेश्वर, भैयेजी, सुकल आ सोनेलालक हर-बरद छीना गेल। मुदा दुनू गौंआँ अखन धरि बरबैरेमे रहल। किएक तँ सात गोरे रूपनगरबला आ सात गोरे प्रेमोनगरबला मारियो खेलक आ हरो-बरद छिनौलक। मुदा गौंआँमे कैबलत्ती एलै जे जेकर-जेकर हर-बरद छिनाएल रहै ओकरे सभकेँ भेटलै। मुदा बरबैर रहनौं प्रेमनगरबला नफ्फामे रहल। तेकर दू कारण- पहिल जे नीक बरदक जोड़ा पड़ि लगलै आ दोसर जे प्रेमनगरक जे कियो मारि खेलक ओ जुआन जहान छल तँए अस्पताल जाइक काज नै पड़लै। मुदा रूपनगरक तीनटा अधवयसू मारि खेलक। जेकरा एक महिना डॉक्टरी इलाज करबए पड़लै।

एक दिन सौंसे रूपनगरक लोक एकठाम बैसल। सभ मिलि तँइ केलक जे भोरगरे दू बोझ लाठी बाधमे रखि आएब आ जेते लोकक खेत ओइ बाधमे अछि ओ सभ अपन-अपन हर लऽ कऽ ओइ बाधक खेत जोतब।

बढ़ियाँ विचार बुझि सभ मानि लेलक। मगर बुधना मने-मन विचार केलक जे जेहने नफगर विचार भेल तइसँ केते घाटा छै ओइ दिस केकरो नजैरे ने गेल। हम जे बजबो करब तँ छौड़ा-मारड़ि बुझि सभ दुसबो करत आ बुढ़बा सभ गरिएबो करत। तइसँ नीक अपने बुधिए काज करब। जखन सभ बैसारसँ उठि विदा भेल तखन बुधना बाजल-

“हमहूँ हर लऽ कऽ ओइ बाध जाएब मुदा हमरा बजारसँ दवाइयो अनैक अछि। ओना, हम भोरे जा हर जोतै बेर तक आबि जाएब, जँ कहीं अबेर भेल तँ कियो ई नै कहिहह जे बुधना धोखेबाज अछि।”

बुधनाक बात सुनि सभ हल्ला करैत बाजल-

“ठीक अछि। ठीक अछि। बड़ देरी हएत तँ जलखै बेर हएत। सएह ने।”

मने-मन बुधना बुझलक जे दाउ सुतैर गेल। बजारे छिऐ कएटा चिन्हारए भेटत। की ओकरासँ कुशल-छेम नै करब। चाह-पान नै करब। अबेर हेबै करत। बुधियार सभ केते अछि जे पाँच गामक लोककेँ बजा

पनचैती नै करत। जाएत चैत-बैसाखक रब्बी बनैले..!

भोरे सभ संगोर कऽ एक्के संगे हर लऽ विदा भेल। सभ अपन-अपन खेत जोतए लगल। प्रेमनगरक अधिकलाल सेहो ओही बाध हर-बरद लऽ खेत जोतैले अबैत रहए। फरिक्केसँ रूपनगरबला-कैँ जेरगर देखि घुमि गेल। गामपर आबि हल्ला कऽ कऽ कहए लगलै जे रूपनगरबला सभ खेत जोतैए। तेते जेरगर अछि जे कहीं अपन-अपन खेत जोति अपनो सबहक ने जोइत लिअए।

एक तँ दुश्मनीक क्रोध आ दोसर खेत जोतैक डर। सभसँ बेसी डर होइ जे जँ कहीं अहिना सभ दिन आएत आ अपन जोति-कोरि कऽ अबादि लेत आ हमरा सबहक परतीए रहि जाएत!

सौंसे गामक लोक सभ लाठी लऽ विदा भेल। रूपनगरबला मने-मन खुशी जे हमहूँ सभ तैयारे छिऐन। मुदा जखन लोकक करमान देखलक तखनसँ सबहक करेज डोलि गेल। ओना, कमजोरीक कारण ईहो रहै जे रूपनगरक सिरिफ किसानेटा रहै तँए कमजोर। मुदा जँ भागियो जाइ आ एमहर प्रेमनगरबला गाम हूलि जाए, तखन तँ मरद-मौगीक कोनो ठेकान नै रहत! ओना, आशा ईहो रहै जे गाम हूलत तँ गामक मरद-मौगी तैयार भऽ जाएत आ हमहूँ सभ बीच्चे गाममे घेर मरम्मत कऽ देबइ।

प्रेमनगरक किछु गोरे बरद खोलए गेल आ किछु गोरे बाता-बाती करए लगल। सभ बरदकैँ खोलि हरो आ बरदो एकठाम केलक...।

एमहर, ऐ बातक दृढ़ बिसवास रूपनगरबला-कैँ भऽ गेलै जे आइ सभ हर-बरद चलि जाएत। तँए अपन इज्जत बँचबै दुआरे अगुआ कऽ मारि ठनलक। खूब लाठी चललै। किछु लोक भागि गेल आ किछु गोरे मारि खा खेतमे ढेंग जकाँ बेहोश भऽ पड़ल। एकतरफा मारि खेलक।

..सभ चिन्तित जे मारियो खेलौं, हरो बरद गेल आ कहीं खेतो ने जोइत लिअए। तेतबे नइ, सबहक लाठियो लऽ लेलक आ हरो-बरद अगुआ लेलक!

हँसैत-पिहकारी दैत प्रेमनगरबला गामपर आएल। एक दिस मरद सभ आ दोसर दिस मौगी सभ कुदि-कुदि गरियबैत। जखन रूपनगरबला-

केँ घरपर लऽ गेल तखन स्त्रीगण सभ कनैयो लगल आ सरापि-सरापि गरिएबौ लगल।

गामपर आबि प्रेमनगरबला, बीस सेर चिन्नी चालिस-पचासटा नेबो आनि शरबत बनबए लगल। जेते कालमे शरबत बनलै तेते कालमे लाठी चलौनिहार सभ अपन मारिक कथा सुनेलकै। मुदा मारिक डर दुनू गौंआँकेँ भीतरे-भीतर होइत। ओना, डरे ने फेर रूपनगरबला ओइ बाध आएल आ ने प्रेमनगरबला। गामक बगलबला खेत दुनू गोरे अबादलक आ बीचला बाधक खेत छोड़ि देलक।

रूपनगर आ प्रेमनगरक बगलमे, कोस भरि हटि सोनपुर हाट लगैत। सप्ताहमे दू दिन- मंगल आ शुक्रकेँ बेरूपहरमे। हाट तँ तीनिए-चारि घन्टाक होइत मुदा इलाकाक नामी हाटमे गनल जाइत। हाटमे बजरूआ समान-कपड़ा, बरतन, सोना-चानीक बिकरी तँ नै होइत मुदा देहाती चीज-बरद, गाए, लकड़ीक बनल कुरसी, चौकी, हँसुआ, खुरपीसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, अन-पानिक बिकरी खूब होइत। तरकारी आ मसल्ला उपजैक इलाका तँए बाहरोक वेपारी आबि-आबि कीनैत। रूपोनगरक वेपारी आ प्रेमोनगरक वेपारी हाटमे खरीद-बिकरी करैत। मुदा जइ दिनसँ दुनू गामक बीच मारि भेलै तहियासँ दुनू गामक वेपारी हाट करब छोड़ि देलक। डर दुनू गामक वेपारीकेँ होइत।

जुड़ेशीतलक साँझमे दुनू गामक मारिक जनतब बिशेसरकेँ भेल। समाचार सुनिते देहमे आगि लगि गेलइ। मने-मन बिशेसर सोचए लगल जे दुनू गामक लोक मनुक्ख छी आकि मनुक्खक नकल। कहू जे नढ़िया, खढ़िया दुआरे कहीं एहेन मारि हुअए! तीन मास धरि दुनू गामक लोककेँ केते नोकसान भेल आ केते शरीरमे कष्ट! प्रेमनगरमे बिशेसरक समधियौर आ रूपनगरमे ममियौत बहिन बसैत। एहेन घटनाक पछाइत जिज्ञासा करब बिशेसर जुरूरी बुझलक। मुदा खढ़िया-ले झगड़ा भेल तँए तामसे ने रूपनगर जा कऽ जिज्ञासा केलक आ ने प्रेमनगर। प्रेमनगरक भार उताइर बिशेसर बेटाकेँ पठा देलक मुदा अपने नै गेल। रूपनगर तँ अपने जेनाइ जरूरी मुदा तामसे सभ जरूरी बिशेसरक आगिमे जरि गेल। लड़ाइ बेसिएलोपर तामस ओहिना तरगर रहइ। चारू दिससँ बिशेसरकेँ उपराग

अबए लगल। पहिल उपराग ममियौत बहिन दिससँ एलइ तँ दोसर बहनोइ दिससँ एलइ। तहिना तेसर समैध दिससँ तँ चारिम समधीन दिससँ। एक्को एहेन दिन बाँकी नै रहै जइ दिन उपराग नै अबइ। मुदा उपराग सुनि बिशेसरकेँ तामसोमे नवका पानि चढ़ि जाइत।

छह मास बीत गेल। मुदा बिशेसरकेँ तामसमे कमी नै आएल। मने-मन विचारए लगल जे की करब उचित हएत। गुनधुन करैत माथपर हाथ दऽ बैसल बिशेसरकेँ एकटा जुक्ती फूरल। फुरिते बिशेसर रूपनगर जाइले तैयार भऽ गेल। जुक्ती यएह फुरलै जे जिज्ञासाकेँ भार नै बुझि भेँट करब बुझब। पत्नीकेँ बिशेसर कहलक- "हम कनी रूपनगरसँ भेल अबै छी।"

रूपनगरक नाओं सुनि हँसैत मोहिनी बाजल- "आइ केमहर सुरूज भगवान उगलखिन जे मन बदलल!"

"मन-तन नै बदलल, तेते उपराग अबैए जे नइ गेलासँ दोखी भऽ जाएब। वएह दोख मेटबैले जाइ छी।"

बिशेसर असथिरसँ बाजि रूपनगर विदा भेल। रस्तामे ओइ जुड़शीतल दिनक घटनाक सम्बन्धमे सोचए लगल। अदहासँ अधिक रस्ता कटि गेलै, तखन मनमे एकाएक एलै जे नै जाएब। एतैसँ घुमि जाएब। ने एक्को डेग बिशेसर आगू बढ़ैत आ ने पाछू। बीच रस्तापर ठाढ़ भऽ जेबीसँ तमाकुल-चुन निकालि चुनबए लगल। तमाकुलो चुनबैत आ मने-मन सोचबो करैत जे आब जँ घुमि जाएब तँ घरवाली ताना मारती। तहूसँ बेसी जे जँ औरो गोरे लग बाजि देने हएत तखन केतेकेँ मुँहमे जवाब देब।

तमाकुल खा बिशेसर आगू बढ़ल। बहिन ऐठाम पहुँचते बहनोइ दरबज्जापर सँ उठि रस्ता दिस टहैल देलकैन। बिशेसर बुझि गेल जे तामसे एना केलैन। मुदा मान-अपमान बहिनक ओइठाम नै होइत। तँए पोल्हा कऽ हमहीं किए ने पुछिऐन। थोड़े आगू बढ़ि बिशेसर बहनोइकेँ पुछलक- "पाहुन, एना मन किए उड़ल अछि। कोनो केसमे वारन्ट-तारन्ट भऽ गेल की?"

गुम्हरैत बहनोइ उत्तर देलखिन-

"गनू झा ठीके कहने छथिन जे 'एक्के बेर मुइने माइयोकेँ

चिन्हलौं।' सभ दिनसँ कुटुम छेलौं बेर पड़ल तँ अहूँ छोड़ि देलौं।"

चुपचाप बिशेसर सुनैत रहल। हँ, हूँ किछु नै बाजल। तरे-तर हँसियो लगै जे- 'गदहा खसल मेघसँ तँ रूसि रहल सौंसे गौआसँ।' हँसीकेँ दाबि बिशेसर कहलकैन- "वएह सभ बुझैले तँ एलौं हेन जे की केना भेल। आऊ एकठाम बैस सभ बुझा दिअ। बुझल रहत तखन ने किछु सोचब।"

ताबे अँगनासँ बहिन निकैल डेढ़ियापर आबि ठाढ़ भऽ गेल। बिशेसरसँ छोट बहिन। गोड़ नै लागब देखि बिशेसर बुझलक जे दुनू गोरे एक्के रंग तमसाएल अछि। हमहूँ तँ गप्पे करए एलौं। तँए जे भऽ रहल अछि ओ सभ नीके।

बहनोइ- "भैया! गामक इज्जतक सबाल भऽ गेल। जँ अछैते जिनगी गामक इज्जत चलि जाइत तँ जीविए कऽ की करितौं।"

बहनोइक बात सुनि बिशेसर मने-मन हँसबो करैत जे बड़ इज्जत बचेनिहार छैथ। मुदा हँसीकेँ दबैत बिशेसर बाजल- "इज्जत बँचा लेलौं ई तँ बड़का काज केलौं। हमहूँ धड़फड़ाएले आएल छी, रहब नहि तँए एकटा बात कहू जे अखन नीक छी किने?"

बिशेसरक बात जेना बहनोइकेँ हृदयमे धक्का मारलकैन तहिना मन तिलमिला गेलैन। बोलीक कठोरता बदैल नरम हुअ लगलैन। अपशोच करैत बजला- "भैया की कहबैन, छह माससँ जे दशा भऽ रहल अछि ओ तँ अपने हृदय जनैए। एक्के बीघा खेत अछि। जइमे पनरह कट्ठा खसले रहि गेल। पाँच कट्ठाक उपजासँ की हएत। एकटा जे बरदो छल ओहो प्रेमनगरबला छीनियेँ लेलक। खुट्टापर गाए छल ओहो दवाइ-दारूसँ लऽ कऽ केसक खर्चमे बिका गेल। गुजर करब मुसकिल भऽ गेल अछि।"

बहनोइक बात सुनि बिशेसरक मन तामसे आगि भऽ गेल। मुदा किछु बाजल नहि, चुपचाप उठि विदा भऽ गेल।

बाध खसल रहने घास उपजल। मुदा घसबहिनियोँ सभ डरे घास छिलए नै जाइत। ने रूपनगरक घसबहिनी बाध जाइत आ ने प्रेमनगरक।

एक दिन आठ-दसटा रूपनगरक घसबहिनी घास छिलए बीचला बाध गेल। प्रेमनगरक घसबहिनी देखलक। ओ चुपचाप गाम आबि पनरह-

बीसटा छरे-छाँट घसबहिनीक संगोर कऽ बाध दिस चलल। थोड़े दूर गेलापर सभ छिड़िया कऽ बढ़ैत गेल। रूपनगरक घसबहिनी घास छिलैमे मस्त। चारू-भरसँ प्रेमनगरक घसबहिनी रूपनगरक घसबहिनीकेँ घेर लेलक। जखन प्रेमनगरक घसबहिनी रूपनगरक घसबहिनीक लग आएल तखन रूपनगरक घसबहिनीक नजैर पड़लै। प्रेमनगरक घसबहिनीकेँ देखि रूपनगरक घसबहिनी डरल नहि। आठो-दशो घसबहिनी साड़ीक फाँड़ बान्हि, हाथमे हाँसुआ-खुरपी लऽ ठाढ़ भऽ गेल। प्रेमनगरक घसबहिनीमे एकटा अधवयसू, जेकरा सभ झगड़ाउ दादी कहैत, दुनू गामक घसबहिनी दू दिस ठाढ़ भऽ झगड़ा करैले तैयार भऽ गेल। तैबीच झगड़ाउ दादी बाजल किछु नइ मुदा हँसुएसँ इशारामे कहलक जे आँखि निकालि लेबौ। दादीक इशारा देखिते रूपनगरक घसबहिनी गारि पढ़ब शुरू केलक। दुनू दिससँ गारि चलए लगल। रूपनगरक देवसुनरी प्रेमनगरक माधुरीकेँ कहलक-

"गे मोटकी, तोरा की होइ छौ जे हम हाथी छी। सभकेँ पीच देबइ। सूढ़ जे नमरल छौ ओकरा जड़ि भिरा कऽ काटि लेबौ।"

देवसुनरीक बात सुनि माधुरी बाजल-

"हे गइ ठोरनमरी, देखै छीही हँसुआ! दुनू ठोर सहित नाक काटि लेबउ।"

माधुरीक बात सुनिते रूपनगरक घसबहिनी आगू बढ़ि प्रेमनगरक घसबहिनीकेँ झोंटा पकड़ैले लगमे चलि आएल। प्रेमनगरक घसबहिनी बेसी छलि। दू-दू, तीन-तीन गोरे मिलि एक-एकटा रूपनगरक घसबहिनीकेँ कियो झोंटा पकड़लक तँ कियो गट्टा। रूपनगरक घसबहिनीकेँ लिड़ी-बिड़ी कऽ पटकए लगल। दुनू गामक घसबहिनीक बीच मुक्का-मुक्की चलए लगल। मारि तँ प्रेमोनगरक घसबहिनी सेहो खेलक मुदा बेसी रूपनगरक घसबहिनी खेलक। रूपनगरक झगड़ाउ बुढ़िया सबहक हँसुआ, पथिया समेट गाम दिस विदा भेल।

साल भरिक झगड़ा-झंझटसँ दुनू गामक लोक पस्त भऽ गेल छल। बिशेसर पाँच गामक पंचकेँ बैसा दुनू गामकेँ मिलान करौलक। ❑

छह

दलानक चौकीपर देबालमे ओडैठ उत्तर-मुहेँ गंगानन्द बैस आँखि बन्न कऽ दुखक अथाह सागरमे उगैत-डुमैत। मनमे यएह होइ जे खेत निलाम होइपर अछि, जँ समैपर मालगुजारी नै दऽ सकब तँ निलाम भइये जाएत। जँ खेत चलि जाएत तँ जीब केना। अखन धरि जे समाज आ कुटुमक बीच प्रतिष्ठित बुझल जाइ छी ओ केतए चलि जाएत...।

फल-फूलसँ लदल जहिना कोनो बगीचा हवाक सिहकी पाबि झुमैत रहैत आ एकाएक अन्हड़-तूफान आबि सभटा गाछ-बिरीछकेँ खसा-पड़ा दैत, वएह स्थिति तँ हमरो भऽ रहल अछि...। चकभौर लैत गंगानन्दक मनमे उठलैन- एते रहलापर जखन हमर ई गति भऽ रहल अछि तखन जेकरा कम छै, ओकर गति की हेतइ। हमरे खेत जखन निलाम भऽ जाएत तखन हमहीं की करब। तीन भाँइक भैयारी अछि। परिवारो नमहर अछि। अखन धरि सभकेँ अपन बुझि दिन-राति सेवा करैत रहलौं। मुदा जेतेक अपन बुझि करैत रहलौं तेते भाए-भावो आलसी बनैत गेल। सिरिफ खाइ-पीबै आ आरामसँ रहैक चिन्ता सभकेँ रहलै। जँ जमीन निलाम हएत तँ सिरिफ हमरेटा नै हएत, सबहक हेतइ। निलामी-ले किछु समय बँचल अछि तँए ई अन्तिम परियासमे दुनू भाएकेँ पुछि लेब उचित अछि।

मने-मन गंगानन्द सोचबो करैथ आ निलामीक डरे करेजो थरथड़ाइत रहैन। आँखिक आगूमे झल-अन्हार बुझि पड़ैन।

पतिकेँ गुम-सुम बैसल देखि पार्वती आबि पुछलखिन-

“मन-तन खराब अछि जे एते मन्हुआएल छी। मुँहक सुरखी उतरल बुझि पड़ैए!”

अपन बेथाकेँ दबैत गंगानन्द बजला- “नहि, मन तँ खराप नै अछि मुदा परिवारक जे भविस देखै छी तइ चिन्तासँ मन घेराएल अछि। कोनो रस्ते ने सुझैए।”

गंगानन्द आ पार्वतीक बीच होइत गप-सप्प सुनि रीतो लगमे आएल। जहिना गंगानन्द भाइक क्रिया-कलापसँ दुखी तहिना रीतो दुनू

परानी। पिताक समयमे जहिना गंगानन्दक परिवार चैनसँ चलैत तहिना रीतोक। अखुनका जकाँ ने अन्ट-सन्ट खरच परिवारमे आ ने एते नमहर परिवार, तँए रौदी-दाही भेनौं दिक्कत नै होइत। जन-बोनिहारक हाथे सभ काज चलि जाइत। गंगानन्द रीताकेँ कहलखिन- "दाय, कनी काका सभकेँ बजौने अबहुन?"

रीता उठि कऽ यमुनानन्द आ श्यामानन्दकेँ बजबए गेल। तीनटा समस्या गंगानन्दकेँ तीनू दिससँ घेड़ने। पहिल, खेत निलामीक। दोसर, आइ धरि दुनू छोट भाएकेँ बेटा जकाँ सेवा करैत आएल छला जे बिगैड़ कऽ गाराक घेघ भऽ गेलैन आ तेसर, रीताक दुर्दशा। मने-मन गंगानन्द सोचैथ जे जँ रीता बेटा रहैत तँ ऐ सम्पैतक हिस्सेदार तँ ओहो रहैत, मुदा से नै भेलासँ कि ओ कष्ट काटए आ हम चुपचाप देखैत रही। वेचारीकेँ चारि-चारिटा बेटी छै, केना बिआह-दान पार लगतै! जँ केतौ गरीब-गुरबा घरमे बेटीक बिआह करत तँ जिनगी भरि वेचारी नातिन सभकेँ दुख हेतइ।

रीता अँगनेमे रहि गेली यमुनानन्द आ श्यामानन्द दरबज्जापर आबि गंगानन्दक लगमे बैसल। दुनू भाँइ यमुनानन्द आ श्यामानन्द एते मन्हुआएल गंगानन्दकेँ कहियो नै देखने जेते आइ देखि रहल छैथ। मने-मन दुनू भाँइ सोचए लगल जे भरिसक कोनो नमहर मुसीबतमे भैया फँसल छैथ। मुदा किछु बाजल नहि। आइ धरि गंगानन्द जोरसँ कहियो किछु भाए सभकेँ नइ कहने, तँए बजैत संकोच होइत। मुदा करेजपर पाथर रखि गंगानन्द दुनू भाँइकेँ पुछलखिन- "बौआ, दू सालक रौदी घरकेँ तोड़ि देलक। एक्को सेर उपजावारी नै भेल। खरच तँ परिवारमे हेबे करत। केना पार लगतह? मलगुजारी से पछुआ गेल अछि जइसँ खेत निलाम होइक स्थितिमे आबि गेल छह। की करबहक?"

गंगानन्दक बात सुनि दुनू भाँइ ठर्ड़ा गेल। मुड़ी निच्चाँ कऽ लेलक। जहिना जड़ि काटल गाछ अर्ड़ा कऽ जमीनपर खसैत तहिना यमुनानन्द आ श्यामानन्दक चढ़ल मन झमान भऽ खसल।

गंगानन्द सेहो तरे-तर आगिपर चढ़ल घी जकाँ पघिलैत रहैथ। मुदा जिनगी ओहन मोड़पर पहुँच गेल छैन जे भैयारीक सिनेह आइ शीशा जकाँ चूर-चूर भऽ रहल छैन। एक परिवार तीन परिवारमे विभाजित भऽ जाएत!

दुनू भाएकेँ चुपचाप मुड़ी गोंति बैसल देखि दोहरा कऽ गंगानन्द बजला-

“बौआ, चुप रहने काज नै चलतह। भारी विपैतमे परिवार फँसि गेलह। जँ ओइ विपैतकेँ मेटबैक कोशिश नै करबह तँ दू दिनक पछाइत सभ चीज हराएल बुझि पड़तह तँए अखन समय अछि बँचैक जोगार करह।”

मिरमिरा कऽ यमुनानन्द बाजल- “भैया, अखन धरि तँ हम ने परिवार बुझलिऐ आ ने कोनो चिन्ता कहियो भेल। निलामसँ बँचैक जोगार तँ अहीं करबै।”

यमुनानन्दक बात सुनि गंगानन्द बजला- “रौदी तँ अपने परिवारटा-ले नै भेल, सभले भेलैए। जँ एकटा परिवारमे कोनो बेर-बेगरता होइ छै तँ समाजमे काज चलि जाइ छइ। मुदा से तँ नै अछि। केकरा के सम्हारत। सभ तँ अपने तबाह अछि।”

यमुनानन्द-

“तखन की करबै?”

गंगानन्द- “खेत बँचैक एकटा उपाय हमरा नजैरमे अबैए। ओ ई जे घरमे जेते गहना-जेबर अछि ओ बन्हकी लगा मलगुजारी अदाइ कऽ दिऐ आ पछाइत बन्धक छोड़ा लेब। किछु सुइदे ने लगत मुदा खेतो बँचि जाएत आ गहनो-जेबर।”

गंगानन्दक विचार सुनि श्यामानन्द बाजल- “बड़ सुन्नर विचार अछि मुदा स्त्रीगण सभ अपन गहना दइले तैयार हेती तहन ने। अगर जँ ओ गहना दइले तैयार नै होथि, तहन की करबै?”

गंगानन्द- “एक बेर जा बुझा कऽ कहुन, अगर नै मानती तँ खेत जेतैन।”

यमुनानन्द आ श्यामानन्द उठि कऽ आँगन जा अपन-अपन पत्नीकेँ सभ बात बुझा कहलखिन। मुदा जमीनक सुख-दुखसँ अनभिज्ञ आ गहनाक सिनेही औरत, ने यमुनानन्दक बात मानलकैन आ ने श्यामानन्दक। दुनू भाँइ दरबज्जापर आबि गंगानन्दकेँ कहलकैन। दुनू

भाँइक बात सुनि गंगानन्द गुम्म भऽ गेला। आँखि नोरा गेलैन। मने-मन गंगानन्द सोचलैन जे जँ खोलि कऽ दुनू भाँइकेँ नै कहि देबै तँ पछाइत हमहीं दोखी हएब। करेजपर पाथर रखि गंगानन्द दुनू भाँइकेँ कहलखिन-

"सतुआ संगे घून पीसब उचित नहि। तीस बीघा जमीन अछि। दस-दस बीघा तीनू भाँइक हिस्सा हेतह। तँए अपन-अपन हिस्सा बँचाबह वा बुड़ाबह। सभ बुड़बैइए पाछू लगल छह तँ सभ किछु बाँटि लएह। जेठ भाय होइक नाते हम कहि देलिअ।"

तीनू भाँइक बीच घरोक वस्तु-जात आ खेतोक बँटवारा भऽ गेल। बँटवाराक पछाइत यमुनानन्दोक पत्नी आ श्यामानन्दोक पत्नी तरे-तर खुशी। मुदा दुनू परानी गंगानन्द दुखसँ बेथित। किरिण उगिते पटवारी छोटकी चौकीपर बैस आगूमे ऐना आ पोडरक डिब्बा रखि ब्रुशसँ दाँत मजैत रहए। तेसर स्त्रीकेँ, जे वएसमे पटवारीक बेटी जकाँ बुझि पड़ैत, ओहो लगेमे रहैन आ तीनू सन्तान– जेठ बेटी आ छोट दुनू बेटा घरमे रहैन। तखने लूँगी-गंजी पहिरने दतमैन करैत सिपाही-दुखन सेहो आएल। सिपाहीकेँ अबिते पटवारी पत्नीकेँ कहलक-

"चाह बनाउ?"

पत्नी चाह बनबए गेली। पटवारियो आ सिपाहियो कुड़ुर कऽ ओसारपर आबि कुरसीपर बैस गप-सप्प करए लगल। आँगनसँ पटवारीक बेटी दूटा प्लेटमे, चारि-चारिटा नमकीन बिस्कुट आ चारि-चारि फाँक सेब आनि दुनू गोरेक आगुमे रखि पानि अनैले भीतर गेली। जाबे चाह बनल ताबे दुनू गोरे सेब आ बिस्कुट खा पानि पीलक। पानि पीबते पटवारीक पत्नी चाह नेने एली। लीलाकेँ देखि सिपाही गुलाबी मुस्की दैत बाजल-

"पटवारी साहैब, अहाँक हुकुम पूरा केने एलौं।"

हुकुम पूरा करैक बात सुनि लीलो ठाढ़ भऽ गेली। आँखि गुरैड़ मुँह बाँबि लीला सिपाही दिस देखए लगली। बेटी बिआहक जिज्ञासासँ पटवारी सिपाहीकेँ पुछलक-

"केहेन परिवार गंगानन्दक छैन?"

घटकक ढंगसँ सिपाही बाजल- "भगवानकेँ जँ नीक करैक रहै छैन

तँ अपन रंग-बिरंगक लीला पसारि दइ छथिन। अहाँकेँ नीक हेबाक अछि तँए रौदियाह समय आ मालगुजारीक विपैत गंगानन्दक कपारपर आएल। नइ तँ ओहन कुल-शील घरमे कुटमैती होएब असम्भव अछि।”

‘कुल-शील’ सुनिते लीलाक हृदयमे गुदगुदी लगलैन। चौअन्नियाँ मुस्की दैत लीला सिपाहीकेँ पुछलखिन- “नीक खनदान छैन?”

गंगानन्दक बराइ करैत सिपाही बाजल- “अपना इलाकामे एक्केटा वंश एहेन अछि जे सभसँ पैघ बुझल जाइत। ओइ वंशक गंगानन्द छैथ। सिरिफ वंशेटा पैघ नै छैन हुनका सबहक बेवहार आ विचार सेहो तेहने छैन। जखन हुनका ऐठाम जाएब तँ बुझि पड़त जे मनुक्खक नै देवताक घर एलौं। जुआन-जहानक कोन गप जे अस्सी बर्खक बुड़हो स्त्रीगण हदिघड़ी मुँहपर साड़ी रखने रहै छैथ।”

सिपाहीक बातसँ लीलाक दिल धड़कए लगलैन। मनमे हुअ लगलैन जे, जे बिआह काल्हि हएत से आइए भऽ जाए। उत्तेजित भऽ लीला सिपाहीकेँ कहलखिन- “खरच जे होइ तेकर एक्को पाइ चिन्ता नै करब। धन भेलापर सभ इज्जत बनबैए। अवसर हाथ लगल अछि छोड़ब मुरुखपना हएत। आइए जाउ आ बात पक्का-पक्की केने आउ।”

लीलाक उत्सुकता देखि सिपाही बाजल- “मेम साहैब, दुखन सिपाही ओते कच्चा खेलाड़ी अछि जे फँसल शिकार छोड़ि देत। जखन डेग उठेलौं तँ काज कइए कऽ छोड़ब। काल्हिए फेर जा कऽ दिन-ठेकान तँइ केनहि आएब।”

खुशामदी बोलीमे लीला बजली- “जँ ओइ खनदानमे कुटुमैती भऽ गेल तँ अहाँकेँ मुहमंगा इनाम देब।”

मने-मन सिपाही बुझैत जे जहिना पनहाएल गाए औंढ़ मारैए तहिना लीलो अछि, तँए मौकाक लाभ उठा ली।

लीला आँगन गेल। सुनयना दरबज्जा दिसक खिड़की लग ठाढ़ भऽ सभ बात सुनैत मने-मन पाँच साल उपास कऽ दुर्गास्थानमे साँझ देवाक कबुलो केलक। आँगन आबि लीला भगवती आगू जा आँचर पसारि, कुमारि भोजन कौबुला केलैन। घरसँ निकैल लीला अँगनाक कुरसीपर बैस

सोचए लगली जे हम सभ तँ करतबे करब, भाग्य तँ संग सुनयनेक देत। पटवारीक तेसर स्त्री लीला। जखन पटवारीक उमेर पचास बर्खसँ टपि गेल तखन पनरह बर्खक लीलाकेँ फुसला कऽ बिआह केलक। धन देखि लीला, उमेरक परवाह बिनु केने पटिया गेली। पटवारीक पहिल बिआह जे पिता करौने रहैन से अपने जातिमे भेल रहैन। जइ स्त्रीसँ दू बेटा आ दू बेटी। चारू जुआन। नाति-नातिन आ पोता-पोती सेहो। बाप-दादाक घर-घराड़ीक अतिरिक्त, साए बीघा निलामी जमीन सेहो गाममे बनौने। दोसर स्त्रीमे एकटा बेटा आ तीनटा बेटी छैन। चारूक बिआह-दुरागमन भऽ गेल। बेटी सासुर बसैत आ बेटाकेँ सेहो दोसर गाममे पचास बीघा जमीन, गाछी-कलम, पोखैर, इनार, घर-दुआर सभ किछु बना देने। जैठाम दोसर स्त्री आ बेटा-पुतोहु रहैत। तेसर बिआह कचहरीक नोकरानीक बेटीसँ केने। जइ स्त्रीक बेटी सुनयना छी। वएह सुनयनाक बिआहक गप-सप्प चलैत। हीन जातिक बेटी रहने पटवारीकेँ छाती धकधक करैत जे जँ कहीं गंगानन्द बुझि जेता तँ कुटुमैती भङैठ जाएत। पटवारी दुखन सिपाहीकेँ कहलक-

“दुखन, अहाँसँ तँ कोनो बात छिपल नहियेँ अछि मुदा जातिक भाँज गंगानन्दकेँ ने लगैन से ओरिया कऽ गप-सप्प करब।”

पटवारीक बात सुनि दुखन सिपाही हँसैत बाजल-

“हम ओते अनाड़ी छी जे गंगानन्द पेटक बात बुझि जेता पहिलुका सासुरक कुल-मूलक पता देबैन किने।”

सिपाहीक बात सुनि पटवारीक मन असथिर भेल। दुखन सिपाहीकेँ पोल्हबैत बाजल-

“अहाँक हम छोट भाए बुझै छी। अहूँ जे जेना कहब से हम करब। मुदा कुटुमैती हूसए नहि।”

दुखन बिसवासमे लैत बाजल- “हाकिम, रसीदक एकटा सादा जील्द अपन दसखत कए कऽ दऽ दिअ। पहिने रसीद दऽ गंगानन्दकेँ हाथमे लऽ लेब। जखन पकड़मे चलि औत तखन अनेरे काज सुढ़िया जाएत। आइए अहाँ एकटा जील्दमे दसखत कए कऽ दऽ दिअ काल्हि भोरे हम जाएब।”

ओसारपर सँ उठि पटवारी कोठरी जा एकटा रसीदक जील्दमे अपन हस्ताक्षर करए लगल। पचास रसीदक एकटा जील्द। सौंसे जील्दमे हस्ताक्षर कऽ पटवारी दुखनकेँ दऽ देलक। जील्द हाथमे अबिते दुखन तरे-तर चपचपाए लगल जे आमदनी भेट गेल..! तखने आँगनसँ लीला आबि एक भरि सोनाक चेन दैत दुखनकेँ कहलक-

"ई नेने जाउ। बिआहक बात पक्का करैत बरक हाथमे सगुन दऽ देबैन।"

रसीदक जील्द आ सोनाक चेन लऽ दुखन अपना डेरामे आएल। डेरामे आबि रसीदकेँ उघारि-उघारि देखए लगल। पचासो रसीद देखि दुखन जील्दकेँ अढ़मे झाँपि कऽ रखलक। गदगद मने चौकीपर बैस सोचए लगल जे हमहूँ तँ गरीबेक बेटा छी। जमीन्दारियो जाइए रहलै हेन। तँए हमरासँ जेते गरीबकेँ उपकार भऽ सकतै से करब। जँ किछु कमाइयो-खटाइ भऽ जाएत तँ सेहो कऽ लेब। राष्ट्रीय आन्दोलन पूर्ण जवानीमे आबि चुकल छल। 1940 ई.क पछाइत राजा-महराजा आ जमीन्दार बुझए लगल छल जे आब हमरा जाइक बेर आबि गेल। देशक आन्दोलन दू दिशामे बढ़ि रहल छल। गाम-गाममे बकास्त जमीनक लड़ाइ शुरू भऽ गेल। जमीन्दार आ जमीन्दारक लगुआ-भगुआ सभ अपन हाथ ससारैमे लगि गेल। जेकरा जेतए जे फबै ओ हथियाबए लगल। मुदा जमीन्दारक जे पैछला बेवहार रहलै ओइसँ किसान डराइते छल।

राष्ट्रीय आन्दोलनमे जइ तरहेँ जन-समर्थन भेट रहल छल ओइ तरहेँ जनतामे जागरूकता नै आबि सकल छल। पैछला जे जमीन्दारक शोषण आ क्रिया-कलाप छल ओइसँ किसान त्रस्त रहए। मुदा जमीन्दारक लगुओ-भगुओ आ जमीन्दारो सभ बुझि रहल छल जे जमीन्दारी अन्तिम अवस्थामे आबि गेल। बकास्त जमीनक लड़ाइ आम जनताक बीच पहुँच गेल छल जइसँ किसानोक बीच नव-चेतना जगि रहल छल। ऐ लड़ाइ सँ मिथिलांचलो अलग नहि। मिथिलांचलोमे गाम-गाम बकास्तक लड़ाइ पकैड़ नेने छल। मुदा 'बटाइदारी' आ 'हदबन्दी' कानून नै बनि सकल छल। ❑

सात

दलानक ओसारक एकजनियाँ कोठरीमे बैस गंगानन्द परिवारक दुर्दशाक सम्बन्धमे सोचै छला। जहिना वसन्त आ ग्रीष्मक बीचक सिमानपर मौसम रहैत तहिना सुख-दुखक बीच परिवार अछि। अखन धरि जे परिवार समाजमे सुभ्यस्त, इज्जतदार बुझल जाइ छल ओ जमीन निलाम भेने टुटि कऽ केतए चलि जाएत। समाज आ सम्बन्धीक बीचक सम्बन्ध की भऽ कऽ रहत? जइ जमीनक कोरामे अखन धरि खेलेलौं आ ओहीक उपजासँ जिनगी चलैत रहल से जमीन निलाम भेलापर सभ चलि जाएत! हम केहेन करमजरू भऽ गेलौं जे देखिते-देखिते सभटा जा रहल अछि! धिया-पुताक कपारमे विधाता की लिखि पठौलखिन जे गुजर-बसरसँ लऽ कऽ बिआह-दुरागमन होएब कठिन भऽ गेल अछि। जे परिवार गरीब-गुरबासँ लऽ कऽ भूखल-पियासल तककेँ एक मुट्ठी अन्न खाइले दइ छल ओ आइ अपने केतए जा रहल अछि..!

मने-मन गंगानन्द सोचबो करैथ आ दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोरो टघरैत रहैन। सुखल मुँह, करुआएल आँखि आ करिछौन भेल ठोर गंगानन्दक देखि पार्वती आगूमे ठाढ़ भेली। आइ धरि जइ सिनेहक नजैरसँ गंगानन्द पार्वतीकेँ देखै छला आ पार्वती गंगानन्दकेँ देखैत रहैन ओइमे दुनूकेँ बदलल रूप बुझि पड़ए लगलैन। ने गंगानन्द किछु बजैथ आ ने पार्वती। जेना दुनू गोरे अपन-अपन बेथाकेँ घोंटि रहल छल। जेना दुनू गोरेकेँ जिनगीक आशा तिले-तिल कम हुअ लगलैन। जेना अथाह पानिक वेगमे दुनू उगैत-डुमैत। तरे-तर दुनूक हृदयमे बुकौर लगैत। गंगानन्दकेँ होइन जे बोम-फाड़ि कऽ कानि सभ बेथा कऽ आँखिक नोरक संग बहा ली, मुदा समैयक गतिकेँ के रोकि सकैए...।

दहिना हाथसँ आँखिक नोर पोछैत पार्वती बजली-

“दुख केलासँ की हएत। जखन भगवानक यएह लीला भऽ गेलैन तखन मनुक्खकेँ कनने की। हरिश्चन्दक कथा बुझले अछि। जइ दिन जेते दुख होइक अछि ओ तँ हेबे करत।”

आँखि उठा गंगानन्द पार्वतीकेँ देखि पुनः आँखि निच्चाँ कऽ मने-मन सोचए लगला। सहोदर भाए, जेकरा बेटा जकाँ बुझै छेलौं से दियाद बनि गेल! समटल परिवार राइ-छित्ती भऽ रहल अछि..!

धीरक पातर टेमीक ज्योति गंगानन्दक मनमे आएल। आशाक कोमल अंकुर अंकुरित भेल। साहसक लालिमाक रंग आँखिक आगूमे बिजलोका जकाँ छिटकल। दुनू हाथसँ दुनू आँखिक नोर पोछि उठि कऽ ठाढ़ भेला। पार्वती मुड़ी गोंतने बैसल। जहिना कियो किछु पबैले देवताक गुहाड़ि लगबैत तहिना गंगानन्द नचारीक नजैरसँ पार्वतीकेँ गुहाड़ि लगबैत बजला-

"आइ भरि समय अछि। भैयारीमे भिनौज भइये गेल मुदा अखन धरि दुनू भाएकेँ बच्चा जकाँ पोसलौं, एहेन समयमे छोड़ब उचित नै हएत। अहाँ अपन सभ गहना दिअ। अगर बन्हकी लगौलासँ काज सम्हैर जाएत तँ बन्हकीए लगा लेब नइ तँ बेच लेब। जँ से नै करब तँ सभ खेत-पथार चलि जाएत। खेत बँचत आ समय-साल नीक हेतै तँ उपजा बेच कऽ छोड़ा देब नइ तँ किछु खेते बेच कऽ छोड़ा देब।"

एते बात बजैत-बजैत गंगानन्दक देह थरथर कँपए लगलैन। मुदा भलमानुस घरक बेटी पार्वती, पतिक बेथाकेँ अपन बेथा बुझि मुस्किया कऽ बजली-

"गहना कोनो हमरेटा छी आ अहाँक नहि छी आकि धिया-पुताक नइ छिऐ। सबहक छिऐ। ओ तँ बेरे-बेगरता-ले रहै छै किने।"

पार्वतीक बात सुनि गंगानन्दक मन हल्लुक भेलैन। मुस्कियाए लगला। गहना अनैले पार्वती आँगन गेली। निराशाक समुद्रसँ गंगानन्द आशाक छोट-छीन पोखैर दिस मुड़ला। गहनाक पेटी नेने पार्वती दुआरपर आबि गंगानन्दक आगूमे रखि देलकैन। पेटी देखि गंगानन्दकेँ मनमे भेलैन जे कहीं खिसिया कऽ तँ नै आगूमे रखलैन। मुस्कियाइत बजला-

"पेटी खोलब तखन ने अन्दाजसँ देखि गहना लेब। ओना, केना बुझबै।"

पार्वती पेटी खोलि सोनाक गहना एक भाग आ चानीक एक भाग

रखैत बजली-

"जेतेसँ काज सम्हरत ओते लऽ लिअ।"

अखन धरि गंगानन्द पार्वतीक गहना नै देखने छल। गहना देखि गंगानन्द क्षुब्ध भऽ गेला। सोचलैन जे दुओटा सँ काज चलि सकैए। अगर दूटा बोहाइयो जाएत तैयो बहुत रास गहना रहबे करतैन। दूटा सोनाक गहना छाँटि इशारा करैत शेष सभ गहनाकेँ रखि लइले कहलखिन आ दुनू गहनाकेँ रुमालमे बान्हि गंगानन्द बजला-

"कनी झब-दे जलखै बना दिअ बजार जाएब। कखन आएब कखन नइ, तँए किछु खेने रहब तँ बढ़ियाँ रहत।"

सभ गहनाकेँ पेटीमे रखैत पार्वतीक मनमे उठलैन- जँ दूटा बोहाइयो जाएत तैयो बहुत रहबे करत।

चुल्हि पजाइर पार्वती जलखै बनबए लगली। गंगानन्द लोटा-बाल्टी लऽ नहाइले कलपर गेला...।

दुनू परानी यमुनानन्द घरक पलँगपर बैस गप-सप्प करैत। गपक क्रममे यमुनान्द पत्नीकेँ पुछलक-

"भीन भेलासँ खुशी अछि कि दुख?"

मुस्कियाइत पत्नी कहलकैन-

"खुशी तँ एते अछि जइसँ ऊपर हुअए नहि। जहिये बाबू मुइला तहिये जँ भीन भऽ गेल रहितौं तँ बेसी नीक होइत। किएक तँ अखन धरि जे दुख कटलौं ओ नै काटए पड़ैत।"

यमुनानन्द-

"की दुख कटलौं?"

पत्नी-

"अखन धरि नोकर-चाकर जकाँ घरमे रहलौं। जेना हमर किछु ऐ सम्पैतमे रहबे ने करए। ने घरमे एक्को पाइ मोजर छेलए आ ने कोनो काजमे पूछ-आछ। आब अपन सम्पैत भेल, जे मन फूरत से करब। कियो हाकिमो-महाजन तँ नै रहत।"

घटक बनि दुखन सिपाही गंगानन्द ऐठाम आएल। सिपाहीकेँ देखि गंगानन्दक हृदय हर्ष-विषादक बीच लटैक गेलैन। दुखन सिपाहीक बोलीमे मलिकाना ताउ नहि, बल्कि घटकक मधुआएल आवाज। दुखनकेँ कुरसीपर बैसा गंगानन्द आँगन जा पत्नीकेँ चाह बनबए कहलखिन। आँगनसँ दरबज्जापर आबि गंगानन्द दुखनसँ गप-सप्प करए लगला। फुसफुसा कऽ दुखन कहलकैन-

“अखन दुइए गोरे छी। कोठरीमे चलू, किछु खास गप करब। बहरामे जँ कियो गपक बीचमे औत तँ गड़बड़ हएत, एकांती गप अछि।”

सिपाहीक हाव-भावसँ गंगानन्दक जरल मन शीतल भेलैन। दुनू गोरे कुरसीसँ उठि ओसारेक कोठरीमे जा गप-सप्प करए लगला। गंगानन्दकेँ पोल्हबैत सिपाही कहलकैन- “हम तँ सिपाही छी। हमरा बुते जेते उपकार भऽ सकत तेते जरूर करब। पत्नियोकेँ बजा लियौन। पारिवारिक गप छी।”

आँगनसँ पार्वती चाह नेने एली। चाहक गिलास रखि गंगानन्दक पाँजरमे ठाढ़ भऽ गेली। एक घोंट चाह पीब दुखन टेबुलपर गिलास रखि, झोरासँ चद्देरमे लपेटल रसीदक जील्द निकालि बाजल-

“पैछला जे रसीद अछि ओइसँ खाता खेसरा आ रकबा मिला कऽ ऐ रसीदमे चढ़ा लिअ।”

रसीदक जील्द देखिते दुनू परानी गंगानन्दक दिल धड़कए लगलैन। मनक सभ क्लेश निकैल कऽ उड़िया गेलैन। मुरझाएल चेहरा एकाएक खिल उठलैन। हँसैत गंगानन्द बजला- “बहुत पैघ उपकार अहाँ केलौं। जीवनमे कहियो अहाँक उपकार नै बिसरब।”

गंगानन्दक हाथमे जील्द पकड़बैत सिपाही बाजल- “अहाँ पटवारीजीसँ कुटुमैती जोड़ि लिअ। अहाँक जेहने बेटा भव्य छैथ तेहने पटवारीजीक बेटी छैन। राजक अंग सेहो छैथ। केतौ तँ बेटाक बिआह करबे करब मुदा ओइठाम कुटुमैती केलासँ कोनो चीजक कमी नै रहए देता।”

सिपाहीक बात सुनि गंगानन्द दुनू परानीकेँ स्वर्गक सुखक एहसास

भेलैन। मने-मन गदगद होइत गंगानन्द कनडेरिये आँखिए पार्वती दिस देखि आँखिएसँ जेना किछु पुछलखिन। पार्वतियो आँखिएसँ स्वीकृति दऽ देलकैन।

दुनू परानीकेँ चुप देखि सिपाही सोनाक चेन निकालि पार्वतीक हाथमे दैत बाजल- “एकरा रखू। सगुनक रूपमे पटवारीजी देलैन।”

सोनाक चेन लैत पार्वती आरो गदगद भऽ गेली। मुस्कियाइत गंगानन्द तखने कहलखिन- “कुटुमैतीक पहिल दिन छी तँए बिनु भोजन करौने सिपाहीजीकेँ केना जाए देबैन। जाउ, भानसक ओरियान करू।”

पतिक बात सुनि पार्वती चेनकेँ समेट भानस करए गेली। सिपाहीकेँ गंगानन्द पुछलखिन- “पटवारीजीक कुल-मूल केहेन छैन?”

सतर्कें छिपबैत सिपाही घटकक शैलीमे कहलकैन- “ऐँह, कुल-मूलक की गप करै छी। कुले-मूलक चलैत एते पैघ कुरसीपर छैथ किने। राजक बिसवासू लोक छैथ। जेहने कुल-मूल तेहने परिवारक आचार-विचार आ बेवहारो छैन। भागमंते घरमे ओहन-ओहन कनियाँक आगमन होइ छइ।”

भोजन कऽ दुखन सिपाही बिशेसर ऐठाम पहुँचल। बिशेसरकेँ ओही दिनसँ जनैत जइ दिन बिशेसर सियाराम सिपाहीकेँ कदीमा दुआरे मारने छल। हर जोति कऽ आबि बिशेसर नहा कऽ खाइले आँगन पहुँचल कि दुखन रस्तेपर सँ शोर पाड़लक। अनठिया आवाज सुनि बिशेसर आँगनसँ निकैल डेढ़ियापर आबि सिपाहीकेँ पुछलक- “कोन काज अछि?”

सिपाही कहलक- “अहाँसँ किछु खानगी गप करैक अछि, तँए एलौं।”

‘खानगी गप’ बुझि बिशेसर सिपाहीकेँ कहलक- “आउ, अँगने आउ। गरीब लोकक दरबज्जा-अँगना एक्के होइ छइ। खाइ बेर छै जे किछु साग-सत्तू भेल अछि, दुनू गोरे मिलि-बाँटि कऽ खेबो करब आ गपो करब।”

बिशेसरक संग दुखन आँगन आबि बाजल-

“हम अखने गंगानन्दजी ऐठाम खेलौं। अहाँ खाउ, हम बैसै छी।”

बिशेसर खेबो करए आ मने-मन सोचबो करए जे हमरासँ राजक सिपाहीकेँ कोन काज हेतइ। हमरा की कोनो खेत-पथार अछि जे राजसँ मतलब रहत। लऽ दऽ कऽ घराड़ी अछि सेहो बेलगाने।

दुखन बिशेसरकेँ गहराइसँ पढ़ैत जे एकटा अदना आदमी राजक सिपाहीपर हाथ उठौलक ई नान्हिटा गप नै भेल। आखिर एकरा भीतर कोन शक्ति छिपल छै जे एते साहसी अछि।

बिशेसर खा कऽ उठल। मोहनी ओसारेपर बिछान बिछा देलक। दुनू गोरे बिछानपर बैस गप-सप्प करए लगल। सिपाही बिशेसरकेँ पुछलक-

"अहाँकेँ केते खेत अछि?"

मुस्कियाइत बिशेसर बाजल-

"हमरा खेत-पथार नै अछि। खाली घराड़ीए-टा अछि। कमाइ छी खाइ छी। मस्तीमे जिनगी बितबै छी।"

बिशेसरक बात सुनि सिपाही चकित भऽ गेल। बिशेसर केते मेहनती अछि जे सिरिफ दूटा हाथ-पएरक बले एते साहसी आ खुशीसँ जिनगी बितबैए..!

चकित होइत दुखन बाजल-

"बिशेसर भाय, हमर नाओंएटा दुखन नै छी आ ने राजेक सिपाहीटा छी। जिनगीमे एकटा व्रत केने छी जे गरीब-गुरबाकेँ जहाँ धरि भऽ सकत सेवा करब। जे अखन धरि निमाहैत एलौं। आब तँ सहजे राज जाइए रहल अछि। किछु दिनक नोकरी अछि। तँए जहाँ धरि जे उपकार भऽ सकत ओ गरीब-गुरबाकेँ करबै। अखनो ओहने काजसँ आएल छी।"

जिज्ञासासँ बिशेसर पुछलक- "केहेन काज?"

"ऐ गाममे बहुतो गोरेकेँ मलगुजारी दइ दुआरे जमीन निलाम होइपर अछि। ओ हमरा बचेने बँचि जाइत। तँए ओकरा सभकेँ बजाउ। हम मंगनियेँ रसीद दऽ देबइ।"

'रसीद' सुनि बिशेसर चौंक गेल। मुदा अपनाकेँ सम्हारि बिशेसर गप-सप्प आगू बढ़ौलक। दुनूक बीच आत्मीयता सेहो बढ़ए लगल। जइ

बाटक बटोही बिशेसर ओही बाटक चलनिहार सिपाहियो। मुदा तैयो बिशेसरकेँ मनमे भेलै जे जँ कहीं रसीद चोरा कऽ अनने हुअए तखन तँ सभ धोखामे पड़ि जाएत। मुदा फेर मनमे उठलै जे रसीदक पाइयो तँ नहियेँ लगैत। बुझल जेतइ...।

ततमत करैत बिशेसर बचनाकेँ बजबैले भोलियाकेँ पठौलक। भोलिया संगे बचना आएल। सिपाहीकेँ देखिते बचनाक करेज कँपए लगलै। बचनाक स्त्री फुलिया सेहो पाछू-पाछू नुका कऽ आबि बिशेसरक घरक कोनचर लग ठाढ़ भऽ गेली। बिशेसर बचनाकेँ कहलक- "बचन, दुखन सिपाही अपन हितैषी छैथ। बिनु पाइयेक तोरा सभ खेतक रसीद दऽ देथुन।"

'मंगनी रसीद' सुनि बचनाक छाती सूप सन भऽ गेलइ। मनसँ जमीन निलामीक डर सेहो पड़ा गेलइ। सदे रसीद बचनाकेँ दैत दुखन बाजल- "सभ जमीनक रकबा जोड़ि कऽ चढ़ा लेब।"

रसीद मोड़ि बचना मुट्ठीमे लऽ विदा भेल। काते-कात फुलिया दौगल आगूमे जा बचनाकेँ पुछलक- "की भेल?"

हँसैत बचना बाजल- "चुप्पेचाप चलू। विपैत टरि गेल।"

एकाएकी बिशेसर एक्कैस गोरेकेँ रसीद दिया देलक। निलामीक पहाड़ गाममे ढहि गेल। सौंसे गामक किसानक बीच खुशीक हड़बिर्ड़ो मचि गेल। सबहक सुखाएल चेहरा हरिअर भऽ गेल।

जखन बाइली लोकसँ बिशेसरक आँगन खाली भेल तखन दुखन सिपाही बिशेसरकेँ पुछलक- "बिशेसर भाय, अहाँ गाममे राजक परती-पराँत गैरमजरूआ जमीन केते हेतइ?"

आँखि उठा बिशेसर परतीपर नजैर दौगबए लगल। मुदा सभ परती तँ नजैरमे नै एलै खाली एकटा परती जे पोखरिक दछिनबरिया महारक एक-डेढ़ बीघाक एलइ। अबिते बिशेसर कहलक-

"एक-डेढ़ बीघाक परती एकटा छइ।"

एक-डेढ़ बीघा सुनि सिपाही बाजल- "डेढ़ बीघा जमीनक बन्दोबश्ती रसीद दऽ दइ छी। हम काल्हि जाएब। जाइसँ पहिने ओइ

जमीनक दखल करा देब। बरद तँ अपना नहियेँ हएत, पाँच-छहटा हरक भाँज लगा लिअ। भाँजो असानीसँ लगि जाएत। जेकरा सभकेँ मदैत केलिऐ ओ एक दिन हर नै देत।"

सिपाहीकेँ गाँजाक तलक लगल। झोरा खोलि पित्तैरसँ मेढ़ौल चीलम, नेपलिया जट्टाबला गाँजा आ सरेसाक बड़की तमाकुलक पात निकालि दुखन चीलमक जोगार करए लगल। गाँजा देखि भोलियोक मन चटपटाए लगलै। दुखन बुझि गेल। भोलयाकेँ देखि सिपाही बिशेसरसँ पुछलक- "भोलिया भीन अछि कि साझी?"

बिशेसर बाजल- "देखियौ जे पच्चीस सालक छौड़ा अछि तखन केहेन झखरल बुझि पड़ैए। बेहूदा गाँजा-भाँग पीब सोन सन शरीरकेँ माटि बना लेलक!"

गाँजाक सोंट मारि, कनी काल मुँहमे धुँआ रखि दुखन ऊपर फेकलक। फेर एक सोंट मारि दुखन कनी काल हाथमे चीलम रखि बिशेसरकेँ कहलक- "बिशेसर भाय, गाँजा-भाँग जोगी-फकीरक थोड़े छी। एतेटा उमेरमे हम कहियो ताड़ी-दारू मुँहमे नै लेलौं। जहिया कहियो राज-दरबारमे कोनो उत्सव होइ छै तहिया खाइ-पीबै तँ सबहक संगे छी मुदा अंग्रेजिया-दारू आइ धरि मुँहमे नै लेलौं। बड़ तलक लगल तँ गाँजा पीब लेलौं।"

दोसर दम मारि दुखन तरैंग कऽ भोलियाकेँ कहलक- "रे, तूँ जे गाँजा-भाँग पीबै छँह से किए? जखन अपना ओते ओकाइत नै छौ जे दूध-दही-घी खेमे आ ने अपना खुट्टापर गाए-महींस रखने छँह। तखन गाँजा किए पीबै छेँ। तूँ हमरा नै चिन्हलेँ हम राजक सिपाही छी। अखने, बापेक सोझहामे एक साए लाठी मारि गाँजा-भाँग छोड़ा देबौ आ पकैड़ कऽ लऽ जा छअ मास जहलमे बन्न कऽ देबौ, तूँ की बुझै छीही!"

सिपाहीक बात सुनिते भोलियाक देह कँपए लगल। कँपैत दुनू हाथसँ दुखनक पएर पकैड़ बाजल-

"सरकार, आइ दिनसँ गाँजा-भाँग नै पीअब।"

"कनने-खिजने नै हेतौ। दुनू कान पकैड़ पचास बेर उठ-बैठ आ

सप्पत खा कऽ कह जे कहियो गाँजा नै पीब।"

डरे भोलिया दुनू कान पकैड़ उठए-बैठए लगल। पनरहे बेर उठल-बैसल कि दुनू जाँघ लोथ भऽ गेलइ। आगू उठिए-बैस ने होइ। दुनू आँखिसँ नोर टघरए लगलै। घरक भुरकी देने भोलियाक स्त्री कान पकैड़ उठैत-बैसैत देखैत। अढ़ेमे ओ मुँहपर आँचर नेने खूब हँसैत। हँसबो करैत आ बजबो करैत-

"खूब होइ छैन! अनेरे सभ दिन साँझू पहरकेँ गरियबैत रहै छैथ। तैकाल जँ जवाब देबैन तँ चारि लाठी लगाइयो दैता। भने नीक होइ छैन। जेहेन चालि छैन तेहने दशो होइ छैन।"

जेकरा सभकेँ दुखन खेतक रसीद देलक ओ सभ घरमे रसीद रखि एका-एकी बिशेसर ऐठाम अबए लगल। सबहक मनमे खुशी। सभ अपनामे हँसी-चौल करैत। हँसैत बेंगबा कुरहरियाकेँ कहलक-

"दोस, जँ खेत लीलाम भऽ जैतौ तखन तोरा कातिक मासक अपियारीक कबै माछ खेनाइ निकैलतौ।"

उत्तर दैत कुरहरिया कहलकै-

"हमरेटा निकलैत आ तूँ जे हाटपर माछ बेच कऽ ताड़ी पीबै छँह, से अपन कह तोरा की होइतौ?"

सभकेँ चुप करैत सिपाही पुछलक-

"केते गोरेकेँ हर-बरद छह?"

केकरो एकटा बरद जे दोसरसँ भजैती लगौने। केकरो दूटा बरद जे हरबाह रखि जोतबैत। केकरो एकोटा नहि, जे अनके हर जोति अपनो धूरहा हर लऽ खेती करैत। सभ अपन-अपन बात सिपाहीकेँ कहलक। सबहक बात सुनि सिपाही बाजल-

"जे हरबाहि करै छी ओ शरीरसँ आ जेकरा बरद अछि ओ बरदसँ, काल्हि भोरे आबि पोखैर लगक परती बिशेसर भायकेँ जोइत दियौ। ओ परती हम बिशेसर भायकेँ बन्दोबस कऽ देलौं।"

जहिना एक गामक लोककेँ दोसर गामबलासँ झगड़ा भेलापर

गामक धिया-पुतासँ लऽ कऽ बुढ़-बुढ़ानुस धरि लाठी, भाला, फरसा लऽ कऽ पहुँच जाइत तहिना भोर होइते कियो हर-बरद, कियो कोदारि तँ कियो छुछे देहे बिशेसरक खेतमे पहुँच गेल। लोकक उजैहिया देखि बिशेसर सोचए लगल जे सभकेँ जलखै कराएब केना पार लगत। केकरा जलखै खाइले देबै आ केकरा नै देबइ। तहूमे धिए-पुते बेसी अछि...।

दुनू हाथ माथपर लऽ बिशेसर कातमे बैस गुनधुनमे पड़ल। दुखन बिशेसरक चिन्ता बुझि गेल। बिशेसर लग आबि बाजल-

“बिशेसर भाय, एक्के घन्टामे खेतकेँ चीर-फाड़ि दखल कऽ लिअ। हम सभकेँ कहि देबै जे हमहूँ जाइ छी आ अहूँ सभ जाइ जाउ।”

दुखनक विचारसँ बिशेसरक मन हल्लुक भेल। सौंसे परतीकेँ खेत जकाँ चीर-फाड़ि सभ हर खोलि देलक। ❑

आठ

गंगानन्दक बेटा–सुमनक बिआह सुनयनाक संग भऽ गेल। जहिना पनियाहा मेघ लटैक कऽ धरतीक लग चलि अबैत तहिना पटवारीसँ कुटुमैती भेने गंगानन्द धनक लग आबि गेला। सोना-चानीक गहना, फूल-पित्तैर आ स्टीलक बरतन, सूती-उन्नी आ रेशमी कपड़ा पटवारी टाएर गाड़ीपर लादि गंगानन्द ऐठाम पठौलक। बेटीक खोंइछमे पटवारी गामक सटले दोसर गाममे पचास बीघा जमीन सेहो देलक। ओ जमीन तेसरे-साल निलाम कऽ अपना नाओंसँ पटवारी बन्दोबस केने। दू जोड़ सिलेब रंगक बड़का बरद, दूटा बड़की गाए आ जमाएकेँ चढ़ैले एकटा बड़का घोड़ा सेहो देलक। समाँगक पातर रहने गंगानन्दकेँ तीनटा नोकर जे माल-जालक सेवासँ लऽ कऽ खेती करै तक-ले पठौलक। एकटा खबासिनीकेँ सेहो सुनयनाक सेवा-टहल-ले पठौलक।

चौघारा घर, तीनू भाँइक बीच गंगानन्दकेँ। तीनू भाँइक बीच भिनौज भेने एक-एक अलंग हिस्सा भेल। आबाजाही कम रहने एक अलंगक घर मूसक माटिसँ भरल। देवालक पलश्तर सेहो झड़ि-झड़ि खसलो आ

खसितो।

दरबज्जा आ मालक घर तीनू भाँइक साझीए। पाहुने-परक एलापर यमुनानन्द आ श्यामानन्दकेँ दरबज्जाक काज होइत नइ तँ अँगने घरसँ काज चलैत। सिरिफ गंगानन्देटा दरबज्जापर रहबो करैत आ चीजो-बौस रखैत। मालक घर नमहर। मुदा माले कम तँए कोनो भाँइकेँ अभाव नै खटकैत।

समधियौरमे जे समान गंगानन्दकेँ भेटल ओ परिवारमे रखैक समस्या ठाढ़ कऽ देलक। कपड़ा, बरतन तँ घरमे अँटि गेलैन मुदा गाए-बरद केतए बान्हल जाएत। तत्-खनात बाँसक खुट्टापर तिरपाल टांगि गाए-बरद आ धोड़ा बन्हैक जोगार कऽ लेलैन।

यमुनानन्द आ माला दुनू परानी सुमनक बिआहक सरमजान देखि मने-मन जरए लगल। झगड़ाक जोगार माला ताकए लगली। समाजक स्त्रीगण कनियाँ देखैले अबए लगली। घरसँ ओसार धरि गंगानन्दक भरल। तँए बैसैयोक जगह नहि। जे कियो कनियाँ देखए अबैत ओ यमुनानन्दक खाली ओसार देखि बैस जाइत। स्त्रीगणक बीच हाँ-हाँ, हीं-हींसँ लऽ कऽ हँसी-मजाक धरि होइत। लोकक हाँ-हाँ, हीं-हीं सँ मालाक देह जरैत...।

गाममे एकटा नवकी दादी। नवकी दादी विधवा। ओना, उमेरो साठिसँ ऊपरे, बेटा-पुतोहु आ पोता-पोतीसँ घर भरल। नवकी दादी, जेहने बजैमे चरफर तेहने शुद्ध सोभावक सेहो। दरद ससारैक लूरि नवकी दादीकेँ। गाममे जेकरा केकरो पेटमे दरद उखरैत ओ नवकी दादीकेँ बजा अनैत। करुतेलसँ नवकी दादी तेना ससारैत जे लगले दरद ठीक भऽ जाइत। दरदे ससारि नवकी दादी दसनामा लोक बनि गेली। ने केकरोसँ एक्को पाइ लैथ आ ने केकरो काज खगए देथिन। अपन केहनो हलतलबी काज रहैन मुदा जँ कियो बजबए आबैन तँ अपन काज छोड़ि संगे ओकरा ऐठाम जा दरद ससारि देथिन। तँए समाजो हुनका बजैक अधिकार देने। केकरो उचित बात कहैमे नवकी दादी नै चुकैथ। ठाँइ-पठाँइ मुहेँपर नवकी दादी कहि देथिन।

मालाक ओसारपर गामक बेटी जातिसँ लऽ कऽ नव-पुरान स्त्रीगण

सभ बैस गंगानन्दक समैध-समधीनक कुट्टी-चालि करैत। गंगानन्दक परिवारोक लोक आ समाजोक सभ नवकी दादीक गपसँ आनन्दित होइत। मुदा माला भीतरे-भीतर जरैत। मालाक रुष्ट मुँह आ बोलीकेँ अकानि नवकी दादी बजली- “जेहने हूरार बाप छह तेहने ने ओकर कुलो-खुट हेबह।”

नवकी दादीक बात सुनि माला मुँह बन्न कऽ लेलक मुदा मनमे क्रोध बढ़िते गेल। कनियाँ देख-देखि सभ चलि गेल।

यमुनानन्द दोकान गेल छल ओहो आएल। यमुनानन्दकेँ आँगन अबिते माला कहलखिन-

“जखन सभ भाँइ भीन भेलौं, सभ किछु बँटलौं तखन आँगन आ मालक घर किए ने बँटलौं?”

यमुनानन्दक हृदयमे परिवाक ममता तँए मालाक बात उत्कट लगलैन। मुदा जोरसँ किछु उत्तर देब उचित नै बुझि मिरमिरा कऽ कहलखिन-

“सभ भऽ जेतइ। अखन काजक घर अछि, पाहुन-परकसँ लऽ कऽ समाज धरिक लोक आँगन अबै-जाइ छैथ, नजैर नै अछि जे बताहि जकाँ बगए बनौने छी आ चिचिआइ छी।”

यमुनानन्दक बातकेँ अनसून करैत चोटाएल साँप जकाँ फुफकार कटैत माला बाजल-

“हम अपन घर-अँगना भैयाकेँ दऽ दिऐन आ हुनकर जे घर भरलैन से हुनकर छिऐन! अगर अहाँ बुते नै हएत तँ बाजू। हम देखा दइ छिऐन जे केहेन बापक बेटी हमहूँ छी। आइए जँ अँगनामे छहरदेबाली नै घींच दिऐन तँ फेर ओ कहता। जइ लोकक लाज अहाँकेँ होइए ओ सभ नै बुझै छै जे तीनू भाँइ भीन छी।”

कोहवरक कोठरीसँ सुनयना मालाक सभ बात सुनैत। दोसर कोठरीसँ गंगानन्द आ पार्वती सेहो सुनैथ। मालाक ऐगला बात सुनैले सभ कान पथने। कखनो गंगानन्द आँखि उठा पार्वतीकेँ देखैत तँ कखनो पार्वती गंगानन्दकेँ देखैन। तरे-तर गंगानन्दक मनमे उठलैन- “की अही प्रतिष्ठा-ले

एते केलौं? की भाएसँ भाए एते दूर भऽ सकैए? की हमर बेटा-पुतोहु यमुनानन्दक नै छिऐ? की समाजक नजैरमे तीनू सहोदर भाए नै छी? अगर भैयारीमे एहेन बेवहार हएत तँ दोसर-तेसरक संग केहेन हएत? अनेरे सभ किए ऐ जंजालमे पड़ल अछि?”

बिनु किछु बजने गंगानन्द घरसँ निकैल मुँह निच्चाँ केने दुआर दिस विदा भेला। डेढ़िया लग पहुँचते पाछूसँ पार्वती घुनघुना कऽ कहलकैन-

“जेना भाए-भावोक सेवा केलौं। ओना, जँ दोसरकेँ केने रहितौं तँ एहेन बात नै सुनितौं।”

अपन मनक बेथाकेँ छिपबैत गंगानन्द पार्वती दिस देखि मुस्कियाइत दरबज्जापर चलि गेला। कोहवरक घरमे सुनयना मने-मन सोचैत जे एक तँ हम नव छी, दोसर ससुर आ पतिकेँ रहैत किछु बाजब उचित नहि। नइ तँ देखा दतिऐन जे माए केते दूध हुनका पिऔने छैन।

दछिनबरिया घरसँ श्यामानन्दक स्त्री गुलाब सेहो सभ बात सुनलैन। केतौसँ धड़फड़ाएल श्यामानन्द आबि पत्नीकेँ कहलखिन- “कनी खाइले दिअ, आनठाम जाइक अछि।”

गुलाब थारी धुअ लगली। श्यामानन्द लोटामे पानि लऽ हाथ-पएर धुअए डेढ़ियापर गेला। हाथ-पएर धोइ घर आबि खाइले बैसला। थारी परोसि गुलाब पतिक आगूमे दऽ बगलमे बैस कहए लगलैन-

“अहाँ तँ अँगनामे नै छेलौं। भैया तँ चुप्पे रहैथ मुदा मैझली-दीदी गरैज-गरैज कहै छेलखिन जे अँगनामे छहरदेबाली घींच देब।”

पत्नीक बात सुनि श्यामानन्द बजला- “भैया-भौजी जे करैथ मुदा हुनके जकाँ की हमहूँ करब? अखन धरि घरक कोनो भार नै बुझलौं। खाइ-खेलाइमे जिनगी बीतल। तीस बीघा जमीनमे दस बीघा अपन हिस्सा भेल। मात्र तीन गोरेक परिवार अछि, तइले गारि-गरौवैल कऽ खनदानक नाक कटाएब।”

श्यामानन्दक विचारसँ सहमत होइत गुलाब बजली- “भागमे जे लिखल हएत से हेबे करत। तइले नीच काजपर उतैर जाए, ई नीक नहि।”

श्यामानन्द खा कऽ उठि बाहर जाएब छोड़ि पलँगपर बैस अपन

जिनगीक सम्बन्धमे विचारए लगला। अखन धरि भगवानक भरोसे खेती चलैत रहल, जइसँ अछैत खेत रहनौं अन-पानिक दिक्कत होइत रहल। जँ कोनो साल सम-गम बरखा भेल तँ उपजा नीक भेल नइ तँ रौदी वा दाही भेल। अढ़ाइ-तीन सालसँ रौदी अछि, मुदा रौदी-दाहीसँ बँचैक उपाय आइ धरि नै सोचलौं। बारह मासक साल होइए। जइमे सिरिफ चारिए मास बरसातक अछि। जइमे बेसी बरखा भेने दहार होइए आ कम भेने रौदी। मुदा बँचल आठ मास अछि तहूपर तँ नहियेँ किछु सोचल जाइए। ओना, अखन धरि हमहूँ यएह बुझै छेलौं जे पानि सिरिफ मेघेटा सँ होइए। माटिक तरोमे पानि छै जेकरा ऊपर आनि खेती-बाड़ी कएल जा सकैए, से बुझबे ने करै छेलौं। ओना, इनार-पोखैरमे जरूर देखै छेलिऐ मुदा तैयो किछु करै नइ छेलौं। खाएर जे भेल मुदा आब तरका पानि ऊपर अनैले बोरिंग गड़ाएब।

अखन हाथमे रुपैआ नै अछि घरमे गहना, खेत आ बड़का-बड़का गाछ सभ तँ अछि। तँए चाहे गाछ बेच कऽ वा खेत बेच कऽ वा गहना बेच कऽ सभसँ पहिने बोरिंग जरूर गड़ाएब। जखने बोरिंग भऽ जाएत तखने खेती हाथमे चलि औत। जखने हाथमे खेती चलि औत तखने अन, तीमन-तरकारी उपजए लगत। एक बीघा खेत गाछी-बिरछी, घर-घराड़ीमे फँसल अछि। नअ बीघा तँ उपजैबला अछि। नअ बीघाक उपजासँ तँ पचास गोरेक परिवार हँसी-खुशीसँ चलि सकैए। हम तँ तीनिए गोरे छी, तहूमे एकटा बच्चे अछि...। पानि हाथ एलासँ रौदियो मेटा जाएत, खाली कोनो-कोनो साल बाढ़िक खतरा रहत। सेहो मात्र चारिए मास। अन, तीमन-तरकारीक ढेरी लगि जाएत। जेते परिवारमे खरच हएत ओतबे ने, बाँकी फजिलाहा बेच कऽ जिनगीक विकासमे लगाएब। अखन धरि कोढ़ि बनि भाँग-गाँजाक पाछू समय बेरबाद केलौं मुदा आबो जँ चेती तँ बहुत-किछु कऽ सकै छी।

एते विचार श्यामानन्दक मनमे अबिते उठि कऽ ठाढ़ भेला। जेना-जेना मनमे विचार चलैत रहैन तेना-तेना चेहरामे मलिनता अबैत गेलैन। गम्भीर विचार श्यामानन्दकेँ गम्भीर चेहरा बनबैत गेलैन।

श्यामानन्दक गम्भीर चेहरा देखि गुलाबक मनमे उठलैन, भरिसक

परिवारक बोझ हिनका चिन्तित कऽ रहल छैन...। मुदा कनीए कालक पछाइत इन्द्रधनुषी आँखि, गुलाबी मुस्कानसँ श्यामानन्द पत्नीकेँ टोकलखिन-

“जिनगी बहुत कठिन होइए, मुदा नहि! बहुत असान होइत। सिरिफ चलैक ढंग बदलब जरूरी अछि। जँ सभ चलैक ढंग सीख लिअए तँ चैनक जिनगी सहजे-सहज बनि जाएत।”

अखन धरिक जिनगी दुनू बेकती श्यामानन्दक अल्हर-अबोधक रहल जे बदलैत नीक दिशा दिस बढ़ए लगल।

मुस्की दैत गुलाब पतिकेँ पुछलखिन- “केतौ किछु हरा गेल की? जे एना अनून-बिसनून जकाँ मुँह लटकौने छी?”

गम्भीर स्वरमे श्यामानन्द बजला-

“हँ, हरेबो कएल आ भेटबो कएल। आइ धरिक जिनगी छोड़ि नव जिनगी बनबए चाहै छी। अहूँकेँ कहै छी जे आइसँ संगी बनि संगे चलू।”

संगीक नाओं सुनि गुलाब चौंकैत बजली- “अखन धरि संगी नै छेलौं?”

सामंजस्य करैत श्यामानन्द बजला-

“हँ छेलौं, मुदा जहिना कोनो धारमे नाह भट्ठा दिस बढ़ैत रहैए तहिना, जे भँसियाएब छल। मुदा शिरा दिस चलब, चलब भेल। सिरा दिस चलैमे पुरुषत्वक जरूरत होइए जे वास्तविक जिनगीक दिशा दइए। चढ़ाइक जिनगी ओकरे कहल जाइ छइ। चढ़ाइले संघर्ष आ शक्तिक जरूरत होइत, तइले संगीक जरूरत पड़ैत।”

श्यामानन्दक विचार गुलाब नीक-नहाँति नै बुझि सकली। मुदा मनमे एकटा हड़बड़ाएल विचार एलैन, जे मरद-औरत मिला कऽ बिआहक रूपमे संकल्पित होइत। जइसँ सृष्टिक सृजन होइत। मुदा जिनगी तँ बहुत नमहर होइ छै, जइमे भूख-पियास, आपैत-विपैत-सुख-दुख इत्यादि गाड़ीक पहिया जकाँ घुमैत रहैए। तँए, अइले संगीक जरूरत होइए। जे एक-दोसरक मदैतगार बनि जिनगी दुरूस कऽ चलत। एते बात मनमे अबिते गुलाब उछैल कऽ बजली- “संगी-ले संगी अपन सभ किछु

न्योछाबर कऽ सकैए। हम आज्ञाकारी छी। जखन जे कहब ओ करैले अन्तिम साँस तक कोशिश करब।”

अखन धरि श्यामानन्द खेत बेच कऽ बोरिंग-पम्पसेट कीनब मनमे रखने छल मुदा पत्नीक सहयोग देखि गतिशील आ गतिहीन सम्पैतपर नजैर पड़लैन। देखिते विचार बदलए लगलैन।

घरमे पड़ल गहना-गुरिया, सोना-चानी जे गतिहीन बनि पड़ल अछि ओकरा किए ने गतिशील बना काज करी। मुदा श्यामानन्दक मनमे शंको होइत रहैन जे मालगुजारीक बेरमे पत्नी गहना नै देने रहैथ। ऐ शंकाक समाधान-ले श्यामानन्द गुम्म भऽ सोचए लगला तँ बुझि पड़लैन जे पत्नीक बदैल रहल छैन। परीक्षा करैक खयालसँ श्यामानन्द पत्नीकेँ कहलखिन-

“अहाँ अपन गहना दऽ दिअ, घरमे ओ पड़ले रहत आ भऽ सकैए जे जँ कहियो चोर-चहार आबि गेल तँ ओहो चलि जाएत। ओकरा बेच कऽ बोरिंग-पम्पसेट कीनि लेब। जखन खेतीक साधन बढ़त तखन उपजो-बाड़ी बढ़त। जइसँ हालतो सुधरत जखन हालत सुधैर जाएत तखन जँ गहनो लेबाक मन हएत तँ कीनि लेब।”

श्यामानन्दक विचार सुनि गुलाब हँसैत अपन गहनाक मोटरी अलमारीसँ निकालि आगूमे रखि देलखिन। पत्नीक सहयोग देखि श्यामानन्दक हृदयमे खुशीक उफान उठल। हृदयक खुशी मुहसँ हँसी बनि लिकलए लगलैन। हँसैत श्यामानन्द बजला- “अखन गहना रहए दियौ। हम बजार जाइ छी, पहिने बोरिंग-पम्पसेटक दाम बुझब तखन सोनरा दोकान जा सोना-चानीक दाम पता लगाएब। दुनूकेँ बुझि ओइ हिसाबसँ गहना बजार लऽ जा बेचब।”

गंगानन्दक खेती करैले पटवारी रामदेवकेँ पठौने। रामदेवकेँ खेती करैक नीक लूरि। ओना, रामदेव राजक नोकर मुदा किछु दिन-ले पटवारी ओकरा पठौने। बालगोविन्द आ चंचलकेँ गाए-बरद आ घोड़ाक देखभाल करैले पठौने। अखन धरि गंगानन्दक परिवारमे सवारी-ले साइकिल आ टायरगाड़ी छल। धोड़ाक आगमन पहिले-पहिल भेल।

सुमनकेँ तँ घोड़सवारी चंचल सिखा देलक। गंगानन्द असमंजशमे

पड़ल छला। असमंजशक कारण रहैन, बेटाक सवारीपर बाप केना चढ़त। मुदा सवारीक घोड़ा रहैत साइकिलसँ चलब ईहो एकटा पैघ द्वन्द्व...। कखनो-कखनो गंगानन्दकेँ होनि जे घोड़ापर चढ़ि दस गाम घुमि लोककेँ देखा दिऐ। मुदा बेटाक सवारी। अगर जँ हम दोसर घोड़ा कीनि चढ़ब तँ बेटा-पुतोहुकेँ जलन हेतैन। मने-मन ओ सभ कहत जे केहेन स्वार्थी अछि। विचित्र स्थितिमे गंगानन्दक मन औनाए लगलैन।

दोसर दिन भिनसरे चंचल फुलौल बदाम अपना-ले बाटीमे रखि घोड़ाकेँ खाइले नाइदमे दऽ अपनो खाइत रहए। बुलैत-बुलैत गंगानन्द आबि चंचल लग ठाढ़ भऽ गेला। आगूमे गंगानन्दकेँ ठाढ़ देखि चंचल मुँह बन्न कऽ हाँइ-हाँइ मुँहक बदाम घोंटए लगल। मुँहक बदाम घोंटि बाजल-

"मालिक! अहूँ घोड़ा चढ़ब सीख लिअ?"

चंचलक बात सुनि गंगानन्द कनी काल गुम्म रहि, कहलखिन-

"कहलौं तँ ठीके, मुदा ऐ घोड़ापर हमर चढ़ब उचित हएत?"

"किए ने हएत! ई तँ सवारी छिऐ।"

गंगानन्द बजला- "बेटाक सवारीपर बापक चढ़ब उचित नहि।"

गिलास उठा पानि पीब चंचल कहलकैन-

"जइ दिन बेटा वा पुतोहुक मन खराब हएत, बजारसँ दवाइ अनैक वा डॉक्टर ऐठाम जाइक जरूरी हएत, तखन की करबै?"

चंचलक बात सुनि गंगानन्द गुम्म भऽ बैस मने-मन सोचए लगल। ओना, चंचलक बात दमगर बुझि पड़लैन। बात बदलैत बजला-

"आब हमर उमेर घोड़ापर चढ़ैबला अछि? हो-ने-हो जँ कहीं गिर पड़ी आ हाड़-पाँजर टुटि जाए तखन तँ लोको दुसत आ अपनो कष्ट हएत।"

गंगानन्दक बातकेँ चंचल टारब बुझि कहलकैन-

"ई घोड़ा कोनो बोनैया छी जे अपने सूढ़िये चलत। सिखौल घोड़ा अछि।"

चुप्पे-चाप गंगानन्द उठि कऽ दरबज्जापर आबि बैस रहला। मुदा

चंचलक बात गंगानन्दक मनकेँ पकड़ने रहलैन, तँए गुन-धुनमे पड़ल रहैथ। ताबे आँगनसँ खबासिनी चाह नेने एलैन। रामदेव सेहो आबि गंगानन्दक लगमे बैसल। दुनू गोरे चाह पीबए लगला। चाह पीब रामदेव बौगलीसँ तमाकुल निकालि चुनबए लगल। तमाकुलक चुन झाड़ि गंगानन्दोकेँ देलकैन आ अपनो मुँहमे लेलक। थूक फेक गंगानन्द रामदेवकेँ कहलखिन- "एकाएक पसार भेलासँ काज सम्हारब कठिन भऽ रहल अछि। कखनो मन चैन नै रहैए। हदिघड़ी एमहर-ओमहर देखैत–सम्हारैत परेशान रहै छी।"

गंगानन्दक बात सुनि रामदेव कहलकैन- "अगर पसार बेसी बुझि पड़ैए तँ आदमी रखि लिअ। सम्पैत भेलासँ लोक सुख करैए आ अहाँ बेचैने रहै छी। अपने केते करब। दसटा कुटुम-परिवार भेला तैपरसँ समाज छैथ आ तहूसँ बेसी कारोबार भेल। असगरे केना सम्हारब?"

गंगानन्द- "कहलौं तँ ठीके मुदा छोड़ियो देलासँ तँ नै हएत। कामतपर घर नै अछि, ओहूठाम घर बनौनाइ जरूरी भऽ गेल अछि।"

रामदेव-

"कामतपर अपन लगक लोककेँ भार दऽ दियौन। जँ से नै करब तँ आने-आने सभटा लूटि कऽ खा जाएत। तीन भाँइ छी, एक भाँइकेँ कामतक भार दऽ दियौन। अगर खेबो-पीबो करता तँ अपने भाए ने। जखन धनक पसार भेल आ तखन जँ समाजक काजमे आगू नै हएब तहन प्रतिष्ठा केना भेटत। तँए सालमे दू-चारिटा उत्सव समाजमे ठाढ़ करब जरूरी अछि।"

गंगानन्द-

"कोन तरहक उत्सव ठाढ़ करब?"

रामदेव- "ऐँ, उत्सवक कमी छइ। पैछला जे पाबैन-तिहार अछि ओकरो मेला रूपमे ठाढ़ कऽ सकै छी, चाहे नवको ठाढ़ कऽ सकै छी।"

रामदेवक बात गंगानन्दकेँ जँचलैन। नातिनकेँ कहलखिन- "दाइ, कनी श्याम नन्नाकेँ बजौने आबह?"

नातिन दौगल अँगना जा श्यामानन्दकेँ बजौने आएल। दरबज्जापर

अबिते श्यामानन्द गंगानन्दकेँ पुछलखिन-

“भैया, अहाँ बजेलौं?”

गंगानन्द-

“हँ, आबह ऐठाम बैसह। एकटा विचार पुछैक अछि।”

श्यामानन्द बैसल। गंगानन्द बजला-

“बौआ श्याम, तूँ कामतक काज सम्हारि दाए।”

श्यामानन्दक आत्मबल जागि चुकल छल। इनकार करैत श्यामानन्द उत्तर देलकैन-

“भैया, हमरा हाथमे खेती-ले बोरिंग-दमकल आबि गेल। पहिलुका जिनगीकेँ नव जिनगी बनबए चाहै छी। आब लोहाक रिंच-हथौड़ी हाथसँ चलबए चाहै छी। तँए कामतक काज सम्हारब हमरा बुते केना हएत?”

श्यामानन्दक बात सुनि गंगानन्द गुम्मे रहि गेला। श्यामानन्द उठि कऽ अँगना चलि गेल। पुनः गंगानन्द नातिनकेँ यमुनानन्दकेँ बजा अनैले कहलखिन। नातिन यमुनानन्दकेँ बजौने आएल। यमुनानन्दकेँ अबिते गंगानन्द पुछलखिन-

“बौआ जामुन, हमरा तँ घरेपर सँ छुट्टी नै होइए, तूँ कामतक काज सम्हारि दैह?”

अराम तलब काज बुझि यमुनानन्द गछि लेलक। यमुनानन्द उठि कऽ आँगन जा पत्नीकेँ सभ बात कहलखिन। पचास बीघाक आमदनी उपजावारी बुझि माला हँसैत कहलकैन-

“दियाद केहनो दुश्मन होइ तैयो दियादे होइए। जइ गाछक बखलोइया रहै छै ओहीमे लगै छइ।”

टटाएल खेत, दराइर फाटलमे जजात केना लगौल जाएत? तँए श्यामानन्द सबेरेसँ पम्पसेटसँ पटबए विदा भेला। डोरीबला पेन्ट तैपरसँ करिया गमछा लपेट श्यामानन्द कोदारि आ रिंच-हथौड़ीक झोरा लऽ खेत पहुँचला। खेत पहुँच मने-मन हिसाब जोड़ए लगला जे डेढ़ बीघा खेत पटबैमे कम-सँ-कम सात-आठ घन्टा लगत।

पट ठीक कऽ श्यामानन्द पम्पसेट स्टार्ट केलैन। नव बोरिंग आ नव मशीन रहनौं पानिक रफ्तार कम। पानिक कम रफ्तार देखि श्यामानन्द मने-मन सोचए लगला जे भरिसक पम्पसेटमे कोनो गड़बड़ी अछि। किएक तँ बोरिंगमे कोनो पाट-पुरजा छइहे नै जे ढील-ढाल वा टुटल-फुटल हएत...। अनासुरती श्यामानन्दकेँ मोन पड़लैन जे रौदी दुआरे पानि कम अबैए। खेतमे तेहेन-तेहेन दराइर फाटल जे पानि आगू-मुहेँ ससरबे ने करैत। मुदा बाढ़ि जकाँ नालाक पानि देखि श्यामानन्दक मनमे सवुर भेलैन जे खेत जरूर पटत। कोदारि लऽ खेतमे पानि चालए लगला।

कनीए कालक पछाइत, करीब एक कट्ठा खेत पटल हएत, तइमे बगुला अबए लगल। पहिने तँ एक्केटा बगुला आ एकटा मेना आएल। मुदा तेकर पछाइत जेरक-जेर बगुला, मेना आ कौआ आबि गेल। जेमहर-जेमहर खेतमे पानि बढ़ैत तेमहर-तेमहर बगुलो मेना बढ़ि पिलुआ, कीड़ी, फनिगा बिछ-बिछ खाए लगल।

जखनसँ श्यामानन्द कोदारि आ रिंचक झोरा लऽ खेत दिस विदा भेला तखनेसँ गुलाबोक इच्छा होनि जे हमहूँ खेत जा देखिऐ। मुदा पारिवारिक प्रथा- खेत जाइसँ गुलाबकेँ रोकि दैन। जलखै खा गुलाब पलँगपर पड़ि मने-मन सोचए लगली। विचित्र द्वन्द्वमे गुलाबक मन उलैझ गेलैन। कखनो मनमे उठैत रहैन जे हमरा खेत-पथार अछि तँ घरसँ बाहर नै जाएब। मुदा जे कियो नोकरी करत ओ की करत? ..फेर दोसर प्रश्न मनमे उठलैन जे हमरा खाइ-पीबै-जोकर सम्पैत अछि मुदा जेकरा किछु ने छै आ भीख माँगए पड़ै छइ? गुलाबक मनमे प्रश्नो उठैन आ जवाबो...।

गुनधुन करैत गुलाब घरसँ निकैल खेत विदा भेली। खेत पहुँच गुलाब देखलैन जे पति खेतमे केतौ दहिना पएरसँ पानि उपैछ पटबै छैथ तँ केतौ बामा पएरसँ। श्यामानन्द खेत पटबैक धुनिमे, तँए गुलाबपर नजैरे ने पड़लैन। श्यामानन्दक लग पहुँचते गुलाबकेँ हृदयक हँसी फुटलैन। गीत गबैत पतिकेँ इशारामे कहलखिन- “पानी रे पानी, तेरा रंग कैसा...।”

पति-पत्नीक बीच श्यामानन्द आ गुलाबक प्रेम जे आइ धरि छल ओइसँ बदलल प्रेम दुनूक बीच आइ बुझि पड़ए लगलैन। अखन धरिक प्रेममे मान्सलता प्रमुख छल मुदा आइ कर्मक उपजल प्रेम दुनूक बीच

आबए लगलैन...।

जे गुलाब सौंसे देह वस्त्रसँ झाँपब नीक बुझै छेली ओ साड़ीकेँ छाबासँ ऊपर डाँरमे खोंसि, सुखल खेत सभमे दुनू हाथे पानि उपछए लगली। ने श्यामानन्दकेँ बुझि पड़ैन जे गुलाब पत्नी छैथ आ ने गुलाबकेँ श्यामानन्द पति बुझि पड़ैन।

दुनू एक दोसरक सहयोगी बनि काजमे जुटल। जेरक-जेर मेना, बगुला आ कौआ कीड़ी-मकौड़ी बिछ-बिछ खाइत। एक जोड़ा मेना एकठाम बैस एक-दोसरक लोलमे लोल मिला अपन प्रेमक कथा सुनबैत। साँझ पड़ि गेल। मात्र जलखैए खेने श्यामानन्दो आ गुलाबो खेत पटबैत रहला। खेतो पटब लगिचाएले तँए छोड़ि कऽ जएबो उचित नै बुझि दुनू परानी खेतेमे...। दोसैर साँझ होइत-होइत डेढ़ो बीघा खेत पटि गेल। काजक खुशी दुनू परानी श्यामानन्दक भूख हेर लेलक। खेत पटिते श्यामानन्द दमकल बन्न कऽ बोरिंगक आगूमे जे पानि जमा छल, ओहीमे देह-हाथ धुअ लगला। दुनू परानी देह-हाथ धोइ कऽ सभ सामान लऽ आँगन विदा भेला। ❑

नअ

श्यामानन्दक बोरिंगक चरचा सौंसे गाम हुअ लगल। दमकल चलै काल गामक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ धिया-पुताक मेला लगि जाइत। पम्पसँ निकलैत पानिक फब्बारा देखि सभ अचम्भित होइत जे लोहामे एते पानि केतएसँ अबैए। ..बरखा आ बाढ़िक पानि तँ सभ देखने मुदा बोरिंगक पानि पहिले-पहिल देखैत। नब्बे बर्खक बुढ़िया दादी–सोन सन उज्जर धप-धप केश, मधुमाछीक छत्ता जकाँ देहक चमड़ा लड़-लड़ करै छैन। नमगर-छड़गर दोहरा देह घोकैच कऽ मौकनी हाथी जकाँ–लुदुर-लुदुर चलि कऽ दमकल लग आबि कातेसँ आवाज अकानए लगली। पहिले दादीकेँ भेलैन जे भरिसक रेलगाड़ी अबैए मुदा जखन दमकल लग पहुँचली तखन दमकलक आवाज बुझलखिन। ठेंगा रखि बुढ़िया दादी दुनू हाथ जोड़ि

दमकलकेँ गोड़ लगली आ आगूमे पम्पसँ गिरैत पानिकेँ चुरूकमे लऽ सौंसे देह छिटलैन। पानिक पवित्रता देखि बुढ़िया दादी चारि चुरूक पीबो केलैन आ पानिक पह देखैत-देखैत खेत धरि जा देखबो केली। पानिक वेग देखि दादी मने-मन करीनक पानिसँ तुलना करए लगली। खेतकेँ पटैत देखि दादी सोचलैन जे तेते पानि अबैए जे एक्के दिनमे सगरे बाध पटि जाएत। कनी काल ठाढ़ भऽ दादी खेत पटैत देखि घुमि कऽ दमकल लग एली। दमकल लग अबिते दादीक मनमे भेलैन जे बड़ चिक्कन पानि छै तँए नहा लितौं। मुदा फेड़ैबला साड़ी नै रहने नइ नहेली।

जहियासँ डेढ़ बीघा खेत बिशेसरकेँ भेल तहियासँ बिशेसर एक उखड़ाहा बोइन करए जाइत आ एक उखड़ाहा अपने खेतमे काज करैत। डेढ़ो बीघा खेतकेँ चारि कोला बना लेलक। दूटा कोला दस-दस कट्ठाक आ दूटा पँच-पँच कट्ठाक। तीन कोला–पच्चीस कट्ठा–क ऊपरका माटि उठा पाँच कट्ठाकेँ भीठ जमीन बना लेलक। बेर टगैत सुति उठि कऽ बिशेसर मुँह-हाथ धोइ कऽ तमाकुल चुनबए लगल। तमाकुलो चुनबैत आ मने-मन सोचबो करैत जे जाबे खेतमे पटबैक जोगार नै हएत ताबे खेतक कोनो मोल नहि। पानि तँ खेतीक मुख्य अंग छी। मुदा पानिक जोगार करब तँ हँसी-ठट्ठा नइ छी। बोइन करैबला जँ बोरिंगक बात सोचए तँ ओ मात्र मनक उड़ाने हएत। मुदा जरूरी तँ अछि...।

गुनधुनमे पड़ल बिशेसरक मन तमाकुलो चुनाएब बिसैर गेल। अनासुरती बिशेसरक मनमे आएल जे हम ने गरीब छी, खेतो कम अछि मुदा हमरा खेतक आड़िएमे तँ बचनू आ बचनाक बेसी खेत छइ। तँए दुनू गोरेकेँ बुझा कऽ बीचमे बोरिंग गरबैले कहिऐ। एते दिन ने बोरिंगक गुण नै बुझै छल मुदा श्यामानन्दक उपजा देखि तँ सभकेँ नजैर खुगलै...।

एते बात मनमे अबिते बिशेसर हाँइ-हाँइ तमाकुल चुना मुँहमे लऽ कनीए कालक पछाइत तमाकुलक सिप फेक मोहिनीकेँ कहलक-

“हम एकटा काजे जाइ छी, साँझ धरि आएब।”

कहि बिशेसर बचनू ऐठाम विदा भेल।

एक्के टोलमे बिशेसर, बचनू आ बचनाक घर। बचनूक घर पहिने

पड़ैत तँए बिशेसर पहिने बचनू-ऐठाम पहुँचल। दुनू बापूत बचनू महींस लऽ कऽ पारा तकैले भोरे निकलल जे अखन धरि घुमि कऽ नै आएल रहए। बचनूक दलानपर जा बिशेसर चारू दिस बचनूकेँ ताकए लगल। मुदा केकरो देखबे ने करैत। बचनूक ढेरबा बेटी पानि आनए अँगनासँ कल दिस निकलल कि बिशेसरपर नजैर पड़लै। डोल रखि रेखा आँगन जा माएकेँ कहलक-

"बिशेसर दादा दूरापर ठाढ़ छथिन।"

रेखाक बात सुनि माए कहलकै- "जा कऽ पुछि लहुन जे कोन काज छैन?"

आँगनसँ रेखा दलानपर अबिते छलि कि बचनूकेँ महींसक संग अबैत बिशेसर देखलक। आगू-आगू बचनू आ पाछू-पाछू महींसपर चढ़ल बेटा। भूखे-पियासे दुनू बापूत लहालोट। बचनूकेँ देखि बिशेसर पुछलक-

"अखन धरि बासिये-मुहेँ छह?"

भूखसँ बचनूक पेट खलपट। मुदा महींसकेँ पाल खेलासँ मन खुशी, तँए भूखकेँ बिसरैत बचनू बाजल- "की कहिहह भैया। तीन बजे रातिएसँ महींस अर्र-बौं करए लगल। बिछानपर सँ उठि कऽ देखिऐ तँ गुप्प-गुप्प अन्हार। जेते समय बितैत जाइ तेते महींस जोर-जोरसँ डिरिआइ। तखनेसँ जागल छी। ओंघीसँ देहो भँसियाइए। मुदा राजाजीक कृपासँ महींस पाल खा लेलक। पाँच रुपैआक गाँजा हुनका कौबला केलिऐन। भीड़ो भेल तँ काजो भेल। केमहर-केमहर एलह हेन?"

जिज्ञासाक नजैरसँ बिशेसर बचनूकेँ कहलक- "नमहर काजसँ आएल छेलौं मुदा तोहू तँ थाकले छह। ताबे बचना ऐठाम जाइ छी। नहा-खा कऽ तोहूँ ओतए अबिहह।"

बिशेसर आगू बढ़ि गेल। आँगन जा बचनू ओसारपर खुट्टा लागि कऽ बैस घरवालीकेँ कहलक-

"राजाजी दहिन छेला। पारा देखिते महींसमे लगि गेल। मुदा तेना घेरौर करए लगल जे आबै ने दिअए। हम ताबे नहाइ छी अहाँ एक आहूल घास लऽ जा कऽ महींसक आगूमे दऽ दियौ आ ओतइ बैस महींसकेँ तकैत

रहब जे बैसए नहि।”

बिशेसर बचना ऐठाम पहुँचल तँ देखलक जे दुनू परानी रक्का-टोकी करैए। आँगनक टाट उजाड़ि बचना सरल कड़ची छँटिया कऽ एक भाग रखैत आ नीक कड़ची दोसर भाग आ बचनाक घरवाली–फुलिया अँगनेसँ जोर-जोरसँ बजैत जे भदबामे टाट किए बन्है छी। घरवालीक बातपर धियान नै दऽ बचना टाटक कड़चियो सेरियबैत आ असथिरसँ कहबो करैत- “अँगनाक मुँह परहक टाट छी। जखन उजाड़ि देलौं तँ बन्हबे करब।”

“टाट उजाड़लौं किए जे बेपर्द भेल! चारि दिनले की होइतै?”

पत्नीक प्रश्न सुनि जवाब दैत बचना बाजल- “हमरा कि भदबा बुझल रहए जे टाट नै उजाड़ितौं। अगर अहींकेँ भदबा बुझल छेलए तँ किए ने टाट उजाड़ैसँ पहिनहि कहलौं! जखन टाट उजाड़ि देलिऐ तखन बन्हबे करब।”

दुनू बेकतीक रक्का-टोकी सुनि बिशेसर मने-मन हँसैत। बिशेसरपर नजैर पड़िते बचना डाँटि कऽ फुलियाकेँ कहलक-

“दरबज्जापर बिशेसर भैया छैथ आ अँगनामे अहाँ तूफान उठौने छी। चुप रहू!”

‘बिशेसर भैया’ सुनि फुलिया चुप भऽ ओलतीमे आबि दुआर दिस तकलक तँ बिशेसरकेँ देखि मुँह झाँपि लेलक। बिशेसरकेँ बचना कहलक-

“चौकीपर बैसह भैया। हमर हाथ मटियाह अछि। कनीए कड़ची सेरियबैले अछि तखन हाथ धोइ निचेनसँ गप करब।”

बिशेसर बचना लग आबि टाटक जगह नाइप, माटिपर कड़चीसँ चेन्ह दऽ बचनाकेँ टाटक बत्ती बैसबैले कहलक। दूटा बाँसक टोन बत्तीक तरमे दऽ बचना चारिटा बत्ती बिछौलक। ताबे बचनू सेहो लफरल आएल। तीनू गोरे टाट बान्हि, तीनटा खुट्टा गाड़ि देलक। तीनू खुट्टा लगा टाट बान्हि बचना पत्नीकेँ कहलक- “टाट भऽ गेल। पहिने खर्ड़ासँ कुरकुट-मुरकुट खड़ैर लिअ तखन बाढ़ैनसँ बहारि लेब।”

तीनू गोरे कलपर जा हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर आबि चौकीपर

बैसल। दुनू हाथ गमछासँ पोछि बचना तमाकुल चुनबए लगल। बचनू अपन महींसक बात बचनाकेँ कहलक। दुनू गोरे बिशेसर आ बचनूकेँ तमाकुल दऽ बचना अपनो मुँहमे लेलक आ बिशेसर दिस घुमि पुछलक-

"कोन काजे भैया आएल छेलह?"

थूक फेक बिशेसर दुनू गोरेकेँ कहए लगल- "अपना तीनू गोरेक खेत एकठाम अछि। तँए विचार भेल जे एकटा बोरिंग तीनू गोरे मिलि कऽ गड़ा लएह। श्यामकेँ देखै छहक जे आवारा जकाँ भरि दिन वौआइत रहै छेलै से केहेन गिरहस्त भऽ गेल। गाममे कियो हाथ मिलबैबला छइ। जेहने अपने मेहनती अछि तेहने पत्नियोँ छइ। साले भरिमे दुआरपर बखारी बना लेलक।"

बिशेसरक विचार सुनि बचनू आ बचना गुम्म भऽ सोचए लगल जे ओते रुपैआ केतएसँ औत जे बोरिंग गड़ाएब। बड़का-बड़का गिरहत बुते तँ होइते ने छैन आ हम सभ कोन मालमे माल छी...।

दुनू गोरेकेँ चुप देखि बिशेसर बाजल-

"जहिना तूँ दुनू गोरे अनाड़ी छह तहिना तँ हमहूँ छी। मुदा श्यामानन्द तँ बोरिंगक तरी-घटी जनैए, तँए तीनू गोरे श्यामक ऐठाम चलि कऽ पहिने बुझि लएह।"

श्यामानन्दक बात सुनि बचनू बाजल-

"बड़ सुन्नर विचार भैया अहाँ कहलिऐ। श्यामक घर कि कोनो दूर अछि, तीनू गोरे चलू। अगर काज सम्हरैबला हएत तँ करब नै तँ नइ करब। तइले कि कोनो डाँर-बान्ह छइ।"

तीनू गोरे श्यामानन्दक ऐठाम विदा भेल। श्यामानन्द घरपर नहि। घरपर पता लगलै जे ओ खेतमे छैथ। तीनू गोरे खेत दिस चलल। खेतमे श्यामानन्द ओराहैबला मकइ-बालि बिछ-बिछ तोड़ैत। एक छिट्टा कोबी काटि कऽ आड़िपर रखने। दू-दू, अढ़ाइ-अढ़ाइ किलोक कोबीक फूल। फरिक्केमे तीनू गोरेकेँ अबैत देखि श्यामानन्द आगू बढ़ि, दुनू हाथ जोड़ि बजला- "गोड़ लगै छी भाय-साहैब। जखन ऐ बाध दिस एलौं तँ कनी हमरो खेती देखि लियौ।"

मुस्कियाइत बिशेसर श्यामानन्दकेँ कहलखिन- “बौआ श्याम, अहींक खेती देखैले आ किछु विचार करैले तीनू गोरे एलौं हेन।”

आगू-आगू श्यामानन्द आ पाछू-पाछू बिशेसर, बचना आ बचनू चलल। कोबीक छिट्टा लग ठाढ़ भऽ श्यामानन्द कहलखिन- “बिशेसर भाय, आइ पनरहम दिन छी। पनरह दिनसँ एक-छिट्टा दू-छिट्टा कोबी रोज काटै छी।”

बिशेसर-

“कोबी बिकाइ केना अछि, श्याम?”

“भाय की कहूँ। घरेपर सभ कोबी बीकि जाइए। हमहूँ एते केने छी जे हाट-बजारसँ दू रुपैआ किलो कम दइ छिऐ। लेबालोकेँ असान आ अपनो असान, संगे समाजक लोक खाइए ईहो खुशी।”

आगू-आगू श्यामानन्द आ पाछू-पाछू तीनू गोरे आड़िए-आड़ि घुमि खेत सभ देखए लगला। बीघा भरि मकइ। पँच-पँच हाथक हरिअर-हरिअर फुलाएल गाछ। तीन-तीन, चारिटा बाइल गाछमे झुमैत। जेना जुआन कनियाँ अपन जुआनीक गुणसँ झुमैए तहिना मकइ-गाछ झुमि-झुमि एक-दोसरसँ लट्टा-पट्टी करैत।

मकइ आड़ि टपिते दू बीघा फुटल गहुम। दुनू बीघाक एक रंग गहुम, जेकरा देखलासँ बुझि पड़ैत जे जँ ऊपरसँ थारी फेकल जाए तँ ऊपरे-ऊपर छिछलैत केतौ-सँ-केतौ चलि जाएत। जहिना पोखरिक पानिपर झुटका फेकलासँ होइत तहिना। गहुमक सटले पूवारि भाग बीघा भरि अल्लू। अल्लुक गाछ जुआ कऽ लटुआएल। पाँत सभमे दराइर फाटि-फाटि गेल। आड़िक कातेक एकटा गाछकेँ बिशेसर खोधिया कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे किलोसँ बेसीए गाछमे अल्लु अछि। अल्लू देखि बिशेसर श्यामानन्दकेँ पिठ ठोकि बजला- “तोरे सन-सन जुबक जखन गामक खेत पकड़त तखन अनेरे सबहक उद्धार हेतइ।”

अल्लू खेतक बगलेमे पाँच कट्ठामे टमाटरक खेती। पाँचो कट्ठाक टमाटर गाछ फड़सँ लदल। गोटि-पँगरा गाछमे पकितो। जहिना मेघमे तरेगन देखि पड़ैत तहिना पाकल टमाटर खेतमे। टमाटर खेत टपिते

कागजी-जमीरी नेबोक दू कट्ठामे बगान। साले भरिक गाछ रहनौं गोटे-आधे फड़ पकड़ने। जुआनी पकड़ैले गाछ तेजीसँ डेग बढ़ौने। गाछक जड़िमे पटबैले दड़ी बनौल। एकोटा घासक दरस गाछक जड़िमे नहि।

निंगहारि-निंगहारि बिशेसर आ बचनू गाछ सभकेँ देखैत। एकटा गाछमे एकटा सुखल डारि देखि श्यामानन्द गाछक लग जा ओइ डारिकेँ काटि बिशेसर लग नेने आबि डारिकेँ हाँसूसँ चीर आँगुर भरिक कीड़ा निकालि सभकेँ देखौलकैन। आगू बढ़ि श्यामानन्द बिशेसरकेँ कहलैन-

“भाय साहैब, बीस गाछ दारीम, पनरह गाछ अनरनेबा, पाँच गाछ धात्री, दस गाछ लताम, पनरह गाछ मद्रासी आम, पचास गाछ अनारस, तीनटा मचान बना तीन रंगक छोटका-बड़का अंगुर, आठ गाछ बेल, चारि गाछ शरीफा, चारि गाछ आँता आ चारि गाछ सपाटू क लगा पाँच कट्ठामे रोपने छी। पाँच कट्ठामे सिंगापुरी, बंशीबट, मरीचमान, भोस, गौरिया, बरहरी, दूधी, बागनर, दूधमुंगर, झुरकुटिया इत्यादि किसिम-किसिमक केरा रोपने छी। जइमे अखन तीस-पैंतीसटा घौर लटकलो अछि। जाड़क मास दुआरे जुआएल तँ नइ अछि मुदा कोशा काटि देने छिऐ।”

किरिण डुमल देखि गुलाब आँगनसँ खेत आबि कातेसँ मुड़ी उठा-उठा श्यामानन्दकेँ तकैन। मुदा मकइ दुआरे देखबे ने करैथ। कोबीक छिट्टा लग आबि गुलाब ठाढ़ भऽ गेली। कनी कालक पछाइत चारू गोरेकेँ टमाटर खेत दिससँ अबैत देखलैन। लग अबिते गुलाबकेँ श्यामानन्द पुछलखिन- “अनेरे किए धड़फड़ाएल एलौं। बिशेसर भाय सभ आबि गेला। हुनके सभकेँ घुमा-घुमा देखबए लगलौं तँए कनी अबेर भऽ गेल।”

बिनु संकोच केनहि गुलाब श्यामानन्दकेँ कहलखिन-

“कोबी कीनिनिहार सभ आबि आँगनमे बैसल छैथ, तँए एलौं। अहाँ जखन आएब तखन आएब ताबे हम कोबीक छिट्टा नेने जाइ छी। कनी अलगा दिअ।”

श्यामानन्द कोबीक छिट्टा गुलाबकेँ उठा देलखिन। गुलाब माथपर छिट्टा नेने आँगन विदा भेली। माथपर छिट्टा लऽ दुनू हाथसँ दुनू भाग छिट्टाकेँ पकैड़ दुलकी डेग बढ़बैत गुलाब ‘सैंया भेल किसनमा’ घुनघुनाइत

आँगन दिस लफरल चलली।

बिशेसर श्यामानन्दकेँ पुछलखिन- "बौआ श्याम, खेती करैक एते लूरि केना सिखलौं?"

बिशेसरक बात सुनि श्यामानन्द मने-मन हँसैत बजला- "भाय, अपनो छगुन्ता लगैए जे की छेलौं आ की छी। हमर सार पूसा कृषि कौलेजसँ पढ़ने छैथ। ओ खेतीक विशेषज्ञ छैथ। मुदा हमरा कहियो हुनकासँ खेतीक गप नै भेल छल। चारि बरख धरि ओ पढ़लैन। विद्यार्थियो नीक रहैथ आ मेहनतो खूब करैथ तँए फस्ट डिवीजनसँ पासो केलैन। पास करिते नोकरियो भऽ गेलैन। एक दिन हम सासुर गेलौं तँ अलमाड़ीमे भरल किताब देखलिऐ। किताब देखि मनमे आएल जे दिवारे-दिम्मक सभ किताब खाइए जाएत, तइसँ नीक जे हमहीं एक मोटा साइकिलपर लादि लऽ जाइ। सासुरे छल तँए केकरोसँ किछु पुछैक जरूरते नहि। एक मोटा किताब अपना ऐठाम लऽ अनलौं। सभ किताबकेँ नीक जकाँति सेरिया कऽ रखलौं। मुदा पढ़ी कहियो नहि। किएक तँ भरि दिन गजे-भाँगमे बीत जाइ छल। मुदा जखन बोरिंग गड़ेलौं तखन खेतीक किताब सभ छँटिया कऽ निकाललौं। अनक खेतीक एकटा किताब, तरकारी खेतीक किताब, फलक खेतीक किताब निकालि-निकालि पढ़ए लगलौं। थोड़-थाड़ खेतीक लूरि तँ देखियो कऽ भऽ गेल छेलए मुदा कोन मासमे कोन चीजक खेती हएत, कए बेर पटौल जाएत, कोन-कोन खाद केते-केते पड़तै, नीक बीआ केतए भेटत, ई सभ बात किताब पढ़ि कऽ बुझलौं। जखन सभ बात बुझि गेलौं आकि खेती दिस आरो बेसी मन दौगल। बोरिंग गड़ाइए नेने रही।"

झलफल भऽ गेल। हाँइ-हाँइ श्यामानन्द बारहटा मकइ बाइल आ तीनटा कोबीक फूल लऽ तीनू गोरेकेँ देलक। खेतक आड़िए-पर पतियानी लगा चारू गोरे बैस गप-सप्प करए लगला। बिशेसर श्यामानन्दकेँ पुछलखिन-

"बौआ, बोरिंग-दमकलमे केते खरच भेल?"

बोरिंगक चर्चा सुनि श्यामानन्द उन्मत्त भऽ बाजए लगला-

"भाय अहाँ लग बजैत लाज होइए। पहिने जखन बोरिंगक विचार

मनमे उठल तखन हुअए जे केते लागत लगत केते नहि। किएक तँ लोकक मुहेँ पोखैर खुनबैक खरच सुनने रहिऐ तँए हुअए। मुदा जखन किनैले गेलौं तँ साढ़े चारि हजारमे सात गेज टाटाक नबे फुट पाइप, पैंतीस फुट पितरिया फिल्टर आ ऊषा मशीन भऽ गेल। छोट-छोट आरो कएटा समान होइ छै से सभ आ गड़ाइक खरच मिला कऽ पाँच साएमे भऽ गेल। कुल मिला कऽ पाँच हजारमे बोरिंग-दमकल भऽ गेल।"

बिशेसर-

"बोरिंग गड़बैक विचार मनमे केना उठल?"

मुस्कियाइत श्यामानन्द- "जखन परिवारमे भिनौज भऽ गेल तखन तँ अपना ऊपर अपन परिवारक भार पड़ल। जखन भार पड़ल तखन सोचए लगलौं जे पहिलुका जकाँ जिनगी बितौलासँ भीख माँगए पड़त वा दोसर अपराधीक काज करए पड़त जे दुनू मनुक्ख-ले अधर्मे छी। अनासुरती मनमे आएल जे हमहूँ मनुक्ख छी। खेत छोड़ि दोसर अवलम्ब नै देखि खेती दिस धियान गेल। तखन खेतीक सम्बन्धमे सोचए लगलौं। जखन खेतीक सम्बन्धमे सोचए लगलौं तखन खेती-ले पानिक महत नजैरपर आएल। जखन पानिक महत बुझए लगलिऐ तखन पानिक जोगारक उपाय सोचए लगलौं। जखन पानिक उपाय सोचए लगलौं तखन बोरिंग दिस धियान गेल। जखन बोरिंग दिस धियान गेल तखन बोरिंग गड़बैक उपय सोचए लगलौं। बोरिंग गड़बैक विचार करिते रही आकि मनमे एकटा नव विचार जगल। ओ नव विचार छल सम्पैतक सम्बन्धमे। सम्पैत दू तरहक होइत, पहिल क्रियाशील आ दोसर ठमकल। क्रियाशील पूजी ओ छी जइसँ उत्पादन होइत आ गतिहीन पूजी ओ छी जे चलायमान नै अछि। एते बात मनमे अबिते अपन सम्पैत दिस तकलौं, तँ दुनू तरहक पूजी पर्याप्त बुझि पड़ल। दस बीघा जमीन भैयारीमे हिस्सा भेल छल जइमे आठ बीघा उपजाउ बुझि पड़ल आ दू बीघा घराड़ी, परती, गाछी-बिरछी, बँसबाड़ि इत्यादि मिला कऽ देखलिऐ। ओना, गाछी, बँसबाड़ि तँ थोड़-थाड़ क्रियाशीलो अछि मुदा परती आ पाकल सुखल बाँस, गाछ सेहो बहुत बुझि पड़ल। ओना, परतियोकेँ तोड़ि कऽ क्रियाशील बनौल जा सकैत मुदा तत्काल तँ ओ मारे अछि। परती आ सुखल-पाकल गाछपर नजैर

अँटैक गेल। बोरिंगक उपय देखि मनमे खुशी उपकल। मनमे खुशी अबिते एकटा आरो बात धियानमे आएल। ओ बात ई जे घरवालीक गहना अनेरे घरमे पड़ल अछि। अखन ओकरा बन्हकी लगा बोरिंग गड़ा ली आ उपजावारी भेलापर छोड़ा लेब। बेसी-सँ-बेसी एतबे हएत ने जे छह महिना साल भरिक सूदि लागत। ई बात मनमे अबिते घरवालीकेँ पुछलयैन। घरोवाली मंथरा जकाँ नै द्रोपदी जकाँ मानि गेली। पेटीसँ गहनाक मोटरी निकालि आगूमे रखि देलैन। गहना देखि क्षुब्ध भऽ गेलौं। दूटा गहना निकालि छह हजारमे बन्हकी लगेलौं। पाँच हजार बोरिंग-दमकलमे खरच भेल आ एक हजार खेती करैले रखि लेलौं।"

सुनि बिशेसर मुड़ी डोलबैत बजला- "हमरो तीनू गोरेक खेत एकठाम अछि। तीन बीघा बचनूक, दू बीघा बचनाक आ डेढ़ बीघा हमर। हमहूँ तीनू गोरे मिला कऽ बोरिंग गड़बए चाहै छी।"

बिशेसरक बात सुनि श्यामानन्द अचम्भित भऽ गेला। खुशीसँ छाती फुलए लगलैन। मुस्की दैत बजला- "भाय, हाथमे पानि एलासँ गिरहस्तक जिनगी बदैल जाइ छइ। हमरे लोक आवारा कहै छेलए, मुदा आइ लोक प्रणाम करैए।"

श्यामानन्दक बात सुनि उत्साहित होइत बचनू बाजल- "बिशेसर भैया, अहाँ गरीब छी मुदा हम आ बचन भाय तँ चीजबला छी। तीन हजार हम जोगार करब आ दू हजार बचन भाय करह। काल्हिए श्यामकेँ संग केने बजार चलू।"

सहानुभूति दैत श्यामानन्द बचनकेँ कहलखिन- "दोकानदारसँ हमरा कारोबार चलैए तँए अधो-छिधो रुपैआक भाँज लगि जेतह तैयो काज चलि जाएत।"

चारू गोरे बाजार जाइक समय बना लेलैन। शुभ काजमे बिलम नहि। बिशेसर श्यामानन्दकेँ कहलखिन- "बौआ, भिनसर अहाँ अपने चलि आएब समदिया भरोसे नै रहब। हम सभ अखनेसँ रुपैआक ओरियानमे लगि जाइ छी।"

बिशेसरक बात सुनि श्यामानन्द बजला- "नइ-नइ, समदिया भरोसे

हम नइ रहब। भोरे किछु पानि पीब चलि आएब।"

सभ कियो उठि कऽ विदा भेला।

श्यामानन्दकेँ घरपर अबिते पत्नी पुछलकैन- "एते अबेर केतए भऽ गेल?"

कहलखिन- "बिशेसर भाय बोरिंग गड़ौता ओही गप-सप्पमे समय लगि गेल।"

बोरिंगक नाओं सुनिते गुलाब बजली-

"जँ बिशेसर भैया बोरिंगक विचार अहाँसँ पुछैले एला तँ अहुँक फर्ज भऽ जाइए जे रुपैआ-पैसा दुआरे काज बिथुत ने होइन। गाममे तँ बहुत लोक छै अनकासँ पुछैले किए ने गेलखिन। जँए अहाँपर बिसवास भेलैन तँए ने।"

रस्तामे बचनू बिशेसरकेँ कहलकैन-

"भैया, अहाँक खेत ऊँचगर अछि आ हमरा दुनू गोरेक नीच तँए ऊँचगरपर बोरिंग गड़ाएब नीक हएत।"

बचनूक बात सुनि हँसैत बिशेसर बजला-

"सभ कियो रहबे करब। जेतइ नीक हएत तेतै गड़ाएब।"

भोरे श्यामानन्द दतमैन करैत बिशेसर ऐठाम पहुँचला। बिशेसर सेहो बचनू ऐठामसँ आबि नहाइक ओरियानमे रहैथ। श्यामानन्दकेँ देखि बजला-

"अखन धरि घुमिते छह श्याम?"

"हमरा मनमे भेल जे कोनो बाधा-ताधा ने त..। तँए आबि गेलौं।"

श्यामानन्द चोट्टे घुमि कऽ घरपर आबि हाँइ-हाँइ नहा कऽ जलखै खा बिशेसर ऐठाम एला। बचनू आ बचना पहिनहि आबि गेल छल। चारू गोरे बाजार विदा भेला।

बाजार पहुँच बोरिंगक पाइप, दमकल आ आरो-आरो समान सभ कीनि, टाएर गाड़ी भाड़ा कऽ सभ सामान लदलैन। दाम जोड़ि दोकानदारकेँ दऽ देलखिन। श्यामानन्द बचनूकेँ संग केने आगू बढ़ि मिस्त्री ऐठाम एला।

एक किलोक रौह माछ कीनि मिस्त्री पोलिथीनक झोरामे नेने घरपर पहुँचले छल कि श्यामानन्द शोर पाड़लकैन।

आँगनसँ निकैल मिस्त्री श्यामानन्द लग आबि पुछलकैन-

“केमहर-केमहर एलौं?”

मुस्कियाइत श्यामानन्द कहलखिन- “एकटा आरो बोरिंग गड़बैक अछि। सएह कहैले एलौं। टाएर गाड़ी अही देने अबैए तँए गाड़ैक सभ समान लादि दियौ। काल्हि भोरेसँ हाथ लगा देबइ।”

श्यामानन्दक बात सुनि मिस्त्री बाजल- “समान तँ पठा देब मुदा हाथ काल्हि नइ लगत। किएक तँ हमर सभ आदमी दोसर बोरिंग गाड़ैले गेल अछि।”

श्यामानन्द-

“दोसर कोनो उपाय नइ छइ?”

मिस्त्री-

“हँ, छइ। हम तँ रहबे करब। जँ काज करैबला तीनटा आदमी भऽ जाए तँ काल्हियो लगि सकैए।”

बचनू-

“आदमीक कमी नै अछि। अखन समान नेने चलू आ जेतए बोरिंग गाड़ल जेतै तेतए बाँस-ताँस ठाढ़ कऽ खाधिक चेन्ह दऽ देब, हम सभ से खुनि लेब। जेते काज भेल रहत ओते समय काल्हि बँचि जाएत।”

टाएर आबि गेल। सभ सामान लादि गप-सप्प करैत सभ कियो विदा भेला। थोड़े आगू बढ़लापर बिशेसर मिस्त्रीकेँ पुछलखिन- “अहाँ पढ़लो-लिखल छी?”

‘पढ़ल-लिखल’ सुनि मिस्त्री चौंक बाजल- “हम पढ़ल-लिखल नै छी। जखन बारहे-तेरहे बर्खक रही तखने बाबू मरि गेला। चारि भाए-बहिनमे दू बहिनक बिआह-दुरागमन बाबूए सोझाँमे भऽ गेल छल। दू भाए-बहिन कुमार छेलौं। घराड़ी छोड़ि एक्को धूर बाधमे खेत नै छल। मुदा माए जेहने लूरिगर तेहने जिबटगर। दोकानसँ तेबखा, खेरही आ मसल्ला कीनि

आनए आ अदौरी-पापड़ बनबए। हमहूँ पापड़ बेली आ रौदमे सुखाबी। छोटकी बहिन आ माए अदौरी खोंटै। साँझू-पहर झोरामे लऽ हम जा कऽ बेच आबी। ओइसँ गुजर करी। बहिनक बिआहो केलौं। बहिनक बिआहक साल भरिक पछाइत अपनो बिआह केलौं। फागुनक समय रहै, धुर-झार लगन चलैत रहइ। कपड़ा दोकानदार-रामफलक नोकर पड़ा गेलइ। हम जखन पापड़ बेचए गेलौं तँ रामफल शोर पाड़लक। गेलौं। हमरा कहलक 'नोकरी करबह?' हम गछि लेलिऐ। दोसर दिनसँ नोकरी करए लगलौं। भरि दिन दोकानमे काज करी आ साँझमे अपना ऐठाम चलि आबी। गामपर आबि खाइ-पीबै राति धरि पापड़ बेल-बेल राखी। दिनमे माए ओकरा सुखबै। आमदनी बढ़ि गेल। मुदा जेते मन अपन काजमे लगए तेते नोकरीमे नहि।"

बिच्चेमे बिशेसर पुछि देलखिन-

"मिसतिरियाइ केना सिखलौं?"

मुस्कियाइत मिस्त्री कहलकैन-

"मामा गाम गेलौं। ममियौत भाए चापाकल गाड़ैले जाइत रहैथ। हमरो चलैले कहलैन। हमहूँ गेलौं। जैठाम कल गाड़ैत रहैथ तैठाम हमहूँ कातमे बैस देखए लगलौं। सरा-सैर पाइप गड़ैत जाए। हमरा काज हल्लुक बुझि पड़ल। कमाइयो बढ़ियाँ। कल गड़ौनिहारक पतियानी लगल। दोसर दिनसँ हमहूँ काज करए लगलौं। दसे दिनमे मिस्त्री भऽ गेलौं। गाम अबै काल ममियौत, पुरना सभ औजार हमरा दऽ देलैन। गाम आबि हमहूँ कल गाड़ए लगलौं। नोकरी छोड़ि देलिऐ, कल गाड़ए लगलौं। जखन बैसारी हुअए तखन पापड़ बनाबी...। तीन साल चापाकल गाड़ैत-गाड़ैत बोरिंग गाड़ैक सभ औजार कीनि लेलौं। जखन सभ औजार भऽ गेल तबसँ बोरिंगक काज शुरू केलौं।"

मिस्त्रीक बात सुनि बिशेसर हँसैत पिठ ठोकि देलकैन। दिन उगले सभ घरपर आबि गेला।

घरपर अबिते गाड़ीपर सँ सभ सामान उताइर, गाड़ीबला-कैँ पचास रुपैआ भाड़ा दऽ देलखिन। श्यामानन्द सेहो घर होइत एला। अबिते

बिशेसर कहलकैन- “श्याम, अखन सभ कियो छी। चलै चलू बोरिंग-ले जे जगह नीक हेतै से ठेमा लेब।”

बिशेसरक बात सुनि सभ कियो जगह देखैले विदा भेला। खेत पहुँच सभ बिशेसरक खेतकेँ ऊँच बुझि बोरिंग गाड़ैक जगह ठेमा लेलैन। सभ राजी भैला।

बिशेसर भोलियाकेँ खनती आनए कहलखिन। बचनू बाँसक टोन अनलक। बचना कोदारि आनि खाधि खुनए लगल। झलफल होइत-होइत बोरिंग गाड़ैक सभ जोगार लगि गेल। मिस्त्री चलि गेल।

दोसर दिन भोरे मिस्त्री आबि भोलियाकेँ कहलक- “जेते औजार अछि सभकेँ गनि लएह आ धिया-पुतापर नजैर रखने रहिहह नइ तँ औजार गड़बड़ कऽ देत।”

सभ औजार गिनती कऽ झोरामे रखि भोलिया कान्हपर लऽ विदा भेल। खेतमे झोरा रखि भोलिया आ बचनू पोखैरसँ पानि आनि-आनि खाधि भरए लगल।

अखन धरि बचनाक केतौ पता नहि। मुड़ी उठा-उठा बिशेसर बचना घर दिस तकैत जे अखन धरि किए ने आएल।

बचनाकेँ नै अबैत देखि बिशेसर बजबैले विदा भेला। बचनाक घरपर पहुँच बिशेसर देखलैन जे गाइयो-बरद घरेमे छै! ने बचनाक पता आ ने बचनाक घरेवालीक।

दरबज्जापर ठाढ़ भऽ चारूकात ताकए लगला। मुदा केतौ नजैरपर पड़बे ने केलैन। बिशेसर घुमि कऽ चलि एला।

बोरिंग गाड़ब शुरू भेल। श्यामानन्द झोरामे कोबी, टमाटर, अल्लू नेने पहुँचला। श्यामानन्दकेँ बिशेसर कहलकैन- “बौआ, जाबे बोरिंग गाड़ल जाएत ताबे अहूँ एतै रहू।”

किरिण उगैसँ पहिने बचनूक पत्नी हाथ-पएर धोइ, गोसाँइ घर जा, गोसाँइक आगूमे एक-टंगा दऽ दुनू हाथ जोड़ि फुसफुसा कऽ गोसाँइकेँ कहलखिन- “हे गोसाँइ बाबा, अगर शुभ-शुभ कऽ बोरिंग भऽ जाएत तँ सवा सेर लड्डु चढ़ेबह।”

कहि घरसँ निकैल उपास करए लगली। सबहक भानस आ जलखै बचनूए ऐठाम होइक विचार भेल छल तँए बचनूक पत्नी ओइ जोगारमे लगि गेली। बिशेसर आ श्यामानन्द बगलमे बैस देखबो करैथ आ गप्पो-सप्प करैथ-

“बिशेसर भाय, जखन बोरिंग गड़ेलौं तखन लोक-सभ बाजए जे बोरिंगक पानिसँ उपजा थोड़े हएत। बरखा पानि भगवानक पानि छिऐन आ बोरिंगक पानि तँ लोहा पाइपसँ अबैए तँए जजात जरिये जेतइ!”

श्यामानन्दक बात सुनि बिशेसर ठहक्का मारि हँसए लगला। बिशेसरकेँ हँसैत देखि श्यामानन्द आगू बजला-

“एतबे नै भैया, खाद आनि जखन खेतमे देलिऐ तखन बाजए जे हाड़क खाद बनै छइ। हिन्दु केना खाएत।”

दुनू गोरे गप-सप्प करिते छल कि बचना धड़फड़ाएल पहुँचल। बिशेसरपर नजैर पड़िते बाजल-

“मौगीक फेरीमे पड़ि गेल छी भैया। जखनसँ घरवाली बोरिंगक नाओं सुनलक तखनसँ जेना भूत लगि गेलइ! भरि राति ने अपने सूतल आ ने हमरा सुतए देलक। भरि राति की कहलक की नै कहलक से ओते मनो ने अछि। अधरतिएमे पड़ा कऽ केतए-दन चलि गेल। भोरेसँ तकैत-तकैत तबाह भऽ गेलौं मुदा केतौ ने भेटल। बोरिंगक दुआरे ताकब छोड़ि चलि एलौं। मालो-जाल अखने बाहर केलौं हेन।”

बचनाक बात सुनि बिशेसर कहलखिन-

“जे भेलै से भेलै, काजमे लगि जाह। पाछू बुझल जेतइ।”

भरि दिनमे अस्सी फूट बोर भेल। अस्सी फूटपर जा कऽ लस्साबला माटि पकड़ा गेलइ। आगू पाइप धँसबे ने करैत। जेना पहाड़ी इलाकामे होइत। सबहक बाँहि आ जाँघ सेहो दुखाए लगलै।

सबहक थाकैन देखि मिस्त्री काज छोड़ि देलक। सभ समान सेरिया कऽ रखि मिस्त्री बचनू आ भोलियाकेँ कहलक-

“इनहोर पानिसँ नीक जकाँति बाँहि आ जाँघकेँ ससारि लेब नइ तँ

काल्हि काज कएल नै हएत।"

दोसर दिन, भोरेसँ सभ काजमे जुटि गेल। पहिलुके तोरमे दसो फुट लस्साबला माटिसँ आगू बढ़ि बाउलपर पहुँच गेल। पैंतीस फुट मोटका बाउल भेटलासँ मिस्त्रीक मन गदगद भऽ गेल।

चारि बजैत-बजैत बोरिंग गड़ि गेल। खुट्टा-खुट्टी उखाड़ि मिस्त्री दमकल लगा बोरिंग चला देलक। ❑

दस

बिशेसर बोनिहार नै आब छोटका किसान भऽ गेल। अपन बदलैत जिनगी दिस नजैर दौगबैत बिशेसर मने-मन सोचए लगला जे कम-सँ-कम एकटा बरद जरूरी अछि। डेढ़ बीघा खेती कोदारिसँ तत्काल तँ भऽ सकैए। मुदा बिनु बरदे काज चलब कठिन अछि। अगर केकरो हर जोति जँ हर-बरद लेब तँ तीन दिन जोतब तखन एक हरक काज हएत। ऐ बेर तँ समाज मदैत केलक तँए खेती भऽ गेल। मुदा सभ दिन तँ से सम्भव नै अछि। तखन एकटा उपाय अछि जे अदहा-छिदहा काज कोदारियोसँ कऽ लेब आ अदहा-छिदहा हरो मोल लऽ कऽ कऽ लेब। जखन पाइ-कौड़ी हएत तखन बुझल जेतइ। फेर बिशेसरक मनमे आएल जे जँ कियो बरद पोसियाँ लगौत तँ सएह लऽ लेब। अपन जुतिक काज रहत, केकरो जुतिमे नै रहब। मुदा केकरा पुछबै जे बरद पोसियाँ लगेबह? समाजमे तँ यएह देखै छी जे कियो गाए वा बरद पोसियाँ लगबैए वा खेत भरना लगबैए तँ सुराक लगा काज होइ छइ। दू-चारि गोरे लग बजबै तँ अपने भाँज लगि जाएत। जखन बरद हएत तखन हरो बनबए पड़त। तत्काल जँ हर नहियोँ हएत तैयो साल-दू साल काज चलि सकैए किएक तँ बेसी किसान ओहन अछि जे दू-दूटा हरखाड़ा आ पालो रखने अछि। जेना-जेना उपाय होइत जाएत तेना-तेना चीजो बनबैत जाएब। मुदा सभसँ जरूरी अछि जे जखने बरद भेट जाएत तखने ओकरा रहैले घरोक जरूरी हएत। घर नै अछि। एकटा बरद रखैले बड़ भारी समस्या तँ नहियेँ अछि मुदा समस्या तँ अछिए। भनसे घर

लगा कऽ एकचारी बान्हि ठाढ़ कऽ लेब। चारि-पाँचटा खुट्टा, एकटा पाढ़ि आ आठ-नअ हाथक ठाठ लागत। तीन-चारिटा बाँस कीनि लेब तहीसँ सभ काज भऽ जाएत। बिशेसर सोचिते छला कि मोहिनी आबि पुछलकैन- “किए मन्हुआएल बैसल छी?”

पत्नीक बात सुनि बिशेसर बाजल- “भने अहूँ आबि गेलौं, आउ ऐठाम बैसू। अखन धरि तँ बोइने करै छेलौं, ने माल-जाल खुट्टापर छल आ ने बेसी असार-पसार तँए एक्कोटा घरसँ काज चलि जाइ छल। मुदा आब खेतो भेल आ पानियोँक उपाय भऽ गेल। जखन खेत आ पानि भऽ गेल तखन उपजो बढ़बे करत। तेतबे नहि, जखन उपजा-बाड़ी बढ़त तँ ओकरा रखैले घरमे कोठियो चाही, नार-पात रखैले जगहो चाही। ओना, घराड़ीक कमी नै अछि मुदा ओकरा बेवस्थित ढंग धड़बए पड़त।”

मुड़ी डोलबैत मोहिनी बजली- “हँ, से तँ करैये पड़त।”

बिशेसर-

“अखन धरि गाछी-बिरछीसँ जारैन तोड़ि अनै छेलौं, पत्ता बीछि अनै छेलौं तखन भानस होइ छल। मुदा जाबे जारैनक ओरियान नै कऽ लेब ताबे तँ अनके गाछी-बिरछीक आशा रहत। तँए विचार अछि जे एकटा बरद पोसियाँ लऽ ली। बरद रखलासँ जरनोक ओरियान भऽ जाएत आ खेतो जोतैक। मुदा बरद रखैसँ पहिने घर बान्हए पड़त। घर जे बान्हब से अपना बाँसो-लकड़ी नहियेँ अछि।”

मोहिनी-

“चारिटा हाट भोलिया केलक जइसँ दू साए रुपैआ कमाएल। तँए हमर विचार अछि जे भोलियाकेँ साझी कऽ लियौ। आइ जँ दू-चारि भाँइ भोलिया रहैत तँ एकटा बातो मुदा से तँ नहियेँ अछि। लऽ दऽ कऽ असगर अछि।”

मोहिनीक बात सुनि बिशेसर गुम्म भऽ गेला। थोड़े कालक पछाइत बजला- “बजलौं तँ ठीके मुदा ओकरा भीने किए केलिऐ। बेहूदा छौड़ा-मारैरक भाँजमे पड़ि दुइर भऽ गेल तँए ने तामस उठल आ भीन केलिऐ। यएह उमेर ने कमाइ-खटाइबला होइ छइ। अखन जे काजसँ देह चोरौत तँ

कमाएत कहिया?”

मुड़ी डोलबैत मोहिनी कहलकैन-

“कहलिऐ तँ ठीके मुदा जहियासँ दुखन सिपाही रेबाड़लकै तहियासँ भाँग-गाँजा छोड़ि देलक!”

मुस्कियाइत बिशेसर बजला- “छुतहरक चालि छोड़ि जँ मनुक्खक चालि धड़त, तखने ने इज्जत-आबरू हेतइ। हमरा कि कोनो ओकरासँ दुश्मनी अछि। शोर पाड़ियौ दुनू परानीकेँ।”

मने-मन खुशी होइत मोहिनी आँगन जा दुनू परानी भोलियाकेँ बजौने एली। पिता लग अबैत भोलियाकेँ छाती धकधकाइत, मुदा तैयो आबि पिताक आगूमे बैसल। भोलियाक पत्नी-मेना सेहो बगलमे ठाढ़ भेली। बिशेसर भोलियाकेँ कहलखिन-

“रौ भोलिया, भाँग-गाँजा पीबै दुआरे तोरा भीन केने छेलियौ जँ आब छोड़ि देलेँ तँ आइसँ साझी भऽ जो। हमहूँ दुनू परानी दिनोदिन बुड़हे होइत जाएब मुदा तूँ दुनू बेकती तँ जुआन छेँ। जेते मेहनत करमे ओते अपने ने सुख हेतौ। एते दिन खेतो ने छल, बोइन करै छेलौं। मुदा आब तँ खेतो भऽ गेलौ आ पटबैले बोरिंगो। तँए मन लगा खेती कर। बड़बढ़ियाँ छोट-छीन रोजगारो शुरू केलेँ। परिवार अगुअबैले बहुत मेहनत आ बहुत चीजक जरूरत होइ छइ। पाइक काज तँ पाइए करत। घर लग जे डेढ़ कट्ठा खेत अछि तइमे आँगन, घर, दुआर, मालक थैर आ अगवास बना-ले आ तीमन-तरकारी बोरिंगे लग करब।”

पतिक बात सुनि मोहिनी बजली-

“एते दिन सोलहो आना बोइनेपर गुजर करै छेलौं, पाइक कोनो आमदनी नइ छल मुदा आब तँ थोड़-थाड़ पाइयोक आमदनी भइये गेल। समाजमे पैंचो-पालट ओकरे भेटै छै जेकरा आमदनी रहै छइ। एक्के बेर जे सभ काज करए चाहब से तँ नइ हएत मुदा किछु नगदो आ किछु उधारियो लऽ कऽ एक-एकटा करैत जाएब तँ सभ काज भऽ जाएत।”

पत्नीक बात धियानसँ सुनि बिशेसर बजला-

“अहाँक विचार एक तरहक अछि मुदा एतेटा जिनगीमे केकरोसँ

किछु मंगलौं नहि, आब ऐ बुढ़ाड़ीमे केना माँगब?”

बिशेसरक विचारमे छिपल संकल्पकेँ मोहिनी बुझि गेली। सामंजस्य करैत बजली- “अपने दुनू परानी बुढ़ भेलौं। पाकल आम जकाँ कखन छी आ कखन गिर पड़ब तेकर कोन ठेकान। तँए भोलियाकेँ घर-दुआर सुमझा दियौ। जाधैर कियो घरक भार उठा नै चलैत ताधैर अबोधे-अनाड़ी रहि जाइत। करैत-करैत कियो सीखैए।”

मोहिनीक विचार बिशेसरकेँ जँचलैन। मुदा मनमे द्वन्द्व जगि गेल। द्वन्द्व ऐ दुआरे जगलैन जे अपना ढंगसँ परिवारोक रस्ता आ समाजोक बीच रहैक बनौने छैन...।

एक टकसँ बिशेसर आगू-मुहेँ देखि सोचए लगला। तैबीच बचनू आएल। बचनूकेँ देखिते बिशेसर हाथक इशारासँ ओछाइन देखबैत कहलखिन- “आबह, आबह बचनू। ऐठाम बैसह।”

ओछाइनपर बैस बचनू बिशेसरकेँ कहलक- “भैया, बड़ चिन्तित देखै छिअ?”

बचनूक बात सुनि बिशेसर बिनु कोनो लागि-लपैटिक कहलक-

“चिन्ता कोनो तेहेन नै अछि। परिवारेक सम्बन्धमे किछु मनमे आबि गेल।”

परिवारक नाओं सुनिते बचनू बाजल- “परिवारेमे ने भैया सभ सुख-दुख भोगैए। तँए चिन्ता तँ करै पड़तह।”

“कहलह तँ ठीके मुदा हमर चिन्ताक कारण दोसर अछि। एते दिन बोइन करै छेलौं, गुजर करै छेलौं। मुदा आब अपना खेतो भऽ गेल, खेत पटबैले पानियोँक जोगार भऽ गेल। तँए आब उपजावारी सेहो बढ़त। ओइ खेतकेँ जोतै-कोड़ैले बरद चाही, हर-कोदारि चाही आ आरो औजारो चाही। बरद रखैले घरो चाही। नार-पात रखैले जगहो चाही। एते दिन तँ एक्केटा घरसँ काज चलि जाइ छल मुदा आब से हएत? अपना तँ डेढ़ कट्ठा घराड़ी छोड़ि किछु अछि नहि। यएह चिन्ता मनमे घुरियाइए।”

बचनू कहलकैन- “भैया बजलह तँ सभ ठीके मुदा समाज समुद्र होइए। तोरा अपना बुझि पड़ै छह जे किछु ने अछि मुदा गाममे तँ सभ

किछु अछि। तइले एते चिन्ता किए करै छह। जाबे तोरा अपना बरद नै भऽ जेतह ताबे हम अपन बरदसँ खेती सम्हारि देबह। घर बन्हैले बाँस आ लकड़ी सेहो सम्हारि देबह। जखन उपजावारी हेतह तखन हमरा ओकर दाम दऽ दिहह। तोरा पाबि हम एते करै छी आ तोहीं लटपटा जेबह।”

बचनूक बात सुनि बिशेसर कहए लगल-

“हम तँ पढ़ल-लिखल नै छी बचनू, मुदा आँखि तँ अछि। अपने गामटा मे नहि आनो गाममे देखै छी जे हमरा-तोरा सन जे पछुआएल परिवार आ लोक अछि ओकरामे किछु एहेन दुरगुन अछि जेकरा सुधारने बिना अगुआएब कठिन अछि।”

बिशेसरक बात सुनि बचनू चौंकैत पुछलक- “से की भैया?”

“सएह तँ कहै छिअ। अपनो गाममे देखै छहक ने जे अनेरे छोट-छीन कारणेँ भरि-भरि दिन लोक गारि-गड़ौवैलमे, झगड़ा-झंझटमे समय बिता लइए, जइसँ परिवारक काज मारल जाइ छइ। जखन परिवारक काज मारल जाएत तखन ओ परिवार आगू-मुहेँ केना ससरत?”

मुड़ी डोलबैत, मुँह बौने बात सुनि बचनू बाजल-

“हँ, ई तँ ठीके कहलक।”

बिशेसर आगू बजला- “एतबे नै बचनू, आरो बात अछि। हमरा-तोरा परिवार सन परिवारमे देखबहक जे जेकरा ऊपरमे घरक भार रहै छै ओ भरि दिन काजसँ लऽ कऽ आरो तरहक जोगारमे तंग-तबाह रहैए मुदा घरक आन गोरेकेँ धैनसन। जेना एक्के गोरे-ले कमाइक भार छै आ दोसर-तेसरकेँ सिरिफ खाइक। तेतबे नहि, आरो देखबहक जे कमाइ-खटाइबला जे अछि ओ भरि-भरि दिन भाँगे-गाँजाक पाछू वौराएल रहैए।”

बचनू- “हँ, ईहो बात ठीके कहलह भैया”

बिशेसर- “जाधैर कोनो परिवारमे, परिवारक सभ सदस अपन परिवार बुझि नै लगि जाएत ताधैर कोनो परिवारकेँ आगू बढ़ब कठिन अछि। जखने परिवारक सभ आदमी अपन शक्तिक अनुरूप श्रम करए लगत तखने ओ परिवार धुधुआ कऽ आगू बढ़ए लगत। अखन धरिक जे अपन सबहक परिवारक दिशा रहल ओ एहेन बनि गेल अछि जइमे

जिनगीक महतकेँ छोड़ि कल्पनामे चलि रहल अछि। तँए सभ कष्टकर जीवन बना कल्पित जिनगी जीब रहल अछि।”

एते बात सुनिते बचनू बिशेसरकेँ कहलक- “भैया, हम एकटा काजे आएल छेलौं।”

“कोन काज?”

“फगुआक समय लगिचा गेल। पानिक दुआरे गहुमक खेती करबे ने केलौं। किएक तँ अपना बाधमे ने एक्कोटा बोरिंग छल आ ने पोखैर। लऽ दऽ कऽ एकटा पोखैर अछि, जँ ओहू पोखरिक पानि उपैछ गहुमे पटा लितौं तँ गाए-महींस केतए पानि पीबैत। तेतबे नहि, आगि-तागिक दुआरे सेहो किछु पानि रहब जरूरी अछि। मुदा आब तँ अपन बोरिंग भऽ गेल। खेतो सभ खाली भऽ गेल। मौसरी-खेसारी सभ उखैर गेल। अखन कोनो खेती करैक समय अछि की नहि? सएह पुछैले आएल छेलौं।”

बचनूक बात सुनि बिशेसर बुझबैत कहलखिन- “खेती तँ बारहो मास होइ छै, बचनू। एते दिन अपना हाथमे पानि नै छल तँए नै होइ छल। जखने जागी तखने परात। दमकल बोरिंगमे लगा जेते खसल खेत छह, सभकेँ पटाबह। हमहूँ पटा लेब। बचनोकेँ आइए कहि दहक। तीनू गोरे सभ खेत पटा खेरही, मकइ आ तेल-ले सुर्जमुखी फूल बाउग कऽ लेब।”

मकइ आ सुर्जमुखीक नाओं सुनि बचनू बाजल- “भैया, खेरहीक बीआ तँ अपनो घरमे अछि मुदा मकइ आ सुर्जमुखी-बीआ केतएसँ आनब?”

बिशेसर-

“कोन कमी छइ। बजारमे सभ कथुक बीआ भेटै छइ। पहिने खेत पटा कऽ जोत-कोर तँ करह। जखन बीआ आनए बजार जाए लगिहह तखन गरमा धानक आ तीमन-तरकारीक बीआ सेहो नेने अबिहह।”

बचनू- “बेस कहलह भैया। आइएसँ मुसताइज भऽ जाइ छी। मुदा एकटा बात तँ पुछबे ने केलियऽ। पाछू कऽ मोन पड़ल, खएर..। पहिने ई कहह, तीमन-तरकारीक जे खेती-ले जे कहलह से तँ बड़बढ़ियाँ मुदा गामक लोक तँ किचारत नइ जे तरकारी खेती कोइर-कुजरा करैए?”

बचनूक बात सुनि बिशेसर ठहक्का मारि हँसैत कहलखिन- “धुर बुड़िबक कहीं-के! कम-सम तरकारी खेती तँ सभ करैए, तखन लोक किए हँसतह। जइ चीजक खर्च सभ परिवारमे होइए ओइकेँ उपजबैमे लोक किए हँसत।”

बचनू- “तेसर सालक एकटा किस्सा कहै छिअ। हमर तमुरियाबला कुटुम पानक खेती केलक। वेचारा गरीब अछि। बोइन करैए। पान उपजबैक सभ लूरि वेचारा सीखने अछि। पानक आमदनी देखि एक कट्ठा खेती केलक। बड़ सुन्नर पान उपजलै। एक्के-दुइए गामक सभ बुझलक। जखन बुझलक तँ एका-एकी लोक सभ आबि-आबि देखए लगल। देखला पछाइत गामक सभ बरइ चौगामा बरइक पनचैती बैसौलक। पनचैतीमे सभ मिलि निर्णए केलक जे तीन दिनक भीतर ओ बरैब उजाड़ि लिअ नइ तँ बलजोरी बरैब उजाड़ि देबइ। पान उपजाएब हमरा सबहक पुश्तैनी खेती छी, दोसर जाति किए उपजौत। वेचारा कुटुम बरैब उजाड़ि लेलक।”

बचनूक बात सुनि, आरो जोरसँ ठहक्का मारि बिशेसर बजला-

“एहेन-एहेन घटना मुरूखपनाक चलैत भेलै, आब एहेन घटना थोड़े हएत।”

दुनू गोरे बिशेसर आ बचनू गप-सप्प करिते छला कि श्यामानन्द सेहो बाजारसँ घुमैत एला। श्यामानन्दकेँ देखिते बिशेसर कहलखिन-

“आबह-आबह बौआ श्याम। अखन हम दुनू गोरे खेतीए-क गप करै छेलौं। भने तोहूँ आबि गेलह।”

श्यामानन्द-

“भैया, अखन हमहूँ धड़फड़ाएल छी। निचेनमे कखनो फसल-चक्रक गप करब। भोलियाकेँ कहि दिहक जे टमाटर आ फुलकोबी दुइर भेल जा रहल अछि तँए काल्हि भोरे आबि कऽ जेते दुइर होइबला अछि ओकरा कौल्हुके हाटमे बेच लेत। दुइर भेलासँ की फल। कनी बेसी मेहनत हेतै मुदा पाइयो तँ हेतइ। अखन जाइ छी।”

‘अच्छा ठीक छै’ कहैत बिशेसर श्यामानन्दकेँ विदा कऽ बचनू संगे गप करए लगला- “बचनू, जहिना सभ रंगक किसान अछि– खेतक

हिसाबे, केकरो दू बीघा खेत छै, केकरो तीन बीघा, केकरो दस बीघा। तहिना खेतियो अलग-अलग ढंगसँ करए पड़त। ने एक रंग खेत सभ किसानकेँ अछि आ ने एक रंग खेती केलासँ काज चलत। ओना, सभ किसानक परिवार एक रंगाहे अछि। चारि गोरेसँ लऽ कऽ सात-आठ गोरे तक। मुदा खेत तँ कम-बेसी छै तँए परिवारक हिसाबसँ खेती करए पड़त। दोसर बात अछि जे कोनो परिवारमे अधिक खेत अछि मुदा काज केनिहार- श्रमिक कम अछि। तहिना कोनो परिवारमे खेत कम अछि आ खटनिहार अधिक अछि। तहिना उपजोक अछि, कोनो फसिलमे कम श्रम लगैए आ कोनो फसिलमे अधिक। लाभोक दृष्टिये तहिना छइ। तँए सभ हिसाब मिला कऽ किसानकेँ चलए पड़त।" ❑

एगारह

अबेर कऽ उठि महंथ रघुनाथ दास डोलडालसँ आबि स्नान करै छला। बारह बजे राति धरि जगल रहने अबेर कऽ निन टुटलैन। फुलचन दास बाल्टीनमे जल भरि महंथजीक पीठक मैल छोड़बैत रहैन...।

भोरे गंगानन्द नित्यकर्मसँ निवृत्त भऽ चाह पीब, पान खा महंथजीसँ भेँट करए स्थानपर पहुँच मन्दिरक आगूमे पजेबा सिमटीक बनल चबुतरापर बैसल छला।

गंगानन्दकेँ बैसल देखि महंथ रघुनाथ दास हाँइ-हाँइ स्नान कऽ, कमण्डलमे जल भरि मन्दिर जा पूजा करए लगला। महंथजीक फेरल लँगोटा आ खौरकी फुलचन दास खीचि कऽ ढाठपर पसारि मन्दिरपर जा महंथजीक संग अस्तुति गाबए लगल। पूजा बिसरजन कऽ महंथजी गंगानन्द लग आबि पुछलखिन-

"केमहर-केमहर एलौं?"

चौअन्नियाँ मुस्की दैत गंगानन्द कहलकैन-

"अपनेसँ एकटा विचार करए एलौं हेन। चारू-भरक गाममे धरमक काज जोर-शोरसँ भऽ रहल अछि, केतौ अष्टयाम कीरतन तँ केतौ यज्ञ तँ

केतौ पूजा होइए। मुदा बीचमे अपन गाम छुटल अछि। सुनैमे आएल अछि जे ऐ बेर एगारहटा ग्रह एकठाम जम्मा भऽ रहल अछि। तँए की हएत की नहि, तेकर कोन ठेकान! तँए...।"

गंगानन्दक विचार धियानसँ सुनि रघुनाथ दास बजला- "बहुत दिनसँ हमरो मनमे छेलए मुदा गामक लोकक मन देखि अनठा दइ छेलिऐ। आइ जँ अहाँक मनमे धरमक रूचि जगल तँ हमहूँ तैयार छी। जहाँ धरि जे भऽ सकत तन-मन-धनसँ सहयोग करब।"

महंथजीक विचार देखि गंगानन्द सुकलकेँ बजबैले फुलचन दासकेँ कहलखिन। फुलचन दास सुकलकेँ बजबए विदा भेल। फुलचन दासकेँ विदा होइते हुँहकारी भरैत महंथजी बजला- "हँ-हँ गौंआँक सहयोग तँ जरूरी अछि। बिनु समाजक सहयोगे एहेन काज होएब कठिन अछि।"

मेरियाक संग बैस सुकल चाहक दोकानपर गाँजा पीबै छल। सात-आठ गोरेक मेड़ियामे। रस्तेपरसँ फुलचन दास हिया कऽ सुकलकेँ देखि लगमे जा ठाढ़ भऽ गेल। फुलचन दासकेँ लगमे ठाढ़ देखि सुकल बाजल-

"बाबा तूँ किए ठाढ़ छह, बैसह। बड़ सुन्दर वसन्ती माल छइ।"

कहि सुकल कनी अपनो घुसैक गेल आ मोहनोकेँ हाथक इशारासँ घुसकौलक। बीचमे फुलचन दास बैस गेल। एक चीलम गाँजा एक्के-एक्के दम सभकेँ होइत। विचित्र मिलान गाँजा पीआकक। एक-एक दम मारि चीलम आगू बढ़ा दइत। चीलम आगू बढ़ि गेल छल तँए फुलचन दासकेँ नै भेल। दोहरा कऽ अबैत-अबैत गाँजा सठि गेलइ। सठिते रूपना आगूमे रखल पुड़ियासँ निकालि बामा तरहत्थीपर लऽ दहिना औंठासँ मलए लगल। सोधन टाटक खरौआ जौर तोड़ि, गिरह बान्हि गुल बनौलक। बिच्चेमे चाहबला चाह बढ़ौलक। गाँजा मलि रूपना प्रेम कटारी लऽ गुलाब-तख्तीपर गाँजा काटए लगल। सकरी कट तमाकुल तँए काटैक जरूरते नहि। हाँइ-हाँइ चाह पीब सोधना गुल जरबए चाहक चुल्हि लग गेल। जाबे रूपना गाँजा-तमाकुल मिला चीलममे भरलक ताबे सोधनो गुल जरा अनलक।

अखन धरि गाँजाक एक्के दम सुकल मारैने छल मुदा फुलचन

दासकेँ एलासँ सुकल फुलचने दास दिस बढ़ौलक।

फुलचन दास दहिना हाथमे चीलम लऽ दुनू आँखि बन्न कऽ ठोर पटपटा कसि कऽ चीलममे दम मारलक। तेते जोरसँ दम मारलक जे चीलमसँ धधरा उठि गेल। धधरा उठैत देखि मुस्कियाइत सुकल बाजल-

“नीक माल छै ने बाबा?”

चीलम आगू बढ़बैत, मुहसँ धुँआ फेक फुलचन दास कहलकै-

“बहुत दिनक पछाइत एहेन माल भेटल।”

तीन-चारि चीलम आरो गाँजा पीब सुकल फुलचन दासकेँ पुछलक- “केमहर-केमहर बाबा सवारी एलै?”

“तोरे बजबैले एलौं। महराजी आ गंगानन बैसल छैथ वएह कहलैन।”

दुनू गोरे उठि कऽ स्थान दिस विदा भेल। फरिक्केमे दुनू गोरेकेँ अबैत देखि महंथजी गंगानन्दकेँ कहलखिन-

“कनी असथिरसँ गप कऽ किछु खाइ-पीबैले दऽ देबइ। सभ काज सुढ़िया जाएत।”

स्थानपर पहुँचते सुकल दुनू हाथ जोड़ि मुड़ी झुका महंथजीकेँ प्रणाम केलकैन। प्रणामक जवाब महंथ माथ झुका कऽ दैत आग्रहसँ कहलखिन-

“आबह-आबह सुकल। बहुत दिन जीबह। तोरे चरचा दुनू गोरे करै छेलौं।”

जहिना आँखि लाल सुकलक तहिना फुलचनोक। दुनू गोरे चबुतरापर बैसल। गंगानन्द आ महंथजी विचार केने रहैथ जे फागुनक समय नीक होइ छै, ने बेसी जाड़ आ ने गरमी। ने पानि-पाथरक डर आ ने अन्हड़-बिहाड़िक। गंगानन्द सुकलकेँ कहलखिन- “सुकल, जहिना महंथजी स्थानक काजमे व्यस्त रहै छैथ तहिना हमहूँ माया-जालमे ओझड़ाएल छी। एक्को क्षण छुट्टी नै होइए। एमहर दौग तँ ओमहर ताक। खरचाक चिन्ता तोरा नहि, हमहूँ जोगार करब आ महंथोजी करता। गाममे

एहेन मेला हुअए जे चारू-भरक मेलाकेँ दाबि दइ। तूँ दसटा काजकर्ता बनाबह जे गाममे चन्दो करत आ मेलोक बेवस्था।”

महंथजी सुकल दिस देखि मुस्कियाइत अपन समर्थन देलखिन। अपन बढ़ैत इज्जतकेँ देखि सुकल हँसैत बाजल-

“हम की कोनो अहाँ सभसँ बाहर छी, जेना जे कहबै से हेतइ।”

सुकलकेँ राजी देख, मने-मन महंथोजी आ गंगानन्दो खुशी भेला। खुशीक कारण छल चाइल सुतरब।

रघुनाथ दासक मन्दिरक आगुएमे अढ़ाइ-तीन बीघाक परती। जैपर गाए-महींस चरैत। गामक धिया-पुता गुल्ली-डन्टा, कबड्डी, गुड़ी-गुड़ी इत्यादि खेलाइत। वएह परतीपर मेला लगबैक विचार तीनू गोरे तँइ केलैन। स्थानक चुनाव कऽ बैसार समाप्त भेल।

बेरूपहर गामक जुबक सभकेँ सुकल बैसार केलक। बैसारमे सुकलक सभ गजेरीक संग गोटि-पँगरा बैलियो जुबक जमा भेल। सबहक बीच मेलाक चरचा करैत सुकल जनसेवा दलक चुनाव केलक।

गाममे बड़का मेला, चारि दिनक होएत तँए सभ जुबक खुशी। गामक चन्दोक भार जनसेबे दलपर तँए आमदनियो। जाधैर मेला सम्पन्न नै हएत ताधैर सभ अपन-अपन घरक काज छोड़ि, ऐ काजमे लगि जाए। हाथ उठा सभ अपन सहमत देलक। काल्हिसँ सभ दिन सबेरे सात बजे सभ एकठाम जमा भऽ काजक बँटवारा कऽ अपन-अपन काजमे जुटि गेल।

जहिया बुढ़बा महंथ गरीब दास मुइला तहियासँ रघुनाथ दास महंथ भेला। स्थानक सभ भार रघुनाथे दासपर आबि गेलैन। महंथ बनैसँ पहिने रघुनाथ दास पारिवारिके लोक छला। रघुनाथ दासक पिता धान चाउरक खरीद-बिकरी करै छेलखिन। जइसँ परिवारक गुजर-बसर चलै छेलैन। भैयारीमे रघुनाथ असगरे तँए माए-बापक दुलारू। भरि दिन ओ एमहर-ओमहर घुमि समय बितबैत। काज-उद्यमसँ कोनो सरोकार नै तँए महाग-कोंढ़ि भऽ गेल। रघुनाथक पिता अपन दायित्व बुझि बेटाक बिआह-दुरागमन कऽ देलक। जाधैर रघुनाथक माए-बाप जीबैत रहथिन ताधैर

रघुनाथ मौजक जिनगी बितौलक। दुनियाँ रूपी कन्याक सुन्नरताकेँ रघुनाथ हृदयसँ चाहैत मुदा ओ मिसियो भरि देखए नइ चाहैत। मुदा दुनियाँ तँ अमृतसँ लऽ कऽ बिख धरि, सुन्दरसँ लऽ कऽ कुरूप धरि, महात्मासँ लऽ कऽ दुरात्मा धरि, पण्डितसँ लऽ कऽ मुरूख धरिक भार उठौनिहार ऐछे जे रघुनाथोक भार उठौने। मुदा माए-बापकेँ मरिते रघुनाथक मौज ससरए लगल।

एक दिन रघुनाथ साँझू पहरकेँ नाच देखए गेल। घरमे खाइक कोनो वस्तु नै जे रघुनाथक स्त्री भानस करैत। भूखसँ वेचारीकेँ बरदास नै भेलैन। अपन नैहरक थारी-लोटा आ नुआँ-वस्त्रक मोटरी बान्हि घरसँ विदा भऽ गेली।

अधरतियामे रघुनाथ नाच देखि कऽ आएल। सुन्न आँगन-घर देखि पत्नीकेँ ताकए लगल। पहिने तँ बुझि पड़लै जे ओ केतौ नुका रहल अछि। मुदा बड़ी काल धरि तकलापर जखन नै मिललै तखन निराश भऽ सुति रहल। सुति तँ रहल मुदा निने ने होइ। भरि राति जगले रहि गेल। भोर होइते अड़ोस-पड़ोसक आँगनमे घरवालीकेँ ताकए लगल। मुदा केतौ नै भेटलै। गाममे केतौ नै भेटलापर सासुर जाइक विचार केलक। मुदा एक तँ रौतुका जगरना, दोसर भूखल देह। एक्को रत्ती हूबे ने बुझि पड़इ। ओसारपर बैस मने-मन सोचए लगल जे आब की करी..?

जहिना धुनि लगलापर किछु नै देखि पड़ैत तहिना सोगसँ रघुनाथोकेँ किछु सुझबे ने करैत। तहिना रघुनाथकेँ किछु सुझबे ने करैत। गुनधुनमे पड़ल। अनासुरती मनमे एलै जे माया-मोह छोड़ि बबाजी भऽ जाइ। माँगि-चाँगि कऽ खाएब आ जेतइ मन फुरत तेतै रहि जाएब। मुदा आत्महत्या करैक विचार मनमे नै एलइ। ओहनो हालतमे रघुनाथकेँ जीबैक आशा रहबे करइ। मुदा स्त्रीक सोग मनसँ हटबे ने करइ। गाड़ीक पहिया जकाँ विचार मनमे उनटैत-पुनटैत। फेर मनमे एलै जे पिते जकाँ हमहूँ धान-चाउरक खरीद-बिकरी कऽ गुजर करब। मुदा तइले रुपैआ चाही। फेर रघुनाथक मनमे एलै जँ सासुर जा घरवालीकेँ जवाब दऽ दिऐ ओहो कायरता हएत...।

जेना-जेना रघुनाथक पेटमे भूखक आगि धधकै तेना-तेना विचारो

अदलै-बदलै। फेर मनमे एलै जे घरक सभ किछु बेच चलि जाइ। मुदा जेकरा हाथे बेचब ओ पुनः ऐ घरमे कहियो आबए नै देत..! तत्-मत् करैत दुपहर भऽ गेल। जोशमे आबि घरसँ निकैल गरीब दासक स्थानपर पहुँचल।

महंथ गरीब दास भोजन करए बैसल। रघुनाथकेँ देखि हाथक इशारासँ गरीब दास शोर पाड़लखिन। लगमे अबिते रघुनाथकेँ खाइले देलखिन।

नमहर स्थान। तीस बीघा जमीन। गाछी-कलम, पोखैर-इनार सभ भगवानक नाओंसँ। गामोक लोक किछु-ने-किछु जमीन साले-साल दइते। जइसँ स्थान मोटाइते जाइत। गाममे जे निपुत्र भऽ जाइत वा कोनो झंझटिया जमीन होइ, ओ स्थानमे दऽ दइत।

रघुनाथ गरीब दासक चेला बनि स्थानमे रहए लगल। दुनू साँझ रघुनाथ गरीब दासकेँ खाँटी करु-तेलसँ मालिश करैत। कपड़ा खिचैत।

रघुनाथक सेवा देखि गरीब दास अगुआ चेलाक उपाधि दऽ देलखिन। ओना, गरीब दासकेँ अनेको चेला रहैन, मुदा मन्दिरमे पूजा करैक अधिकार रघुनाथे-टाकेँ देने।

सिपाहीक नोकरी सुकल दिल्लीमे एकटा सेठक ओइठाम पहिने करैत। गोर वर्ण, रिष्ट-पुष्ट शरीर, घनगर मोँछ, बरदक आँखि सन नमहर-नमहर आँखि। कोठीक गेँटपर कान्हमे बन्दूक लटका ठाढ़ ड्यूटी सेठक करैत। सेठक बड़की बेटीक बिआह बम्बईक एकटा कपड़ा वेपारीक संग भेल। धनक अमार मुदा लड़का एड्सक रोगी। नोकरे-चाकर हाथे सभ कारोबार करैत। बिआहक समय ई बात डोलीक माए-बापकेँ नै बुझल। तँए बिआह केलक। जखन डोली सासुर बसए लगली तखन बिमारीक भाँज लगलैन। पतिक बिमारीसँ डोली मने-मन कानए लगली। अपन मुरझाएल जिनगी देखि डोली सासुरसँ भगैक भाँजमे। एक दिन रोगक बहाना बना डोली इलाज करबए नैहर-दिल्ली चलि एली। डोलीक सोगाएल मन देखि माए-बाप पुछलखिन। मुदा अपन बेथाकेँ झँपैत डोली केकरो किछु ने कहलकैन।

दाम्पत्य जीवनसँ निराश डोली, जिनगीक आशा देखि सुकलसँ तरे-तर प्रेम करए लगली। सठियाएल सुकल डोलीक चलाकी नै बुझि प्रेम करए लगल। जेतए डोलीक प्रेमक कारण काम तृप्तिक छल तेतए सुकलक जवानीक अल्हरपनक। एक सुसम्पन्न परिवारक तँ दोसर उजड़ल-उपटल घरक। प्रेमक डोर केते मजगूत होइत से दुनूमे सँ कियो ने बुझैत। उमेरक बलउमकी दुनूमे तँए बुझबो केना करैत।

एक दिन दुनू गोरे–डोली आ सुकल सिनेमा देखए गेल। बालकोनीक टिकट कटा दुनू हॉलमे बैसल। सिनेमा शुरू भेल। शुरू होइते बगलक एकटा जुबक जे निशाँमे बुत्त छेल, तिलमिला कऽ डोलीक देहेपर गिरल। डोली चिचिआ उठल। डोलीकेँ चिचिआएबसँ सुकलक क्रोध बेकाबू भऽ गेल। उठि कऽ सुकल ओइ जुबकक कालर पकैड़ दहिना हाथक ठुस्सासँ नाकपर जोरसँ मारलक। नाकक चोट बरदास नै कऽ ओ जुबक तिलमिला कऽ निच्चाँमे गिरल। हॉलमे हल्ला भेल। सिनेमा बन्न भऽ गेल। लगले थानाक दरोगा पाँचटा सिपाहीक संग पहुँच गेल। हल्लाकेँ भँजियबैत दरोगा घटना स्थलपर पहुँचल। अचेत जुबककेँ देखि दरोगा सुकलकेँ पकैड़ लेलक। अचेत जुबककेँ अस्पताल भेज देलक। अस्पताल पहुँचैत-पहुँचैत ओ जुबक दम तोड़ि देलक। हत्याक मोकदमामे सुकल जहल गेल। ने कियो पैरबी करैबला सुकलक आ ने कियो पुछनिहार।

जहल काटए लगल। एकान्तमे बैस सुकल मने-मन सोचए लगल जे दू-पाइ कमाइले दिल्ली एलौं जे माए-बापक सेवा करब मुदा मकड़ा जकाँ अपने बनौल जालमे फँसि गेलौं! हदिघड़ी डोली कहै छलै जे सुख-दुखमे संग देब मुदा एक्को दिन खोजो-पुछारि करए ने आएल। जेकरा-ले अपन जिनगीकेँ बलि चढ़ेलौं ओकरा कोनो गम नहि। यएह छी धनिक-गरीबक प्रेम।

जहियासँ सुकल गाम छोड़ि दिल्ली गेल तहियासँ परिवारमे आशाक किरण फुटल। जाधैर सुकलक कमाइ माए-बापकेँ नै होइ छल ताधैर गाछी-बिरछीक पात बीछि, सुखल ठौहरीक जारैन तोड़ि, खेतसँ धान लोढ़ि, रब्बीक मासमे खेसारी, मौसरी, तीसी, गहुम बीछि, अल्हुआ चालि, संग-संग बोइन-बुत्ता कए कऽ गुजर करै छल। मुदा सुकलक दरमाहा पाबि

भरि पेट अन्न खाए लगल छल। बेटाक कमाइसँ दुनू परानीक मनमे रंग-बिरंगक कल्पना अबए लगल। बेटाक बिआह करब, घर बनाएब, सुखसँ बुढ़ाड़ीक दिन बिताएब। मुदा जहिया सुनलक जे जिनगी भरिले बेटा जहलेमे रहत तहियासँ जिनगीक आशा टुटि गेलइ। अधमरू भऽ जिनगी बितबए लगल। काज करैक शक्ति देहमे नै रहलै। मुदा ऐ दुनियाँक आकर्षण जहरो पीबैसँ मनाही करए लगलै। अन्तमे दुनू परानी, सुकलक माए-बाप भीख मंगए लगल। किछु दिनक पछाइत दुनू ऐ दुनियाकेँ छोड़ि देलक।

चौदह बरख दिल्लीक जहलमे बिता सुकल सोझे गाम विदा भेल। गाड़ी, बसमे टिकटक जरूरीए ने रहै किएक तँ जहलक मोहर बाँहिमे छापल रहइ। आशा-निराशाक बीच जिनगी, तँए भूखो ने लगइ। गाम आबि सुकल घर बसबए चाहलक मुदा घर-बसाएब ओते हल्लुक नहि।

गाममे जखन सुकल टहलै-बुलैले निकले तखन गामक लोककेँ बुझि पड़ै जे बोनसँ हूरार चलि आएल। फरिक्केमे सुकलकेँ अबैत देखि जनिजाति सभ अपन बच्चा लऽ लऽ घर चलि जाइत, ढेरबा-धिया-पुता नुका रहैत आ मरदा-मरदी मुँह घुमा लइत।

जहलमे रहि सुकल आनो-आनो कैदीसँ गप-सप्प करैत आ अपनो एकांतमे बैस जिनगीक सम्बन्धमे सोचैत मुदा हजारो-लाखो किसिमक जिनगीक रस्तामे सुकल वौआइते रहि गेल। सही जिनगीक रस्ता भेटबे ने केलइ। जहिना फुलवाड़ीमे काँटक गाछ फुलेनौं काँटे कहबैत तहिना दिल्लीक अपराधी सुकल गामोमे अपराधीए जकाँ बुझि पड़ैत। अपन दशा देखि सुकलकेँ अपने दुनियाँ बनाएब हल्लुक बुझि पड़लै। ओ दुनियाँ छी अपराधीक।

रघुनाथ दास मन्दिरकेँ चुनेठ, रंगसँ रंगि देलक। गामक चन्दा मेड़ियाक संग सुकल करए लगल। आन-आन महंथानासँ रघुनाथ दास मोट-मोट चन्दो मंगबए लगल आ मेला देखैक हकार-नोत सेहो पठबए लगल।

समधियौरसँ पर्याप्त धन पाबि गंगानन्द अपन प्रतिष्ठा बनबैक

भाँजमे, तँए चन्दा करैक जरूरते नहि।

मेला शुरू होइसँ दस दिन पहिनैसँ सभ मेलाक तैयारीमे जुटि गेल। मेलाक तैयारी अद्भुत। जहिना दोकान-दौरीक बेवस्था तहिना नाच-तमाशाक। जहिना स्थानक सजाबट तहिना इजोत।

मेला शुरू भेल। रंग-बिरंगक बबाजी सभ अबए लगला। कियो हाथीपर चढ़ि रेशमी पोशाकमे तँ कियो ऊँटपर चढ़ि धप-धपौआ सुती वस्त्रमे। कियो लँगोटा-खौरकी पहिर तँ कियो वस्त्र-विहीन, नंगटे। सभकेँ अपन-अपन कफला। सभ कफलामे अपन-अपन साजो-समान। कियो नबका चालिमे तँ कियो पुरनामे। एक कफला एक समियानाक भीतर। दोसर दोसर समियानाक भीतर। एक-दोसरमे जाए नै दइत। खाइ-पीबैक ओरियान सेहो फुट-फुट।

बेवस्था करैमे महंथ रघुनाथ दास पानि-पानि भेल। एक महंथ दोसर महंथक खुल्लम-खुल्ला निन्दा करैत। तालमेल बैसबैमे महंथ रघुनाथ दासकेँ पएर पकड़ैत-पकड़ैत तबाही। मने-मन वेचारे सोचैत जे कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ल जे एहेन काज केलौं।

पतियानी लगल दोकान। सभ रंगक समानक अलग-अलग बाजार। राति-दिनमे अन्तरे नै बुझि पड़ैत। मेलाक चारू कोणपर नाचक स्टेज बनल। एक कोणपर थियेटर, दोसरपर रास, तेसरपर यात्रा-पार्टी आ चारिमपर अल्हा-रूदल। परोपट्टाक लोक उलैट कऽ मेला देखैले दिन-राति अबैत।

गंगानन्द ऐठाम तेते पाहुन-परक आबि गेलैन जे घरपरसँ कखनो मेला स्थलपर गेले ने होइन। दुनू परानी चाह-पानसँ लऽ कऽ खुअबै-पिअबैमे पश्त छला, दिन-राति एक्के रंग तबाही...।

दिन-रातिक खटनीसँ सुकल दोसरे दिन अस्सक पड़ि गेल। एक साए तीन डिग्रीसँ कखनो बोखार कम्मे ने होइत। कखनो-कखनो ज्वरक तापसँ बड़बड़ेबो करैत। सिरिफ रघुनाथे दास, गंगेनन्द आ सुकलेटा परेशान नहि, सौंसे गामक लोक पाहुन-परकसँ परेशान।

मेलाक पहिल राति एकटा आठ-नअ बर्खक बच्चिया, दोसर राति

दूटा आ तेसर राति चारिटा बच्चियाक चोरि भऽ गेल। पहिने तँ बच्चियाक माए-बापकेँ भेलै जे गामे घरमे भुतलाएल अछि जे एक-दू दिनमे भेटिए जाएत। मुदा मेला उसरला बादो नइ केकरो भेटलै। तेसर दिनक दूटा लड़की एक्के परिवारक। दुनू बच्चिया जेहने देखैमे सुन्दर तेहने माए-बापक दुलारू। एगोक नाओं 'लछमी' आ दोसर 'सरस्वती'। लछमीक पिता जिलाक कार्यालयमे अफसर आ माम सी.आइ.डी. विभागमे अफसर। लछमी, सरस्वतीकेँ चोरि होइते माए टेलीफोनसँ पति आ भाएकेँ जनतब दऽ देलखिन। दुनू सारे-बहनोइ अपनामे सम्पर्क कऽ छुट्टी लऽ सोझे गाम विदा भेला। रस्तेमे दुनू गोरेक भेँटो भेलैन। दरभंगा स्टेशन पहुँच लछमीक पिता महेन्द्र घरपर एबाक जनतब सेहो परिवारमे दऽ देलखिन। झंझारपुर स्टेशन पहुँचैसँ पहिनहि महेन्द्रक छोट भाए, स्टेशन पहुँच, प्रतीक्षामे। गाड़ी अबिते दुनू गोरे गाड़ीसँ उतैर निच्चाँमे बैग रखिते रहैथ कि महेन्द्रक छोट भाए-दिनेशकेँ नजैर पड़लै। लगमे आबि दिनेश दुनू गोरेक बैग दुनू हाथमे लऽ प्लेटफार्मक कुरसीपर जा रखलक। घटनाक जनतब दुनू गोरेकेँ देलकैन। बच्चियाक चोरिक चर्चा होइते महेन्द्र हबोढकार भऽ कानए लगला। महेन्द्रकेँ चुप करैत सार दिनेशकेँ कहलखिन-

"अहाँ दुनू बैग नेने घरपर चलि जाउ। हम दुनू गोरे कनी कालक पछाइत आएब।"

रिक्शासँ दिनेश घर दिस विदा भेल। दुनू गोरे घरपर नै जा सोझे थाना पहुँचला। दुनू गोरे अपन परिचए दैत दरोगाकेँ घटनाक जनतब देलखिन। केस लिखि दरोगा छहटा सिपाहीकेँ संग केने जा महंथ रघुनाथ दास, गंगानन्द आ सुकलकेँ पकैड़ जहल पठा देलक। घटनाक छानबीन हुअ लगल।

गंगानन्दक कामतपर यमुनानन्द मौजसँ रहैत। ने खाइ-पीबैक कोताही आ ने कोनो चिन्ता। भरि दिन यमुनानन्द गजो पीबैत आ ताशो खेलैत। गामक बीचमे कामत रहने दू-चारिटा फालतू जुबक हदिघड़ी कामतपर रहैत। कामतक सटले घुरनीक घर। घुरनीकेँ सातटा बेटी, बेटा नहि। जेठकी आ मैझली बेटी बिआहै-जोकर भऽ गेल। जुआनीक सभ गुण आ विशेषता दुनूमे आबि गेल छल। हदिघड़ी घुरनी आ राघवकेँ करेज

टुटैत। एक दिस सातो बेटीक बिआह आ गुजरक चिन्ता दोसर दिस गरीबीक राक्षस जमि कऽ पकड़ने। दुनू साँझ भरि पेट खेनाइयो ने होइत।

घुरनी यमुनानन्दकेँ कहि सरिताकेँ भानस करैले कामतमे रखौने। चोरा-नुका घुरनी कामतपर सँ अन-तीमन-जारैन उठा-उठा लऽ जाइत। तइसँ कोनो तरहेँ दुनू साँझ चुल्हि पजरै एक दिन घुरनी राघवकेँ बिगैड़ कऽ बेटीक बिआह करैले कहलक। बिआहक खर्चक कोनो उपाय नै देखि राघव सोगसँ मूसक दवाइ खा ओसारपर सुति रहल।

कामातूर यमुनानन्द, सरितासँ सिरिफ चौकेक काजटा नै करबैत बल्कि इच्छा-पूर्ति सेहो करैत। भूखल-नाँगट, पशु-तुल्य मनुक्ख देहक क्रियाकेँ इज्जत नै बुझि पेट भरैक उपाय बुझैत। पेटक भूख मनक भूखसँ प्रवल आ कठोर होइते अछि तँए सरिता इज्जत नै गमा पेटक आगिकेँ शान्त करैत। जाधैर मनुक्खकेँ पेटक आगि जरौत ताधैर इज्जत-आबरूक बात सोचब आ बुझब कठिन अछिए। तहूमे जे हजारो बर्खसँ गुलामीक जालमे फँसल रहैत आएल अछि ओकरा-ले तँ आरो कठिन बात छी। हर मनुक्खकेँ ऐ दुनियाँ आ धरतीक एहेन आकर्षण होइत जे नीच-सँ-नीच कर्म केलोपरान्त जीबए चाहैए। ओकर जीवन्त उदाहरण सरितो छी।

कुमारि सरिताक शरीर त्वरित गतिसँ फुलाए लगल। जइसँ गामक जनिजाति इनार-पोखरिक घाटपर सरिताक सम्बन्धमे चरचा करैत। जे बात घुरनीक कान धरि सभ दिन अबैत। मुदा घुरनी ओहन ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेल छेली जइमे ने एक्कोटा जीवित पात आ ने जीवित डारि।

गामक जुबकक बीच सेहो सरिताक चर्चा चलए। किछु जुबक हँसी-मजाकक विषय सरिताकेँ बनौने तँ किछु जुबक भुमहुरक आगि जकाँ मने-मन जरैत। सरिताक प्रति रमेशक आगि एते प्रवल भऽ गेल जे ओ अपन जानसँ खेलैले आगू बढ़ल। मने-मन रमेश संकल्प कऽ लेलक जे यमुनानन्दकेँ गामसँ भगा सरिताकेँ आदर्श नारी बनाएब।

घरसँ निकैल रमेश टोलक जुबक सभकेँ संगोर केलक। पाँच-सात जुबक रमेशक संग पुरैले तैयार भऽ गेल। सभकेँ संग केने रमेश यमुनानन्द लग पहुँचल। संगीक-संग रमेशकेँ देखि यमुनानन्द डरल नहि बल्कि बाघ

जकाँ गरैज कऽ बाजल- “की रौ रमेशबा केतए ऐलेँ?”

एक तँ ओहिना रमेशक हृदयमे आगि लगल, तैपरसँ यमुनानन्दक करूआएल बात सुनि मुहसँ बोली नै फुटल। तामसे सगर देह काँपए लगलै। बिनु किछु बजनहि यमुनानन्दक कण्ठ पकैड़ पटैक देलक। माटिपर खसिते रमेश लतियाबए लगल। यमुनानन्दकेँ लतियबैत देखि रमेशक संगी सभ सेहो लतियाबए लगल। साइयो लात खा यमुनानन्द रमेशक दुनू पएर दुनू हाथे पकैड़ कनैत बाजल- “भाय, हमर जान छोड़ि दाए। अखने हम ऐठामसँ चलि जाइ छी।”

यमुनानन्दक बात सुनि रमेश सभकेँ रोकि, छोड़ि देलक। छुटिते यमुनानन्द निछोह पड़ाएल। सभ जुबक यमुनानन्दकेँ ताधैर देखैत रहल जाधैर अढ़ नै भेल।

सरिता कातमे ठाढ़ भऽ सभ देखैत। एक्के-दुइए सौंसे गामक लोक हल्ला सुनि पहुँच गेल।

सौंसे गामक लोक एकठाम बैस अपनामे विचार केलक जे बहरबैयाक जे जमीन-जत्था अछि ओ छीनि लिअ। गामक जेते जे चीज– खेत-पथार, पोखैर-झाँखैर इत्यादि अछि ओ गौंआँक छी। जँ कियो बहरबैया औत तँ सौंसे गौंआँ मीलि ओकरा भगाएब। चाहे अइले मारि हुअए, मोकदमा हुअए वा जहल जाए पड़ए। हाथ उठा सभ सहमत भेल। ❑

बारह

डॉक्टर नीलमणि सेन कलकत्तासँ एम.बी.बी.एस. कऽ सोझे मिथिला चलि एला। बंगला आ अंग्रेजी छोड़ि आन कोनो भाषा नै जनैत। मिथिलाक गाम-घरमे एलोपैथिक इलाजक चलैन नहि। रोगक इलाज झार-फूक आ जड़ी-बुटीसँ होइत। रोगोकेँ लोक भूत, हवा वा देवी-देवताक प्रकोप बुझैत।

डॉक्टर नीलमणि सेनक घर बंगला देशक सीमासँ सटले बंगालमे।

डॉक्टर सेनक पिता प्रोफेसर ज्योतिमणि सेन दर्शनशास्त्रक नामी विद्वान। सम्पन्न आ सुभ्यस्त परिवार ज्योतिमणिक।

अंग्रेजी हुकुमतक अन्तिम समयमे हिन्दू-मुसलमानक बीच जमि कऽ लड़ाइ बंगालोमे भेल। पहिल दिन डेढ़-दू साए हिन्दू भाला, फरसा, तरुआरि लऽ सड़कपर आबि सैयो मुसलमानक हत्या केलक, घर जरौलक, चीज-बौस लूटलक। गाम सुनसान भऽ गेल। जे किछु लोक बँचल ओ भागि-पड़ा कऽ अपन कुटुमक ओइठाम चलि गेल। मुदा घटना कमल नहि। जहिना गहुमन साँपकेँ लाठीक चोट खेलापर होइत तहिना तरे-तर मुसलमानक हृदयमे आगि धधकए लगल। सात दिनक पछाइत हजारो मुसलमान हथियारक हाथे बदला लेमए निकैल गेल। अनेको गामक हिन्दू मृत्युक मुँहमे समा गेल। प्रोफेसर ज्योतिमणिक परिवार सेहो समाप्त भऽ गेल।

प्रोफेसर ज्योतिमणि सेन आ प्रोफेसर जफर एक्के कौलेजमे प्रोफेसर। सैयो बर्खसँ दुनू परिवारक बीच दोस्ती चलि अबैत। जहिया कहियो कोनो उत्सव प्रोफेसर सेनक ओइठाम होइत तहिया प्रोफेसर जफर सपरिवार आबि उत्सव मनबैत। तहिना प्रोफेसर जफरक परिवारमे प्रोफेसर सेनोक उपस्थिति होइत। एकठाम बैस दुनू गोरे खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ जिनगीक नीक-अधला सभ गप करैत। ने प्रोफेसर सेन प्रोफेसर जफरकेँ आन बुझैत आ ने प्रोफेसर जफर प्रोफेसर सेनकेँ। तहिना घरक स्त्रीगणक बीच सेहो सम्बन्ध। बाल-बच्चाकेँ तँ बुझिए ने पड़ैत जे दुनू परिवार दू धर्मक छी...।

हिन्दु-मुसलमानक बीच तनाव देखि शिक्षण-संस्था सभ बन्न भऽ गेल तँए दुनू गोरे गामेमे रहैथ। प्रोफेसर ज्योतिमणिक परिवाक समाचार प्रोफेसर जफर सुनलैन। पहिने तँ एक्को पाइ बिसवासे ने भेलैन मुदा सत्-सत् पता लगिते कुरसीपर अचेत भऽ लुढ़ैक कऽ निच्चाँमे मुहेँ-भरे गिर पड़ला। दुखसँ हृदय विदीर्ण भऽ गेलैन। कोठरीमे असगर रहने पहिने तँ परिवारक कियो ने देखलकैन मुदा चाहक कप नेने जखन पत्नी एलैन तँ देखलखिन। निच्चाँमे पड़ल पतिकेँ देखि हसीना कप रखि छाती पीटैत हल्ला करए लगली। हल्ला सुनि अपनो परिवारक आ अड़ोसियो-पड़ोसियो

दौगल एलैन।

साँस तँ प्रोफेसर जफरक चलैत रहैन मुदा चेतन-शून्य छला। लगले डॉक्टर बजौल गेल। हसीना पंखा हौंकए लगली। पहिने डॉक्टर प्रोफेसर जफरक मुँहपर पानिक छिच्चा देलखिन। पानिक छिटका पड़िते जफर आँखि खोललैन। आँखि खुलिते डॉक्टर आला लगा कऽ देखलकैन। आला रखि दूटा सूइया लगेलखिन। सूइया पड़िते प्रोफेसर जफर होशमे एला। मुदा तेतेक दुख प्रोफेसर जफरक हृदयकेँ पकैड़ नेने रहैन जे फेर अचेत भऽ गेला..!

दवाइक प्रभावे प्रोफेसर जफर होशमे अबैथ आ हृदयक दुखसँ पुनः बेहोश भऽ जाइथ। होश-बेहोशक बीच पतिकेँ देखि हसीनो अचेत भऽ गिर पड़ली। एते काल डॉक्टर सिरिफ प्रोफेसर जफरेक इलाज करै छला मुदा हसीनाक दशा देखि हुनको इलाज करए लगला।

आठ बजे रातिक पछाइत दुनू परानी प्रोफेसर जफर नीक जकाँ होशमे एला। जखन दुनू गोरे बिस्कुट आ चाह खेलैन-पीलैन तखन परिवारक सभकेँ बिसवास भऽ भेल जे आब नीक भऽ गेला। आराम करैले दुनू गोरेकेँ पलँगपर छोड़ि सभ सभ दिस भऽ गेल। एगारह बजेक घन्टी घड़ीमे टुनटुनाएल। घन्टी सुनि प्रोफेसर जफर पत्नीकेँ पुछलखिन-

"जगले छी?"

"हँ।"

"अपने दुनू बेटा मित्र-ज्योतिमणि आ हुनक परिवारक हत्या केलक! हत्यारा-बेटाक बाप बनि जीअबसँ नीक मरब। अहाँकेँ जँ ऐ परिवारक बेटा-पुतोहुसँ सिनेह हुअए तँ जीबू मुदा हम एक्को क्षण जीब पाप बुझै छी।"

कहि प्रोफेसर जफर गरदैनमे फँसरी लगबए लगला। पतिकेँ गरदैनमे फँसरी लगबैत देखि हसीना अचेत भऽ पलँगसँ लुढ़ैक निच्चाँमे गिर पड़ली। प्रोफेसर जफर फँसरी लगा प्राण तियागि लेलैन...।

जखन हसीनाकेँ होश एलैन तँ पतिकेँ फँसरी लागल झुलैत देखली। झुलैत देखि दुनू मित्रक बीचक सिनेह हसीनाक मनमे एते ग्लानि पैदा कऽ

देलकैन जे ओहो वेचारी फँसरी लगा मरि गेली।

जखन नीलमणि पढ़िते रहैथ तहिए सोचि नेने छला जे हम शहरमे नै गाममे रहब। सभ तरहेँ गाम शहरसँ नीक। ने प्रदूषणक दोष आ ने चोर-उचक्काक डर। भूखलकेँ एक टुकड़ी रोटी देलासँ मन जुड़ाइत मुदा जैठाम सभ किछु भरल-पूरल रहै छै तैठाम एक टुकड़ी रोटीक महत्ते की हएत। विशाल मानव रूपी बोनमे तपस्या करैक विशाल क्षेत्र होइत, तँए जैठाम वृक्षकेँ माटि-पानिक अभाव होइत तैठाम रहि सेवा करब विशेष महत रखैत। की गमलाक सजौल फूल बोनक पानि-पाथर खेलहा फूलक बरबैर भऽ सकैए?

एम.बी.बी.एस.क डिग्री लऽ डॉक्टर नीलमणि अपन सभ सामान सेरिया, गाम जाइक कार्यक्रम बना संगी-साथी सभसँ भेँट-घाँट करए लगला। अपन अन्तरंग मित्रसँ लऽ कऽ आत्मीय गुरूक ओइठाम जा-जा नीलमणि अपन भविसक संकल्प व्यक्त करैत असिरवाद लेलैन। दोसर दिस, गाममे, हिन्दू-मुसलमानक बीच धार्मिक वा जातीय लड़ाइ शुरू भऽ गेल। संगी-साथी सभसँ मिलि जुलि डॉक्टर नीलमणि कोठरीमे बैस अपन जिनगीक सम्बन्धमे मने-मन विचारए लगला। रेडियो बजैत बगलमे राखल। रातिक आठ बजैत।

सवा आठ बजेक समाचारमे हिन्दू-मुसलिमक लड़ाइक चर्चा भेल। स्पष्ट समाचार नहि। मुदा जइ इलाकामे नीलमणिक घर छैन ओइ इलाकाक गामक चर्चा समाचारमे आबि गेल छल। पहिल बेरक समाचार सुनि नीलमणिकेँ भेलैन जे सुनैमे धोखा भेल। मुदा कनीए कालक पछाइत समाचार दोहरौल गेल। समाचार सुनिते डॉक्टर नीलमणिक हृदयमे जोरसँ धक्का लगलैन। जहिना पहाड़क निच्चाँक आदमीक ऊपरमे पहाड़पर सँ लुढ़कैत पाथरक टुकड़ा खसलासँ होइत तहिना डॉक्टर नीलमणिकेँ भेलैन। कुरसीपर सँ उठि बाहर आबि सड़क दिस देखए लगला। सड़कपर गाड़ी-बस चलैत। मुदा पएरे लोकक चलब पतरा गेल छल। गोटि-पँगरा कियो-कियो चलैत। सही ढंगसँ समाचार बुझैक इच्छा डॉक्टर नीलमणिक मनकेँ झकझोड़ैत रहैन। ओना, अखन धरि डॉक्टर नीलमणि ओते चिन्तित नहि, किएक तँ इलाकाक समाचार सुनने छला।

नअ बजि गेल। कोठरी बन्न कऽ डॉक्टर नीलमणि खेनाइ खाइले होटल विदा भेला। कोठरीसँ निकैलते जेना कियो किछु कहि देलकैन, एकाएक मनमे डर प्रवेश कऽ गेलैन। डर समाइते आँखि उठा-उठा चारू दिस ताकए लगला। सुनसान राति। सन-सन करैत अन्हार। थोड़े काल ठमैक डॉक्टर नीलमणिक मन असथिर कऽ होटल दिस बढ़ला। होटल पहुँचते मुँह-हाथ धोइ एकटा खाली टेबुल लगक कुरसीपर चुपचाप बैस, आन-आन गोरेक मुँहक बात सुनए लगला। टी.बी. चलैत। गौरसँ टी.बी.क समाचारपर कान रखने। होटलक नोकर थारीमे खेनाइ परोसि डॉक्टर नीलमणिक आगूमे देलकैन। खाए लगला। मुदा जहिना बहैत पानिमे माटिक वा कोनो आन वस्तु पड़लासँ पानिक बहाउ अवरूद्ध होइत तहिना भोजनक अन्न नीलमणिकेँ कण्ठसँ निच्चाँ उतरबे ने करैन। खेनाइ छोड़ि हाथ-मुँह धोइ होटलबला-केँ पाइ दऽ सोझे अपन कोठरी चलि एला। कोठरी आबि पलँगपर पड़ि रहला। मुदा निनक केतौ पता नहि। कछमछ करैत डॉक्टर नीलमणि एक करसँ दोसर कर घुमैत रहला। भोर हेबाक प्रतिक्षामे डॉक्टर नीलमणि। देवालमे टँगल घड़ी दिस नजैर उठा-उठा तकैथ।

रातिक एगारह बजैत। पलँगसँ उठि केबाड़ खोलि डॉक्टर नीलमणि बाहर निकलला। सड़कपर गाड़ी-बस चलब बन्न भेल। आँखि उठा कऽ अकास दिस तकलैन। डण्डी-तराजू उगि गेल मुदा सप्तर्षिक केतौ पता नहि। पुनः डॉक्टर नीलमणि कोठरी आबि पलँगपर पड़ि रहला।

भोर होइते डॉक्टर नीलमणि पलँगसँ उठि, नलमे कुरुर कऽ चाहक दोकान दिस विदा भेला। चाहक दोकानपर, उट्ठा काज करैबला मोटिया, रिक्शा चलौनिहार सभ बैस चाहो पीबैत आ रेडियो समाचारक चरचा करैत। किछु गोरे, हिन्दू-मुसलमानक लड़ाइक, निन्दो करैत तँ किछु गोरे बाहबाहियो करैत। किछु गोरे मोरचापर जा लड़ैयो-ले सन-सन करैत। चुपचाप बैस डॉक्टर नीलमणि चाहो पीबैथ आ गप्पो सुनैथ। चाह पीब डेरा आबि कपड़ा पहिर डॉक्टर मुकुल ऐठाम विदा भेला।

डॉक्टर मुकुल कुरसीपर बैस मुँहपर हाथ दऽ कौल्हुके घटनाक सम्बन्धमे सोचैत रहैथ। डॉक्टर नीलमणिकेँ देखिते कहलखिन- "अहाँ

गाम नै जाउ। सौंसे इलाकामे तनाव बनल अछि। निश्चित समाचार तँ अखन धरि नइ बुझि सकलौं मुदा रूप रंगसँ बुझि पड़ैए जे लड़ाइ बन्न नै हएत आरो बढ़त।”

डॉक्टर मुकुलक बात सुनि डॉक्टर नीलमणिक हृदय थर-थर काँपए लगलैन। गाममे रहैक विचार सेहो चूर-चूर हुअ लगलैन। मुदा परिवारक सोग उत्तेजित करैत रहैन।

तीन दिनक पछाइत इलाका शान्त भेल। डॉक्टर दलक कार्यक्रम इलाका-ले बनल। दलक संग डॉक्टर नीलमणि सेहो विदा भेला। डॉक्टर नीलमणिक आग्रहसँ दल नीलमणिक गाम शान्तिपुर पहुँचल। शान्तिपुरमे एक्कोटा घर दुरूस नहि। सभ आगिमे जरल। जीवित आदमीक पता नहि। जहाँ-तहाँ लाश छिड़ियाएल। हजारो कौआ-कुकुर आ गीध पसरल।

अपन घर लग पहुँचते डॉक्टर नीलमणि अपन माए-बापक लाश आ जरल घर देखि अचेत भऽ गिर पड़ला।

कम्पाउण्डर सभ नीलमणिकेँ उठा मेडिकल भानमे दऽ इलाज शुरू करबेलैन। कनीए कालक पछाइत डॉक्टर नीलमणि होशमे एला। नीलमणिकेँ होशमे अबिते डॉक्टरक दल आगू बढ़ि गेल।

मुदा डॉक्टर मुकुल नीलमणिपर धियान रखि मने-मन सोचैथ जे नीलमणि ऐ दुखद घटनाकेँ सहि नै सकता। एक मनुक्ख होइक नाते डॉक्टर मुकुल मने-मन संकल्प केलैन जे जाधैर नीलमणिकेँ दुख सहैक शक्ति नै आबि जेतैन ताधैर छोड़ब उचित नहि।

डॉक्टरक दल घुमि कऽ आबि गेल। डॉक्टर नीलमणिकेँ अपने ऐठाम डॉक्टर मुकुल रहैक बेवस्था कऽ देलखिन। रसे-रसे डॉक्टर नीलमणिक हृदय असथिर हुअ लगल मुदा माए-बापक पीड़ा मनसँ मेटाएल नहि।

सात दिनक पछाइत डॉक्टर नीलमणि बैंकसँ रुपैआ निकालि कलकत्तासँ सोझे दरभंगा आबि गेला। मिथिला अबैक कारण छेलैन, पिताक मुहेँ सुनल मिथिलाक गुणगान। दुनियाँक स्वर्ग मिथिला। जेहने माटि तेहने पानि। जेहने हवा तेहने वातावरण। रंग-बिरंगक गुणसँ भरल

मिथिलाक गाछ-बिरीछ सभ समयमे फुलाइत-फड़ैत...।

दरभंगा स्टेशनपर उतैर डॉक्टर नीलमणि प्लेटफार्मपर बनल ब्रेंचपर बैसला। अनभुआर जगह, मनमे उठलैन- आब केतए जाइ..? डॉक्टर नीलमणिकेँ एक दिस माए-बापक सोग पकड़नहि रहैन तँ दोसर दिस अपन बेठेकान जिनगी..। ऐठामक भाषासँ सेहो अनभुआरे छैथ। अंग्रेजी बजनिहार एकोटा ने देखैत...।

जइ ब्रेंचपर नीलमणि बैसल छला ओही ब्रेंचपर जगह देखि दुनू परानी पण्डित शंकर सेहो बैसला। दुनू परानी शंकर अस्पताल आएल छला। डॉक्टर नीलमणि दुनू परानी– पण्डित शंकरक गप-सप्प अख्यािसि कऽ सुनए लगला। मुदा मैथिली नै बुझि किछु बुझबे ने करैथ।

पण्डित शंकर झोरामे सँ लोटा निकालि पानि आनए कल दिस विदा भेला आ पत्नी झोरामे रखल चूरा, गुड़ आ छिपली निकालए लगली। पएर-हाथ धोइ कऽ लोटामे पानि नेन पण्डित शंकर एला। पतिक हाथसँ लोटा लऽ पत्नी छिपली धोइ कऽ चूरा-गुड़ निकालि देलखिन। ब्रेंचपर बैस पण्डित शंकर हाथमे छिपली लैत डॉक्टर नीलमणिकेँ आग्रह केलखिन-

“बौआ, अहूँ खाउ?”

पण्डितजीक बोली तँ नीलमणि नै बुझलैन मुदा आगू बढ़बैत छिपली देखि मुस्कियाए लगला। पण्डित शंकर डॉक्टर नीलमणिक सुखल मुँह देखि आग्रह केलखिन मुदा भाषाक विशाल समुद्र बीचमे रहने सिनेहमे आड़ि देने। हाथसँ बढ़ौल छिपली पण्डित शंकर आ डॉक्टर नीलमणिक बीच अँटकल। पण्डित शंकर बुझि गेलखिन जे हमर सादगी देखि डॉक्टर नीलमणि अंग्रेजी नै बाजि रहल छैथ मुदा हम तँ जनै छी। तँए हमहीं पहिने बाजी। अंग्रेजीमे पण्डित शंकर डॉक्टर नीलमणिकेँ अपन पता पुछलखिन। धाराप्रवाह अंग्रेजी बजैत डॉक्टर नीलमणि अपन जिनगीक बहुत बात पण्डित शंकरकेँ कहलकैन। दुनू गोरे चूरा-गुड़ खा पानि पीब, निर्मलीक गाड़ी पकैड़ लेलैन।

गाड़ीमे बैस डॉक्टर नीलमणि आ पण्डित शंकर–दुनू गोरे मिथिला आ बंगालक विषयमे गप-सप्प करए लगला। दुनू गोरेक बीचक विचार

उदेसक लग पहुँच गेल। गाड़ीसँ उतैर तीनू गोरे पएरे गाम एला। गाम आबि पण्डित शंकर डॉक्टर नीलमणिक रहैक बेवस्था अपने ऐठाम कऽ देलखिन। दू-चारि दिन तँ नीलमणिकेँ अनभुआर जकाँ बुझि पड़लैन मुदा जिनगीक ठर भेटलासँ हृदयमे खुशी बढ़ैत गेलैन। नीक लगए लगलैन। टो-टा कऽ मैथिलियो बाजए लगला।

अखन धरि मिथिलाक गाममे रोगक इलाज जड़ी-बुटीसँ लऽ कऽ झार-फूक धरि होइत। ने एलोपैथिक ढंगसँ इलाज केनिहार आ ने लोक बुझैत। एक तँ नव ढंगक इलाज दोसर नव लोक केनिहार। तँए कठिन। डॉक्टर नीलमणि तँ बच्चा रहैथ तँए मिथिला समाजक सम्बन्धमे किछु ने बुझैथ। मुदा पण्डित शंकर तँ मिथिलाक समाजकेँ नस-नस जनैथ।

आठ बजेक भिनसुरका समय। पण्डित शंकर आ डॉक्टर नीलमणि चाह पीब गप-सप्प करै छला। डॉक्टर नीलमणि पण्डित शंकरकेँ पुछलखिन-

“दादा, ऐठाम रोगक इलाज कोन रूपेँ कएल जाइ छइ?”

डॉक्टर नीलमणिक प्रश्न सुनि कनी काल गुम्म भऽ पण्डित शंकर कहलखिन-

“ऐठाम, मिथिलांचलमे रोगक इलाज करैक अनेको पद्धैत चलि रहल अछि। ओना, मुख्य रूपसँ लोक जड़ी-बुट्टीक उपयोग कऽ रोगक इलाज करैए, जे बहुत पहिनेसँ चलि आबि रहल अछि। इलाजो बिसवासू अछि। आयुर्वेद नाओंसँ ऐ इलाजकेँ जानल जाइए। पैघ-पैघ ज्ञानी पुरुख सभ ऐ इलाजकेँ खोजि-खोजि समृद्ध आ विकसित केलैन। दोसर तरहक अछि झार-फूक, जे मंत्रक माध्यमसँ चलैए। तेसर तरहक अछि भगताइ, जे देवस्थानमे खास बेकती-द्वारा देवी-देवताक नाओंपर होइत। ऐ तरहेँ आरो केतेको रस्तासँ रोगक इलाज ऐ इलाकामे चलैत आबि रहल अछि।”

पण्डित शंकरक बात सुनि नीलमणि पुछलखिन-

“की एलोपैथक चलैन नै अछि?”

“अखन धरि नै अछि। मुदा बिनु एलोपैथी इलाजसँ आइक समयमे रोगक इलाज असम्भव भऽ गेल अछि। किएक तँ बहुतो एहेन रोग अछि

जेकर सटीक निदान ने होमियोपैथमे अछि आ ने आयुर्वेद आकि यूनानी इत्यादिमे ऐठाम अछि।”

पण्डित शंकरक बात सुनि मुड़ी डोलबैत डॉक्टर नीलमणि पुछलखिन- “जखन ऐठामक लोक एलोपैथ जनितो ने अछि तखन इलाज केना कराएत?”

पण्डित शंकर बजला- “अइले वैचारिक आ बेवहारिक संघर्ष करए पड़त। हमरा ओहिना मोन अछि जे जखन लहेरियासराय अस्पताल बनल आ अंग्रेजी दवाइक माध्यमसँ इलाज शुरू भेल तखन गाममे एहेन वातावरण बनि गेल जे अंग्रेजी दवाइ गाइक खून आ सुगरक चर्बीसँ बनैए। जेकर असर भेलै जे हिन्दुओ आ मुसलमानो अंग्रेजी इलाजसँ बिमुख हुअ लगला। मिथिलांचलक ई इलाका जाति आ धर्मसँ ओइ रूपेँ बँटि गेल अछि जे कोनो नीक काज बिनु संघर्षे सम्भव नै अछि।”

डॉक्टर नीलमणि-

“तखन की करब?”

पण्डित शंकर-

“हँ उपाय अछि। हम अहाँकेँ रस्ता बता दइ छी। अहाँ बंगाली छी जइसँ जाति आ घर्म दुनू झँपाएल अछि। ऐठाम मोटा-मोटी हिन्दूमे तीन वर्ण अछि। पहिल अगुआएल जाति, जेना सोति, ब्राह्मण, राजपुत, भूमिहार इत्यादि। दोसर पनिचल्ला जाति- जेना यादव, धानूक, कियोट, अमात, बरइ, कोइर इत्यादि आ तेसर अछि हरिजन। जेकरा समाजमे अछोप जाति कहल जाइ छै, जेकर पानि उच्च जातिक लोक नै पीबै छैथ। ने पानि पीबै छैथ आ ने छुअल अन्न खाइ छैथ।”

डॉक्टर नीलमणि-

“अरे बाप रे! तब तँ समाज टुकड़ी-टुकड़ीमे बँटल अछि?”

पण्डित शंकर मुस्कियाइत बजला- “यएह मिथिलाक विशेषता छै जे सभ सभ जाति आ धर्मसँ बँटल अछि मुदा सामाजिक सम्बन्ध सेहो मजगूत अछि। जखन कखनो कोनो आफद-असमानी अबैत तखन सभ एक भऽ सहयोग करैत। तेतबे नहि, जखन कोनो धार्मिक काज होइत

तखन सभ एकजुट भऽ सहयोग करैत।”

कनी काल गुम्म भऽ पुनः डॉक्टर नीलमणि पुछलखिन-

“तखन तँ अजीब गति अछि?”

हँसैत पण्डित शंकर फेर बजला-

“जेते जातिक चर्चा केलौं ओइमे आब फुटा-फुटा कऽ सुनू। एक जातिक भीतर, कुल-मूल आ गोत्रक आधारपर अनेक विभाजन अछि। जे एक जातिक रहनौं, ने दोसरक अन्न खाइए आ ने कथा-कुटुमैती करैए। ‘हम पैघ तँ हम पैघ’ ऐ उलझनमे सभ अपनाकेँ पैघ बुझि मस्त भेल अछि। जातिक रूआब, पैघत्व आ बुधियारीक रूआब सभमे छइ। मुदा ऐ सभ ओझरीमे अहाँकेँ नै जाइक अछि। आइए हम सभ वर्गक पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ बजबै छी, ओहो सभ बेरोजगारो अछि आ लोककेँ रोगक उचित इलाज सेहो नइ भऽ पबै छै, जइसँ रोगी मरबो करैए आ रोगग्रस्त भऽ जिनगियो जीबैए।”

डॉक्टर नीलमणि-

“एहेन परिस्थितमे केना डेग आगू बढ़ौल जाए?”

पण्डित शंकर-

“आइ धरिक इतिहास यएह कहैए जे जहिया कहियो समाजमे जखन कोनो कल्याणकारी काज शुरू कएल गेल तखन समाजक बहुसंख्य लोक ओकर विरोध केलक। मुदा केतबो विरोध भेल तैयो काज आगू बढ़बे कएल। जे बादमे सभ मानि करए लगल आ आइ चलैए। जइसँ सभकेँ लाभ भऽ रहल छइ। तँए एक्को पाइ चिन्ता नै करक चाही। एलोपैथी इलाजक प्रति जे विरोध ऐठाम अछि ओ शक्तिक विरोध नै अज्ञानताक विरोध छी। लोकक बीच जेना-जेना ज्ञानक ज्योति प्रखर होएत तेना-तेना लोकक झुकाउ एलोपैथी इलाज दिस बढ़त। आइए हम अपनो गामक आ अगलो-बगलो-गामक सभ रंगक जातिक पँच-पँचटा नवजुबककेँ जे कम्मो पढ़ल-लिखल हएत, बजबै छी। अहाँ ओइ जुबक सभकेँ किछु दिन पढ़ा रोग चिन्हैसँ लऽ कऽ उपचार धरिक ढंग बुझा देबइ। वएह सभ अहाँक परचारो करत आ छोट-छीन इलाज करैत सहयोगियो

बनत।”

पण्डित शंकरक विचार डॉक्टर नीलमणिकेँ जँचलैन। मनमे संतोख भेलैन। संतोखक जन्म होइते मुस्कियाइत बजला-

“अपने परिवारमे दुइए परानी छी और कियो नै छैथ?”

डॉक्टर नीलमणिक बात सुनि पण्डित शंकर हँसैत कहलखिन-

“परिवार बहुत नमहर अछि, पढ़लो-लिखल अछि। दूटा बेटा आ तीनटा बेटी अछि। पाँचोक बिआह-दुरागमन भऽ गेल अछि। दुनू बेटो आ तीनू जमाइयो नोकरी करै छैथ। जहिना दुनू बेटा अपन बाल-बच्चाक संग बाहरे रहै छैथ तहिना तीनू बेटियो-जमाए बाहरे रहै छैथ। हमहूँ संस्कृत महाविद्यालयमे शिक्षकक काज करै छेलौं। चारि साल पहिने नोकरीसँ सेवा निवृत्त भेलौं। दर्शनशास्त्र आ साहित्य पढ़बै छेलौं। जखन नोकरीएमे रही तखने बच्चा सभ नोकरी करए लगल। जखन सेवा निवृत्त भेलौं तखन दुनू बेटा कहलैन- ‘आब अहाँ बुढ़ भेलौं, घरपर असगर रहब नीक नहि। आब अहाँकेँ सेवा-टहलक जरूरत पड़त, जइले लगमे आदमी चाही। हम सभ केतौ रहब अहाँ केतौ, ओइसँ कष्ट हएत।’ दुनू भाँइक विचार अपनो जँचल मुदा जिनगी भरि तँ अपनो किताबेमे सन्हियाएल रहलौं। अपन कर्तव्य दिस जखन नजैर उठा कऽ देखलिऐ तखन मनमे आएल जे मनुक्ख सिरिफ माइए-बापक बेटा नै होइत बल्कि समाजोक छी। माए-बापक ऋृण तँ चुका चुकलौं मुदा समाजक ऋृण तँ बाँकीए अछि। छठिहारे राति समाजक दाइ-माइ कोरामे लऽ अपन बेटा बनौने रहैथ तँए हुनकर ऋृण चुकबैले जिनगीक शेष समय हुनका बीच रहि चुकेबैन।”

पण्डित शंकरक बात सुनि डॉक्टर नीलमणिक हृदयमे बिसवास जगलैन। मनमे एलैन जे सभ आदमीकेँ कर्तव्यनिष्ठ हेबा चाही। जखने सभ अपन-अपन कर्तव्य बुझि कर्म करत तखने सबहक कल्याणो हएत आ मनुक्खक बीच प्रेम सेहो बढ़त।

डॉक्टर नीलमणिक चर्चा पँचकोसीमे चलए लगल। कियो ‘डॉक्टर नीलमणि’ तँ कियो ‘सेन साहैब’ तँ कियो ‘बंगाली बाबू’ तँ कियो ‘डॉक्टर साहैब’ कहि सम्बोधित करए लगलैन।

तीन सालक बेटा कपिलदेवकेँ। जन्मेसँ बच्चाकेँ तुतली लगल। साल भरि तँ बच्चाक तुतलीपर माए-बापक नजैरे ने पड़लैन। मुदा साल भरिक पछाइत दुनूक नजैर पड़लैन जे बच्चाक बोली गड़बड़ अछि। बोली सुधारैले कपिलदेव पहिने गहवर जा डाली लगौलक। तीन मासमे बच्चाक बोली नीक भऽ जाएत ई आश्वासन गहवरक भगता कपिलदेवकेँ देलखिन। भगताक असिरवाद सुनि दुनू परानी कपिलदेव बेरागने-बेरागने गहवर जा डाली लगबैत रहल। मनमे सोलहन्नी बिसवास रहै जे बच्चाक बोली सुधरबे करत मुदा मास दिनक उपरान्तो जखन बच्चाक बोलीमे मिसियो भरि सुधार नै भेलै तखन रसे-रसे दुनू परानीक बिसवास गहवरपर कमए लगल।

तीन मास बीत गेल मुदा बच्चाक तोतराएब नइ सुधरलै। पछाइत गहवरक आशा तोड़ि झार-फूकक रस्ता धेलक।

सुकनकेँ इलाकामे सभसँ नीक झार-फूक केनिहार बुझैत। केहनो साँप धेलहाकेँ मनतरेसँ छोड़ा दइत। ओना, गोटे-गोटे मरबो करैत मुदा अधिक बँचबे करैत।

दुनू बेकती कपिलदेव सुकन ऐठाम पहुँचल। बच्चाकेँ देखि सुकन कपिलदेवकेँ कहलक-

“ई तँ बामा हाथक खेल छी, मुदा एकाबन रुपैआ पूजा-पाठ करैले पहिने जमा करए पड़तह।”

एकाबन रुपैआ पहिने जमा करैक बात सुनि कपिलदेव बाजल-

“अखन तँ संगमे ओते रुपैआ नै अछि मुदा अखनसँ ऐ बच्चाकेँ झार-फूक शुरू कऽ दियौ काल्हि भोरे एकाबनो रुपैआ दऽ देब।”

कपिलदेवक बात सुनि सुकन बाजल- “झार-फूकक बात अहाँ नै बुझबै। पहिने पूजाक सभ सामान कीनि पूजा करब। पूजा केलाक पछाइत देवता हुकुम देता तखन ने झारब। बिनु देवताक हुकुम नेने जँ होइत तखन तँ सभ झारि लैत।”

सुकनक बात सुनि दुनू परानी कपिलदेव विचारलक जे अखन चलू रुपैआक व्योंत कऽ काल्हि आएब। दुनू परानी विदा होइत सुकनकेँ

कहलक- “अखन जाइ छी काल्हि ने तँ परसू आएब।”

कपिलदेवकेँ विदा होइत देखि सुकन कहलक-

“अखन जँ अदहो-छिदहो रुपैआ जमा कऽ दी तँ हम काजकेँ जोरियबए लगब।”

सुकनक बात सुनि कपिलदेव कहलक-

“संगमे नइए, घरोमे जँ रहैत तँ अखने आनि दैतौं मुदा घरोमे नइ अछि। जोगार करए पड़त।”

“बड़बढ़ियाँ, अखन जाउ। अगर एकाबन रुपैआक जोगार नै हुअए तँ कम-सँ-कम एक्कैसो रुपैआक जोगार अबस्स केने आएब। ओना, हम आइए पूजा करै काल देवताकेँ नोत दऽ देबैन। तँए काजमे बिथुत ने हुअए। जँ बिथुत हएत तँ उन्ना-सँ-दुन्ना दुख भऽ जाएत। तखन सम्हारब कठिन भऽ जाएत।”

बच्चाकेँ नेने दुनू परानी कपिलदेव घर दिस विदा भेल। रस्तामे घरवालीकेँ कहलक-

“एक बेर दीनानाथ बाबासँ बच्चाकेँ देखा दितिऐ?”

कपिलदेवक विचार सुनि घरवाली बाजल-

“बड़ बढ़ियाँ कहलौं। केते दुखताहकेँ दीनानाथ छोड़ौलखिन। भगवान केलैन जँ अपनो बच्चाकेँ छुटि जाए।”

इलाकामे दीनानाथ नामी वैद। जड़ी-बुटीसँ रोगक इलाज करैत। कम्मे रोग एहेन होइ जेकरा दीनानाथ वैद नै छोड़ा पबैथ बाँकी सभकेँ छोड़ा देथिन।

बच्चाकेँ नेने कपिलदेव दीनानाथ ऐठाम पहुँचल। बच्चाकेँ देखि दीनानाथ कहलखिन-

“बच्चाकेँ तुतली लगल अछि जे ऑपरेशन केलासँ ठीक हएत। हम ऑपरेशन नै करै छी। अहाँ सेन साहैब ऐठाम चलि जाउ। ओ ऑपरेशनसँ ठीक कऽ देता। रोग साधारण अछि तँए बेसी खरचो-बरचो नहियेँ हएत।”

दीनानाथक विचार सुनि कपिलदेव दुनू परानी बच्चाकेँ नेने डॉक्टर

नीलमणि ऐठाम आएल। डॉक्टर नीलमणि एकटा कम्पाउण्डरकेँ ऑपरेशनेक सम्बन्धमे बुझबैत रहथिन। कपिलदेवकेँ देखि डॉक्टर नीलमणि पुछलखिन। कपिलदेव बच्चाक सम्बन्धमे कहलकैन। बच्चाक मुँह खोलि देखलखिन। जीह आ निचला तालुक बीच मौस जुटल। बच्चाकेँ कोठरीमे चौकीपर सुता कैंचीसँ काटि, दवाइ लगा बाहर आनि कपिलदेवकेँ कहलखिन-

"साधारणे ऑपरेशन छल, जाउ ठीक भऽ गेल।"

कपिलदेव विदाहो ने भेल छल आकि दू आदमी खाटपर टाँगि एकटा रोगीकेँ नेने आएल। डॉक्टर नीलमणि तुरन्त उठि कऽ देखलखिन। ओइ आदमीक दहिना पएरक हड्डी टुटल देखि डॉक्टर नीलमणि रोगीक समाँगकेँ कहलखिन-

"हिनकर पएरक हाड़ टुटल छैन, पलश्तर करए पड़त। बिनु पलश्तर केने पएर ठीक नै हेतैन।"

समाँग कहलकैन- "डॉक्टर साहैब जखन अहाँ ऐठाम एलौं तँ जे केलासँ पएर चलैबला हेतै से कऽ दियौ।"

समाँगक बात सुनि डॉक्टर नीलमणि अलमारीसँ पलश्तरक सभ समान लऽ पलश्तर कऽ देलखिन।

यएह दुनू इलाज डॉक्टर नीलमणिक जिनगीमे चारिचान लगा देलक। चौगामामे, बिहाड़ि जकाँ डॉक्टर नीलमणि सेनक गुण पसैर गेलैन। गुण पसैरते सभ दिन पनरह-बीस रोगी अबए लगल। जइसँ डॉक्टर नीलमणिकेँ कमाइ हुअ लगलैन आ परोपट्टामे सर्जरीक इलाजो पसरल।

चारिक अमल। सुरूज पच्छिम दिस झुकि गेल जइसँ रौदमे तीखरपनो कमल। पण्डित शंकर डॉक्टर नीलमणि लग एला। डॉक्टर नीलमणि किताब पढ़ैत रहैथ। पण्डित शंकरकेँ देखि किताब मोड़ि टेबुलपर रखि पण्डित शंकरक मुँह दिस देखए लगला जे किछु बजता। विचार दैत पण्डित शंकर कहलखिन-

"डॉक्टर साहैब, आब अहाँले दूटा काज करब जरूरी भऽ गेल। पहिल, अखन धरि दरबज्जापर रहि इलाज करै छी से अलग बेवस्था करब

आ दोसर बिआह करब।”

पण्डित शंकरक विचार सुनि डॉक्टर नीलमणि बजला- “अपनेक विचार तँ बड्ड उत्तम अछि मुदा अरचन तँ दुनूमे अछि। पहिल, घर बनबैले घराड़ी आ समानक जरूरत हएत। आ दोसर, हम तँ बंगालक रहनिहार छी, ऐठाम बिआह केना हएत?”

डॉक्टर नीलमणिक प्रश्न सुनि पण्डित शंकर हँसैत कहलखिन-

“अहाँक प्रश्न उचित अछि मुदा दमगर नै अछि। घर-घराड़ी-ले हम छी। बाड़ीमे घर बना देब। जे रोड-साइडमे सेहो अछि आ बीच टोलोमे अछि जइसँ चोरो-चहारक कोनो डर नै रहत। आ दोसर प्रश्न बिआहक अछि, ओहो कोनो बड़ पैघ समस्या नहियेँ अछि। ई मिथिला छिऐ। ऐठाम अदौसँ जाति-प्रथा नै रहल। ओना, समाजकेँ गलत रस्ता दिस बढ़बैले समाज-विरोधी शक्ति जाति-धर्मक कबच बना अपन उल्लु सोझ करैत रहल, तँए जाति-धर्म एते बुझि पड़ैए। ऐठाम स्वयंवरक चलैन अदौसँ रहल। स्वयंवरक अर्थ होइ छै स्वयं बड़केँ चुनि बिआह करब, जे जाति-पाँजिसँ अलग अछि। ❑

तेरह

कलकत्तामे एकटा वेपारी ओइठाम गणेशी नोकरी करैत। बीसो बर्खसँ ऊपरेसँ जीप चलबैत।

आजादीक आन्दोलनक दौरान बियालीस ईस्वीमे रेलक पटरी उखाड़ल गेल, पोस्ट ऑफिस जरौल गेल, टेलीफोनक तार काटल गेल। असहयोग आन्दोलनक सहयोगमे ढेरो आदमी नोकरी छोड़लक। रेल, पोस्ट ऑफिस आ आनो-आनो संस्थाकेँ चलब मुसकिल भऽ गेलइ। जमालपुरमे त्रिवेणी उट्ठा नोकरी रेलबेमे करैत। आदमीक अभावक दुआरे पछाइत स्थायी नोकरी रेलबैएमे भऽ गेलइ। रेलबेमे बहाली होइत देखि त्रिवेणी अपन भाए–बंगटकेँ तार पठा जमालपुर अबैले कहलक।

गणेशी बंगटक दोस। बच्चेसँ दुनू गोरेक दोस्ती चलि अबैत। घरो

एक्केठाम। शुरूएसँ दुनू गोरे संगे नाचो-तमासा देखए जाए आ भरि दिन ताशो खेलए। परोपट्टामे जँ केतौ डंका पड़ै वा कोनो मेला लगै तँ दुनू गोरे संगे जा कऽ देखए। बेरूपहरकेँ सभ दिन दुनू गोरे लाल काका ऐठाम पीसुआ भाँगो पीबए।

पोस्ट ऑफिससँ तार पहुँचते बंगट गणेशीक संग जा मास्टर साहैबसँ पढ़ौलक। समाचार सुनि बंगट गणेशियोकेँ जमालपुर चलैले कहलक। घरपर आबि दुनू गोरे खरचोक ओरियान केलक आ कपड़ो-तत्ता खिचलक। दोसर दिन गाड़ी पकैड़ दुनू गोरे विदा भेल।

बंगटक रस्ता त्रिवेणी तकैत। भागलपुर जाइ वाली गाड़ीसँ दुनू गोरे जमालपुर पहुँचल। रातिमे दुनू गोरे त्रिवेणीक डेरामे रहल। भोरे तीनू गोरे कलकत्ताक गाड़ी पकड़लक। किएक तँ रेलबेक हेड ऑफिस कलकत्तेमे। जइ ऑफिससँ रेलबे कर्मचारीक बहाली होइत।

तीनू गोरे हाबड़ा स्टेशनमे उतैर रेलबेक हेड ऑफिस भँजियाबए लगल। तीनूमे केकरो अक्षर-ज्ञान नइ रहने ऑफिसक भाँजे ने लगइ। अनठिया केकरोसँ पुछबोमे दिक्कते, सभ बंगलामे बजैत। तीनू गोरे बाटपर ठाढ़ भऽ गुनधुन करैत रहए। एकटा रिक्शाबला-केँ अबैत देखि त्रिवेणी मने-मन सोचलक जे एकरेसँ पुछबै। रिक्शोबला दरभंगीए। लगमे रिक्शाकेँ अबिते त्रिवेणी हाथक इशारासँ रोकैले कहलक। रिक्शा रोकि रिक्शाबला पुछलकै- “भाय, केतए जेबह?”

रिक्शा लग आबि त्रिवेणी बाजल- “भाय रेलबेक हेड ऑफिस जाएब।”

हाथक इशारासँ देखबैत रिक्शाबला कहलकै- “है-वएह उ देखै छहक, उहए रेलबेक हेड ऑफिस छिऐ, तइले रिक्शा किए करबह।”

तीनू गोरे विदा भेल। ऑफिसक आगूमे करीब दू कट्ठाक परती। जइमे सात-आठटा अशोक, यूक्लिपटश आ बोतलक गाछ। अशोकक गाछक छाहैरमे बंगट आ गणेशीकेँ बैसा त्रिवेणी ऑफिस दिस बढ़ल। ऑफिसक गेँटपर चपरासी बैसल। चपरासी लग जा त्रिवेणी बाजल-

“भाय, हम जमालपुर रेलबे टीशनक इस्टाप छी, एते दिन उठा

काज करै छेलौं। आब सालतनि भऽ गेल। वएह चिट्ठी लइले एलौं हेन। कनी किरानी बाबूकेँ देखा दाए।”

चपरासी कहलकै- “बीड़ी पीबै छह। पहिने बीड़ी पिआबह तखन संगे नेने जा काज करा देबह।”

जेबीसँ त्रिवेणी दूटा बीड़ी आ सलाइ निकालि दुनू बीड़ी लगौलक। एकटा चपरासी हाथमे देलक आ दोसर अपने पीबए लगल। बीड़ीक धुँआ फेकैत चपरासी बाजल- “समाँग सभ गाममे नै छह? अखन धड़हल्लेसँ बहाली होइ छइ। सभकेँ नोकरी भऽ जेतह।”

त्रिवेणी-

“खरचो-बरचो पड़तै।”

चपरासी-

“पाँच रुपैये आदमी खरच हेतह। दू रुपैआ किरानी बाबू लेतह, दू रुपैआ साहैब आ एक रुपैआ हमर हिस्सा होइए।”

त्रिवेणी-

“भाय, करए की सभ पड़तै।”

चपरासी-

“किछु ने करए पड़तह। पाँच रुपैआ लाबह। तूँ एत्तै बैसह। ऑफिसेमे फारम छइ। खाली अपन नाम-गामक ठेकान कहि दाए। ओइठाम फारम लऽ किरानी बाबूसँ भरा देबह। खाली हमरा सोझहामे दसखत करए पड़तह।”

“अगर दसखत कएल नै होइत होइ तब?”

“तब की? औठा निशान दऽ देतइ”

“भाय दूटा समाँग आएल अछि। दुनूकेँ काज करबा दहक।”

“अच्छा थमहह, किरानी बाबूसँ गप केने अबै छी।”

कोठरी जा चपरासी किरानीकेँ कहलक। आमदनी देखि चपरासीए संगे बाहर निकैल तीनू आदमीकेँ देखि आँखिक इशारा दैत चाहक दोकान दिस विदा भेल। चपरासी त्रिवेणीकेँ कहलक- “बड़े बाबूक संग जाउ।

चाह-पान करा देबैन। सभ काज लगले भऽ जाएत।”

किरानीक पाछू त्रिवेणी धऽ लेलक। ऑफिसक कम्पाउण्डसँ निकैलते त्रिवेणी किरानीकेँ कहलक-

“हाकिम, तीन बर्खसँ हम उट्ठे काज करै छी। ऐ बेर सालतनि भेल। वएह कागत-ले एलौं।”

किरानी-

“आरो जे दूटा समाँग छह ओकरो नोकरी दिएबहक?”

त्रिवेणी-

“हँ हुजूर। बड़ गरीब सभ छइ। नोकरी भऽ जेतै तँ कहुना-कहुना गुजर कऽ लेत।”

किरानी-

“आब दोकान लग एलौं। नोकरी-चाकरीक गप बन्न करह।”

दुनू गोरे चाह पीब पान खा गप-सप्प करैत ऑफिस आएल। ऑफिसक मुँहपर अबिते किरानी गैंटकीकेँ कहलक-

“हिनका सबहक काज जल्दी करा दहुन।”

कहि किरानी भीतर चलि गेल। बंगट आ गणेशीक नाओं-पता लिखि चपरासी त्रिवेणीसँ पनरह रुपैआ लऽ भीतर जा तीनू गोरेक चिट्ठी नेने आबि त्रिवेणीकेँ हाथमे दैत कहलक-

“हिनका दुनू गोरेकेँ एतै गैरेजमे काज भऽ गेलैन। अखने गैरेज चलि जाउ आ इंचार्जक हाथमे चिट्ठी दऽ देबैन। औझुके दिनक बहाली भऽ जाएत। काल्हिसँ काज करत।”

तीनू गोरे गैरेज गेल। त्रिवेणी दुनू गोरेक चिट्ठी इंचार्जकेँ दऽ दुनू आदमीकेँ देखा देलक। इंचार्ज नाओं-ठेकान पुछि, बोहीमे लिखि, काल्हिसँ काज करए अबैले बंगट आ गणेशीकेँ कहलक।

काज भरिगर। भरि दिन लोहाक रड, नट-बोल्ट, चदराक टुकड़ा, शीलपट इत्यादि एक ठामसँ उठा दोसर ठाम राखए पहुँचबैत-अनैत। सरकारी नोकरी बुझि बंगट साहससँ करैत मुदा गणेशीकेँ मने ने लगैत।

अट्ठाइस दिन, दुनू गोरेकेँ काज करैत पूरि गेल। दू दिन महिनामे कम छल। दुनू गोरेकेँ इंचार्ज बजा दरमाहा दऽ चारिम दिनसँ काज करए अबैले कहलक। अहिना सभ मास होइ।

पैंतालिसे रुपैआक नौकरी। कलकत्ता सन जगहमे रहब। केतबो काटि-छाँटि कऽ जिनगी बितबैत तैयो बीस-पचीस रुपैआ खरचे भऽ जाइत। पाँच रुपैआ जम्मेमे कटि जाइ, बाँकी पनरह-बीस बँचइ। गणेशी मने-मन सोचए लगल जे असगरमे पच्चीस रुपैआ खरच भऽ जाइए आ गाममे तँ तीन गोरे अछि, पनरह रुपैआसँ की हेतइ? सालो भरिपर तँ गाम जेबे करब, गाड़ीमे टिकट नै लगत मुदा सभले कपड़ा-लत्ता, सनेस आ दुओ चारि साए रुपैआ लऽ कऽ नइ जाएब तँ केहेन हएत। मुदा ओहो दू-चारि साए औत केतएसँ। जाबे गाममे छेलौं ताबे टुटलो घरमे गुजर कऽ लइ छेलौं मुदा आब तँ सरकारी नोकरी करै छी। आबो जँ घर-दुआर नै बनाएब तँ कहिया बनाएब।

जेते बात गणेशीक मनमे अबैत तेते मन खिन्न भेल जाइत। डेरासँ निकैल गणेशी चाहक दोकान दिस विदा भेल।

चाहक दोकानक बाहरेक ब्रेंचपर गणेशी बैस चाह पीबए लगल। कनीए कालक पछाइत एकटा वेपारी मोटर साइकिलसँ उतैर गणेशीक बगलेमे बैस चाह पीबए लगल। चुपचाप दुनू गोरे चाह पीबैत रहए। वेपारी चाहो पीबैत आ गणेशीकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि निंगहारबो करैत। चाह पीब गणेशी उठल कि ओ वेपारी पुछलकै- "नोकरी करबह?"

नोकरीक नाओं सुनि गणेशी पुछलक- "कोन तरहक काज अछि?"

वेपारी- "काज तँ बहुतो अछि मुदा अखन कपड़ा दोकानमे जरूरत अछि।"

हल्लुक काज बुझि गणेशी बाजल- "दरमाहा केते देबइ?"

वेपारी- "चालीस रुपैआ, खेनाइ आ रहैले क्वाटर देबह।"

गणेशी- "अहाँ एतै रहू। हम अपन कपड़ा-लत्ता डेरासँ नेने अबै छी।"

गणेशी डेरा पहुँच बंगटकेँ सभ सुमझा अपन सभ समान लऽ आबि

गेल। वेपारीए-क मोटर साइकिलपर चढ़ि गणेशी वेपारीक घर पहुँचल। घरपर पहुँचते गणेशीकेँ एकटा कोठरी सुमझा देलक।

अपन सभ समान रखि गणेशी काज करए लगल। दिल खोलि गणेशी मेहनत करैत। चारि बजे भोरे उठि वेपारीक दुनू गाड़ीकेँ, जीपो आ कारोकेँ चिक्कनसँ साफ करैत आ सात बजेसँ पहिनहि नहा कऽ जलखै खा, कपड़ा दोकानपर चलि जाइत। बारह-एक बजे खाइले अबैत। खा कऽ फेर दोकानपर चलि जाइत। पाँच बजे बाजारसँ तीमन-तरकारी आनए जाइत। फेर भिनसरे गाड़ी धुअबसँ काज शुरू करैत रहए। गाड़ी साफ करैत-करैत गाड़ी चलाएबो सीख लेलक। साल भरिक पछाइत गणेशी ड्राइवर भऽ गेल। दोकानदारीक संग गणेशी ड्राइवरियो करए लगल।

गणेशीक मेहनत आ इमानदारी देखि वेपारी अपन समाँग बुझए लगल। जखन जे रुपैआ गणेशी घर पढ़बैले मंगैत, वेपारी दऽ दइत। सिरिफ काजक नाओं पुछि लइत। ऐ तरहेँ गणेशीकेँ बीस बरख कलकत्तामे भऽ गेल।

गाममे गणेशीक परिवार स्त्री चलबैत। सालमे एक बेर गणेशी

एक मास-ले गाम अबैत। पाँचटा बेटा आ एकटा बेटी गणेशीकेँ। पहिल बेटी, बाँकी चारू बेटा। छओ भाए-बहिनकेँ गणेशी पढ़ैक खर्चा जोड़ए। बेटी मैट्रिकक परीक्षा देलक। साल भरिसँ गणेशी बेटी बिआहक ओरियान करैत। परीक्षे दुआरे बेटीक बिआह रूकल।

दू मासक छुट्टी लऽ गणेशी गाम आएल। पाँच भाँइक बीच एकटा बहिन तँए दिल खोलि कऽ खरच करैले गणेशी तैयार। कुटुमैती ठेमबए लगल। केतौ नीक घर भाँजपर अबै तँ लड़का दब आ केतौ लड़का बढ़ियाँ भेटै तँ घर दब। ऐ तरहेँ पनरह दिन बीत गेल। सोलहम दिन एकटा लड़काक भाँज लगलै। पितियौत भाएकेँ संग केने गणेशी लड़का देखए विदा भेल। अढ़ाइ कोस हटि ओ गाम, घर-बर देखि गणेशीकेँ पसीन भऽ गेलइ।

मझोलका गिरहस्तमे सोनेलालक गिनती गाममे होइत। साठि-सत्तैर मन धान, बीस-पच्चीस मन मरूआ, आठ-दस मन दलिहन उपजबैत।

जइसँ किछु बेचियो लैत आ परिवारोमे सालो भरि चलैत। ग्रामीण चालि-ढालिक सोनेलालक परिवार तँए खरचो कम।

दलानपरसँ उठि, गणेशी दुनू भाँइ विचार केलक जे समय कम अछि तँए बेसी लटारम नै करब। लटारम ई जे हम दुनू भाँइ बर देखलौं। आब कनियाँ देखैले हिनका सभकेँ कहबैन। दू-चारि दिनक पछाइत कनियाँ देखता। तखन फेर अपना सभ लड़ुपान चढ़बैले आएब। तखन फेर ई सभ कनियाकेँ असिरवाद दइले जेता। अही सभमे पनरह-बीस दिन लगि जाएत। तेकर बाद कुटुम सभकेँ नोत-पिहानसँ लऽ कऽ जोगार-पाती सभ करए पड़त। फेर बिआहक पछाइत बर-विदागरीक झमेल भऽ जाएत। भाड़-दौर करैत कहुना-कहुना मास दिनसँ ऊपरे लगि जाएत। तँए नीक हएत जे बिआहसँ पहिलुका प्रक्रियाकेँ छोड़ि दिऐ। किएक तँ बिआहसँ पहिनौं दोस- महीमसँ लऽ कऽ हित-अपेछित, कुटुम-परिवारकेँ नोत-हकार दिअ पड़त। बरियातीक बेवस्थासँ लऽ कऽ समान जुटाएब आदि ढेरो काज अछि। अगर देखे-सुनीमे समय लगा देब तखन काजमे पहपैट भऽ जाएत।

दलानपर आबि गणेशीक पितियौत भाए–रामकिसुन सोनेलालकेँ कहलक- “समैध, हमर भाय नोकरिया छैथ, दुइए मासक छुट्टी लऽ कऽ एला हेन। तहूमे पनरह दिनसँ बेसी बितिये गेलैन। जहिना बिआहसँ पहिने जोगार-पाती, नोत-पिहानमे समय लगैत तहिना तँ बिआहक बादो बर-विदागरी आ भाड़-दौरमे लगैए। जखन हमर अहाँक दिल मिलि गेल तखन अनेरे आडम्बरमे किए पड़ब। लड़का-लड़कीक भागमे जे लिखल हएत ओ हेबे करतै। हमरो एक्केटा भतीजी अछि। भैयाक विचार छैन जे जहिना बेटा-तहिना बेटी। जेते बेटा-ले करबै ओते बेटियो-ले करब। जहिना बेटीकेँ पढ़ेलौं तहिना सम्पैतोमे जेते हिस्सा हेतै तेते देबइ। तँए कोनो लटारममे नइ पड़ब अहूँकेँ नीक हएत आ हमरो।”

रामकिसुनक बात सुनि, सोझमतिया-सोनेलाल बाजल-

“अहाँ की कहए चाहै छी?”

रामकिसुन- “ओना, हम सभ तैयार भऽ कऽ नहियेँ आएल छी मुदा लड़काकेँ गोरलगाइ दऽ जमाए बनाइए कऽ जाएब।”

सोनेलाल-

“कोनो हरज नहि। मुदा बिनु खान-पीन केने जमाए केना बनाएब?”

रामकिसुन- “बड़बढ़ियाँ। जाउ, भानस करबाउ। मुदा बेसी असार-पसार नै करब। जाबे भानस हएत ताबे अहूँ चारिटा समाजक लोककेँ बजा लिअ। बरियातीक गप-सप्प कइए लेब।”

सोनेलाल आँगन जा घरवालीकेँ कहलक- “बिआहक गप-सप्प पक्का भऽ गेल। झब-दे अहाँ भानस करू ताबे हम चारिटा समाजकेँ बजा आनि, बरियातीक गप-सप्प कऽ लइ छी।”

पतिक बात सुनि सुधीरा झपैट कऽ बजली- “ई कोन बिआह भेलै? ने घरदेखी भेल, ने लड़काकेँ दूबि-धान पड़ल, ने लड़की देखलौं आ ने घर-दुआर देखलौं। चुपेचाप चोर जकाँ बेटाक बिआह करए चाहै छी। कोन एहेन माए-बाप हएत जेकरा बेटा-बेटीक बिआहक मनोरथ नै हेतइ। लोक की कहत।”

सोनेलाल-

“अहीले तँ समाजकेँ बजबै छी। अहाँ झब-दे भानस करू।”

कहि सोनेलाल सौंसे टोलक लोककेँ बजा अनलक। चाह-पान, बीड़ी-सिगरेट तमाकुल चलए लगल। बरियातीक गप-सप्प शुरू भेल। सोनेलालक भातीज मंगला। मंगला बम्बईमे लूम चलबैत। बम्बैया हवासँ प्रभावित तँए बजैमे फड़कोर। सोनेलाल कातमे खुट्टा लगल बैसल। गणेशी सेहो चुपचाप बैसल। समाजक लोक ऐ भाँजमे जे पहिने घरवारी बजता तखने ने किछु बाजब। तँए सभ चुप। मंगला अबैसँ पहिनहि एक शीशी ब्राण्डी पीब नेने, किएक तँ लोकक बीच जाइ छी, मूड बनल रहत। सभकेँ चुप देखि मंगला बाजल-

“कुटुम जखन लड़ुपान आ तिलक नै केलौं तखन तीनटा काज भेल। तँए दू साए बरियाती आएब। नाचो रहबे करत, अंग्रेजी बाजा सेहो रहत। दू साए बरियाती-ले दूटा मैक्सी आ चारिटा कार जाएत। तीन साँझ खाएब। एक साँझ भात, दोसर साँझ पक्की आ तेसर साँझ चूरा-दही।

माछ-मौस खुअबैए पड़त। ऐ गाममे बम्बैया छौड़ा सभ अछि ओ सभ इग्लिश पीबे करत। लेन-देन जे करब से अपन दुनू कुटुम जानी।”

मंगलाक बात रघुवीर बाबाकेँ अनसोहाँत लगलैन। बजला-

“रे मंगला, तूँ जे एना अलगटेँट जकाँ फर्र-फर्र बजै छेँ से तोरा एक्को पाइ जेठ-छोटक विचार नइ छौ। तूँ की बुझबिही जे समाज केना चलै छइ। दू साए बरियाती जे कुटुमकेँ कहलहुन से कह तँ दू साए बरियाती गाममे केकरा-केकरा गेलइ। जे मनमे अबै छौ बकैत जाइ छेँ। गाममे की सभसँ मातवर सोनेलाले आछि। सभसँ बेसी अजगजबला तँ मोतियेलाल अछि। बेटा बिआहमे सवा साए बरियाती लऽ गेल रहए। लड़का जाइले एकटा कार आ बरियाती जाइले टाएर गाड़ी रहइ। खाइए-पीबै दऽ जे कहलिही माछ-मौस आ ताड़ी-दारू, से आइ तक समाजमे केतए देखलिही। हम सभ वैष्णो छी तँए माछ-मौस आ ताड़ी-दारू समाजक काजमे नै हुअ देबइ। जेकरा खाइ-पीबैक मन होइ अपन घरमे खा-पीबह। कियो ओकरा रोकतै।”

रघुवीर बाबा बजिते रहैथ कि मंगला उठि कऽ चलि गेल। सभ कियो विचारि कऽ तँइ केलैन जे एक साए बरियाती, एकटा कार, एकटा मैक्सी, एकटा नाच, अंग्रेजी बाजा जाएत। खाइ-पीबैमे ने माछ-मौस चलत आ ने ताड़ी-दारू...।

गणेशी मानि लेलक। बिआहक दिन तँइ भऽ गेल। सभ किछु तँइ होइते सोनेलाल आँगन जा देखलक तँ भानसो भइये गेल रहइ। समाजक सभ चलि गेल सिरिफ रघुवीर बाबाटा बँचल छला, किएक तँ सोनेलाल कुटुमक संगे खाइले कहि देने रहैन।

खेला-पीला पछाइत समैधकेँ पहिरबैले दू जोड़ धोती नेने सोनेलाल दुआरपर आएल। धोती देखि गणेशी सोनेलालकेँ कहलखिन-

“समैध, बेटी ऐठाम धोती पहिरब उचित नहि। तँए अहाँ सुआगत केलौं, बड़बढ़ियाँ। मुदा धोती नै पहिरब, लऽ जाउ।”

गणेशीक बात सुनि सोनेलाल रघुवीर बाबा दिस देखए लगल। रघुवीर बाबा बुझि गेलखिन। बजला- “कुटुमक विचार ठीके छैन। लऽ जा

धोती।”

घरपर आबि गणेशी बिआहक सरंजाममे लगि गेल। कलकत्ता फोन कए कऽ बैण्ड पार्टी आ नाटक पार्टीक सट्टा बना लेलक। लड़का-लड़की-ले वस्त्र-आभूषणसँ लऽ कऽ बरतन, कुरसी पलँग धरिक ओरियान सेहो कऽ लेलक। बरियातीकेँ रहैले टेन्ट, समियाना, कुरसी-टेबुल सभ दरभंगासँ भाड़ापर ठीक केलक। बिआहसँ एक दिन पहिने कलकत्तोसँ बेण्ड पार्टी, ड्रामा पार्टी आ दरभंगोसँ टेन्ट-समियानाबला गणेशीक ऐठाम पहुँच गेल। बरियातीक भानस-ले दरभंगेसँ भनसियो आबि गेल। बिआहक दिन भोरेसँ सभ बेवस्थामे जुटि गेल।

सात बजे साँझमे बरियाती आबि गामक स्कूलपर रूकल। बरियातीक दू आदमी अनभुआर बनि गणेशी ऐठाम पहुँच सभ किछु देखलक। सभ किछु देख, घुमि कऽ बरियाती लग जा सभ समाचार सुना देलक। स्कूलपर सँ बरियाती गणेशी ऐठाम विदा भेल। बैण्ड बाजा बजए लगल। बम्बैया छौड़ा सभ बाजाक संग डान्स करैत बढ़ल। छुड़छुड़ी-फटक्का शुरू भेल। बरियाती एबाक आवाज सुनि कलकत्ताक बैण्ड पार्टी अपन कलकतिया पोशाक लगा आधुनिक कलाक धून शुरू केलक। गणेशीक अँगनाक मुँहपर कलकत्ताक बैण्ड पार्टी आ बरियातीक संग सोनेलालक बैण्ड पार्टी अपन-अपन नाच-गान शुरू केलक। बरियातीक बैण्ड पार्टीक संग जे छौड़ा सभ डान्स करै छल ओ नचबो करए आ पिहकारियो दइ। गामोक जे नवजुबक सभ छल ओकरो नै रहल गेलै, ओहो सभ कलकतिया बैण्ड पार्टीक संग नाचए लगल। बरियातीक कार, जैपर बर बैसल छला ओ मैक्सी पाछू पड़ि गेल आ बैण्ड पार्टी आगू भऽ गेल। घरबैयोक बैण्ड पार्टी थोड़े आगू बढ़ल। एक भाग बरियातीक बैण्ड पार्टी आ दोसर भाग घरवारीक। देखनिहार लोकक करमान लगि गेल। देखनिहारे सभ दुनू बैण्ड पार्टीकेँ चुप करा कहलक जे बेराबेरी दुनू पार्टी बजाउ।”

सएह भेल। मुदा कलकतिया बैण्ड पार्टीक आगूमे बरियातीक बैण्ड पार्टी कमजोर पड़ि गेल। जे बरियातियो आ समाजो मानि लेलक। बरियातीक बैण्ड पार्टी बन्न भऽ गेल मुदा डान्सर सभ घरबैयाक बैण्ड

पार्टीमे मिलि डान्स करए लगल। ड्रामा पार्टीक डान्सरकेँ नै देखल गेलइ। ओहो दुनू अपन पोशाक लगा डान्स करए लगल। बरियातीक डान्सपर पीहकारी पाड़ए लगल। तँए ओहो सभ आबि-आबि मैक्सीमे बैस गेल। दुइए-अढ़ाइ घन्टामे कलकत्ताक बैण्ड पार्टी परोपट्टामे दलमलित कऽ देलक।

बैण्ड बाजा बन्न भेल। बरियाती सभ बैसारमे आबि बैसला। चाह-पान चलए लगल। जनिजाति सभ चँगेरामे दुबि-धान आ दीप लऽ बरकेँ दुआर लगबए लगली। चाह-पान होइते बरियातीक बीच जलपान चलए लगल।

बरियातीक बैण्ड पार्टीक सभ कलाकार एकठाम मन्हुआएल, अपन कलापर अपशोच करैत। मुदा कलकत्ताक बैण्ड पार्टीक कलाकारकेँ जीतैक कोनो खुशी नहि। किएक तँ ओ सभ बुझैत जे ग्रामीण कला शहरी कलासँ पछुआएल अछि।

दस बजि गेल। चौगामाक लोक नाच देखैले अबए लगल। रस्ता-पेरासँ लऽ कऽ नाचक मैदान धरि, देखनिहार सभ पीह-पाह करैत। एकटा नमहर परतीपर नाचक बेवस्था गणेशी करबौने। एक भाग कलकत्ताक ड्रामा पार्टीक स्टेज आ दोसर भाग मनचलक नाच पार्टीक। कलकत्ता पार्टीक स्टेज शहरी ढंगसँ बनल जखन कि मनचलक स्टेज ग्रामीण ढंगसँ।

नाच-नाटक शुरू होइसँ पहिने मनचलक स्टेज लग बेसी देखनिहार। किएक तँ मनचलक पार्टीक प्रतिष्ठा इलाकामे अधिक। जखन कि कलकत्ताक ड्रमा पार्टी अनभुआर। देखनिहारो तँ बच्चे। किएक तँ कलाकेँ कला नै बुझि मात्र मनोरंजन बुझैत।

मनचलक स्टेजपर नँगेड़ा बाजब शुरू भेल। नँगेड़ाक गड़गड़ाएब सुनि सभ देखनिहार सभ मनचलक स्टेज दिस भऽ गेल। सम्म बन्है काल मनचल कातमे ठाढ़ भऽ सभ किछु देखैत। दर्शक आ संगीतकारक बीच साजक आवाज जेना तार जोड़ि देलक। कातमे ठाढ़ भेल मनचल मने-मन चपचप होइत जे आइ हमर पार्टी जरूर ऊपर हएत। सम्म बान्हब समाप्त भेल। मनचल मेकप रूपमे गेल। मनमे बेहद खुशी तँए अपन मेक-अप

ढंगसँ करए लगल।

कलकत्ताक ड्रामा पार्टी बिजली चालित साज सजा साउण्ड-बॉक्स ठीक कऽ टेप खोललक। एकटा नर्तकी आबि मूक डान्स शुरू केलक। जेहने मधुर बाजाक आवाज तेहने शास्त्रीय नाच। शुरू होइते जेना वृन्दावनमे राधिका सभ कृष्णक प्रेममे विभोर भऽ नचैत तेहने दृश्य बनि गेल। सभ देखनिहार कलकत्ताक ड्रामा दिस घुमि गेल। मनचलक स्टेज दिस एक्को आदमी ने रहल...।

हरमुनियाँ मास्टर उठि कऽ जा मनचलकेँ कहलक। मनचल अदहा मेकप केने। स्टेजपर आबि मनचल देखलक। अपन नाचसँ बिमुख होइत दर्शककेँ देखि मनचलक दुनू आँखि नोरा गेलइ। बजंतत्रीसँ लऽ कऽ नाचक पार्ट खेलनिहार धरि, सभ कियो स्टेजपर बैस कलकत्ता पार्टीक नाटक देखए लगल। अपन नाच पार्टीक दुर्दशा देखि सोनेलाल मनचल लग आबि बाजल- "मनचल भाय, ई तँ बरियाती-घरवारीक बीचक बात छी। समाज तँ देखबे करैए। हमरा-तोरा बीच सामाजिक सम्बन्ध अछि तँए तूँ दुख नै करह। जेतेमे तोहर सट्टा छह ओ देबे करबह। आब तूँ सभ नटुआ नहि, बरियाती भेलह।"

एक तँ भरि राति नाटक चलैत, दोसर बरियातीक धुमशाही। मुदा ऐ सभसँ फराक कारणेँ मनचलकेँ निन नै होइत। मने-मन मनचल सोचैत जे जिनगी भरिक प्रतिष्ठा आइ चलि गेल। बिनु प्रतिष्ठाक आदमी आ मुरदामे कोन अन्तर, दुनू बरबैर! मुदा ऐठाम जे प्रतिष्ठा गेल ओ कि सभ ठामक आकि सभ दिनक चलि गेल? कथमपि नहि। काल्हिए जँ हम दोसर ठाम नाचब तँ की ओ प्रतिष्ठा पुनः नै आबि जाएत, जरूर आएत। तखन एते मनमे दुख किए होइए। अनेरे। हमरा सभकेँ ओकर अनुकरण करबा चाही, दुख नहि। सीखक चाही। हम सभ ठमकल छी। हमर सिरिफ कलेटा नहि ठमकल अछि बल्कि सामाजिक बेवस्था सेहो ठमकल अछि जइसँ लोकक बुधि आ नजैर सेहो ठमैक गेल छइ। समैयक गतिकेँ जानि समैयक संग सभकेँ चलब उचित चलब भेल।

भोरे बैण्ड पार्टी आ नाच पार्टीक अगुआ–मनचल आ विदेसर बरियाती सभसँ अलग भऽ कातमे बैस अपन-अपन पछुआएल कलाक

सम्बन्धमे गप-सप्प करैत। जहिना अपन परिवारकेँ अपन सोझहामे नष्ट होइत देखि मनमे होइत तहिना मनचल आ विदेसरकेँ होइत। दुनूकेँ जेना शरीरसँ शक्ति निकैल गेल होए तहिना शक्तिहीन बुझि पड़ैत। मुँह मलिन, चेहरा उदास। दुनू गोरेकेँ कातमे उदास बैसल देखि रघुवीर बाबा लगमे जा कहलखिन-

"बौआ, तूँ दुनू गोरे एते उदास किएक छह। जिनगीमे अहिना नीक-अधला होइ छइ। सभ दिन नीके होइत रहलह आइ जँ कनी अधले भऽ गेलह तँ की हेतइ। तूँ सभ जुआन-जहान छह जिनगी बड़ीटा होइ छै तँए मनसँ दुनू गोरे एकरा हटा लएह। धैर्य आ साहस करह। हम अपन जिनगीक घटल घटना कहै छिअ। तहिया हम पचास बर्खक छेलौं, बरद कीनए बसौली हाट चारि-पाँच गोरे गेल रही। हम सभ ओमहर गेलौं एमहर बाढ़ि चलि आएल। एहेन बाढ़ि आएल जे ढेरो लोकक घर खसलै, माल-जाल भँसलै, खेती-पथारीक तँ कोनो चर्चे नहि। हमर दुनू बच्चा, एकटा बेटा एकटा बेटी आ घरवाली सेहो डुमि गेल। ओतइ सुनलिऐ जे बड़-जोर बाढ़ि अपना इलाकामे आबि गेल। विचारलौं जे जँ बरद कीनब तँ लऽ केना जाएब। बरद कीनब छोड़ि देलिऐ। सभ कियो घुमि गेलौं। अबैत-अबैत जखन कमला छहर लग एलौं तँ देखलिऐ जे पुबरिया छहर पान-सात ठाम टुटल अछि। सौंसे पानि झलाक-झलाक करैत। सेहो ठाढ़ पानि नहि, कड़गर वेग। गाम अबैक साहस नै भेल। छहरक सटले रामखेतारीमे सभ रहि गेलौं। भरि राति निन नै भेल। हुअए जे कहीं अही सोझहे जँ छहर टुटि जाएत तँ दहाइए जाएब। भोर भेलइ। मुदा अढ़ाइ दिन बाढ़िकेँ पूरि गेल छेलै तँए धारक पानि कोर लेलक। बाढ़ियो कमल। धारमे नावपर पार भेलौं आ पएरे विदा भेलौं। गाम अबैसँ पहिनहि पता लगल जे हमर परिवारे नास भऽ गेल। मुदा मन नै मानलक। मनमे भेल जे उड़ंतीए गप छिऐ कहीं झूठे होइ। मुदा मनमे खुटका भइये गेल।

गाम एलौं तँ देखलिऐ बात ठीके। मनमे अदंक पैस गेल। बुधि जेना उड़ि गेल। थाल-पानि सौंसे रहबे करै, केतए बैसब सेहो जगह नहि। घर-अँगनामे पानि चलि आएल छल। एक्केटा घर ठाढ़ बाँकी दुनू गिरल। घरक बगलेमे इनार। इनारक लहरा ऊँचगर देखि ओहीठाम जा थालकेँ साफ

केलौं। कनीए कालक पछाइत लहरा सुखि गेल। ओतइ रहए लगलौं।

तीन दिनक पछाइत जखन सौंसे सुखल तखन अपना घर एलौं। चारि दिनक पछाइत सासुरसँ खबैर भेल जे ससुरो आ साढ़ूओ डुमि गेला। दुनू गोरे भादबक पूर्णिमामे कुशेसर स्थान गेल छला। किएत तँ हुनका बुझल रहैन जे बैजनाथ बाबा भादवक पूर्णिमामे विदेसर आ कुशेसर स्थान, देवघर छोड़ि कऽ चलि अबै छैथ। सासुरक समाचार सुनिते अनेरे मुहसँ हँसी निकलए लगल। बड़ी काल धरि हँसिते रहलौं। तखन अपने मनमे भेल जे लोक बताह भऽ जाइ छै तँ अहिना हँसै छइ। जनु हमहूँ तँ ने बताह भऽ गेलौं।

मने-मन सोचए लगलौं जे बताह छी की नै छी।”

मुस्कियाइत विदेसर बिच्चेमे टोकि देलकैन -

“एते भारी दुख सहि अहाँ बुलंदीसँ जीबै छी, हमरा दुनू गोरेकेँ तँ खाली ग्लानि भेल हेन। आगू की भेल, से कहियौ?”

“छह मास धरि मन उचटल रहल। कहियो हुअए जे बबाजी भऽ घरसँ निकैल जाइ, के ऐ माया-जालमे पड़ल रहत।

मुदा फेर मनमे आबए जे बड़का-बड़का महंथ सभ केना परिवारसँ अलग रहि व्रह्मचर्य जिनगी जीबैए। फेर मनमे आबए जे बड़का-बड़का ऋृषि-मुनि सभ केना जंगलमे रहि तपस्या केलैन।

अहिना छह मास धरि मन वौआइत रहल। पछाइत धीरे-धीरे मन असथिर हुअ लगल। घटनाक सभ बात बिसैरतो गेलौं। छह मासक पछाइत सासु समाद पठौलैन जे हम बड़ दुखित छी तँए कनी आबि मुँह देखा जाथु। समाद सुनि मनमे आएल जे आब ओ हमर के छैथ जे भेँट करबैन। जाधैर स्त्री छल ताधैर ओ हमर सासु छेली। मुदा फेर मनमे भेल जे बिमारी अगिलगी वा कोनो पैघ घटना भेलापर बिनु कहनौं जाइक चाही। तँए अचता-पचता सासुर गेलौं। सासुर गेलापर देखलौं जे ओ बिमार नइ छैथ मुदा सोगाएल जरूर छैथ। किएक तँ पति, जमाए, नाति-नातिन आ बेटी एक्के बेर मुइलैन तँए चिन्तित हएब सोभाविके। मुदा हमर आगत-भागत पहिनेसँ बेसी होइत। हम बुझबे ने करिऐ जे ई उलटल गंगा किए

बहैए। मने-मन तारतम करी। एक दिन ओहिना बीत गेल। सिरिफ हम गोड़ लगलयैन आ ओ असीरवाद देलैन।

दोसर दिन हम कहलयैन जे चलि जाएब। तखन जिनगीक नव प्रक्रिया शुरू भेल। जलखै बेरमे चूरा, दही, चिन्नी, केरा, कलकतिया आमक खूब नमगर अचार, लुँगीयाँ मिरचाइ आ नुन थारीमे पड़ोसि आगूमे देलैन। मनमे आएल जे कलौओ खाइक जरूरत नै रहत, एक्के बेर खूब दमसा कऽ चढ़ा ली। जहाँ दू-चारि कौर खेलौं कि सासु कहलैन-

“पाहुन, हमर तँ घरे बिलैट गेल। आब केना फेर ओहन फड़ल-फुलाएल घर देखब?”

हम निक-नहाँति बुझबो ने केलिऐ। मुदा एते बात हमरा मुहसँ जरूर निकैल गेल- ‘अहाँ तँ हमर माए तुल्य छी जे कहबै, हम करब।’ सासु कहलैन, दूटा बेटी छल दूटा जमाए भेल। दूटा नाइतो-नातीन छल। सभ मिला छह गोरे छेलौं। जइमे दू गोरे छी, एकटा बेटी, एकटा जमाए। घर एक्कोटा ने भेल। तँए अहाँ साइरसँ बिआह कऽ लिअ। दुनू गोरे ठरो धऽ लेब आ दू परिवारमे एकटा तँ फड़त-फुलाएत।’ साइरो लगेमे बैसल छेली। सासुक मधुआएल गपक संग चूरा-दही भोजन आगूमे तँए हमरो मन दहलाएल।

हमहूँ किछु तर्क-वितर्क नै करए लगलिऐ, सोझे ‘हँ’ कहि देलिऐन।

‘हँ’ कहिते जेना साउसोकेँ आ साइरोकेँ मन हरिअर भऽ गेलैन। पितियौत सरहोजि सेहो लगेमे बैसली। चौअन्नियाँ मुस्की दैत सरहोजि बजली- ‘शुभ काजमे बिलम की।’

लगले हमर सासु, आठ-दसटा जनिजातिकेँ बजा अनलैन। ताबे हमहूँ खा कऽ उठि गेलौं। गीत-नाद शुरू भेल। दिनेमे चुमौन भऽ गेल। ने बरियाती आ ने आजा-बाजा। आइ देखिते छहक जे अस्सी बर्खक उमेरमे हम केहेन थेहगर छी। दूटा बेटा, दूटा पुतोहु, सातटा पोता-पोती अछि। अपन खिस्सा हम ऐ दुआरे सुनेलियह जे मनुक्खकेँ कखनो निराश नै हेबा चाही। आशाक जिनगी स्वर्गक जिनगी आ निराशाक जिनगी नरकक जिनगी होइत। तँए तोहूँ दुनू गोरे मनसँ चिन्ता हटाबह आगूक उपाय

सोचह।"

रघुवीर बाबाक बात सुनि विदेसर मनचलकेँ कहलक-

"भाय, अखन अपनो दुनू गोरेक पार्टी अछि आ कलकत्तोक दुनू पार्टी अछि। ओइ दुनू पार्टीकेँ बजाबह आ अपनो दुनू पार्टीक कलाकारकेँ जामा करह। कलकत्ता पार्टीकेँ गुरु मानि आग्रह करबैन जे एक-एकटा कलाकार दुनू पार्टीक रहि जाउ। हमरा सभकेँ सिखा दिअ। जखन हम सभ सीख लेब तखन अहाँ चलि जाएब।"

मनचल-

"बड़बढ़ियाँ।"

कहि विदा भेल।

दुनू गोरे चारू पार्टीक कलाकारकेँ बजौलक। पहिने तँ किछु काल हँसी-मजाक चललै, पछाइत काजक गप-सप्प चलल। गप-सप्पक पछाइत दूटा कलकत्ताक कलाकार दुनू पार्टीकेँ सिखबैक आश्वासन दैत रहि गेल। ❑

चौदह

अंग्रेजी शासनक संध्यावेला। मिथिलांचलमे केतौ-केतौ संस्कृत विद्यालय, केतौ-केतौ गोटि-पँगरा संस्कृत महाविद्यालय आ एकटा संस्कृत विश्वविद्यालय, जइमे संस्कृत भाषाक माध्यमसँ पढ़ाइ होइत। मुदा शिक्षा जनोपयोगी कम, सेहो आमजन-ले उपलब्ध नहि। ग्रामीण इलाकामे कियो-कियो खानगी शिक्षक रखि अपन-अपन बेटाकेँ पढ़बैत। लड़कीकेँ पढ़ाएब सेहो बर्जिते जकाँ। कोनो-कोनो गाममे, गौंआँ अपन सहयोगसँ लोअर-प्राइमरी स्कूल चलबैत। हाइस्कूल आ कौलेज नगण्ये जकाँ। सेहो बाजारक इलाकामे। तँए ग्रामीण इलाकामे आगू पढ़ैक कोनो उपाइए नहि। किछु गनल-गूथल सुभ्यस्त परिवारक विद्यार्थी पढ़ैत ओहो बाहर जा-जा।

ओना, मिथिलांचलमे जमीन्दारीक विरोधमे जन-आन्दोलन शुरू

भेल जमीनक लड़ाइ जोर पकड़लक। अपन कमजोरी जमीन्दारो बुझैत मुदा अंग्रेजी हुकुमतक जन-विरोधी शासनक लाभ उठा ओहो सभ माने जमीन्दारो सभ आम जनक विरोधे करैत। गोटि-पँगरा जमीन्दार आम-जनक संग सहानुभूति रखैत। मुदा तैयो जन-आन्दोलन बढ़िते गेल कमल नहि माने दबल नहि।

भाषा आ संस्कृतिक दृष्टिये समाज दू भागमे बँटल। एक भाग पढ़ल-लिखल पण्डित लोकनिक बीच संस्कृत आ परिनिष्ठित मैथिली चलैत तँ दोसर दिस टुटल-फुटल मैथिली–जनभाषा चलैत। जेकरा पढ़ल-लिखल लोक गमार आ असभ्य बुझैत। आम-जनक जिनगियो पछुआएल।

आम जनक जिनगी पछुआइक अनेको कारण छल, जेना-जमीन्दार खेतक मालगुजारी लइ छल जे दू-साल नै देलापर किसानक जमीन निलाम कऽ लेल जाइत। जइसँ आइक किसान काल्हि बोनिहार बनि जाइत। जइसँ उपजावारीमे कमी अबैत गेल। काज पतराइत गेल। सभ दिन काज नै रहने लोक कर्जामे डुमि जाइ छल जइसँ दिनानुदिन ओकर हालत निच्चे-मुहेँ होइत जाइ छल। तैपरसँ प्राकृतिक आफद सेहो होइते रहै, जइसँ कहियो बाढ़ि तँ कहियो रौदीक चपेटमे चटपटाएब निश्चित छल। समाजक बीच स्पष्ट दू तरहक जिनगी चलैत। जइसँ स्पष्ट दू तरहक कला-संस्कृति चलैत रहल। एक दिस परिनिष्ठित संस्कृति बढ़ि रहल छल तँ दोसर दिस टुटल-फुटल संस्कृति, लोक संस्कृति, सेहो चलि बढ़ि रहल छल।

भोलानाथक सुभ्यस्त परिवार। भैयारीमे असगरे। साठि बीघा जमीन। निःसन्तान भोलानाथ। सन्तानक दुआरे तीनटा बिआह केलक मुदा एक्कोटा सन्तान नै भेलइ। साले-साल कामौर लऽ-लऽ बीस बर्खसँ देवघर जाइत-अबैत रहल। इलाकाक एक्कोटा डॉक्टर, वैद, हकीम, ओझा-गुनी नइ बँचला जिनका ऐठाम भोलानाथ नै गेल। जेते तीर्थस्थान अछि सभठाम जा कौबलो केलक मुदा तैयो निःसन्ताने रहल। सन्तानक दुआरे भोलानाथ हदिघड़ी चिन्तित रहै छल। मुदा अपना बसक काज नै बुझि धीरे-धीरे सवुर करैत।

बच्चेसँ खुशीलाल भोलानाथक संगी। भोलानाथकेँ नि:सन्तान देखि

खुशीलालो चिन्तित। एक दिन खुशीलाल कहलकै- “दोस, जँए तीनटा स्त्री केलह तँए एकटा आरो करह। लोकक भाग्य सभ दिन एक्के रंग नै रहै छै, के कहलक जँ चारिम स्त्रीक भाग्यमे सन्तान लिखल हुअ।”

सन्तान दुआरे भोलानाथक मन जरल। तँए खुशीलालक बातसँ मनमे खुशी भेलइ। आह्लादित होइत भोलानाथ खुशीलालकैं कहलक-

“दोस, लोक कहै छै जे अधला काज केने अधला फल होइ छै मुदा हम तँ कहियो अधला काज नै केलौं, तखन एना किए भेल। अखनो देखै छी जे तीनू स्त्री अपने-अपने हाथे फूल तोड़ि निअम-निसठासँ पूजा करैए मुदा तैयो नीक फल कहाँ होइ छइ। दुख अखुनका ओते नै अछि जेते मुइला पछाइतक होइए। किएक तँ जाबे जीबै छी ताबे तँ कहुना कटिए जाएत मुदा मुइला पछाइतक दुख ऐ दुआरे होइए, पोथी-पतराक बात थोड़े झूठ हएत। अपने आँखिए तँ नै पढ़ने छी मुदा पढ़निहार सभ कहै छथिन जे बिनु बेटाक आदमीकैं कोनो गति नै होइ छइ। मुइला पछाइत ओ जहाँ-तहाँ वौआइए। तँए बेसी चिन्ता मुइला पछाइतक अछि। निचेनमे जखन असगरे रहै छी, तखन यएह बात मनमे घुरियाइत रहैए जे खेत-पथारक की हएत। ऐगला पीढ़ीक लोक सभ सेहो कहत जे समाजमे सभसँ बेसी पापी भोलबे छल जे तीन-तीनटा बौह केलक मुदा तैयो एकोगो मुसरियो ने भेलइ।”

भोलानाथक बात सुनि खुशीलाल बाजल-

“अही दुआरे ने दोस कहै छिअ। कखन केकर भाग्य बदलत से कोइ जनैए।”

भोलानाथ-

“दोस, आब हमरासँ कोन बेटीबला बेटीक बिआह करए चाहत। पचपन-साठिक उमेर भेल।”

मुस्की दैत खुशीलाल बाजल- “सम्पैत देखि कोन कन्याँगत अपन बेटीक बिआह नै करए चाहत। बड़ करत तँ बिआहक खर्च लेत। किछु बेसीए दऽ देबइ। मुदा बिआह नै हएत, केहेन बात बजै छह।”

भोलानाथ- “दोस, सभ तीर्थ स्थान जा-जा गुहारि लगेलौं मुदा किछु

ने भेल। सिरिफ एकटा तीर्थ-स्थान बँचल अछि, पहिने ओइठामसँ भऽ अबै छी तखन तोहर बात करब।”

खुशीलाल- “कोन स्थान?”

“उनीकुटी। उनीकुटी त्रिपुरामे अछि। एमहर जेते तीर्थस्थान अछि सभ खुदरा देवस्थान छी। मुदा उनीकुटीमे करोड़मे एक कम देवी देवता अछि। तँए मनमे अबैए जे सभकेँ एक्के बेर किए ने कहिऐन। जँ किछुकेँ नहियोँ मन हेतैन तैयो सभ बेपाटे भऽ जेता, से तँ नहि।”

भोलानाथक बात सुनि खुशीलाल बाजल- “अपने सभ परानी मिलि सभ देवताकेँ तँ कहबे केलहुन मुदा हमहूँ तँ दोस छिअ। तँए हमहूँ जेबह। दोसक काजे होइ छै दोसक नीक-अधलामे संग देब।”

आसीन मास। सौन-भादो भरि मन बरिसल। झाँटो-बिहाड़ि अपन हिस्सा नीक जकाँति पुरा लेलक। केतेको उझुम बाढ़ि मुड़ीयारी देलक।

बेरूपहरकेँ भोलानाथ खुशीलाल ऐठाम पहुँचल। खुशीलालक घर झाँटमे गिर पड़ल रहइ, ओकरे सुढ़ियबैत रहए। लगमे बैस भोलानाथ अपन दुख आ खुशीलालक दुखकेँ तुलना करए लगल। मने-मन सोचए लगल जे जहिना हम धिया-पुता दुआरे दुखी छी तहिना तँ खुशीलालो अन्न वस्त्र आ घर-ले दुखी अछि। हमहीं दुनू दोस दुखी छी सेहो बात तँ नहि। समाजोमे देखै छी कियो कोनो दुखमे पड़ल अछि तँ कियो कोनो दुखमे मुदा अछि तँ सभ दुखीए। बच्चेसँ दुनू गोरे संगे खेलेलौं, मेला-ठेला देखलौं मुदा गरीबीक चलैत खुशीलाल मनुक्खक जिनगी कहियो ने जीब सकल। वेचारोकेँ सातटा सन्तान भेल मुदा तरद्दुतक चलैत पाँचटा मरि गेलइ। सिरिफ दुइएटा बेटा बँचल छै, जेकरो देखै छी जे ने देहपर वस्त्र छै आ ने भरि पेट अन्न भेटै छइ। तहिना स्त्रियोकेँ देखै छी जे वेचारी रोगसँ ग्रसित अछि, ने भरि पेट खेनाइ भऽ रहलैए आ ने दवाइ-दारू। मुदा तैयो वेचारी जिनगीमे हारि नै मानि रहल अछि। अखनो देखै छी जे भरिगर-सँ-भरिगर काज करैमे दोसकेँ संग दइए। वाह रे औरत..!

एते बात मने-मन भोलानाथ सोचिते छल कि खुशीलाल टोकलकै-

“दोस, दुख-सुख तँ जिनगीमे लगले रहै छै आ लगले रहत मुदा ऐ

बेरक दुख जिनगी भरि मन रहत।”

जिज्ञासासँ भोलानाथ पुछलक- “से की?”

जहिना कियो मृत्युक मुहसँ बँचि सुखक जिनगी पाबि खुशीसँ बजैत तहिना खुशीलाल बाजल- “दोस, पैछला मासक जे अन्तिम झाँट रौतुका रहह ओइ दिनक घटना कहै छिअ। एक्केटा घर अछि, ओहीमे एकचारी दऽ गाए बन्है छी आ अपनो सभतूर रहै छी। बरतनो-बासन आ आनो-आनो चीज-बौस रखै छी। सुतली रातिमे पहिने पानि हुअ लगल। पानि होइते छल कि पुरबा हवा उठल आ उठिते तेज हुअ लगल। तेज होइत-होइत खूब तेज भऽ गेल। पहिने मालक एकचारी गिरल। एकचारी गिरते गाए डिरियाए लगल। अपनो सभ एकचारी गिरैक आवाज सुनलिऐ। ठाठो हल्लुके रहै तँए गाए ठाढ़े रहल। गाइक देहपर ठाठ पड़ल। अन्हार गुप-गुप। बेसुमार पानि झहरैत। हवो कहै जे आइ छोड़ि काल्हि नै बहब। समय देखि गाएकेँ बँचबैक हिम्मते ने हुअए। अग-दिगमे सभ पड़ल रही। गुल्लियाक माए कहलक-

“गाइक देहपर चार गिरल अछि ओ मरि जाएत। अगर जँ गाए मरि जाएत तँ धनो जाएत आ पतियो लगत तँए दुनू परानी चलू आ गाएकेँ निकालि अही घर लऽ आउ।”

कहि घरवाली साड़ीक फाँड़ बान्हि घरसँ निकैल गेल। घरसँ निकलैत देखि हमहूँ धोतीकेँ बान्हि निकललौं। एकचारीक मुँहपर जाइते गाइक नजैर पड़लै। अखन धरि जे गाए डिरियाइ छल ओ दोसर स्वरमे मुदा पहुँचलापर जे डिरियाएल ओ बदलल स्वरे, बुझि पड़ल जे वेचारी कनैए। गाइक आवाज सुनि जेना देहमे दस हाथीक बल चलि आएल। सोझे हाथसँ चार अलगा, गाए लग पहुँच माथपर चार उठा लेलौं। गाए देह चाटए लगल। गुल्लिया माए गाएकेँ खोलि घर लऽ अनलक। हम असथिरसँ चारकेँ रखि निकैल गेलौं। निकैल कऽ घर अबिते घरक खुटा कड़कड़ाएल। मनमे भेल जे ईहो घर गिरत। पुबरिया चारक दूटा कोरो हम पकैड़ निच्चाँ-मुहेँ बल दिऐ आ पछबरिया चारमे गुल्लियाक माए। दुनू बच्चा आ गाए बीचमे ठाढ़। जाबे धरि झाँट रहलै ताबे धरि पकड़ने रहलौं। बुझि पड़ए जे दुनू डेन टुटि जाएत। मुदा की करितौं। ओते रातिमे आ ओहन झाँट-पानिमे

केतए जइतौं। सबहक तँ एक्के गति। ओही झाँटमे किसुनमा सभतूर मरि गेल।”

खुशीलालक बात सुनि भोलानाथक आँखिमे नोर आबि गेल। मने-मन सोचए लगल जे जिनगी भरिक दोस दुखसँ त्रस्त अछि मुदा हमरा तँ कोनो चीजक कमी नइए, तबो कहियो दोसक दुख नै बुझलिऐ। धैनवाद ऐ वेचाराकेँ दिऐ जे कहियो किछु नै मंगलक। लोककेँ दोसक जरूरी ऐ दुआरे ने होइ छै जे सुख-दुखमे संग रहए, मुदा हम तँ दोसक दुखमे कहियो संग नै देलौं। बहुत पैघ गलती हमरासँ भेल। एक दोसक अछैते धने दोसर दोस गरीबीक चक्कीमे पिसाइत रहल। जँ भगवान हमरा निःसन्तान बनौने छैथ तँ उचिते केने छैथ। अनेरे हम एते तीर्थ केलौं। ओना, उनीकुट्टी तँ जेबे करब मुदा ओइसँ पहिने दोसकेँ रहैक घर आ जीबैले धनक उपाय कऽ देबइ। मुस्की दैत भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक- “दोस, एकटा बात पुछै छिअ?”

“की?”

“तोहर दशा देखि हमर मन बदैल गेल। एक दिस हमरा धन अछि तँ भोगनिहार नहि आ दोसर दिस तोरा भोगनिहार छह तँ धन नहि। अखन कहुना कऽ घर मरम्मत कऽ लएह, किएक तँ परसू उनीकुट्टी जाइक विचार कऽ नेने छी। ओमहरसँ जखन घुमि कऽ आएब तखन चारि बीघा खेत आ घर बन्हैले सभ किछु देबह।”

भोलानाथक बात सुनि खुशीलालक हृदय चमैक गेल मुदा मनमे हुअ लगलै जे कहीं आवेगमे ने बाजि गेल हुअए आ पछाइत कहए जे ‘ओहीना बाजि गेलौं।’ खुशीलाल पुछलक-

“दोस, के सभ जेबह?”

भोलानाथ-

“अपने चारू बेकती तँ जेबे करब जे तोरो संगे चलए पड़तह।”

खुशीलाल-

“दोस तोरा तँ बुझले छह जे सभ दिन कमाइ छी तखन गुजर चलैए। हम जँ चलि जाएब तँ गाइयो आ धियो-पुतो मरि जाएत। गुल्लिया

माएकेँ देखिते छहक जे देहमे कोनो हब छइ।”

“काल्हि भोरे दोस्तिनीकेँ डॉक्टर ऐठाम लऽ चलह। जे खरच हेतै से हम देबह आ डॉक्टरोकेँ कहि देबै जे सभ दिन अहाँ दुनू साँझ देखैत रहबै। अपनो सबहक खाइले आ गाइयोकेँ खाइले सभ किछु अखने चलि कऽ लऽ आनह। बच्चासँ आइ धरि हमरा-तोरा बीच सिरिफ मुँहक दोस्ती छल मुदा आइसँ असल दोस्ती हएत।”

कहैत भोलानाथ उठि कऽ खुशीलालक दहिना बाँहि पकैड़ कऽ उठबैत आगू बाजल-

“आइ हमर मन जेना चमैक रहल अछि, चलह, अखने चलह। असगरे सभ किछु आनल नै हेतह तँए दोस्तिनियोकेँ संग कऽ लएह। बच्चा सभ ताबे एतै रहतह।”

दुनू परानी खुशीलालो आ भोलानाथो विदा भेल। घरपर जा भोलानाथ नारक टाल देखबैत बाजल-

“ऐमे सँ नार घीचि लिहह।”

कहि आँगन जा भोलानाथ कोठीसँ चाउर-दालि निकालि खुशीलालकेँ देलक।

दोसर दिन भोरे भोलानाथ खुशीलाल ऐठाम जा चारियबैत बाजल-

“दोस, डॉक्टर ऐठाम सबेर गेलासँ नीक रहतह, किएक तँ डॉक्टरोकेँ खटैत-खटैत मन पीता जाइ छै जइसँ पैछला रोगी सबहक इलाजो नीक जहाँति नै भऽ पबै छै तँए अखने चलह।”

भोलानाथक बात सुनि गुल्लियाक माए भोलानाथकेँ सुनबैत गुल्लियाकेँ कहलक-

“बौआ, दोसकाकाकेँ कहुन ने चाह पी लेता तब जइहैथ।”

दोस्तिनीक गप सुनि भोलानाथक मनमे उठल- दुनियाँमे प्रेम केतौ झँपाएल नै अछि ओ तँ सौंसे छिड़ियाएल अछि। सिरिफ देखै आ करैक जरूरत अछि। मने-मन भोलानाथ सोचिते छल कि गुल्लिया चाह नेने भोलानाथक हाथमे देलकैन। एक घोंट चाह पीब भोलानाथ दोस्तिनीकेँ

कहलक-

“झब-दे चाह पीबू आ चलू। सवेर घुमि कऽ आएब तखन ने कौल्हुका ओरियान करब।”

दुनू परानी खुशीलाल आ भोलानाथ, तीनू गोरे डॉक्टर ऐठाम विदा भेल। रस्तामे खुशीलाल भोलानाथकेँ कहलक-

“दोस, गरीबो रहैत, भगवान हमरा स्त्री देलैन! हम तँ दुनू उखराहा बोइन करए जाइ छी। एमहर धिया-पुतासँ लऽ कऽ माल-जाल, भानस-भात, कुटौन-पीसौन सभ सम्हारैए। एहनो दशा छै तैयो एक्को क्षण बैसल नै देखबहक। कखनो काल अपनो मनमे होइए जे जखन तोहर दोस्तिनी मरि जेतह तखन हमर की गति हएत। मुदा सवुर ऐ दुआरे होइए जे दुनू बेटो भगवान हमरे चुनि कऽ पठौलैन। एतबे-एतबे अछि मुदा कखनो मुँह मलिन नै देखबहक। भरि दिनमे पान सेर कच्ची धान बोइन होइए। ओहीमे सँ नूनो-तेल करै छी। ई तँ भगवानेकेँ जश देबैन जे अनेरूआ साग बाधमे उपजबै छथिन जे तीमनो खाइ छी, नइ तँ सेहो ने खइतौं।”

आइ धरि जे जिनगी भोलानाथ नै देखने छल ओइ जिनगीसँ भेँट भेल। डॉक्टर ऐठाम पहुँचैत-पहुँचैत भोलानाथक हृदय मोम जकाँ कोमल भऽ गेल। डॉक्टर ऐठाम पहुँचते भोलानाथ अपन दोस्तिनीकेँ देखबैत डॉक्टरकेँ कहलैन-

“डॉक्टर साहैब, पाइ कौड़ी दुआरे इलाज कमजोर नै करबै। जे खरच हेतै हम देब तँए इलाज नीक जकाँ कऽ दियौ।”

गुल्लिया माएकेँ जाँच-पड़ताल कऽ डॉक्टर बजला-

“रोग कोनो जब्बर नै छैन मुदा अनक दुआरे रग-रग बैस गेल छैन। तँए रोगी मरती नै मुदा तनदुरुस होइमे किछु समय लगतैन। खाइ-पीबैक नीक बेवस्था सेहो कऽ देबैन आ दवाइयो चलतैन।”

डॉक्टर ऐठामसँ तीनू गोरे विदा भेल। थोड़े दूर आगू आबि भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक- “दोस, जखन बजार आएले छी तखन कपड़ो दोकानक काज केनहि जाएब। जखन तीर्थ-स्थान जाइक तैयारीमे छी तखन सभले नव-वस्त्र सेहो कीनियेँ लेब।”

कपड़ा दोकान जा भोलानाथ दोकानदारकेँ कहलक- “तीनटा हमरा स्त्री अछि आ एकटा दोस्तिनी छैथ चारू गोरेले एक्के रंग साड़ी, आँगी आ दुनू दोस-ले एक्के रंग पाँचो-टुक कपड़ा दिअ।”

भोलानाथक आदेश सुनि दोकानदार एक्के दामक, एक्के रंग कपड़ा सभले निकाललक। कपड़ा देखि भोलानाथ दोकानदारकेँ दाम जोड़ैले कहलक मुदा खुशीलालक बेटा मोन पड़िते नइ-नइ करैत बाजल-

“दूटा ढेरबा बच्चा-ले सेहो दू जोड़ा पेन्ट, दूटा गंजी, दूटा अँगाक खत आ दूटा चरिहत्थी चद्दैर सेहो दिअ।”

दोकानदार सभ कपड़ा दऽ बाजल-

“आरो किछु?”

दोकानदारक बात सुनि भोलानाथ खुशीलालकेँ पुछलक-

“आब तँ कियो बाँकी नै ने रहल। किएक तँ अखन दोकानपर छी, कीनि लेब।”

मुड़ी डोलबैत खुशीलाल बाजल-

“नहि।”

बाजारसँ विदा भऽ रस्तामे भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक-

“दोस, दोस्तिनीकेँ कहि दहक जे समय-समयपर दवाइ खाथि। एहेन ने हुअए जे कहियो तीन खोराक दवाइ एक्के बेर खाथि आ कहियो तीन दिनपर।”

गुल्लियाक माए सेहो भोलानाथक गप सुनलैन। किछु काल गुम्म भऽ मने-मन सोचए लगली जे भलेँ हम नै करी मुदा एहनो लोक तँ ऐछे जे दवाइ खाइमे एना करैए। मुस्कियाइत गुल्लिया-माए भोलानाथकेँ सुनबैत बजली-

“मनुक्ख जँ अपन देखभाल अपने नै करत तँ आन केते काल कऽ सकतै। तखन तँ भूखल-नाँगट आ खगल लोककेँ मतिये बगैद जाइ छै तँए लोक अन्ट-शन्ट कऽ लइए।”

गाम पहुँचते भोलानाथ अपन कपड़ाक मोटरी लऽ अपना ऐठामक

रस्ता पकड़लक आ दुनू परानी खुशीलाल अपना ऐठामक। आँगन अबिते खुशीलालक दुनू बेटा हाथसँ मोटरी लऽ ओसारपर रखलक। दुनू परानी खुशीलाल पएर धोइले कलपर गेल। कलक हेन्डिल पकैड़ खुशीलाल पत्नीकेँ कहलक-

"आउ, पहिने अहाँ हाथ-पएर धोइ लिअ, चला दइ छी।"

पतिक बात सुनि रेशमाकेँ मनमे जिनगीक आशा जगलैन जे जहिना पतिक सेवा पत्नी करैत तहिना कुसमय पाबि पत्नियोँक सेवा पतिकेँ करक चाहिऐ। तखने परिवारक गाड़ी आगू-मुहेँ हँसैत-खेलैत चलैत रहत।

दुनू बेकती हाथ-पएर धोइ आँगन आएल। रेशमा घरसँ बिछान आनि आँगनमे बिछौलैन। खुशीलाल कपड़ाक मोटरी खोलि पहिने दुनू बेटाकेँ गंजी-पेन्ट दैत बाजल- "बौआ, दुनू भाँइ पहिर लएह आरो कपड़ा सभ छह।"

दुनू भाँइ धरिया खोलि पेन्ट पहिरते छल कि रेशमा बजली- "बौआ, धरियाकेँ टाटपर रखि दहक घरनीपा बना लेब।"

आइ धरि खुशीलालक परिवारमे एतै खुशी कहियो नै भेल छल। परिवारमे सभकेँ एक बेर सुन्दर नव वस्त्र देहपर आएल। आइ धरि जे बच्चा जाड़मे आगि तापि, बरखामे बोराक घोघही ओढ़ि बितबै छल ओइ बच्चाकेँ जँ भरि देह कपड़ा, बरखामे छत्ता भेटलै तँ खुशीक अन्त रहतै केना। मुदा बहुतो लोक तँ घरोमे बर्खाक समय छत्ता लऽ बितबैए आ भरिपेट अन्न भेट जाइ तँ किए ने कनैत मन हँसत। खुशीलालक परिवारमे आइ टाट तोड़ि कऽ ओहन हँसी आबि गेल जे कहियो ने आएल छेलइ।

दोसैर साँझ। धड़फड़ाएल भोलानाथ खुशीलालक ऐठाम आबि दोस-दोसक आवाज लगौलक। रेशमा सिलौटपर मसल्ला पीसै छेली आ खुशीलाल चुल्हि लग बैस आँचो दैत आ दुनू बच्चोकेँ कहैत-

"बौआ, काल्हि हम दोसक संग तीर्थ करैले जेबह। बीस-पच्चीस दिन लगत। माए दुखिते छह तँए दुनू भाँइ गाइयोकेँ खुअबिहह आ माइयोक काज कऽ दिहक।"

भोलानाथक आवाज सुनि रेशमा लोढ़ी चलाएब रोकि उठि कऽ

घरक ओलती लग आबि बेटाकेँ जोरसँ कहलक- “बौआ, दोसकाका बाटपर सँ गर्द करै छथुन।”

रेशमाक बात सुनि खुशीलाल चुल्हि लगसँ उठि बाहर निकलल। बाहर आबि भोलानाथकेँ कहलक- “दोस, बाटपर किए छह अँगने आबह।”

आँगन आबि भोलानाथ बाजल- “दोस अखन नै रूकबह, तीन बजे भोरे गामसँ निकलबह तखने चरिबजिया बस पकैड़ सकब। किएक तँ कोस भरि जाइयो पड़तह। सएह कहैले एलिअ हेन। दोसर बात जे हमरो ऐठाम तँ कियो रहत नहि, तँए दोस्तिनीकेँ कहि दहुन जे भोरे अपन गाइयो आ दुनू बच्चोकेँ ओतै लऽ जेती। ओतै रहती, खेती-पीती आ अपन गाइयोकेँ खुऔती-पीऔती। अखन जाइ छिअ। बहुत जुति-भाँति लगाएब बाँकीए अछि।”

खुशीलाल-

“केते दिन लगतह?”

भोलानाथ-

“एक तँ घरसँ निकैल नै होइए, जखन निकलब तँ रस्तामे जे सभ देखैबला अछि से सभ देखनहि आएब किने। जेना ऐठाम गाड़ी पकैड़ लोकहा जाएब आ ओतएसँ बस धरब। आगू गेलापर कोसी पुल पार भेलापर बराहक्षेत्रक रस्ता अछि जाइ काल ओ छोड़ि देबइ। आगू बढ़ब। नेपालक बीचे-बीच बसक रस्ता अछि। उतरवारि भाग जंगल-पहाड़ देखबह आ दछिनबारि भाग धार-धूर, खेत-पथार, गाम-घर देखबहक। आगू इटहरी चौक अछि। जैठाम अपना सभ पूब-मुहेँक बस पकैड़ काकड़भिट्टा जाएब। मुदा चौकसँ दच्छिन-मुहेँ गेलापर बिराटनगर अछि आ उत्तर-मुहेँ गेलापर धरान आ धनकुट्टा अछि, से घुमती कालमे देखब। काकड़भिट्टा तक नेपालक बस चलैए। ओतै उतैर कऽ मेची धार पार हएब। धार पार भेलापर अपन देशक बस भेटत। ओइ बसपर चढ़ि नक्सलबाड़ी होइत सिलीगुड़ी जाएब। सिलीगुड़ीसँ एकटा रस्ता असाम जाइ छै जे अपना सभ पकैड़ कऽ जाएब। ओना, ओहूठामसँ देखैबला बहुत जगह

अछि जेना- दार्जिलिंग, सिक्किम, भूटान। मुदा जाइ काल केतौ ने अँटकब। अबै काल सभ देखैत-सुनैत आएब। एकटा बात मोन पड़ि गेल। जखन सिक्कम जेबहक तँ देखबहक जे जेना सौंसे सिक्कम फुलवारीए अछि। किछु फूल अपनो इलाकाक देखबक मुदा बेसी फूल अनठीए बुझि पड़तह। दुनियाँमे एते रंगक फूल केतौ ने अछि। से तँ जखन देखबहक तखन अनेरे बिसवास हेतह। फूलेटा किए, चाहोक खेती देखि असम्भय लगतह। सिलीगुड़ीमे बस पकैड़ असाम जाएब। ओतै अँटकब आ रातिमे यात्रपाटी-विदेशिया नाच देखब। भोरमे त्रिपुरा-ले बस पकैड़ लेब। ओना, असामोमे बहुत चीज देखैबला छइ। जेना ब्रह्मपुत्र धार, कामरूप कामाख्या, काजीरंगा, शिवसागर, केते कहबह...।

..जखन गौहाटीसँ बस पकैड़ दच्छिन-मुहेँ विदा हेबहक, तखन रस्तेमे मेघालय भेटतह। एकटा बात तँ छुटिए गेलह। गौहाटीएसँ मिजोरम बस जाइ छै, ओतौ जाएब। मुदा घुमती कालमे। मिजोरममे पहाड़-जंगल देखि कऽ मन भरि जेतह। मिजोरममे जे आदी देखबहक तँ आश्चर्ज लगि जेतह। अपना सबहक ऐठाम जे आदी अछि ओ तँ कनगोरियो ओंगरीसँ पातर होइए मुदा ओइठामक जे आदी होइए ओ औंठोसँ मोट। तहूमे ओइठामक आदीमे सोन नइ होइ छै..।"

'सोन'क नाओं सुनि बीच्चेमे रेश्मा बजली- "दोस भाँग-ताँग पीब कऽ एला हेन तँए एना बजै छैथ। कहू जे जइ आदीमे सोन नै रहत ओ आदी केहेन हएत।"

दोस्तिनीक बात सुनि भोला बाजल- "हम सभ तँ जाइते छी, अबै काल एक किलो कीनने आएब। जखन अपना चसमसँ देखबै तखन तँ बिसवास हएत। तिला संक्रातिक खिचड़ी-ले थोड़े रखियो लेब। हँ तँ दोस कहै छेलिअ जे गौहाटीएसँ मणिपुर सेहो बस जाइ छइ। देखैबला जगह अछि मणिपुर। ओइठाम विष्णु भागवानक मन्दिर, गोविन्दजीक मन्दिर आ सभसँ नीक देखैबला अछि हेलैत उद्यान। मुदा ओहूठाम घुमतीए काल जाएब। ओतैसँ नागालैंड सेहो बस जाइ छइ। ओहो देखब। अरुणाचल सेहो ओही रस्तामे अछि, सेहो देखि लेब। अरुणाचलमे दोसरे हिसाबसँ खेती करैत देखबहक। ओ सभ अपना खेतीकेँ झूम सिस्टम कहै छइ।

बुद्धदेवक बहुत पुरान मन्दिर तवांगमे देखबहक। हँ तँ कहै छेलिअ जे गौहाटीसँ जखन मेघालय जाएब तखन बुझि पड़तह जे ई राज पहाड़ेक छिऐ आ पहाड़ेटा किए, खूब गहींर-गहींर धार सभ सेहो देखबहक। पहाड़ेपर शिलौंग सेहो अछि। ऊपरसँ जे देखबहक तँ बुझि पड़तह जे हजारो हाथसँ गहींर ओठामक धार सभ अछि। से की एगो-दुगो मारे। सभटा मनो ने अछि मुदा जे मोन अछि से कहै छिअ। कृष्णई, कालु, भुगइ, दरेंग, सिमसांग इत्यादि पनरह-बीसटा धार अछि। अखन जाइ छिअ। काल्हिसँ तँ संगे रहबह। भरि रस्ता गप-सप्प होइते रहत।"

दोसर दिन भोरे बस पकैड़ पाँचू गोरे–तीनू स्त्रीक संग भोलानाथ आ खुशीलाल–उनीकुट्टी विदा भेल। तीन दिनक बसक सफर। किरिण डुमैत बससँ उनीकुट्टी उतरल। उनीकुट्टी पहुँच पाँचू गोरे हियाबए लगल जे ने अपन इलाका सन इलाका अछि आ ने बोली। बड़का-बड़का, ऊँचगर-ऊँचगर पहाड़ अछि, बोन-झाड़ अछि। अपना सभकेँ देखल नै अछि आ लोकक बात बुझै नै छिऐ। ने हमर बोली ओ सभ बुझैए आ ने ओकर हमसभ। विचित्र स्थिति। बिनु देखने घुमियो जाएब सेहो केनादन हएत। आब की करब। बसे स्टैण्डमे पाँचू गोरे रूकल। भोलानाथ खुशीलालकेँ पुछलक- "दोस, की करबह?"

खुशीलाल बाजल- "दोस, चाह-पानक दोकानदारसँ भाँज लगि जेतह। किएक तँ टीशनक कातक दोकानमे सभ मुलुकक लोक अबै छै किने। हम जा कऽ पुछै छिऐ।"

मुसाफिर खानासँ हटि बाहरमे पानक दोकान। खुशीलाल बाहर निकैल पानक दोकान लग जा ठाढ़ भेल। दोकानदारे खुशीलालकेँ पुछलकै जे की लेब। मुदा दोकानदारक बोली खुशीलाल नै बुझलक। दोकानदार बुझि गेल जे आन ठामक यात्री छी। आँखिक इशारासँ दोकानदार पुछलक। खुशीलाल बाजल- "भाय, परदेशी छी।"

बोली सुनि दोकानदार बगलक हलुआइक दोकानक नोकरकेँ शोर पाड़लक। नोकर मिथिलांचलेक। नोकरक नाओं बिलट। बिलट अबिते खुशीलालसँ गप कऽ दोकानदारकेँ कहलक। दोकानदार अपना ऐठाम लऽ जा चारू गोरेकेँ नल देखौलक। चारू गोरे बेराबेरी नहा चूरा-दही भरि पेट

खा सुति रहल।

दोसर दिन बिलटकेँ संग कए सभ कियो देखैले विदा भेल। चारिअनामे भोलानाथ 'ऊनीकुट्टीक महात्म' नामक किताब कीनलक। घुमैले जाइसँ पहिने उनीकुट्टीक महात्म भोलानाथ पढ़ि लेब नीक बुझलक। सभ कियो पाथरक टुकड़ापर बैस भोलानाथसँ उनीकुट्टीक कथा सुनए लगल- "द्वापर, युग अन्तिम दिन गनैत। कलियुग लग आबि गेल। कलियुग अधला युग होइत तँए सभ देवी देवता राता-राती पड़ा कऽ समुद्रमे बास करए विदा भेल। ऊनीकुट्टी लग जाइत-जाइत भोर भऽ गेलइ। चिड़ै-चुनमुनी चह-चहाए लगल। दिनक आगमन बुझि सभ देवी-देवता ओतइ रहि गेल। वएह छी उनीकुट्टी।

नमगर-चौड़गर इलाका। छोट-पैघ सैयो पहाड़। ऊँच-ऊँच पहाड़सँ पानि झहरैत। जे अपन-अपन रस्ता बनौने। पैघ-पैघ अनभुआर गाछ-बिरीछ। जहाँ-तहाँ टुटल-टाटल देवी-देवताक मूर्ति। एक दिनमे सगरे घुमि कऽ देखब सम्भव नहि। बीचमे एकटा साधुक स्थान। छोटेटा घर। आगूमे चबूतरा जकाँ पाथरक टुकड़ा। साधु भोलानाथसँ परिचए पुछि, एबाक कारण पुछलखिन।

भोलानाथ सविस्तार कहि सुनौलकैन। हँसैत साधु कहलखिन- "ऐ दुनियाँमे ने कियो अपन अछि आ ने आन। सभ अपन। जइ बेटा-बेटीक इच्छा मनमे अछि ओ क्षणिक छी। जेतेकेँ अपन बुझै छी ओतबो अपन नै छी। मनुक्ख खिआइत-खिआइत एते खिया गेल जे मनुक्खकेँ अपन नै बुझि दू-चारि गोरेकेँ बीच समटा गेल। जहिना कियो चलैत बसमे भीड़ देखि नै चढ़ि, छोड़ैत-छोड़ैत एते छुटि जाइए जे अपन गन्तव्य स्थान धरि पहुँचिए नै पबैए तहिना समैयक गति रूपी गाड़ीसँ छुटि तेते पाछू पड़ि गेल जे समयक संग पकड़ब कठिन भऽ गेल अछि। सभ मनुक्खक दायित्व होइत जे अपनासँ आगू बढ़ि आनो-आनकेँ सेवा करए। जेतेक अधिक मनुक्खक सेवा ऐ शरीरसँ भऽ सकत ओते अधिक धर्म होएत।"

साधुक विचार सुनि भोलानाथक हृदय गंगाजल जकाँ पवित्र हुअ लगल। अनासुरती सिनेह भरल हँसी भोलानाथक मुहसँ निकलए लगल-

“हम जे तकै छेलौं से भेट गेल। ई अन्तिम तीर्थाटन छी। गाम पहुँच अपन सभ सम्पैत बच्चा सभकेँ पढ़ाइमे लगा देब। सभ बच्चा, बच्चा छी।”

सौंसे उनीकुट्टी देखैमे पाँच दिन समय लगलै। उनीकुट्टीसँ नीरमहल जा कऽ सेहो सभ चीज देखलक। नीरमहलसँ डबूर झील देखैत कमल सागर देखि सभ विदा भेल। रस्तामे चाहक खेती केतौ-सँ-केतौ देखए गेल। डाँड़ भरि ऊपरसँ गाछ छपटल पतियानी लगौल रोपल। खेतमे जुआन आ ढेरबा लड़की सभ घघड़ा पहिर पीठपर बेंतक बोको नेने चाहक पात तोड़ि-तोड़ि रखैत। गठल देह पुष्ट ललाट फूलक झाबा केशमे खोंसि पातो तोड़ैत आ मस्तीसँ गीतो गबैत। तहिना छाती भरि-भरि ऊपरमे रबड़क गाछसँ दूध बहैत सेहो देखलक। भोलानाथ कमलसागरक महारपर जा काली मन्दिरक ओसारपर बैस सभ कियो गाम घुमि जाइक विचार केलक। दोसर दिन भोरे गाड़ी पकैड़ विदा भेल। ..चारिम दिन गाम आबि भोलानाथ खुशीलालकेँ कहलक-

“दोस, आब बिआह नै करब। जे खेत अछि आ घरमे राखल गहना-गुरिया आ बरतन-बासन अछि ओ सभ रखि कऽ की करब? चौगामा लोकक बच्चाकेँ पढ़ैले स्कूल बना देब। अखन धरि जे अनपढ़ लोकक समाज अछि ओ पढ़ल-लिखल लोकक समाज बनत। जइसँ समाज आगू-मुहेँ बढ़त।”

समर्थन दैत खुशीलाल बाजल- “दोस, काल्हिसँ चारू-पाँचू गाम जा-जा सभकेँ कहि बैसार करब। बैसारेमे अपन सभ बात कहिहक।” ❑

पनरह

भोलानाथ आ खुशीलाल जलखै खा कमलपुर विदा भेल। जहिना अनभुआर जंगल पार होइमे डर होइत तहिना भोलानाथ आ खुशीलालकेँ हुअ लगल। जिनगीमे परिवारसँ आगू बढ़ि कहियो कोनो काज नहि केने। पहिने दुनू गोरे बिशेसरक ऐठाम पहुँचल। बिशेसर दहिना हाथमे हाँसू, खुरपी आ बामा हाथमे कोदारिक बेंट पकैड़ कान्हपर नेने खेत जाइ छला।

रस्तेमे बिशेसर भेँट भऽ गेलैन। भेँट होइते खुशीलाल बाजल- “बिशेसर भैया, तूँ बहु-दिन जीबह। तोरे चर्चा हम दुनू गोरे करै छेलौं। एकटा विचार तोरासँ पुछए एलौं?”

बिशेसर कहलखिन-

“खेते दिस चलह हमर खेतियो देखिहक।”

तीनू गोरे संगे जा बोरिंगक एकचारीमे बैस गप-सप्प करए लगला। बिशेसरक इमानदारी आ कर्मठताक चर्चा परोपट्टामे होइत। हृदय खोलि भोलानाथ बिशेसरकेँ कहलक- “बिशेसर भाइ, भगवान सन्तान नै देलैन। धन-सम्पैतक तँ कमी नै अछि मुदा भोगनिहार नहि। मनमे आएल जे सभ सम्पैत बच्चा सभकेँ पढ़ैले स्कूलमे दऽ दिऐ।”

मुड़ी डोलबैत बिशेसर कहलक-

“बड्ड निक विचार भोला केलह। हमरा तँ देह छोड़ि किछु अछि नै मुदा देहसँ जे काज हुअ अखनेसँ तैयार छिअ। जाधैर स्कूल बनत ताधैर संगे खटबह। पहिने एकटा बैसार समाजक करह।”

‘यएह सभ सोचि तोरासँ पुछए एलौं।”

तर्क-वितर्क करैत-तीनू गोरे चारू-भरक गामक सभकेँ बैसौनाइ नीक नै बुझि खाली शिक्षा-प्रेमीकेँ बैसाएब उचित बुझलैन। बिशेसर अपना गामक शिक्षा-प्रेमीक संग लालपुरक शिक्षा-प्रेमीकेँ भार लेलक। पछबारि गामक भार खुशीलालकेँ दऽ दछिनबरिया गामक भार भोलानाथ अपने लेलक। परसू चारि बजे बैसारक समय बना तीनू गोरे अखनेसँ काजमे जुटि जाइक विचार कऽ लेलैन। एक बेर सगरे खेत घुमि देखब उचित बुझि बिशेसर आड़िए-आड़ि सभकेँ घुमबए लगलखिन। गहुमक कोला टपिते भकरार फुलाएल दारीमक गाछपर बिशेसरक नजैर पड़लैन। लाल-लाल फूल जेकर पाछूसँ हरिअर फड़ अबैत आ आगूसँ फूल झड़ैत। मधुमाछी एकपर सँ उड़ि दोसरपर बैस रसपान करैत। संगे अपन कोमल स्वरसँ गीतो सुनबैत आ फूलो खाइत। बिशेसर ठाढ़ भऽ तीनू गाछपर आँखि गड़ा-गड़ा देखए लगला। एकटा गाछमे पहिलुका फुलाएल फूल झड़ि फड़ बनि गेल छल। गोल-मोल हरिअर। ऊपरसँ चिक्कन-चुनमुन। फूलक पत्ती झड़ि

निच्चाँमे मौला गेल। दर्जनो फूल गाछमे फुलाएल। फड़कैँ हाथसँ छुबि-छुबि बिशेसर मने-मन खुशीसँ गदगद होइत सोचैथ जे हमरा सन गरीब-गुरबाकेँ जिनगीमे नसीब नै होइबला चीज मेहनतक कृपासँ केतेको खाएब..! कोदारि, हाँसू, खुरपी लऽ बिशेसर आँगन गेला। मोहिनी अरबा-खुद्दी पीसि रोटी ठोकि रोटिपक्कामे दऽ कर उनटबै छेली। चुल्हि लग मोहिनीकेँ देखि बिशेसर सहैट कऽ कहलखिन-

"एकटा जरूरी काज उपस्थिति भऽ गेल तँए खेतक काज छोड़ि श्यामानन्द ऐठाम जाइ छी।"

रोटिपक्कासँ रोटी उठा हाथक आँगुरसँ टोबि कऽ देखि फेर रोटिपक्कामे रखि बजली- "रोटी सीझ गेल। नून-मिरचाइ सिलौटपर पीसि दइ छी। जाबे अहाँ हाथ-पएर धुअब ताबे भऽ जाएत। घुमि कऽ कखन आएब कखन नहि। जलखै कऽ लिअ।"

थतमतमे बिशेसर ठाढ़। एक दिस समाजक काज मनकेँ घिचैत रहैन तँ दोसर दिस शरीरक रक्षा-ले खाएबो जरूरी बुझाइत रहैन। ओसार परसँ लोटा उठा हाथ-पएर धुअ इनार दिस बढ़ला। हाथ-पएर धोइ लोटामे पानि भरने आबि जलखै केलैन। जलखै कऽ चुनौटीसँ चुन-तमाकुल निकालि चुनबैत श्यामानन्द ऐठाम विदा भेला। श्यामानन्द जलखै कऽ ट्रेक्टरपर बैस गरमा, सीता धान कटल, खेत जोतैले विदा होइत रहैथ। बिशेसरकेँ देखिते ट्रेक्टर परसँ उतैर श्यामानन्द दलानपर आबि बिशेसरकेँ बैसबैत अपनो बैसला। कुशल-क्षेम केलाक पछाइत पुछलखिन-

"सबेरे-सबेर केमहर ऐलह?"

"बौआ श्याम, हमहूँ काज छोड़ि एलौं। भोलानाथ भिनसरे आबि कहलक जे हमरा ढेर सम्पैत अछि आ भोगनिहार कियो ने अछि तँए अपन सभ सम्पैत बच्चा सभकेँ पढ़ैले स्कूल बनबैमे दऽ देब।"

बिशेसरक बात सुनि खुशीसँ श्यामानन्द उठि कऽ ठाढ़ भऽ आँगन जाइत बजला-

"भैया कनी रूकह आब हमहूँ खेत जोतए नै जाएब।"

आँगन जा गुलाबकेँ कहलखिन- "दोसर काजमे जा रहल छी। जाबे

ओइ काजमे हम रहब ताबे घरक काज अहाँ सम्हारू।"

मुँह बाबि, सुनि अचम्भित भऽ गुलाब बजली- "कोन एहेन काज आबि गेल जे सभटा भार हमरा देने जाइ छी?"

आगू बढ़बैत डेग रोकि श्यामानन्द बजला- "भोलानाथ अपन सभ सम्पैत स्कूल बनबैले दऽ रहल अछि ओही काजे जा रहल छी।"

बिशेसर श्यामानन्द संगे लालपुर विदा भेला। कमलपुरक सटले लालपुर, दुनू एकबधु गाम। लालपुर पहुँच दुनू गोरे मुनीलालक ऐठाम पहुँचला। मुनीलाल दरबज्जेपर मोथीक बिछान लाधि बीनै छला। दुनू गोरेकेँ देखि हाँइ-हाँइ परतानसँ ठोकि उठि कऽ आबि श्यामानन्द आ बिशेसरकेँ बैसौलकैन। चौकीपर बैस श्यामानन्द मुनीलालकेँ कहलखिन-

"भाय कोनो चेष्टगर बच्चाकेँ शोर पारि कहियौ जे गामक पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ बजा लौत।"

मुनीलाल बेटाकेँ शोर पाड़लैन। बेटा आठमामे पढ़ैत। मुनीलाल दरबज्जेपर सँ कारी, डोमी, कप्पल आ गुनमाकेँ शोर पाड़ि बेटाकेँ रघुनाथक टोल पठौलखिन। स्कूलक बात सुनि सभ जुबकमे नव उत्साह पैदा लेलक। दशो-बारहो जुबक आएल। सभकेँ बैसा श्यामानन्द कहलखिन- "बौआ, अपन चारू-पाँचू गाममे एकोगो स्कूल नइ अछि। अवसर भेटल, भोलानाथ अपन सम्पैत दऽ रहल छैथ। हमसभ जे नवजुबक छी जी-जानसँ पड़ि लोअर स्कूलसँ लऽ कऽ हाइ स्कूल तक बनबैमे जुटि जाए। बेसी परिवार गरीबे अछि। बाहर खरचा दऽ बच्चाकेँ पढ़ौत से सम्भव नइ छइ। लगमे स्कूल भेलासँ गामपर सँ खा स्कूल जा पढ़त। परसू चारि बजे बरहमस्थानक ऐगला मैदानमे बैसार हएत तइमे सभ अबिहह।"

गप-सप्प करैत दुपहर भऽ गेल। बिशेसर आ श्यामानन्द विदा हुअ लगला। मुदा खाइक बेर देखि मुनीलाल दुनू गोरेकेँ बाँहि पकैड़ कहलखिन-

"बिनु खेने नै जाए देब?"

मुनीलालक आत्मीय सिनेहकेँ दुनू गोरे नै काटि सकला।

पाँचू गामक लोक चारि बजेक बदला दुपहरेसँ जमा हुअ लगला।

श्यामानन्द आ बिशेसर कलौ खा विहारी आ बचनाकेँ संग केने बैसारमे पहुँचला। चारि बजेक समय आगू नै घुसैक पाछुऐ घुसैक दुइए बजेसँ बैसार शुरू भेल। बैसारक बीच भोलानाथ ठाढ़ भऽ बाजए लगला-

"भाइ लोकैन! अपन इलाका पढ़ै-लिखैमे बड़ पछुआएल अछि जइसँ सभ तरहेँ पछुआ गेल अछि। हमर सम्पैतकेँ कियो भोगनिहार नै अछि तँए हम चाहै छी जे अपन सभ सम्पैत दऽ हाइ स्कूल तक बनाबी। साठि बीघा जमीन अछि तैसंग घरोमे फुल-पीत्तैरक बरतन, गहना-जेबर इत्यादि ढेर अछि। पिताजी अपने अमलदारीमे बन्हकी नेन छला। तैसंग गाछी-कलम बाँस सेहो अछि। अहाँ सबहक बीच कहै छी जे अखनसँ ओ सभ चीज अहाँ सबहक भेल जइसँ बच्चा सबहक उद्धार-ले स्कूल बना दियौ।"

थोपड़ी बजा सभ कियो भोलानाथक विचारमे समर्थन देलक। श्यामानन्द ठाढ़ भऽ बजला- "जाधैर स्कूल बनि पढ़ौनी शुरू हएत ताधैर हम दिन-राति अहाँ सबहक संग खटब।"

श्यामानन्दक पछाइत पण्डित शंकर उठि कऽ बजला-

"जाधैर हम कौलेजमे अध्यापकक काज केलौं ताधैर समाजसँ अलग रहलौं। जाधैर नोकरीमे रहलौं एक तरहक लोकक समाजमे रहलौं। जेकरा आइ नदी जकाँ समाज बुझै छी। बीस बरख अध्यापन केलासँ अध्यापक भेलौं, साइठ बर्खमे सेवा निवृत्ति भेला पछाइत जखन गाम एलौं तखन बुझलिऐ जे आइ धरिक समाज नदी जकाँ छल आब समुद्र रूपी समाजमे एलौं। तँए नौजवानक शक्ति हमरा शरीरमे प्रवेश केलक। आइ हम ओइ समाजमे छी जइमे प्रकाण्ड पण्डित, महान वैज्ञानिक, दार्शनिक, इंजीनियर, डॉक्टर, कानूनवेतासँ लऽ कऽ महामुर्ख धरि रहैए। जहिना समुद्रमे बड़का-बड़का जानवरसँ लऽ कऽ छोट-सँ-छोट कीड़ि-मकोड़ी बास करैत। जइ समाजमे स्वस्थ खलीफासँ लऽ कऽ अथबल धरि रहैत। जइ समाजमे महानसँ महान डॉक्टर होइत ओइ समाजमे विकटसँ विकट रोगक रोगी रहैत। आइ ओइ समाजमे हमहूँ छी। अखन धरि पेट-ले नोकरी करै छेलौं जे जिनगी भरिक जोगार भऽ गेल। आब पेट-ले नहि कल्याण-ले सेवा करब। जखन सेवा निवृत्त भऽ गाम अबैत रही तखन रस्तामे मने-मन

कचोट हुअए जे जइ समाजमे जन्म लेलौं ओ जिनगीमे बहुत देलक। जेकर हम ऋणी छी। तँए अहाँ सबहक बीच कहै छी जे मरै काल धरि अहाँ सबहक बाँहि पकैड़ चलैत रहब।"

पण्डित शंकरक वक्तव्यक बीच केतेक बेर थोपड़ी बजल। पण्डित शंकरकेँ बैसते डॉक्टर नीलमणि सेन ठाढ़ होइत बजला-

"हमहूँ अहीं सबहक बीच बसि जिनगी बिता रहल छी आगूओ बिताएब। हम एकटा अदना डॉक्टर छी, जहाँ धरि बनि पड़ैए अहाँ लोकनिक सेवा करै छी। भोलानाथ अपन सभ सम्पैत समाज-ले लगा रहल छैथ तँए हुनका हृदयसँ धैनवाद दइ छिऐन आ हमहूँ अपन आधा समय अहाँ लोकनिक सेवामे देब आ आधा समय पेट-ले लगाएब।"

डॉक्टर नीलमणिकेँ बैसते ईंटा बनौनिहार रामधन उठि कऽ ठाढ़ भेल। रामधनकेँ ठाढ़ देखि सभ टकटकी लगा देखए लगल। जेकरा एको अक्षरक बोध नहि, सभ दिन माटि बना पजेबा गढ़लक ओ पाँच गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ अपन विचार रखए चाहैए। सभकेँ एकरे जिज्ञासा। ठाढ़ भऽ रामधन कहलक- "हम सभ अठारह गोरे पजेबा बनबै छी। अठारहो गोरेक विचार अछि जे स्कूलक पजेबा हम सभ अदहा मजदूरी लऽ बनाएब। अदहा स्कूलक मदैतमे देब।"

थोपड़ी आवाजमे रामधन अपन विचार सम्पन्न कऽ बैसल।

रामधनकेँ बैसते मनचल उठि ठाढ़ भऽ बजला-

"जाधैर स्कूल बनत ताधैर गामे-गाम घुमि नाटक करि कऽ स्कूलक प्रचार करब आ जे आमदनी हएत ओ चन्दामे देब।"

आइ धरि गामक उत्थान-ले एते गामक एते लोक एकठाम बैस कहियो नै विचार केने छल। अखन धरि सभ जाति, सम्प्रदाय, ऊँच-नीचक आड़िक भीतर वौआइ छल। अनेरे एक-दोसरसँ जरैत रहै छल, छोट-छीन झगड़ा ठाढ़ कऽ उलझल रहैत छल जइसँ समाजक पतन होइत रहल। औझुका बैसारसँ सबहक मनमे खुशी आएल, आपसमे प्रेम जगल। भायचारा आ पड़ोसिपनक उदय भेल। सबहक जिज्ञासा, तियाग आ प्रेमक माध्यमसँ नव समाजक निर्माणक बीज लोकमे पड़ल। ..पण्डित शंकर पुनः

ठाढ़ भऽ बाजए लगला- “भाइ लोकैन, भोलानाथक सम्पैत सबहक भऽ गेल। एकरा खजाना बुझियौ। हमर-अहाँक जिम्मा बनैए जे खजाना भरल रहए तँए एकरा मेहनतसँ भरबाक जरूरत अछि। पाँच-गामक लोक बैसल छी। सभ बड़का-बड़का राक्षसक चालिमे पड़ल छी। आइ हम सभ संकल्प ली जे बिआह-श्राद्ध इत्यादिमे धन लूटबै छी ओकरा बन्न कऽ समाजक कल्याणमे धन लगाबी। बिआह, श्राद्ध तँ आइए नै अदौसँ होइत रहल आ आगूओ होइत रहतै। दहेज रूपी दानव पहिने नै छल जे अखन सैयो हाथीक बलक बरबैर भऽ गेल अछि। बिआह तँ सृष्टि निर्माणक प्रक्रिया छी, हेबे करत, जँ नै हएत तँ सृष्टि रूकि जाएत। मुदा जे श्राद्धमे जे भोज करि कऽ घर-घराड़ी बेच लूटा दइ छिऐ जैपर सभकेँ धियान दिअ पड़त। तहिना छोट-छोट बातक झगड़ा बढ़ि विकाराल रूप धारण कऽ लइए। जेकरा चलैत कोट-कचहरीक चक्करमे पड़ि सभ निच्चाँ-मुहेँ जा रहल छी। ने अपन जिनगीक महत बुझै छिऐ आ ने दोसरक।”

हाथ उठा सभ जोरसँ बाजल- “पण्डित बाबा बढ़ियाँ विचार देलैन।”

पण्डित शंकर दुनू हाथसँ सभकेँ शान्त करैत आगू बजला- “भाय लोकैन! पाँच गामक लोक बैसल छी। पाँचू गामक सभ संकल्प लिअ जे हम अपन बेटा-बेटीक बिआह ऐ पाँचू गामक बीच करब। दहेज नै लेब। जरूरी काज जे अछि ओतबे करब। देखै छी जे अदहासँ अधिक परिवारमे दुनू साँझ भरि पेट अन्न नै भेटै छै, देहपर कपड़ा नइ छै, रहैले घर नइ छइ। आइ बच्चाकेँ पढ़ैले विचार कऽ रहल छी, नीक बात।”

कहि पण्डित शंकर बैस गेला।

पण्डित शंकरेक अध्यक्षतामे समाज उत्थान समिति बनल जेकर सदस पाँचू गामक पच्चीस नौजवान भेल आ आगू-ले योजनावद्ध ढंगसँ कार्यक्रम सेहो तँइ भेल।

❑❑❑
❑❑
❑

Notes